# पुष्टिमार्गीय कीर्तन संग्रह

## खण्ड - ४ (चतुर्थ)

## बारह मास के नित्य पद

अखण्ड भूमण्डलाचार्य वर्य जगद्गुरु श्रीमन्महाप्रभु श्रीमद् वल्लभाचार्यजी

-:: प्रकाशक :: -

**वैष्णव मित्र मंडल सार्वजनिक न्यास, इन्दौर**

# अनुक्रमणिका

## श्रीआचार्यजी श्री महाप्रभुजी के पद

### ○ राग भैरव



### ○ राग रामकली



### ○ राग बिभास



### ○ राग बिलावल



## श्री गुसांईजी के पद

### ○ राग भैरव



### ○ राग भैरव



## गोकुलनाथजी के पद

### ○ राग भैरव



### ○ राग रामकली



### ○ राग-बिभास



## श्री यमुनाजी के पद

### ○ राग बिभास



### ○ राग रामकली



### ○ राग रामकली



### ○ राग भैरव



### ○ राग बिलावल



## जगायवे के पद

### ○ राग बिभास



### ○ राग भैरव

## कलेऊ के पद

○ राग रामकली



○ राग बिभास



## व्रतचर्या के पद

○ राग बिभास

कार्तिक सूद पूनम से मागशर सूद पूनम (मंगला शृंगार)



○ राग रामकली



○ राग रामकली



○ राग भैरव



○ राग रामकली



## शीतकाल खंडिता के पद (मंगल शृंगार)

मागशर वद १४ से पोष वद १४

○ राग ललित



○ राग ललित

## अभ्यंग और शृंगार दर्शन के पद

(शृंगार से शयन सुधी)



## कुल्हे के पद



## कुल्हे टिपारो



## टीपारो के पद



## पगा के पद



## फैंटा शृंगार

## अथ शीतकाल के भोजन के पद



## श्री व्रज भक्तन के भोजन के पद (शीतकाल)



## भोग सरायवे के पद



## बीरी के पद

## हिलग के पद (शीत काल राजभोग दर्शन में)

○ राग रामकली



○ राग आसावरी



○ राग बिलावल



○ राग धनाश्री



○ राग रामकली



○ राग आसावरी



○ राग सारंग



○ राग आसावरी



○ राग धनाश्री



○ राग आसावरी



○ राग आसावरी



○ राग धनाश्री



○ राग आसावरी



○ राग सारंग



## शीतकाल भोग समय के पद

○ राग नट

संध्या आरती के पद गाय बुलायवे के पद

○ राग पूर्वी



## आवनी के पद



## शयन दर्शन के पद (शीतकाल)

○ राग नाईकी

## मान के पद



## पोढवे के पद



## मंगला आरती के पद (उष्णकाल)

## मंगला दर्शन के पद



## खंडिता के पद

## अभ्यंग के पद



## उष्णकारा-शृंगार के पद
## शृंगार धरायवेके और दर्शन के पद



## अथ शृंगार सन्मुख के पद



## खसखाने के पद



## शृंगार दर्शन के पद

(पगा शृंगार के पद सुबह से शाम तक)



## फेंटा का शृंगार

## कुल्हे के पद



## पाग चंद्रिका



## टोपी



## टीपारो के पद



## उसीर महल में राजत



## मुगट शृंगार के पद

## फल फलारी के पद



## कुंज भोजन के पद



## उसीर छाक के पद



## नाव के छाक के पद

## उष्णकालभोगसरायवे के पद

○ राग सारंग



## उसीर बीरी के पद

○ राग सारंग



## राजभोग आरती के पद

○ राग सारंग



## राग माला के पद

○ राग सारंग



○ राग भैरव



## पलकन भावना के पद

○ राग काफी



○ राग सारंग



## राजभोग दर्शन के पद

○ राग सारंग



○ राग आसावरी



○ राग सारंग



## राजभोग कुंज के पद

○ राग सारंग



○ राग सारंग



## मानकुंज के पद

○ राग सारंग



## अक्षय तृतीया के पद

○ राग सारंग



○ राग भैरव



## कलेऊ के पद

○ राग बिभास



○ राग बिलावल

## चंदन के पद



## चंदन के पद



## खसखाने के पद

○ राग कान्हरो



○ राग सारंग



○ राग कान्हरो



○ राग सारंग



## नाव के पद

○ राग सारंग



○ राग सारंग



○ राग काफी



## उष्णकाल परदनी

○ राग सारंग



## फूल मंडली के पद

○ राग ललित



○ राग सारंग



○ राग ललित्य



○ राग सारंग

## फूल के शृंगार



## मान सागर के पद



## अष्ट सखीन के भावसों फूलन के आठ शृंगार को पद



## फूल की पाग के पद



## फूल का शृंगार धरे जब के पद



## पिछारो (फूल के शृंगार)



## फूल के सेहरा के पद



## टीपारो



## पनघट के पद

## उत्थापन के पद



## भोग दर्शन के पद

(शाम को)



## उसीर भोग दर्शन के पद



## संध्या आरती के पद



## आवनी के पद

○ राग गोरी



## उसीर आवनी के पद

○ राग अडानो



○ राग हमीर कल्याण



○ राग हमीर



○ राग हमीर कल्याण



○ राग पूर्वी



○ राग हमीर



## शृंगार बड़े करवे के पद

○ राग गोरी



## अथ मिस के पद

○ राग गोरी



## चंद्रप्रकाश के पद

○ राग ईमन



○ राग ईमन



○ राग कान्हरो



## सांझ समय घैया के पद

○ राग गौरी



○ राग कल्याण



○ राग गोरी

## शयन दर्शन के पद



## कुंज शयन दर्शन के पद



## उसीर शयन दर्शन के पद

## मान के पद

○ राग पूर्वी



○ राग बिहाग



○ राग केदारो



○ राग ललित



## मान छूटवे के पद

○ राग ईमन



○ राग केदारो



○ राग बिहाग



○ राग कान्हरो



○ राग केदारो



## मान मिलाप के पद

○ राग केदारो



○ राग केदारो



○ राग बिहागरो



## पोढवे के पद

○ राग बिहाग



○ राग केदारो



○ राग बिहाग



○ राग अडानो



○ राग केदारो



○ राग बिहाग



○ राग बिहाग



○ राग बिहागरो



○ राग बिहाग



○ राग केदारो



○ राग सोरठ



○ राग देश



○ राग केदारो



○ राग बिहाग



○ राग बिहागरो

# अथ श्री आचार्यजी श्री महाप्रभुजीके पद

★ राग भैरव ★ प्रातसमय उठ करिये श्रीलक्ष्मणसुत गान ।। प्रकट भये श्रीवल्लभप्रभु देत भक्तिदान ।।१।। श्री विट्ठलेश महाप्रभु रूपके निधान ।। श्रीगिरिधर श्रीगिरिधर उदय भयो भान ।।२।। श्री गोविंद आनंदकंद कहा वरणो गुणगान ।। श्रीबालकृष्ण बालकेलि रूप ही सुहान ।।३।। श्रीगोकुलनाथ प्रकट कियो मारग वखान ।। श्रीरघुनाथलाल देख मन्मथ ही लजान ।।४।। श्रीयदुनाथ महाप्रभु पूरण भगवान ।। श्रीघनश्याम पूरणकाम पोथीमें ध्यान ।।५।। पांडुरंग विट्ठलेश करत वेदगान ।। परमानंद निरख लीला थके सुर विमान ।।६।।

★ राग भैरव ★ भोर ही वल्लभ कहिये। आनंद परमानंद कृष्णमुख सुमर सुमर आठों सिद्धि पैये ।।१।। अरु सुमरो श्रीविट्ठल गिरिधर गोविन्द द्विजवरभूप। बालकृष्ण गोकुल-रघु-यदुपति नव घनश्याम स्वरूप ।।२।। पढो सार वल्लभवचनामृत जपो अष्टाक्षर नित धरी नेम। अन्य श्रवणकीर्तन तजि, निसदिन सुनो सुबोधिनी जिय धरि प्रेम ।।३।। सेवो सदा नंदयशोमतिसुत प्रेम सहित भक्ति जिय जान। अन्याश्रय, असमर्पित लेनो, असद् अलाप, असत् संग, हान ।।४।। नयनन निरखो श्रीयमुनाजी और सुखद निरखो व्रजधाम। यह संपत्ति वल्लभतें पैये, रसिकनको नहि औरसों काम ।।५।।

★ राग भैरव ★ श्री वल्लभ संतत सुयश नित्य उठ गाऊं ।। मनक्रमवचन क्षण एको न विसराऊं ।।१।। श्रीपुरुषोत्तम अवतार सुकृतफल जगतवंदन श्रीविट्ठलेश दुलराऊं ।। परस पदकमलरज निरख सुंदरनिधि प्रेमपुलकत कलेश कोटिक नशाऊं ।।२।। श्रीगिरिधर देवपतिमानमर्दन करन घोखरक्षक सुखद लीला सुनाऊं।। श्रीगोविंद ग्वालसंग गाय ले चलत वन विशद अंबुज हाथ शिर परशाऊं।।३।। श्रीबालकृष्णसहज बालकदशा कमललोचन रंग रुचि बढाऊं ।। भक्तिमार्ग प्रकटकरण गुणराशि व्रजमंडल श्रीगोकुलनाथ लडाऊं ।।४।। श्रीरघुनाथ धर्मधीर शोभासिंधु दुख दूर बहाऊं ।। पतितउद्धारण महाराज श्री यदुनाथ रसनाचातक ज्यूं रटाऊं ।।५।। श्रीघनश्याम रूप अभिराम रसिकरस निरख नयन सिराऊं ।। चतुर्भुजदास पर्‍यो द्वारे प्रणपति करें श्रीवल्लभकुलचरणामृत भोर उठ पाऊं ।।६।।

★ राग भैरव ★ भोर भये भावसों ले श्रीवल्लभनाम। हे रसना तू ओर वृथा बके क्यों निकाम ।। कीजे सेवा रसस्वाद पावें निशदिन गुण गावें ओर सब रस विसरावें यह मन आठो याम ।।१।। रसिक न कछु ओर करें इन ही में भाव धरें अतिरस अनुपान करें ओर कपट वाम ।। हरिवश छिनही में होत सगरो भक्तिमारगरूप हृदय वसें अरु रससमूहधाम ।।२।।

★ राग भैरव ★ श्रीवल्लभ श्रीवल्लभ ध्याऊं ।। नाम लेत अति मन सचुपाऊं।।१।। श्रीवल्लभ त्यज अनत न ध्याऊं ।। ओर काज मन में न लाऊं ।।२।। श्रीवल्लभ त्यज अनत न जाऊं ।। चरणसरोजमूल घर छाऊं ।।३।। श्रीवल्लभ ही के गुण गाऊं ।। रूप निरख नयनन अघाऊं ।।४।। श्रीवल्लभके मन जो भाऊं ।। आनंद फूल्यो मन समाऊं ।।५।। श्रीवल्लभ कों गाऊं भाऊं ।। यशोमतिसुतकों लाड लडाऊं ।।६।। श्रीवल्लभके चरण रहाऊं।। भूखें महासुख भोजन विसराऊं ।।७।। श्रीवल्लभको दास कहाऊं ।। रसिक सदा यह नेह निभाऊं ।।८।।

★ राग भैरव ★ जय जय जय श्री वल्लभ प्रभु विठ्ठलेश साथें ।। निजजन पर करत कृपा धरत हाथ माथें।। दोष सब दूर करत भक्तिभाव हिये धरत काज सब सरत सदा गावत गुणगाथें।।१।। काहेको देह दमत साधन कर मूरख जन विद्यमान आनंद त्यज चलत क्यूं अपाथें। रसिक चरण शरण सदा रहत हे बडभागी जन अपनो कर गोकुलपति भरत ताहि बाथें ।।२।।

★ राग भैरव ★ जय जय जय श्रीवल्लभनाथ ।। सकल पदारथ जाके हाथ ।।१।। भक्तिमार्ग जिन प्रकट कर्‌यो ।। नामविश्वास जगत उद्धर्‌यो ।।२।। सब मत खंड निरूपे वेद ।। प्रेमभक्तिको जान्यो भेद ।।३।। कारण करण समरथ भुजदंड ।। मायावाद कियो मत खंड ।।४।। परमपुरुष पुरुषोत्तम अंशी ।। भक्तजनन मनकरत प्रशंसी ।।५।। जाके नाम गुण रूप अनंत ।। निर्मल यश गावत श्रुति संत ।।६।। सुंदरस्याम कमलदललोचन ।। कृपाकटाक्ष भक्तभयमोचन ।।७।। कामनापूरण पूरणकाम ।। अहर्निश जपूं तिहारो नाम ।।८।। जाके पटतर ओर न कोय ।। दास गोपाल भजें सुख होय ।।९।।

★ राग भैरव ★ गाऊं श्रीवल्लभ ध्याऊं श्रीवल्लभ वल्लभचरणरज तन लपटाऊं ।। वल्लभसंतति नित्यप्रति निरखूं वल्लभदासन दास कहाऊं ।।१।। कृष्णलीला सेवा नित्य करकें जगत सबे तृणतुल्य धराऊं ।। व्यासदासकी यही प्रतिज्ञा श्रीगोविंदकृपातें पाऊं ।।२।।

★ राग भैरव ★ श्रीवल्लभचरणशरण जाय सब सुख तूं लहे रे ।। रसना गुण गाय गाय दरशन प्रसाद पाय ओर काज त्याग भाग वल्लभरति गहे रे ।।१।। रेन दिन चिंतत रहूं श्रीवल्लभ विट्ठलेश इनहीं के रूप रंग इनहीं रस वहि रे ।। श्री विट्ठलगिरिधारी यहि रस निवहो भारी चाहेना जो चाहे जीये तो येही चाह चही रे ।।२।।

★ राग भैरव ★ श्रीवल्लभनाम रटूं रसना नित्य रहो सुरत जिय आठो याम ।। निरख नयन सकल सुंदरता श्रवणन सुन कीरतिगुणग्राम ।।१।। पुष्पप्रसाद सुवास नासिका लेहु उगार सदा सुखधाम ।। सेवा करूं चरणकर मेरे वारवार हूं करूं प्रणाम ।।२।। दुःख संसार छुडावन सुखनिधि आनंदकंद भक्तविश्राम ।। रसिकशिरोमणि दीन जानके सीस बिराजे पूरणकाम ।।३।।

★ राग भैरव ★ नमो वल्लभाधीशपदकमलयुगले सदा वसतु मम हृदयं विविधभावरसवलितं ।। अन्यमहिमाऽऽभासवासनावासितं मा भवतु जातु निजभावचलितं ।।१।। भवतु भजनीयमतिशयितरुचिरं चिरं चरणयुगलं सकलगुणसुललितं ।। वदति हरिदास इति मा भवतु मुक्तिरपि भवतु मम देहशतजन्मफलितं ।।२।।

★ राग भैरव ★ जयति श्रीराधिकारमणपरिचरणरतिवल्लभाधीशसुतविट्ठलेशे ।। दासजनलौकिकालौकिके सर्वदा कैव चिंतोदयति हृदयदेशे ।।१।। स्थापयति मानसं सततकृतलालसं सहजसुषमारुचिररूपवेशे ।। भालयुततिलकमुद्रादिशोभासहितमस्तकाबद्धसितकृष्णकेशे ।।२।। सहजहासादियुतवदनपंकज सरसवचनरचनापराजितसुधेशे ।। अखिलसाधनरहितदोषशतसहितमतिदासहरिदासगतिनिजबलेशे ।।३।।

★ राग भैरव ★ जप तप तीरथ नेम धरम व्रत । मेरे श्रीवल्लभ प्रभुजी को नाम । रसना यही रटौं निसवासर । दुरित कटैं सुधरैं सब काम ।।१।। आंगन बसौं जसोदासुत पद । लीलासहित सकल सुखधाम । रसिकन ये निरधार कियो है ।

साधन तज भज आठों जाम ।।२।।

★ राग भैरव ★ जय श्री वल्लभ चरन कमल शिर नाइये। परम आनन्द साकार शशी शरदमुख मधुर वानी भक्त जनन संग गाइये ।।जय.।। राज तम छांड मध्य सत्व के संग गही राखि विश्वास प्रेम पंथ को धाइये।। कहे व्रजाधीश वृंदाविपिन दंपति ध्यान धर धर हिये दृगन सिराइये ।।जय.।।

★ राग रामकली ★ श्रीवल्लभ तनमनधन श्रीवल्लभ सर्वस्व में पाये श्रीवल्लभप्रभु चिंतामणि मेरे ।। श्रीवल्लभ मम ध्यान ज्ञान श्रीवल्लभ विन भजु न आन श्रीवल्लभ हें सुखनिधान प्राण जीवन केरे ।।१।। श्रीवल्लभ मोहि इष्टदेव सदा सेवूं श्रीवल्लभ चरचो चरणकमल श्रीवल्लभजूके चेरे।। छीतस्वामि गिरिवरधर तेसेई श्रीविट्ठलेश श्रीवल्लभकी बल बल जाऊं वेरेवेरे ।।२।।

★ राग रामकली ★ प्रातसमे स्मरुं श्रीवल्लभ श्रीविट्ठलनाथ परम सुखकारी ।। भवदुःखहरण भजनफलपावन कलिमलहरण प्रतापहारी ।।१।। शरण आये छांडत नहिं कबहुं बांह गहेकी लाज विचारी ।। त्यजो अन्यआश्रय भजो पदपंकज द्वारकेशप्रभुकी बलहारी ।।२।।

★ राग रामकली ★ जोपें श्रीवल्लभ चरण गहे ।। तो मन करत वृथा क्यों चिंता हरि हियें आय रहे ।।१।। जन्म जन्म के कोटि पातक छिनहींमांझ दहे ।। साधन कर साधो जिनको उस सब सुख सुगम लहे ।।२।। कोटिकोटि अपराध क्षमा कर सदा नेह निवहे ।। अब संदेह करो जिन कोऊ करुणासिंधु लहे ।।३।। अबलो विन सेवें श्रीवल्लभ भवदुःख बहुत सहे ।। रसिक महानिधि पाय ओर फल मनवचक्रम न चहे ।।४।।

★ राग रामकली ★ रुचिरतर वल्लभाधीशचरणं ।। अस्तु में सर्वदा सुंदराकृति जगन्मोहनं हृदि विरहकरणं ।।१।। विहितमायावादवादिजन जारजन्यसंगतात्मजनकुमतिहरणं ।। अखिलसाधनरहितदोषशतकलुषकर कुमतिभर भरितनिजदासशरणं ।।२।। अंजसा कदंबपादपबहुपत्रयुतवासनाभंगभवजलधितरणं ।। वदति हरिदास इति सकलजनमात्रकृतिगोकुलाधीशपदकमलवरणं ।।३।।

★ राग रामकली ★ श्रीवल्लभ मधुराकृति मेरे। सदा बसो मन यह जीवनधन। सबहीनसों जु कहत हौं टेरे ॥१॥ मधुर वदन अति मधुर नयनयुग। मधुर भ्रोंह अलकनकी पांत। मधुर भाल बीच तिलक मधुर अति। मधुर नासिका कही न जात ॥२॥ मधुर अधर रसरूप मधुर छबि। मधुर मधुर अति ललित कपोल। मधुर श्रवनकुंडलकी झलकन। मधुर मकर मानो करत कलोल ॥३॥ मधुर कटाच्छ कृपापूरन अति। मधुर मनोहर वचन विलास। मधुर उगार देत दासनकों। मधुर बिराजत मुख मृदु हास ॥४॥ मधुर कंठ आभूषणभूषित। मधुर उरस्थल रूपसमाज। अति विशाल जानु अवलम्बित। मधुर बाहु परिरंभन काज ॥५॥ मधुर उदर कटि मधुर जानुयुग। मधुर चरण गति सब सुखरास। मधुर चरणकी रेनु निरन्तर। जनमजनम मांगत हरिदास ॥६॥

★ राग रामकली ★ वल्लभ चाहे सोई करे। जो उनके पद दृढ करि पकरे महारस सिंधु भरे ॥१॥ वेद पुरान सुघरता सुन्दर ये बातन न सरे। श्रीवल्लभ के पदरज भज के भवसागरतें तरे ॥२॥ नाथके नाथ अनाथ के बंधु अवगुण चित न धरें॥ पद्मनाभकुं अपनो जानिके डूबत कर पकरे ॥३॥

★ राग बिभास ★ श्रीवल्लभ श्रीवल्लभ श्री वल्लभ कृपा निधान अति उदार करुनामय दीनद्वार आयो ॥ कृपाभर नयनकोर देखीये जु मेरी ओर जन्म जन्म शोध शोध चरण कमल पायो ॥१॥ कीरति चहूं दीश प्रकाश दूर करत विरहताप संगम गुण गान सदा आनन्द भर गाऊं ॥ विनती यह मान लीजे अपनो हरिदास कीजे चरणकमल वास दीजे बलि बलि बलि जाऊं ॥२॥

★ राग बिलावल ★ चरण लग्यो चित मेरो श्रीवल्लभ चरण लग्यो चित मेरो ॥ इन विन ओर कछु नहि भावे इन चरणनको चेरो ॥१॥ इनहिं छांड ओर जो धावे सो मूरखजु घनेरो ॥ गोविंददास यह निश्चय कर सोइ ज्ञान भलेरो ॥२॥

★ राग बिलावल ★ श्रीमदाचार्य के चरणनख चिह्न को ध्यान उरमें सदा रहत जिनके। कटत सब तिमिर महादुष्ट कलिकाल के भक्तिरस गूढ दृढ होत तिनके ॥१॥ जंत्र अरु मंत्र महातंत्र बहु भांति के असुर अरु सुरनको डर न जिनके। रहत निरपेक्ष अपेक्ष नहि काहुकी भजन आनन्द में गिने न किनके ॥२॥ छांड

इनको सदा औरको जे भजे ते परे संसृतिकूप भटके । धार मन एक श्रीवल्लभाधीश पद करन मनकामना होत जिनके ।।३।। मत्त उन्मत्त सों फिरत अभिमान में जन्म खोयो वृथा रातदिनके । कहत श्रुतिसार निरधार निश्चय करि सर्वदा शरण रघुनाथ जिनके ।।४।।

★ राग बिलावल ★ श्रीवल्लभ प्रभु अति दयाल दीजे दरशन कृपाल, दीन जान कीजे आपनो दोष जिन विचारी । होंतों अपराध भर्यो धर्म सबे परहर्यो कीयो न कुछ भलोकाज जाहिचित्त धारो ।।१।। दूरि परें पल पल दुख पावत हों प्राणनाथ, तुमही तें होइ हे प्रभु रसिक को निवारो ।। मेरो पकर्यो हे हाथ बांध्यो पद कमल साथ हाथ, हों अनाथ ताहि भूल जिन विसारो ।।५।।

## अथ श्री गुसांईजी के पद

★ राग भैरव ★ प्रातसमें उठ श्रीवल्लभनंदनके गुण गाऊं ।। श्रीगिरिधर गोविंदको नाम ले श्रीबालकृष्णजीकों शीश नाऊं ।।१।। श्रीगोकुलनाथजीको प्रणाम करत श्रीरघुनाथजीकों देख नयनन सुख पाऊं ।। श्रीयदुनाथ संग खेलत घनश्यामजू इनकी प्रीति हों कहांलो सिराऊं ।।२।। यह अवतार भक्तहितकारण जो परमपदारथ पाऊं ।। विनती कर मागत व्रजपतिपें निशदिन तिहारो दास कहाऊं ।।३।।

★ राग भैरव ★ श्रीविट्ठलनाथजूके चरणशरणं ।। श्रीवल्लभनंदनं कलिदुःखखंडनं पूरणपुरुषोत्तमं त्रयतापहरणं ।।१।। सकलदुःखदारणं भवसिंधु-तारणं जनहितलीलादेहधरणं ।। कान्हरदासप्रभु सबसुखसागरं भूतलदृढभक्तिप्रकटकरणं ।।२।।

★ राग भैरव ★ श्रीविट्ठलेश विट्ठलेश विट्ठलेश कहि रे । इनके संबंध विना दृश्यमान वस्तुमात्र ताको तू जियमें कलेश कहि चहि रे ।।१।। रसना गुणरूपको निशवासर कर यह सुख निरंतर अहार जेसें लहि रे ।। श्रीविट्ठलेशके श्रीवल्लभके पदको पराग पावे जहां तिनके तू दासनको दास भयो रहि रे ।।२।।

★ राग भैरव ★ श्री विट्ठलेश विट्ठलेश रसना रट मेरी ।। ग्रंथन को यह सार

याहिते होत पार वारवार तोसों कहूं तुव हितकेरी ।।१।। चाहे जो भलो तेरो कह्यो वेग मान मेरो भजि लें श्रीघोषनाथ धन्य जीवन तेरी ।। जगनाजनको सहाय प्रेमपुंज सुयश गाय असत वात दूर करो विषया अरुझेरी ।।२।।

★ राग भैरव ★ जय जय जय श्रीवल्लभनंद ।। सकलकला वृंदावनचंद ।।१।। वाणी वेद न लहे पार ।। सो ठाकुर श्रीअंकाजीद्वार ।।२।। शेष सहस्रमुख करत उच्चार ।। व्रजजन जीवन प्राण आधार ।।३।। लीला ही गिरिधार्‍यो हाथ ।। छीतस्वामी श्रीविट्ठलनाथ ।।४।।

## गोकुलनाथजी के पद

★ राग भैरव ★ प्रातहि श्री गोकुलेश गोकुलेश नाम ।। सकल सुख निधान मान करत त्रिबिध दुःख की हान यह जिय जान भजो अष्टयाम ।।१।। इन विना योग यज्ञ करत वैराग्य त्याग विविध भाँत नेम धर्म करत सब निकाम ।। निश्चय गहि चरण कमल भक्ति भाव हिये अमल गावत मुख निरख दास वारूँ कोटि काम ।।२।।

★ राग भैरव ★ प्रातहि श्रीगोकुलेश गोकुलेश गाऊँ ।। पूरण पुरुषोत्तम वपु धरे वदत त्रैलोकनाथ श्री विट्ठलेश नंदन निरखनयन सिराऊं ।।१।। श्री वल्लभजू के शरण आये कलियुग के जेते जीव उद्धरे समूह तिनहीं कहालों गिनाऊँ ।। जे कबहूँक नामलेत तिनहूं को अभयदेत मांगत रघुनाथ दास निकट रहन पाऊँ ।।२।।

★ राग भैरव ★ जय जय जय श्रीवल्लभनंदन ।। सुर नर मुनि जाकी पदरजवंदन ।।१।। मायावाद किये जू निकंदन ।। नाम लिये काटत भवफंदन ।।२।। प्रकट पुरुषोत्तम चरचत चंदन ।। कृष्णदास गावत श्रुतिछंदन ।।

★ राग भैरव ★ श्रीगोकुलगामको पेंडो ही न्यारो ।। मंगलरूप सदा सुखदायक देखियत तीन लोक उजियारो ।।१।। जहां वल्लभसुत निर्भय बिराजत भक्तजनके प्राणनप्यारो ।। माधोदास बल बल प्रतापबल श्रीविट्ठल सर्वस्व हमारो ।।२।।

★ राग रामकली ★ गाऊं श्रीवल्लभनंदन के गुण लाऊं सदा मन अंगसरोजन ।। पाऊं प्रेम प्रसाद ततछिन गाऊं गोपाल गहे चितचोजन ।।१।। नवाऊं शीश

रिझाऊं लाल आयो शरण यह जो प्रयोजन ।। छीतस्वामी गिरिधरन श्रीविठ्ठल छबि पर वारूं कोटि मनोजन ।।२।।

★ राग बिभास ★ प्रात समें श्रीवल्लभ सुत को उठतहिं रसना लीजिये नाम ।। आनंदकारी प्रभु मंगलकारी अशुभहरण जनपूरणकाम ।।१।। याहि लोक परलोक के बंधु को कहि सके तिहारे गुण ग्राम ।। नंददास प्रभु रसिक शिरोमणि राज करो श्री गोकुलसुखधाम ।।२।।

★ राग बिभास ★ प्रातसमें श्रीमुख देखनको सेवकजन ठाडे सिंघद्वार ।। जय जय जय श्रीवल्लभनंदन दरशन दीजे परमउदार ।।१।। सौभगसीमा सुंदरता शोभा मेघगंभीर गिरा मृदु धार ।। निरखत नयनन मोह्यो मन्मथ श्रवणन सुनत वचन अपार ।।२।। नयनमंगल श्रवणन मंगल यश पुरुषोत्तमलीला अवतार ।। जन भगवान पिय कुंजविहारी अगणितमहिमा अगम अपार ।।३।।

★ राग बिभास ★ प्रात समें श्री वल्लभसुतके वदन कमल को दर्शन कीजे ।। तीन-लोक-वंदित पुरुषोत्तम उपमाहि पटतर दीजे ।।१।। श्रीवल्लभकुल उदित चंद्रमा यह छबि नयन चकोर पीजे ।। नंददास श्री वल्लभसुत पर तनमनधन न्योछावर कीजे ।।२।।

★ राग बिभास ★ प्रात समें श्री वल्लभ सुतको पुण्य पवित्र विमल यश गाऊं ।। सुंदर सुभग वदन गिरिधर को निरख निरख दोऊ नैन शिराऊं ।।१।। मोहन वचन मधुर श्री मुख के श्रवण सुनि सुनि हृदय वसावुं ।। तनमन प्राण निवेदन यह विधि अपने को सुफल कहाऊं ।।२।। रहो सदा चरण के आगे महाप्रसाद उच्छिष्ट हों पाऊं ।। नंददास प्रभु यह मांगत है श्रीवल्लभ कुल को दास कहाऊं ।।३।।

★ राग बिभास ★ विसद सुजस श्रीवल्लभ सुतकौ, प्रातः उठत नित अनुदिन गाऊं । कलिमल-हरन चरन चित धरिके, उपजै परम सुख दुःख बिसराऊं ।। भक्ति भाव अरू, भक्तनि कौ रस, जानें मान तिनहिं को ध्याऊं । 'छीत-स्वामी' गिरिधारीजू के सुमिरत, अष्ट सिद्धि, नव निधि कों पाऊं ।।

# श्री यमुनाजी के पद

★ राग बिभास ★ दीन जान मोहि दीजे यमुना ।। नंदकुमार सदा वर मांगो गोपिनकी दासी मोहि कीजे ।।१।। तुम तो परम उदार कृपानिधि चरण शरणसुखकारी ।। तिहारे वश सदा लाडलीवर तव तट क्रीडत गिरिधारि ।।२।। सब व्रजजन विरहत संग मिल अद्भुतरासविलासी ।। तुमारे पुलिन निकट कुंजनद्रुम कोमल शशी सुवासी ।।३।। ज्यौं मंडलमें चंद बिराजत भरभर छिरकत नारी ।। श्रमजल हसत न्हात अतिरसभर जलक्रीडा सुखकारी ।।४।। रानीजीके मंदिरमें नित उठ पाय लाग भुवनकाज सब कीजे ।। परमानंददास दासीव्है नंदनंदन सुख दीजे ।।५।।

★ राग बिभास ★ दोऊ कूल खंभ तरंग सीढी श्रीयमुना जगत वैकुंठनिश्रेनी ।। अति अनुकूल कलोलनके भर लियें जात हरिके चरणन सुखदेनी ।।१।। जन्मजन्मके पाप दूरकर काटत कर्मधर्मधारपैनी ।। छीत-स्वामि गिरिधरजूकी प्यारी सांवरेअंग कमलदलनैनी ।।२।।

★ राग बिभास ★ मेरे कुलकल्मष सबही नासै देख प्रभात प्रभाकरकन्या ।। वे देखो पाप जात जिततितते ज्यौं मृगराज देख मृगसन्या ।।१।। पोषत दे पयपान पुत्रलों है जगजननी धन्य सुधन्या ।। दियो चाहे गदाधरहुकों चरनकमलनिजभक्ति अनन्या ।।२।।

★ राग रामकली ★ अतिमंजुल जलप्रवाह मनोहर सुख अवगाहत विदित राजत अति तरणिनंदिनी ।। श्यामवरन झलक रूपलोललहरवर अनूप सेवितसंतत मनोजवायुमंदिनी ।।१।। कुमुदकुंजवन विकास मंडित दिसदिस सुवास कुंजत अलिहंसकोक मधुरछंदिनी ।। प्रफुल्लित अरविंदपुंज कोकिलकलसारगुंज गावत अलिमंजुपुंज विविधवंदिनी ।।२।। नारदशिवसनकव्यास ध्यावत मुनि धरत आस चाहत पुलिनवास सकलदुःख निकंदिनी ।। नाम लेत कटत पाप मुनिकिन्नरऋषिकलाप करत जाप परमानंद महाआनंदिनी ।।३।।

★ राग रामकली ★ प्रफुल्लित बन विविधरंग झलकत यमुनातरंग सौरभ घन

आमोदित अतिसुहावनो ।। चिंतामणि कनकभूमि छबिअद्भुत लता झूमि सीतलमद अतिसुगंध मरुत आवनो ।।१।। सारसहंस शुकचकोर चित्रित नृत्यत सुमोर कलकपोत कोकिलाकल मधुर गावनो ।। जुगल रसिकवर विहार परमानंद छबिअपार जयति चारुवृंदावन परम भावनो ।।२।।

★ राग रामकली ★ श्रीजमुनाजी अधमउद्धारनी मैं जानी । गोधनसंग श्यामघनसुंदर ललितत्रिभंगी दानी ।।१।। गंगाचरन परसतें पावन हरसिरचिकुर समानी ।। सात समुद्र भेद यमभागिनी हरि नखशिख लपटानी ।।२।। रासरसिक मणि नृत्यपरायण प्रेमपुंजठकुरानी ।। आलिंगन चुंबन रस विलसत कृष्ण पुलिनरजधानी ।।३।। ग्रीष्मऋतु सुखदेत नाथ कुं संग राधिकारानी ।। गोविंदप्रभु रवितनया प्यारी भक्तिमुक्तिकी खानी ।।४।।

★ राग रामकली ★ यह प्रसाद हों पाऊं श्रीजमुनाजी ।। तुम्हारे निकट रहौं निशवासर रामकृष्णगुन गाऊं ।।१।। मज्जन करूं विमलजलपावन चिंताकलेस बहाऊं ।। तिहारी कृपातें भानुकी तनया हरिपद प्रीत बढाऊं ।।२।। विनती करों यही वर मागों अधमन संग बिसराऊं ।। परमानंदप्रभु सबसुखदाता मदनगोपाल लडाऊं ।।३।।

★ राग रामकली ★ यह जमुना गोपालहि भावें ।। जमुना जमुना नाम उचारत धर्मराज ताकी न चलावें ।।१।। जे जमुनाको जान महातम वारंवार प्रणाम करे ।। ते जमुना अवगाहनमज्जन चिंतित ताप तनकेजु हरे ।।२।। पद्मपुराण कथा यह पावन धरनी प्रति वाराह कही ।। तीर्थमहातम जान जगतगुरु सो परमानंददास लही ।।३।।

★ राग रामकली ★ श्रीयमुनाजी पतित पावन कर्‍ये ।। प्रथमही जब दियो दरसन सकलपातक हर्‍ये ।।१।। जलतरंगन परस कर पयपान सो मुख भर्‍ये ।। नाम सुमरत गई दुरमति कृष्णाजस विस्तर्‍ये ।।२।। गोपकन्या कियो मज्जन लालगिरिधर वर्‍यो ।। सूर श्रीगोपाल सुमरत सकल कार्य सर्‍ये ।।३।।

★ राग रामकली ★ तिहारो दरस मोहि भावे श्रीयमुनाजी ।। श्रीगोकुलके निकट

बहत हे लहरनकी छबि आवे ॥१॥ सुखदेनी दुःखहरनी श्रीजमुनाजी जे जन प्रात उठ न्हावे ॥ मदनमोहनजुकी खरी पियारी पटरानी जु कहावे ॥२॥ वृंदावनमें रास रच्यो हे मोहन मुरली बजावें ॥ सूरदास प्रभु तिहारे मिलनकों वेद विमल जस गावें ॥३॥

★ राग रामकली ★ तिहारो दरस हों पाऊं श्रीजमुनाजी ॥ श्रीगोवरधन श्रीवृंदावन व्रजरज अंग लगाऊं ॥१॥ दिन दसपांच रहों श्रीगोकुल ठकुरानीघाटहूं न्हाऊं ॥ दासन ऊपर करो कृपा संतनके संग आऊं ॥२॥

★ राग रामकली ★ श्रीजमुनाजीकी महिमा मोपें वरनी न जाई ॥ सूरसुता घनश्यामवरन प्रफुल्लित रूप निकाई ॥१॥ श्रीहरि गोपवधू द्विज सब श्रीगोकुलके लरकाई ॥ व्रजाधीश प्रभु आदि भक्तनकों सकलसिद्धि सुखदाई ॥२॥

★ राग रामकली ★ तुम सम ओर न कोई श्रीजमुनाजी ॥ करो कृपा मोहि दीन जानकें निज व्रजवासो होई ॥१॥ राखो चरण शरन तरणितनया जन्म आपदा खोई ॥ यह संसार स्वारथको सबविध सुतबंधु सगो न कोई ॥२॥ प्रेमभजनमें करत विघ्नता संत संतापे सोई ॥ ताको संग मोहि सपने न दीजे मांगत नयन भर रोई ॥३॥ गरलपान डारत अमृतमें विषयारससों मोई । रसिक कहै दीन होय मांगू लहर समुद्र समोई ॥४॥

★ राग रामकली ★ जमुना जमुना नाम भजो ॥ हरखत करो आराधन इनको ओरको पंथ तजो ॥१॥ देहें सकल पदारथ तुमकों इनके नाम रजो ॥ व्रजपति की अतिही पियारी ताते सकल सिंगार सजो ॥२॥

★ राग रामकली ★ निरखत ही मन अति आनंद भयो देख प्रभात प्रभाकरकन्या ॥ जलपरसत ही सकल अघ भाजे ज्यौं हरि देख हरणकी सन्या ॥१॥ ओर जीवनकों औरनकी गति मेरी गति तो तुमहि अनन्या ॥१॥ व्रजपति की तुम अतिहि पियारी तुम संगमतें जान्हवी धन्या ।

★ राग रामकली ★ जमुनासी नहीं कोई दुःखहरनी ॥ जाके स्नानते मिटत हे पाप होतहे आनंद सुखकी जु करनी ॥१॥ महिमा अगाध अपार इनके गुण

वेदपुराण न बरणी ।। कहत व्रजपति तुम सबन कों समुजाय छूटे यमडर जो आवे इनकी शरणी ।।२।।

★ राग रामकली ★ श्रीजमुनाजी तिहारो पुलिन मोहि भावें ।। सुरब्रह्मादिक ध्यान धरतहें सो सुपने नहिं पावें ।।१।। बिच बिच कुंजसदन अतिसुंदर श्यामाश्याम सुहावें ।। चहूंदिस सकलफूल अति फूले गुहि गुहि कंठ धरावें ।।२।। कुसुमनके बीजना जो संवारे सखियन बांह ढुरावें ।। सूरदास प्रभु सबसुखसागर दिनदिन सोभा पावें ।।३।।

★ राग रामकली ★ जयति भानुतनया चरणयुगल वंदे ।। जयति व्रजराजनंदप्रिये सर्वदा देत आनंद ज्यौं शरदचंदे ।।१।। जयति सकलसुखकारिणी कृष्णामनहारिणी श्रीगोकुल निकट बहत मंदे ।। जाके तट निकट हरि रासमंडल रच्यो तहां नृत्यत ताता थेई थंदे ।।२।। जयति कलिंदगिरिनंदिनी देत आनंदिनी भक्तके हरत सब दुःख द्वंदे ।। चित्तमें ध्यान धर मुदित व्रजपति कहें जयति यमुने जयति नंदनंदे ।।३।।

★ राग रामकली ★ जगतमें यमुनाजी परमकृपाल ।। विनती करत तुरत सुनलीनी भये मोपें दयाल ।।१।। जो कोऊ मज्जन करत निरंतर तातें डरपतहें यमकाल ।। व्रजपतिकी अति प्यारी कालिंदी स्मरत होत निहाल ।।२।।

★ राग रामकली ★ श्रीयमुनाजी यह विनती चित धरिये ।। गिरिधरलाल मुखारविंदरति जन्मजन्म नित करिये ।।१।। विषसागर संसार विषम संगतें मोहि उद्धरिये ।। काम क्रोध अज्ञान तिमिर अति उरअंतरते हरिये ।।२।। तुम्हारे संग वसो निजजनसंग रूप देख मन ठरिये ।। गाऊं गुण गोपाललालके अष्ट व्याधिते डरिये ।।३।। त्रिविध दोष हरके कालिंदी एक कृपा कर ढरिये ।। गोविंददास यह वर मांगे तुम्हारे चरण अनुसरिये ।।४।।

★ राग रामकली ★ नमो तरणितनया परमपुनीत जगपावनी कृष्णमनभावनी रुचिरनामा ।। अखिलसुखदायिनी सबसिद्धिहेतु श्रीराधिकारमणरतिकरण श्यामा ।।१।। विमलजल सुमन काननमोदयुत पुलिन अतिरम्य प्रियव्रजकिशोरा ।।

गोपगोपी नवलप्रेमरति वंदिता तटमुदित रहत जेसे चकोरा ॥२॥ लहरिभावलालितवालुका सुभगव्रजबाल व्रतपूरण रासफलदा ॥ ललित गिरिवरधरण प्रिय कलिंदनंदिनीनिकट कृष्णदास विहरत प्रबलदा ॥३॥

★ राग रामकली ★ प्रियसंग रंगभर कर विलासे ॥ सुरतरससिंधुमें अतिही हरषित भई कमलज्यों फूलते रवि प्रकाशे ॥१॥ तनते मनते प्राणते सर्वदा करतहै हरिसंग मृदुलहासे ॥ कहत व्रजपति तुमसबनसों समजाय मिटे यमत्रास इनहीं उपासे ॥२॥

★ राग रामकली ★ जयति श्रीयमुने प्रकटकल्पलतिके ॥ अष्टविध सिद्धि अद्भुतवैभव सकल स्वजन विख्यात स्वाधीनपतिके ॥१॥ केलिश्रमसुरतपयरूप ब्रजभूपको पुत्र पयपान दे विश्वमाता ॥ अंग नूतन करत पुष्टि तब अनुसरत त्रिदलरसकेलिकी अमित दाता ॥२॥ रहत यमद्वारते मुक्त सुखचारते नामत्रयअक्षर उच्चार कीने ॥ उभयलीलाविष्ट व्रजप्रिय कुमारिका तुर्यप्रिया वदत रसरंग भीने ॥३॥ अनावृतब्रह्मते सदा वृत व्है रही कनकशाखाविटपशामवल्ली॥ सदा प्रफुल्लित द्वारकेश अवलोकके नित्य आनंद आभीरपल्ली ॥४॥

★ राग भैरव ★ श्रीवृंदावन में यमुना सोहे, जिनके गुण अरु सोभा निरखत मदनमोहन पिय मोहे ॥१॥ सदा संयोग रहत इनही को हरिरस सों अति पागी, 'रसिक' कहे इनके सुमिरन तें हरिचरणन अनुरागी ॥२॥

★ राग भैरव ★ श्रीयमुना जनकों सुखकरनी, शरण लेत दैवी जीवन कों तिन के कोटि दोष कों हरनी ॥१॥ पुष्टिभक्ति में बाधक जो कछु ताकों मेंट भक्तिरस भरनी, 'दास' कहे सरन हौं आयो महा कलिकाल सिंधु तें तरनी ॥२॥

★ राग भैरव ★ श्रीयमुना करत कृपा को दान, जो कोऊ आवत दरस तिहारे सब के राखत मान ॥१॥ कलि के जीव दोष भंडारी करत तिहारो पान । भये अनन्य सबही ओर तें सुर मुनि करत बखान ॥२॥ जे जन हरिलीला अधिकारी करत तिहारो गान, मैं मतिमंद कहां लौं बरनों रसिकदास जन जान ॥३॥

★ राग भैरव ★ श्रीयमुनाजी परम कृपाल कहावे, दरसन तें अघ दूरि जात हैं हरिलीला सुधि आवे ।।१।। जे जन तेरे निकट बसत हैं नंदनवन रस पावें, जीव कृत्य देखत नहिं कबहूं अपनो पक्ष दृढ़ावे ।।२।। कर्तुमकर्तुमन्यथाकर्तुं यह सुन मन ललचावे, 'रसिकदास'को दास जानियें तातें यह जस गावें ।।३।।

★ राग भैरव ★ जो कोई श्री यमुना नाम संभारे, ताको दरस परस कोऊ करहीं वाही कों वे तारे ।।१।। भक्त की महिमा बरनि न सके यम हा हा करि हारे, 'चतुर्भुज' प्रभु गिरिधरन लालको नितप्रति वदन निहारे ।।२।।

★ राग भैरव ★ कालिंदी कलिकल्मष हरनी, रवितनया यमअनुजा स्यामा महासुंदरी गोविंदघरनी ।।१।। जय यमुने जय कृष्णवल्लभा पतितन को पावन भवतरनी, सरनागत को देत अभय पद जननी तजत जस सुतकी करनी ।।२।। सीतल मंद सुगंध सुधानिधि धाई धर वपु उत्तर धरनी, 'परमानंद' प्रभु परम पावनी युग युग साख निगम नित वरनी ।।३।।

★ राग भैरव ★ श्रीयमुनाजी निरख सुख उपजत, सन्मुख वृंदाविपिन सुहाये, श्रीविश्रांत वल्लभजु की बैठक, निर्मल जल यमुना के नहाये ।।१।। भुजतरंग सोहत अति नीके, भँवर कंकण सुहाये, ब्रजपतिकेलि कहा कवि बरने, शेष सहस्रमुख पार न पाये ।।२।। श्रमजल सहित अगाध महारस, लीलासिंधु तरंगन छाये, सकल सिद्धि अलौकिक दाता, जे जन तकि चरनन चित लाये ।।३।। रविमंडल द्वार होय प्रकटी, गिरि कलिंद सिर तें ब्रज धाये, 'हरिदास' प्रभु सोभा निरखत मन क्रम वचन इनके गुण गाये ।।४।।

★ राग भैरव ★ करी प्रणाम यमुनाजल लहिये, श्रीवल्लभ-पदरज प्रताप तें, श्रीयमुना मुख कहिये ।।१।। पूरन पुरुषोत्तम ब्रज प्रकटे इनहूं प्रकट्यो चहिये ।। जो जन लक्ष धरा तें ऊंचों, रविमंडल तें बहिये ।।२।। नंदसुवन अरु कलिंदनंदिनी दरसन रिपुतन दहिये 'हरिदास' प्रभु यह सुख सोभा नयनन ही में रहिये ।।३।।

★ राग भैरव ★ नमो देवी यमुने मन वचन कर्म करुं शरण तेरी । सकल सुखकारिनी भवसिंधुतारिनी, दरसन तें कटत हैं कर्म बेरी ।।१।। अभय पद दायिनी

भक्त मन भायिनी, करि कृपा पूरिये साध मेरी, दीजिये भक्तिपद लाल गिरिधरन की, काटिये विषय 'कृष्णदास' केरी ।।२।।

★ राग भैरव ★ नमो नमो जयति श्रीयमुने, जय कालिंदी पुलिन मनोहर, स्यामास्याम करत हैं रवने ।।१।। जलक्रीडा करत तेरे तट, तुम सम कोऊ नहीं तीनों भवने, सुरनर मुनि के ध्यान न आवत सो प्रभु तिहारे गृह गवने ।।२।। तुम तो परमकृपालु जगजननी, पतितन को पावन भवतरनी, साख निगम पुरानन बरनी, 'सूर' प्रभु के मन कों हरनी ।।३।।

★ राग बिलावल ★ श्रीयमुनापान करत ही रहिये, ब्रज बसवो नीको लागत है लोकलाज दुःख सहिये ।।१।। श्रीवल्लभ श्रीविठ्ठल गिरिधर गावत सब सुख पैये, 'व्रजपति' मुख अवलोक महासुख दरसन दृग न अघैये ।।२।।

★ राग बिलावल ★ चलत न्यारी नवल यमुने । गाय ब्रजभक्त के भाव कों देखि के, भाव सहित तहां करत गवने ।।१।। आई ब्रजभूप पिय भाव उपजाव ही, जलस्थल सिद्ध दोऊ करत रवने, निरख सोभा 'हरिदास' निसदिन यह, मन क्रम वचन करी सीस नमने ।।२।।

## जगायवे के पद

★ राग बिभास ★ भोर भयो जागो नंदनन्द ।। संग सखा ठाढे जगवंद ।।१।। सुरभिन पय हित वत्स पिवाये ।। पंछी यूथ दसोंदिश धाये ।।२।। मुनि सर तके तमचर स्वरहार्‌ये ।। सिथिलधनुष रतिपतिगहि डार्‌ये ।।३।। निशिहीघटी रविरथ रुचिराजे ।। चंद मलीन चकई रतिसाजे ।।४।। कुमुदिनी सकुची वारिज फूले ।। गुंजत फिरत अलिगणझूले ।।५।। दरसनदेहो मुदितनरनारी ।। सूरदास प्रभुदेवमुरारी ।।६।।

★ राग बिभास ★ दधिके मतवारे कान्ह खोलो क्यों न पलकें ।। शिश मुकुटकी लटा छुटि और छुटि अलकें ।।१।। सुरनरमुनि द्वार ठाडे दरस कारन कीलकें ।। नासिकाको मोती सोहे बीच लाल ललकें ।।२।। कटि पीतांबर मुरलीकर श्रवन कुंडल झलकें ।। सूरदास मदनमोहन दरस देहो भलकें ।।३।।

★ राग बिभास ★ सेहेरा धरे-तब प्रात ही कुंज महल सेजन तें आलसकों तज दुलहनि जागी ।। अति श्रम सिथिल अंग देखियत है श्याम सुन्दर अधरन रस पागी ।।१।। बींजना ब्यार करत ललिता ले श्रम जल मुखतें पोंछन लागी ।। देख देख मुसिकात परस्पर कहत लाल लोचन अनुरागी ।।२।। जागी दुल्हे संग रैन सब श्याम केलि सुख सदा सुहागी ।। जन त्रिलोक प्रभुसों रति मानी कोऊ न ऐसी बड़भागी ।।३।।

★ राग भैरव ★ बालकृष्ण जागहु मेरे प्यारे ।।ध्रु.।। बैठी सेज कहती है जननी । बार बार मुखकमल निहारे ।।१।। सुन्यो वचन माता को जब ही । तनिक तनिक दोऊ नैन उघारे ।।२।। लिये उठाय अंक भरि तब ही ।। उष्णोदक सों वदन पखारे ।।३।। माखन मिश्री और मलाई । ओट्यो दूध तुम लेहु दुलारे ।।४।। विविध भांति पकवान मिठाई । आनन मेल अपुनपो बारे ।।५।। मुख पखारि झगुली पहराई । शिर ऊपर चौतनी जब धारे ।।६।। डोलत अजिर मुदित मनमोहन । 'व्रजजन' ओट भई जु निहारे ।।७।।

★ राग भैरव ★ उठो मेरे लाल गोपाल लाडले रजनी वीती बिमल भयो भोर ।। घर घर दधि मथत गोपिका द्विज करत वेदकी सोर ।।१।। करो कलेऊ दधि ओर ओदन मिश्री मेवा परोसूं ओर ।।आस करण प्रभु मोहन तुम पर वारों तन मन प्राण अकोर ।।२।।

★ राग भैरव ★ जागो गोपाललाल दुहो धौरी गैयां ।। सद्‌दूध मथ पीवो घैयां।।१।। भोर भयो वन तमचर बोले ।। घरघर गोप वगर सब खोले ।।२।। गोपी रई मथनिया धोवे ।। अपनो अपनो दह्यो विलोवे ।।३।। संगके सखा बुलावन आये।। कृष्णनाम लेले सब गाये ।।४।। भूषण वसन पलट पहराऊं ।। चंदनतिलक ललाट बनाऊं ।।५।। चतुर्भुज प्रभु श्रीगोवर्द्धनधारी ।। मुखछबिपर बलगई महतारी ।।

★ राग भैरव ★ जागिये गोपाललाल जननी बलजाई ।। उठो तात प्रात भयो रजनीको तिमिर गयो टेरत सब ग्वालबाल मोहनाकन्हाई ।।१।। उठो मेरे आनंदकंद

गगनचंद मंदभयो प्रकट्यो अंशुमान भानु-कमलने सुखदाई ।। सखा सब पूरत वेणु तुम विना न छूटे धेनु उठो लाल तजो सेज सुंदर वरराई ।।२।। मुखते पट दूरकियो यशोदाको दरसदियो ओर दधि मांगलियो विविध रस मिठाई ।। जेवत दोऊ रामश्याम सकल मंगल गुणनिधान थारमें कछू जूठ रही मानदास पाईं ।।३।।

★ राग भैरव ★ लालन जागोहो भयो भोर ।। दूध दही पकवान मिठाई लीजे माखन रोटी बोर ।।१।। विकसे कमल विमल वाणी सब बोलन लागे पंछी चहुं ओर ।। रसिकप्रीतमसों कहत नंदरानी उठ बैठोहो नंदकिशोर ।।२।।

★ राग भैरव ★ जागोहो तुम नंदकुमार ।। बलबल जाउं मुखारविंदकी गोसुत मेलो करो शृंगार ।।१।। आज कहा सोवत त्रिभुवनपति ओर वार तुम उठत सवार ।। वारंवार जगावत माता कमलनयन भयो भवन उजार ।।२।। दधि मथों नवनीत देहों संगसखा ठाडे सिंघद्वार ।। उठो क्योंन मोहि वदन दिखावो सूरदासके प्राण आधार ।।३।।

★ राग भैरव ★ भोर भयें बल जाऊं जागो नंदनंदा ।। तमचर खग करत रोर अवनीपें होत सोर तरणिकी किरण तपें चंद भयो मंदा ।।१।। भयो प्रात रजनी गई चकवी आनंद भई वेग मोचन करो सुरभीकुल फंदा ।। उठो भोजन करो मुकुट माथें धरो सखिन प्रति दरस देहो रूपनिधि कंदा ।।२।। त्रिया दधिमथन करें मधुरे स्वर श्रवण धरें कृष्णगुण विमल यश कहत आनंदा ।। निजजननयन आधार जगजीवनगुणन गुणकथनकों कहत श्रुति छंदा ।।३।।

★ राग भैरव ★ ललित लाल श्रीगोपाल सोइये न प्रातकाल यशोदा मैया लेत बलैया भोर भयो बारे ।। उठो देव करूं सेव जागिये देवादिदेव नंदराय दुहत गाय पीजिये पय प्यारे ।।१।। रविकी किरण प्रकट भई उठो लाल निशा गई दधि मथत जहां तहां गावत गुण तिहारे ।। नंदकुमार उठे विहस कृपादृष्टि सब पे वरष युगल चरण कमलन पर परमानंद वारे ।।२।।

★ राग भैरव ★ जागो जागो मेरे जगत उजियारे ।। कोटि मदन वारो मुसकनि पर कमलनयन अखियन के तारे ।।१।। सुरभी वच्छ गोपाल निशंक

ले यमुना के तीर जाओ मेरे प्यारे ।। परमानंद कहत नंदरानी दूरजिन जाओ मेरे व्रजरखवारे ।।२।।

★ राग भैरव ★ उठो हो नंदकुमार भयो भनसार जगावत नंदरानी ।। झारीके जल वदन पखारो सुत कहि सारंगपानी ।।१।। माखन रोटी ओर मेवा भावे सो लीजे आनी ।। सूरदास मुख निरख यशोदा मन ही मन सिहानी ।।२।।

★ राग भैरव ★ उठे नंदलाल सुनत जननी मुख-वानी ।। आलस भरे नयन उठे शोभा की खानी ।।१।। गोपीजन थकित भई चितवत सखी ठाढी ।। नयन कर चकोर चंदवदन प्रीत बाढी ।।२।। माता जल झारी लिये कमलमुख पखारें ।। नीरहू को परस करत आलस विचारें ।।३।। सखा द्वारे ठाडे सब टेरतहें तुमकों ।। यमुनातट चलो स्याम चारन गोधनकों ।।४।। सखा सहित जेवत बल भोजन कछू कीनो ।। सूरस्याम हलधरसंग सखा बोल लीनों ।।५।।

★ राग भैरव ★ जागिये गोपाललाल आनंदनिधि नंदबाल यशोमति कहे वारंवार भोर भयो प्यारे ।। नयनकमलसे विशाल पढत वापिकामराल मदनललित वदन ऊपर कोटि वारिडारे ।।१।। ऊगत अरूण विगत शर्वरी शशिकी किरण हीन दीप मलीन छीन द्युति समूह तारे ।। मानों ज्ञान घन प्रकाश वीते सब भवविलास आस त्रास तिमिर तोष तरणि तेज जारे ।।२।। बोलत खग मुखर निकर मधुर घोष प्रति सुनों परम प्राणजीवन धनमेरे तुमबारे ।। मानों बंदी मुनिसूत वृंद मागधगण बिरद वदत जय जय जय जयति यश तुमारो उच्चारे ।।३।। विकसत कमलावली चले फंदचंचरीक गुंजत कलमधुर ध्वनि त्याग कंजन न्यारे ।। मानों वैराग्य पाय शोक कूपग्रह विहाय प्रेममत्त फिरत भृत्य गुनत गुन तिहारे ।।४।। सुनत वचन प्रिय रसाल जागे अतिशय दयाल भागे जंजाल विपुल दुःख कदंबटारे ।। त्याग भ्रमकंद द्वंद निरखकें मुखारविंद सूरदास अतिआनंद मेटे मदभारे ।।५।।

★ राग भैरव ★ जागिये गोपाललाल ग्वाल द्वार ठाडे ।। रेनअंधकार गयो चंद्रमा मलीन भयो तारेगण देखियत नही तरणि किरण बाढे ।।१।। मुकुलित भये कमलजाल भवर गुंजत पुष्पमाल कुमुदिनी कुमलांनी ।। गंधर्व गुणगान

करत स्नान दान नेम धरत हरत सकल पाप वदत वेद विप्र वानी ।।२।। बोलत नंद वारवार मुख देखूं तुव कुमार गायन भई बडी वार वृंदावन जेवो ।। जननी कहत उठो लाल जानत जिय रजनी तात सूरदासप्रभु गोपाल तुमकों कछु खेवो ।।३।।

★ राग भैरव ★ चिरैया चुहचहांनी सुन चकईकी वानी कहत यशोदा रानी जागो मेरे लाला। रविकी किरण जानी कुमुदिनी सकुचानी कमलन विकसानी दधिमथेंबाला ।।१।। सुबल श्रीदामा तोक उज्ज्वल वसन पहरें द्वारेंठाडे टेरतहे बाल गोपाला ।। नंददास बलहारी उठो क्यों न गिरिधारी सब कोऊ देख्यो चाहे लोचन विशाला ।।२।।

★ राग भैरव ★ जागिये गोपाललाल देखों मुख तेरो ।। पाछें गृह काज करों नित्य नेम मेरो ।।१।। अरूण दिशा विरूगत निशा उदय भयो भान ।। कमलनतें भ्रमर उडे जागिये भगवान ।।२।। बंदीजन द्वार ठाडे करत यश उच्चार ।। सरस भेद गावतहें लीला अवतार ।।३।। परमानंद स्वामी गोपाल परम मंगलरूप ।। वेद पुराण गावतहें लीला अनूप ।।४।।

★ राग भैरव ★ प्रातसमें घरघरते देखनकों आंईहें गोकुलनारी ।। अपनो कृष्ण जगाय यशोदा आनंद मंगलकारी ।।१।। सब व्रजकुलके प्राण जीवनधन यासुतकी बलहारी ।। आसकरण प्रभु मोहननागर गिरिगोवर्द्धनधारी ।।२।।

★ राग भैरव ★ जागिये गोपाललाल प्रगट भयो हंस बाल मिट गयो अंधकार उठो जननी मुखदिखाई ।। मुकुलित भये कमलजाल कुमुद बृन्दवन विहाल मेटोजंजाल त्रिविधताप तन नशाई ।।१।। ठाडे सब सखा द्वार कहत नंदके कुमार टेरतहें वारवार आइये कन्हाई ।। गैयन भई बडीवार भरभर पय थनन भार बछरा गनकर पुकार तुम विन यदुराई ।।२।। ताते यह अटक पारी दोहन काज हंकारी उठ आवो क्यों न हरि बोलत बलभाई ।। मुखते पट झटक डार चंदवदन दे उघार यशुमति बलहारजाय लोचन सुखदाई ।।३।। धेनु दुहन चले धाय रोहिणीकों लई बुलाय दोहनी मोहि दे मंगाय तबहींले आई ।। बछरा दियो थनलगाइ दुहत बैठकें कन्हाइ हसतहै नंदराय तहां मातादोऊ आई ।।४।। कहुं दोहनी कहुं धार

सिखवत नंद वारवार वह छबि नहि पारवार नंदघर बधाई ।। तब हलधर कह्यो सुनाय धेनु वन चलो लिवाय मेवा लीने मंगाय विविध रस मिठाई ।।५।। जेंवत बलराम स्याम संतनके सुखद धाम धेनु काज नहि विश्राम यशोदा जललाई ।। स्याम राम मुख पखार ग्वालबाल लये हंकार यमुनातट मन विचार गायन हकराई ।।६।। शृंग शंख नाद करत मुरली स्वर मधुर भरत व्रजांगना मन हरत ग्वाल गावत सुघराई ।। वृंदावन तुर्त जाय धेनु चरत तृण अघाय श्याम हरख पाय निखर सूरज बलजाई ।।७।।

★ राग भैरव ★ जननी जगावत उठो कन्हाई ।। प्रकट्यो तरणि किरण गण छाई ।।१।। आवो चंद्र वदन दिखराई ।। वारवार जननी बलजाई ।।२।। सखा द्वार सब तुमहि बुलावत ।। तुम कारण हम द्वारे आवत ।।३।। सूरस्याम उठ दरशन दीन्हो ।। माता देख मुदित मन कीन्हो ।।४।।

★ राग बिभास ★ यह भयो पाछिलो पहर । कान्ह कान्ह कटि टेरन लागे बावा नंदमहर ।।१।। गोपवधू दधि मंथन लागी गोपन पुरे वेणु ।। उठो बलश्याम वछरूवा मेलो रांभण लागी धेनु ।।२।। ब्रह्म मुहूरत भयो सवारो विप्र पढन लागे वेद ।। परमानंददासको ठाकुर गोकुलके दुःख छेद ।।३।।

★ राग बिभास ★ प्रातसमे कृष्ण राजीव लोचन ।। संग सखा ठाडे गौ मोचन ।।१।। विकसत कमल रटत अलि सेनी ।। उठो गोपाल गुहेंर तेरी बैनी ।।२।। खीन खांड घृत भोजन कीजे ।। सद्य दूध धौरीको पीजे ।।३।। सुतहि जान जगावत रानी ।। परमानंदप्रभु सब सुखदानी ।।४।।

★ राग बिभास ★ जागो कृष्ण यशोदाजु बोलें यह ओसर कोऊ सोवेहो ।। गावत गुन गोपाल ग्वालिनी हरखत दह्यो विलोवेहो ।।१।। गोदोहन ध्वनि पूर रह्यो व्रज गोपी दीप संजोवेहो ।। सुरभी हूंक वछरूवा जागे अनमिष मारग जोवेंहो ।।२।। वेणु मधुर ध्वनि महूवर वाजे वेत गहे कर सेलीहो ।। अपनी गाय सब ग्वाल दुहतहें तिहारी गाय अकेली हो ।।३।। जागे कृष्ण जगत के जीवन अरूण नयन मुख सोहेहो ।। गोविंद प्रभु दुहत धेनु धोरी गोपवधू मन मोहेहो ।।४।।

★ राग बिभास ★ उठे प्रातः अलसात कहेत मीठी तोतरी बात मांगतहे सद माखन लाईहें यशोदामात ।। वाजत नूपुर सुहात नाचत त्रैलोकनाथ देखत सब गोपी ग्वाल नाहीनें अघात ।।१।। नंदनंदन सुखदाई चिरजीयोरी कन्हाई निरखत मुख या ढोटाको जीजतहें माई ।। बालकेलि देखन आई रोम रोम सचुपाई वल्लभ मुख हरख निरख लेत हें बलाई ।।२।।

★ राग बिभास ★ भोर भये यशोदाजू बोले जागो मेरे गिरिधरलाल ।। रत्न जटित सिंघासन बैठो देखनकों आंयी ब्रजबाल ।।१।। नियरें आय सुफेंती खेंचत बोहोर्‌यो हरि ढांपत वदन रसाल ।। दूध दहीं माखन बहु मेवा भामिनी भरभर लाई थाल ।।२।। तव हरखत उठ गादी बेठे करत कलेऊ तिलकदे भाल ।। देवी आरती उतारत चतुर्भुजदास गावें गीत रसाल ।।३।।

★ राग बिभास ★ जगावन आवेंगी व्रजनारी अति रसरंग भरी ।। अतिही रूप उजागर नागर सहज शृंगार करी ।।१।। अतिही मधु स्वर गावत मोहनलालकों चित्तहरे ।। मुरारीदास प्रभु तुर्त उठ बैठे लीनी लाय गरे ।।२।।

★ राग बिभास ★ हों परभात समें उठ आई कमल नयन तुम्हारों देखन मुख ।। गोरस वेचन जात मधुपुरी लाभ होय मारग पाऊं सुख ।।१।। कमलनयन प्यारो करत कलेऊ नेक चिते मोतनकी जेरूख ।। तुम सपने में मिलकें विछुरे रजनी जनित कासों कहीयें दुःख ।।२।। प्रीति जो एक लालगिरिधरसों प्रकट भई अब आय जनाई ।। परमानंदस्वामी नागर नागरिसों मनसा अरूझाई ।।३।।

★ राग बिभास ★ हरिजू को दरसन भयो सवेरो ।। बहुत लाभ पाऊंगीरी माईदह्यो बिकेगो मेरो ।।१।। गली सांकरी एक जनेकी भटु भयो भट भेरो ।। दे अंक चली सयानी ग्वालिन कमलनयन फिर हेरो ।।२।। भोरही मंगल भयो भटूरीहै सबकाज भलेरो ।। परमानंदप्रभु मिले अचानक भवसागरको बेरो ।।३।।

★ राग बिभास ★ प्रातसमें नवकुंज द्वार व्है ललितालतित बजाई बीना ।। पोढे सुनत स्याम श्रीस्यामा दंपति चतुर नवीन नवीना ।।१।। अति अनुराग सुहाग भरे दोउ कोक कला जो प्रवीन प्रवीना ।। चतुर्भुजदास निरख दंपति सुख तन मन

धन न्योंछावर कीना ।।२।।

★ राग बिभास ★ प्रातसमें जागी अनुरागी सोवतहु तीरी स्यामजूके संगिया ।। चीर संभारत उठिरी दक्षिन कर वाम भुजा फरकी भर अंगिया ।।१।। भालमें सुहाग भारी छबी उपजत न्यारी पहरे कसुंभी सारी सोंधे रंग मनिया ।। अग्रस्वामी लाड लडाई बहुत कीनी बडाई फूली फूली फिरत अतिही सग मगिया ।।२।।

★ राग बिभास ★ जागो जागो हो गोपाल ।। नाहिन अति सोईये भयो प्रात परम सुचि काल ।।१।। फिर फिर जात निरख मुख छिन छिन सब गोपनके बाल ।। विन विकसत मानो कमलकोश ते ज्यों मधुकरकी माल ।।२।। जो तुम मोंहिन पत्याउ सूरप्रभु सुन्दर स्याम तमाल ।। तो उठिये आपन अवलोकिये त्यज निद्रा नयन विशाल ।।३।।

★ राग बिभास ★ लाल हि नांहि जगाय सकत सुनसों बातसजनी ।। अपने जान अजहु कान मानत सुख रजनी ।।१।। जब जब हों निकट जाऊँ रहत लाग लोभा ।। तनकी सूधि बिसर गई देखत मुख शोभा ।।२।। वचननको जिय बहुत करत सोच मनठाढी ।। नयनन नयन विचार परे निरखत रूचि बाढी ।।३।। यह विध वदनारविंद यशुमति जियभावे ।। सूरदास सुखकी रास कहत न बनिआवे ।।४।।

★ राग बिभास ★ प्रात समय उठ सोवत सुतको बदन उघारत नंद ।। रहि न सकें अतिसे अकुलाने नयन निशाके द्वन्द ।।१।। शुभ्र सेज मध्यते मुख निकरे गइ तिमिर मिट मंद । मनहुं पयोनिधि मथन फेन फट दई दिखाई चंद ।।२।। सुनत चकोर सूर उठ धाए सखीजन सखा सुछंद ।। रही न सुधि शरीर अधीर मन पीवत किरन मकरंद ।।३।।

★ राग बिभास ★ भोर भयो जागो नंदनन्द ।। संग सखा ठाढे जग वंद ।।१।। सुरभिन पय हित वत्स पिवाये ।। पंछी यूथ दसों दिश धाये ।।२।। मुनि सरतके तमचर स्वर हार्‌्ये ।। सिथिल धनुष रति पति गहि डार्‌्ये ।।३।। निशही घटी रवि रथ रूचि राजे ।। चंद मलीन चकई रति साजे ।।४।। कुमुदिनी सकुची वारिज

झूले ।। गुंजत फिरत अलिगण झूले ।।५।। दरशन देहो मुदित नर नारी ।। सूरदासप्रभु देव मुरारी ।।६।।

★ राग बिभास ★ प्रातसमें भयो सांमलियाहो जागो ।। गाय दुहुनकों भाजन मांगो ।।१।। रविके उदय कमल प्रकासे ।। भ्रमर उठ चले तमचर भासे ।।२।। गोप वधू दधि मंथन लागी ।। हरिजूकी लीला रसपागी ।।३।। बिकसत कमल चलत अति सेनी ।। उठो गोपाल गुहूं तेरी बेनी ।। परमानंददास मन भायो ।। चरण कमल रजते क्षणपायो ।।५।।

★ राग बिभास ★ प्रातसमय उठ चलहू नंदन गृह बलराम कृष्ण मुख देखिये ।। आनंदमें दिन जाय सखीरी जन्म सुफल कर लेखिये ।।१।। प्रथम काल हरि आनंदकारी पाछे भवन काज कीजिये ।। रामकृष्ण पुन वनहिं जायगे चरण कमल रज लीजिये ।।२।। एक गोपिका व्रजमें सयानी स्याम महातम सोईजाने ।। परमानंद प्रभु यद्यपि बालक नारायण कर माने ।।३।।

★ राग बिभास ★ में जान्यो जागि कन्हाई ताते यशुमति तेरे घर आई मेरे पिछवारे वेसेई सुरनसों तिनहूमधुर मुरलि बजाई ।।१।। जनम सफल कर विनती चित्त धर अपने कान्हकिन देहो जगाई ।। ले उछंग मोहनकों यशुमति आंगन ठाडी गोपी मुख देखत हँसत रसिक बलजाई ।।२।।

★ राग रामकली ★ भोर भयो जागोहो ललना कहा तुम अजहू रहे हो सोय ।। पीओ धार अपनी धोरीकी जासों देह बल होय ।।१।। वेंनी गुहूं देउं दृग अंजन मीसबिंदुका मुख धोय ।। हसत वदन सुख सदन निहानों नान्ही नान्ही दतियां दोय ।।२।। टेरत ग्वाल बाल खेलनकों गोरंभनहूं होय ।। व्रजजन सब ठाडी मुख देखत अति आतुर सब कोय ।।३।। उठ बैठे लए गोद यशोदा सुंदर सुत तिहुं लोय।। रसिक प्रीतम लागे गरें जननीपें मांगत रोटी रोय ।।४।।

★ राग रामकली ★ जाग हों बल गई मोहन ।। तेरे कारन स्याम सुंदर नई मुरली लई ।। ग्वाल बाल सब द्वार ठाडे वेर वनकी भई ।। गायनके सब बंद छूटे डगर वनकूं गई ।।२।। पीत पट कर दूर मुखतें छांड दे अलसई ।। अति आनंदित होत

यशुमति देखि युति नित्य नई ॥३॥ जागो जंगम जीव पशु खग ओर व्रज सबई ॥ सूरके प्रभु दरस दीजे होत आनंद मई ॥

★ राग रामकली ★ मुख देखनहों आई लालको काल मुख देख गई दधिबेचन जातही गयोहे विकाई ॥१॥ दिनते दूनों लाभ भयो घर काजर वछिया जाई ॥ आईहों धाय थंभाय साथकी मोहन देहो जगाई ॥२१॥ सुन प्रिया वचन विहस उठ बैठे नागर निकट बुलाई ॥ परमानंद सयानी ग्वालिनी सेनसंकेत बताई ॥३॥

★ राग रामकली ★ मैंहरिकी मुरली बन पाई ॥ सुन यशुमति संग छांड आपनो कुंवर जगाय देनहों आई ॥१॥ सुन त्रिय बचन विहस उठ बैठे अंतरयामी कुंवर कन्हाई ॥ मुरलीके संग हुती मेरी पहुंची दे राधे वृषभान दुहाई ॥२॥ में निहार नीची नहीं देखी चलो संग देउं ढोरे बताई ॥ बाढी प्रीति मदन मोहनसों घर बैठे यशुमति बोहोराई ॥३॥ पायो परम भावतो जियको दोऊ पढे एक चतुराई ॥ परमानंददास जाहि बूझो जिन यह केलि जन्म भरगाई ॥४॥

★ राग रामकली ★ जगावे यशोदा मैया जागो मेरे लाला ॥ दधि मिश्री वेलाभर लाई उठोहो कलेऊ करोहो गोपाल ॥१॥ गो दोहनकी भईहे बिरिया टेरत सखा संगके ग्वाला ॥ आसकरनप्रभु मोहन नागर मुख देखन आईं व्रजबाला ॥२॥

★ राग बिलावल ★ कोन परी नंदलालें बान ॥ प्रातसमें जागनकी विरियां सोवतहें पीतांबर तान ॥१॥ मात यशोदा कबकी ठाडी ले ओदन भोजन घृत सान ॥ उठो स्याम कलेऊ कीजे सुंदर वदन दिखाओ आन ॥२॥ संग सखा सब द्वारें ठाडे मधुवन धेनु चरावन जान ॥ सूरदास अतिही अलसाने सोवतहें अजहू निशिमान ॥३॥

★ राग बिलावल ★ जागिये व्रजराजकुंवर कमल कोश फूले ॥ कुमुदिनी जिय सकुच रही भृंगलता झूले ॥१॥ तमचर खग करत रोर बोलत वनराई ॥ रांभत गौमधुर नाद वछ चपलताई ॥२॥ रवि प्रकाश विधु मलीन गावत व्रजनारी ॥ सूर श्रीगोपाल उठे परम मंगलकारी ॥३॥

★ राग बिलावल ★ नंदके लाल उठे जबसोये ।। देख मुखारविंदकी शोभा कहो काके मन धीरज होये ।।१।। मुनि मन हरण युवतीको बपुरी रति पति जात मान सब खोये ।। ईषदहास दशन द्युति बिकसत मानिक ओप धरे जानो पोये ।।२।। नवलकिशोर रसिक चूडामनि मारग जातलेत मन गोये ।। सूरदास मन हरन मनोहर गोकुलवस मोहे सब लोये ।।३।।

★ राग बिलावल ★ सोवत आज अवार भई ।। उठो मेरे लालहों बलहारी भानु उदय भयो रेन गई ।।१।। ठाडी महेरि जगावतहरिकों वदन उघार निहार लई ।। सुंदरश्याम सखा तोहि बोलत खेलनकों आनंद मई ।।२।। हूंकत गाय लेत वछरूवा जाय खिरक करो घोष लई ।। सूरदासगोपाल उठे जब केलि सखा संग करत नई ।।३।।

★ राग भैरव ★ नंदनंदन बृंदावन चंद ।। यह कही जननी जगावत लालही जागो हो मेरे आनंद कंद ।।१।। आलस भरे उठे मनमोहन चलत चाल ठुमक अतिमंद ।। पौंछबदन अंबरतें जसोमति हीरदे लगाय उपज्यो आनंद ।।२।। सब व्रजसुंदरी आई देखनकों दरसन होत मीट्यो दुःख द्वंद ।। व्रतिपति श्रीगोपाल परिपुरन जाको जस गावत श्रुति छंद ।।३।।

★ राग भैरव ★ जागो मोहन भोर भयो ।। बिकसे कमल कुमुदनी मुंदी तमचरको सुर हास गयो ।।१।। टेरत ग्वालबाल सखा ठाडे पुरव दिश पंगति उदयो ।। सुनत बचन जागे नंदनंदन सूर जननी उच्छंग लयो ।।२।।

★ राग भैरव ★ हों परभातसमें उठआई कमलनयन तुह्मारो देखनमुख ।। गोरसवेचन जात मधुपुरी लाभ होय मारग पाऊंसुख ।।१।। कमलनयनप्यारो करतकलेऊ नेंकचिते मोतनकीजेरुख ।। तुमसपने में मिलके विछुरे रजनी जानितकासों कहीये दुःख ।।२।। प्रीति जो एकलाल गिरिधरसों प्रकटभई अब आयजनाई ।। परमानंदस्वामी नागरनागरिसों मनसा अरुझाई ।।३।।

★ राग ललित ★ आलस भोर उठीरी सेजतें करसुं मीडत अखियां ।। सगरी रेन जागी पियके संग देखत चकित भई सखियां ।।१।। काजर अधर कपोलन पीक

लगी हे रची महावर नखियां ।। रसिक प्रीतम दरपन ले प्यारी चीर सँवार मुख ढकियां ।।२।।

★ राग बिभास ★ दोऊ अलसानें राजत प्रात ।। श्री वृषभान नंदनी नंद सुत रसिक सलौने गात ।।१।। नीलपीत अम्बर लपटानो छिन छिन अधिक सुहात ।। मानहु घन दामिन अपनी छबि होई एक बिकसात ।।२।। बिन मकरंद अरबिंद वृन्द मिल अंग अंग बिकसात ।। सुखसागर गिरिधरन छबीलो निरख अनंग लजात ।।३।।

## कलेऊ के पद

★ राग भैरव ★ करो कलेऊ रामकृष्ण मिल कहत यशोदा मैया ।। पाछें वछ ग्वाल सब लेकें चलो चरावन गैया ।।१।। पायस सिता घृत सुरभिनको रुचिकर भोजन कीजे ।। जगजीवन व्रजराज लाडिले जननीकों सुख दीजे ।।२।। सीस मुकुट कटि काछनी पीत वसन उर धारो ।। कर लकुटीले मुरली मोहन मन्मथ दर्प निवारो ।।३।। मृगमद तिलक श्रवण कुंडल मणि कौस्तुभ कंठ बनावो ।। परमानंददासको ठाकुर व्रजजन मोद बढावो ।।४।।

★ राग रामकली ★ जयति आभीर नागरी प्राणनाथे ।। जयति व्रजराज भूषण यशोमति ललन देत नवनीत मिश्री सुहाथे ।।१।। जयति पातपर भात दधि खात श्रीदामा संग अखिल गोधन वृंद चरें साथें ।। ठोर रमणीक वृंदा विपिन शुभ स्थल सुंदरी केलि गुण गूढ गाथें ।।२।। जयति तरणि तनया तीर रासमंडल रच्यो तततताथेईथेई ताथे ।। चतुर्भुजदासप्रभु गिरिधरन बोंहोरि अब प्रकट श्रीविट्ठलेश व्रज कियो सनाथे ।।३।।

★ राग रामकली ★ मैया मोहि माखन मिश्री भावे ।। मीठो दधि मिठाई मधु घृत अपनो करसों क्यों न खवावे ।।१।। कनक दोहनी दे कर मेरे गौदोहन क्यों न सिखावे ।। ओटच्यो दूध धेनु धोरीको भरके कटोरा क्यों न पिवावे ।।२।। अजहू व्याह करत नहीं मेरो तोहि नींद क्यों आवे ।। चतुर्भुज प्रभु गिरिधरकी बतियां सुन ले उछंग पय पान करावे ।।३।।

★ राग मालकोस ★ लाल तोहे दुलहनि लाउंगी छोटी ।। चलो बेग अब करो कलेऊ माखन मिश्री रोटी ।।१।। चंदन घसकें ऊबट न्हवाऊं तब बाढेगी चोटी ।। श्रीविट्ठल बिपिन विनोद बिहारी वात नहिं ये खोटी ।।२।।

★ राग भैरव ★ आछो नीको लोनों मुख भोरही दिखाइये ।। निशके उनीदे नयना तोतरात मीठे बेना भावते जियके मेरे सुखही बढाइये ।।१।। सकल सुख करण त्रिविध ताप हरण उरको तिमिर बाढ्यो तुरत नसाइये ।। द्वारे ठाढे ग्वाल बाल करोहो कलेऊ लाल मीसी रोटी छोटी मोटी माखनसों खाईए ।।२।। तनकसो मेरो कन्हैया वार फेर डारी मैया बेंनी तो गुहों वनाइ गहरन लगाइये ।। परमानंदप्रभु जननी मुदित मन फूली फूली अति उर अंगन समाइये ।।३।।

★ राग भैरव ★ छगन मगन प्यारे लाल कीजिये कलेवा ।। छींकेते सगरी दधि उखल चढ काढलेहो पहर लेहो झगुली फेंट बांधलेहो मेवा ।।१।। यमुना तट खेलन जावो खेलन के मिस भूख न लागे कोन परी प्यारे लाल निश दिनाकी टेवा ।। सूरदास मदनमोहन घरही क्योंन खेंलो लाल देहो चकडोर बंगी हंस मोर परेवा ।।२।।

★ राग भैरव ★ हा हा लेहो एक कोर ।। बहुत बेर भईहे देखो मेरी ओर ।।१।। मेल मिश्रीदूध ओटच्यो पीयो व्हेहे जोर ।। अबहो खेलन टेरहें तेरे ग्वाल भयो भोर ।।२।। जागे पंछी द्रुम द्रुम सुन प्रातकरन लगे सोर ।। खेलवेकों उठ भाजोगो मान मेरो निहोर ।।३।। लेहूं ललन बलाय तिहारी छोर अंचल ओर ।। वदन चंद विलोक सीतल होत हृदय मोर ।।४।। बैठ जननी गोद जेंवन लागे गोविंद थोर ।। रसिक बालक सहज लीला करत माखनचोर ।।५।।

★ राग बिभास ★ गोविंद मांगतहें दधि रोटी ।। माखन सहित देहु मेरी जननी शुभ्र सुकोमल मोटी ।।१।। जो कछु मांगोसो देहु मोहन काहेको आंगन लोटी ।। कर गहि उछंग लेत महतारी हाथ फिरावत चोटी ।।२।। मदनगोपाल श्यामघनसुंदर छांडो यह मति खोटी ।। परमानंददासको ठाकुर हाथ लकुटिया छोटी ।।३।।

★ राग बिभास ★ दोऊ भैया मांगत भैयापें देरी मैया दधि माखन रोटी ।। सुन यशुमति एक बात सुतनकी झूठेही धामके काम अंगोटी ।।१।। बलभद्र गह्यो नासाको मोती कान्हकुंवर गही दृढकर चोटी ।। मानो हंस मोर भखलीने कहा वरणुं उपमा मति छोटी ।।२।। यह देखत नंद आनंद प्रेम मगनजु करत लोट पोटी ।। सूरदासप्रभु मुदित यशोदा भाग्य बडे करमनकी मोटी ।।३।।

★ राग बिभास ★ कमल नयन हरि करो कलेवा ।। मांखन रोटी सद्य जम्यो दधि भांत भांत के मेवा ।।१।। खारक दाख चिरोंजी किशमिस उज्ज्वल गरीय बदाम ।। सक्कर सेव छुहारे सिंघारे हरे खरबूजा जाम ।।२।। केई मेवा बहु भांतभांतके खटरसके मिष्ठान ।। सूरदासप्रभु करत कलेऊ रीझे स्याम सुजान ।।३।।

★ राग बिभास ★ करो कलेऊ कान्हर प्यारे ।। टेरत ग्वाल बाल सब ठाडे आये कबके होत सवारे ।।१।। मांखन रोटी दियो हाथ पर बल जाऊं हों खाओ ललारे ।। खेलो जाय व्रजहीके भीतर दूर कहूंजिन जाओं वारे ।।२।। टेंर उठे बलराम स्यामकों आवहु जांय धेनु वनचारें ।। सूरस्याम कर जोर मातासों गाय चरावन करत हाहारें ।।३।।

★ राग बिभास ★ अबही यशोदा मांखन लाई ।। में मथके अवहीजु निकास्यों तुम कारण मेरे कुंवर कन्हाई ।।१।। माग लेहु ऐसे ही मोपें मेरेही आगें खाहु ।। और कहूंजिन खेहो मोहन दीठ लगेगी काहू ।।२।। तनक तनकही खाउ लाल मेरे जो बढि आवे देह ।। सूरस्याम कछू होउ बडेसे वैरिनको मुख खेह ।।३।।

★ राग बिभास ★ मानो बातलालजू मेरी ।। करो भोजन रार भूलो हों मातजू तेरी ।।१।। दह्यो माखन दूधे मेवा परोस राखी थारी ।। करो भोजन लाल मेरे जाऊंहों बलहारी ।।२।। गोद बेठोहों जिमाऊं गाऊं तेरे गीत ।। खेलिवेकों तोहि बोलत ग्वाल तेरे मीत ।।३।। कहो ताहिं बुलाउं बैठे तेरे पास ।। करोहों दधिमथन उदयो सूरकमलप्रकाश ।।४।। मायके सुन वचन मोहन विहँस प्रेम गोपाल ।। कियो भोजनदियो अतिसुख रसिक नयन विशाल ।।५।।

★ राग रामकली ★ हों बलबल जाऊं कलेऊ लाल कीजे ।। खीर खांड घृत अति मीठोहे अबकी कोर बछ लीजे ।।१।। बेनी बढे सुनो मनमोहन मेरो कह्यो पतीजे।। ओटच्यो दूध सद्य धोरीको सात घूंट भर पीजे ।।२।। वारने जाऊं कमलमुख ऊपर अंचरा प्रेमरस भीजे ।। बोहोरस्यो जाय खेलो यमुनातट गोविंदसंग करलीजे ।।३।।

★ राग रामकली ★ पिछवारेव्हे बोल सुनायो ग्वालिन ।। कमलनयन प्यारो करत कलेऊ कोरन मुखलों आयो ।।१।। अरी मैया एक वन व्याई गैया वछरा उहां विसरायो ।। मुरली न लई लकुटिया न लीनी अरबराय कोऊ सखा न बुलायो ।।२।। चकृत भई नंदजुकी रानी सत्य यह केंधों समनो आयों फूले गातन मात रसिक बर त्रिभुवनराय शिरछत्र छायो ।।३।। बैठे जाय एकांत कुंजमें कियो विविध भांत मन भायो ।। परमानंद सयानी ग्वालिन उलट अंक गिरिधर पिय पायो ।।४।।

★ राग रामकली ★ कीजिये नंदलाल कलेऊ ।। खीर खांड ओर माखन मिश्री लीजिये परम रसाल ।।१।। ओटच्यो दूध सद्य धोरीको तुमकों देहों गोपाल ।। बेनी बढे होय बलकीसी पीजिये मेरे बाल ।।२।। हों वारी या बदनकमल पर चुंबन देहो गाल ।। गोविंदप्रभु कलेऊ कीनो जननी वचन प्रतिपाल ।।३।।

★ राग रामकली ★ माखन तनक देरी माय ।। तनक करपर तनक रोटी मागत चरणा चलाय ।।१।। तनक से मनमोहना की लागो मोहिं बलाय ।। तनक मुखमें दूधकी दतियां बोलतहे तुतराय ।।२।। कनक भूपर तनक रींगत नेत पकर्‌यो धाय ।। कंपियो गिरी शेष संक्यों सिंधु अति अकुलाय ।।३।। तनक माग्यो बहोत दीयो लियो कंठ लगाय । सूरप्रभुकी तनक चुटिया गुहत माय बनाय ।।४।।

★ राग बिभास ★ उठत प्रात कछु मात जशोदा मंगल भोग देत दोऊ छोरा । माखन मिसरी दह्यो मलाई दूधभरे दोऊ कनककटोरा ।।१।। कछुक खात कछु मुख लपटावत देत ढूराय मिलि करत निहोरा । परमानन्द प्रभु झबक परत दृग भरत लाल भुज करत कलोला ।।२।।

★ राग बिभास ★ मांगत दधि माखन उठ प्रात। हों दधि मथन करनकों बैठी तहां आय अरबरात ।।१।। कह्यो जशोदा देहो रोहनी हँस हँस बैठे खात। श्रीव्रजपति पिय मांग लेत हैं कहि कहि तोतरी बात ।।२।।

★ राग बिभास ★ लाडिली लाल सेज उठ बैठे सखीजन मंगलभोग धरावे। कंचनजडित थारमें मोदक ले कर ललिता हरि ढिंग आवे ।।१।। देत परस्पर कोर वदन में नैन उनींदे अति अरसावे। मृदु मुसिकात मोद बढावत दास निरख के बल-बल जावें ।।२।।

★ राग रामकली ★ करत कलेऊ दोउ भैया ।। रोटी रसाल माखन में मिसरी मेल खवावत मैया ।।१।। काचो दूध सद्य धौरीको तातो कर मथ प्यावत घैया। कर अचवन बीरा ले व्रजपति पाछे चले चरावन गैया ।।२।।

★ राग देवगंधार ★ रही उर लाय ललन कछु खेंहो ।। बहु मेवा पकवान्न मिठाई जो भावे सो लेहो ।।१।। जेवुंगो जब कही मेरी करि हां मोहि बाबा की आन ।। गोपीजन व्रजवासी बोले अरू बोले वृषभान ।।२।। इंद्र ही मेटी गोवर्द्धन थापे कान्ह कही सो मानी ।। ग्वाल बोल हरी संग बैठारे परोसत हें नंदरानी ।।३।। हरि हलधर जब कियो कलेउ जननी तात सुख पायो ।। व्रजबासी एकंत व्हे बैठे सूरश्याम मन भायो ।।४।।

★ राग मल्हार ★ कहा कहूँ छबि करत कलेऊ ।। थार साज बिंजन धर राखे कर कर कोर मुख देऊ ।।१।। गरज गरज बरसत चहुँदिसतें मनमोहन कछु ओर ही लेऊ ।। सुनत वचन जननी के सूर प्रभु कही न जात मुख से हू ।।२।।

★ राग मालकोंस ★ करत कलेऊ मोहनलाल ।। माखन मिश्री दूद मलाई मेवा परम रसाल ।।१।। दधि ओदन पकवान मिठाई खात खवावत ग्वाल ।। छित-स्वामी बन गाय चरावन चले लटकि गोपाल ।।२।।

★ राग बिभास ★ लेहु ललन कछू करहु कलेउ अपुने हाथ जिमाऊंगी। सीतल माखन मेल जु मिसरी कर कर कोर खवाऊंगी ।।१।। ओट्यो दूध सद्य धोरीको सियरो कर कर प्याऊंगी ।। तातो जान जो नहि सुत पीवत पंखा पवन

ढुराऊंगी ।।२।। अमित सुगंध सुवास सकल अंग कर उबटनो गुन गाऊंगी। उष्न सीतल हु न्हवाय लुछीने चंदन अंग लगाऊंगी ।।३।। त्रिविध ताप नस जात देख छबि निरखत हियो सिराऊंगी। परमानंद सीतल कर अंखियाँ बानिक पर बल जाऊंगी ।।४।।

★ राग सारंग ★ मोहन उठहिं रार मचाई ! छाँडिदै झूठौ काम धाम सब माखन रोटी दै मेरी माई ! कबहुँक झटकि गहत नीवीकर ।।२।। कबहुँक कंठरहत लपटाई, मुखचुंबति जननी समुझावति सद लौनी दैहौं कुँवर कन्हाई, उठि कर गही आपु ही नेती माखन बडी बार क्यों लाई, 'परमानंद' देखि यह लीला सुधि सागर मथिवे की आई ।।

★ राग सारंग ★ जसोदा पैंडे पैंडे डोले ! इत गृह कारज उत सुत कौ डरू दुहूँ भाँति मन तोलै ।। आवहु कुँवर ! तुम करहु कलेऊ जननि रोहिनी बोलै। परमानंद स्वामी फिरि चितयो आनंद हृदय कलोलै ।।

★ राग देवगंधार ★ माखन मोहि खवाइ री मैया ! बडी बार भई है भूखे हम हलधर दोऊ भैया ।। बडी कृपन देखी तू जननी ! देति नहीं अध घैया। 'परमानंददास' की जीवनि ब्रज-जन केलि करैया।

★ राग भैरव ★ खीजत जात माखन खात। अरुन लोचन भोंह टेडी बारबार जृंभात ।।१।। कबहू घुटरुन चलत रुनझुन धूरधूसर गात। कबहू खीजकर अलक ऐंचत नेन जलभर जात ।।२।। कबहू तोतरे बचन बोलत कबहू बोलत तात। सूरप्रभु की जननी बलिहसि लीयो कंठ लगात ।।३।।

★ राग भैरव ★ ऊठोमेरे लाल कलेऊ किजे ।। मधुमेवा पकवान मिठाई सद्यदुध धोरी को पीजे ।।१।। टेरत ग्वाल बाल खेलनको मोर मुकट मुरली कर लीजे ।। ईतनि सुनत बेहेस ऊठ बेठे सुरयेहे देखत सुख जीजे ।।२।।

★ राग मालकोंस ★ जेंवत लाल लाडिली राजें। ललितादिक सखी सकल परोसत कनक-पात्र-मध्य साजें ।।१।। कर मनुहार जिमावत प्यारो प्यारी जेंवत लाजें। रसिक प्रीतम तहां करत कलेऊ विविध मनोरथ साजें ।।२।।

★ राग रामकली ★ करत कलेऊ कुंवर कन्हैया ।। संकरसन के संग विराजत ओर राजत गोपन के छैया ।।१।। मधुमेवा पकवान मिठाई बहुविधि विंजन सरस सुहैया ।। ओट्यो दूध सद्य धोरि को तातो मिश्री बहुत मिलैया ।।२।। अरस परस दोऊ खात खवावत निरख रोहिनी जसुमति मैया ।। यह छबि देखिनंद आनंद परमानंददास बलिजैया ।।३।।

★ राग रामकली ★ जसोदा पेंडे पेंडे डोले ।। इत गृह काज उते सुत को डर दोऊ बात समतोलें ।।१।। आवहुं कुंवर तुम करो कलेऊ जननी रोहिनी बोलें ।। परमानंद प्रभु फिरिकें चितयो आनंद हृदय कलोलें ।।२।।

★ राग बिभास ★ उठे प्रात असलात कहेंत तोतरी तोतरी बात ।। मांगत है जैसे सद्य माखन लाई हे जसोदा मात वाजत नुपुर सोहात नाचत त्रैलोक नाथ देखत सब ग्वाल बाल नेंनन नही अघात ।।१।। नंदसुवन सुखदाई चिरजीबोरी कन्हाई जीवनमुख चाहि चाहि या निधि कों माई ।।२।। बाल केलि देखि आई रोम रोम सचुपाई श्री विट्ठल हर निरख लेत हे बलाई ।।३।।

★ राग बिभास ★ करो कलेऊ प्रान पियारे ।। माखन रोटी सद्य घृत दह्यो हे बलि बलि जाऊं खाउ ललारे ।।१।। टेरत ग्वाल बाल द्वारे व्हे आवहु खेलजु करो दुलारे ।। खेलन जाऊं बलि व्रज वीथन में दूरिकहुं जाउ दिनवारे ।।२।। टेरि उठे बलिराम स्याम को आवो जाउ धेनुले सवारे ।। सूर श्याम करजोरि मैया सों गाय चरावन जात उहारे ।।३।।

## व्रतचर्या के पद (मंगला शृंगार)

★ राग बिभास ★ व्रजानंदकंदम् व्रजानंदकंदम् ।। घोषपति भाग्यभुविजातम् ।। रसिक वरगोपिका पीतरसमाननं तव जय तु ममदृशि सुजातम् ।।ध्रु.।। रुचिरदरहास गलदमलपरि मललुब्ध मधुपकुलमुखकमल सदनम् ।। अमृत चयगर्व निर्वासना धरसी धुपाय यमनोजाग्नि शमनम् ।।१।। स्मित प्रकटित चारुदंत रुचिवदन, विधुकौमुदी हृत निखिलतापे ।। विलस ललिते हृद्यकनककलशये, मारकत मणिरिव दुरापे ।।२।। सुभग सुमुखी कंठनिहित

निजबाह रतिमत्त गजराज इवरुचिरम् ।। विहरविरहानलं चारु पुष्करचलन शीक रैरुपशमय सुचिरम् ।।३।। अरुण तरला पांग शरनिहित कुल-वधू, धृतितव विलोचनसरोजम् ।। ममवदन सुषमासरसिविलसतु सततमल, सगतिनिर्जित मनोजम् ।।४।। नंदगेहाल वालोदित स्त्रीराग से कसंवृद्धसुरवृक्षम् ।। व्रजवरकुमारिका बाहु हाटकलता सततमाश्रयतु कृतरक्षम् ।।५।। व्रजश्लाघ्य गुणरसिकता गुणगोपनातिशय रुचिरालापलीलम् ।। तादृगीक्षण जनितकुसुम शरभाव भरयुवतिषु प्रकटतरनिखिलम् ।।६।। रुचिरकौमार चापल्य जय व्रीडया, बल्लवी हृदयगृहगुप्तं ।।७।। प्रकटयन्निजन खरशरचयरैसम शरमिह जयसिहृदयभावितम् ।।८।। घोषसीमंतिनीविद्युदुद्य वेणुकलनिनदगर्जितस्त्वमिहसततं ।। वचन करुणा कृतदृष्टि वृष्टिरंगनवजलदमपिकुरु सुहसितं ।।९।।

★ राग बिभास ★ ग्वालिन मांगत बसन आपने ।। सीतकाल जलभीतरठाडी आवतनहीं दयाने ।।१।। तुम व्रजराज कुमार प्रबल अतिकोन परी यहबाने ।। हम सब दासी तिहारी व्रजपति तुम बहुनिपटसयाने ।।२।।

★ राग बिभास ★ ग्वालिनि आपनेचीरलेहो ।। जलतेनिकसनिहार नेकव्हैदोऊकरजोर आसीसलेहो ।।१।। कितहुंसीतसहत ब्रजसुंदरिहोत असित-कृशगात सबे ।। मेरे कहें पहेरो पटअंगनव्रतविधिहीन अबे ।।२।। हौं अंतरयामी जानतचितकी कितदुरावत लाजकें ।। करहों पूरणकाम कृपाकर शरदसमें शशिरातकें ।।३।। संततसूर स्वभावहमारो कित डरपतहो काममये ।। कैसी भांति भजेकोउमोकूंतेहूंसब संसार जये ।।४।।

★ राग रामकली ★ तुमहरि हरे केवलचीर ।। करत मुरलीवसनभूषणपराक्रमकुलधीर ।।१।। तुम आपजाय मनायलावत चतुरहलधरवीर ।। मुरलीकाध्वनि सुनत व्रजपति मनहिंहोतअधीर ।।२।।

★ राग रामकली ★ मोहन देहो वसन हमारे ।। जाय कहों व्रजपतिजूके आगें आगें करतअनीतललारे ।।१।। तुम व्रजराजकुमारलाडिले औरसबहिनके प्राण

पियारे ।। गोविंदप्रभु पियदासीतिहारी सुंदरवरसुकुमारे ।।२।।

★ राग रामकली ★ अहो हरि हमहारी तुमजीते ।। नागरनटपट देहो हमारे कांपतहै तनसीते ।।१।। कानन कुंडल मुकुट बिराजत कान्हकुंवरकेहौंवारी ।। हाहाखातपैयांपरतहो अबहौं चेरितुम्हारी ।।२।। तब तेरो अंबर देहों री सजनी जलतेंहोयसबन्यारी ।। सूरदासप्रभु तिहारे मिलनकों तुम जीते हम हारी ।।

★ राग रामकली ★ हरियश गावत चलीव्रज सुंदरि नदीयमुनाके तीर ।। लोचनलोलबांह जोटीकरश्रवणनझलकतबीर ।।१।। बेनीशिथिलचारुकांधेपर कटिपटअंबरलाल ।। हाथनलियें फूलनकीडलियां उरमुक्तामणिमाल ।।२।। जलप्रवेश कर मज्जनलागी प्रथमहेमकेमास ।। जेसें प्रीतम होय नंदसुत व्रतठान्यो यह आस ।।३।। तबते चीर हरेनंदनदंन चढेकदंबकी डारि ।। परमानंदप्रभु वरदेवेंकोउद्यमकियोहै मुरारि ।।४।।

★ राग रामकली ★ हमारो अंबरदेहो मुरारी ।। लेकरचीरकदंब चढबैठे हम जलमांझ उघारी ।।१।। तटपर विनावसन क्यो आवें लाजलगतहैंभारी ।। चोलीहार तुमहींको दीनेचीरहमेदेहोडारी ।।२।। तुमयहबातअचंभो भाखत नागीआवोनारी ।। सूरस्याम कछु नेहकरो जू सीतगयो तनमारी ।।३।।

★ राग रामकली ★ आवहु निकसघोषकुमार ।। कदंबपरतें दरसदीनों गिरिधरनवलकुमार ।।१।। नयनभरभरफलही देखो फल्योहैद्रुमडार ।। व्रततुह्मारो भयो पूरण कह्योनंदकुमार ।।२।। सलिलतें सबनिकस आवो वृथासहित तुषार ।। देतहूंकिन लेहो मोपेंचीरचोलीहार ।।३।। बांह टेकमोहि विनयकरो कहेवारंवार ।। सूरप्रभु कह्योमेरे आगें करोआनशृंगार ।।४।।

★ राग रामकली ★ वसनहरे सबकदंब चढाये ।। सोलेसहस्त्रगोपकन्यनके अंगआभूषणसहित चुराये ।।१।। अतिबिस्तारनीप तरुतामेलेलेजहांतहांलटकाये मणिआभूषण डारडारन प्रति देखत छबिमनहींअटकाये ।।२।। नीलांबरपाटंबरसारी श्वेतपीतचूनरी अरुणाये ।। सूरस्याम युवतिन व्रतपूरणको कदंबडारफलपाये ।।३।।

★ राग रामकली ★ आपकदंब चढदेखतस्याम वसनआभूषणसब हरलीने विनावसन जलभीतर वाम ।।१।। मुदितनयन ध्यानधरहरिकों अंतरयामि लीनीजान । बारबारसबतासों मांगत हम पावें पतिस्याम सुजान ।।२।। जलतें निकस आयतट देख्यो भूषणचीरतहां कछुनाहीं ।। इतउतहेर चकित भईसुंदरि सकुचगई फिर जलहीमाहिं ।।३।। नाभिपर्यंत नीरमेठाढी थरथरअंगकंपत सुकुमारी ।। को लेगयो बसन आभूषण सूरस्याम उरप्रीतिबिचारी ।।४।।

★ राग रामकली ★ लाज ओट यह दूरकरो ।। जोईमें कहों करो तुम सोईसकुच उहांरहिकहाकरो ।।१।। जलतेतीर-आयकर जोरोमें देखो तुमविनयकरो ।। पूरणव्रत अब भयोतुह्मारो गुरुजनशंकादूरकरो ।।२।। अब अंतरमोसोजिनराखो वारवार हठवृथाकरो ।। सूरस्यामकह्यो चीरदेतहों मोआगें शृंगारकरो ।।

★ राग रामकली ★ मोहनवसन हमारे दीजे ।। बारणेजाऊं सुनो नंदनंदन सीतलगत तनभीजे ।।१।। कोनस्वभाववृथा अनअवसर इनबातनकैसेजीजे ।। सुनदुखपावेमहरियशोमति जाय कहेंअबहीजे ।।२।। सब अबला जलमाँझ उघारीदारुणदुख कैसे सहीजे ।। प्रभुबलराम हम दासीतिहारीजोभावे सो कीजे ।।३।।

★ राग रामकली ★ जलते निकस तीर सब आवहु ।। जेसे सवितासो करजोरे तेसेंहूं जोरदिखावहु ।।१।। नवबालहम तरुणकान्हतुमकैसे अंगदिखावहु ।। जलते सबबाहटेककें देखहुं स्यामरिझावहु ।।२।। ऐसें नहींरीझोमें तुमकूंऊंचेबांहउठावहु ।। सूरदासप्रभुकहतहरि चोलीवस्तर तब पावहु ।।३।।

★ राग रामकली ★ तरुनी निकस सबेंतट आई ।। पुनपुन कहतलेहु पटभूषण युवतीस्यामबुलाई ।।१।। जलतेनिकस भई सब ठाढी करअंग ऊपरदीनो ।। वसन देहोआभूषणराखहु हाहापुनपुनकीनो ।।२।। ऐसेंकहाबतावतहो मोहिबांहउठायनिहारो ।। करसो कहाअंग उरमूंदे मेरे कहें उघारो ।।३।। सूरस्यामसोईसोईहम करहै जोई जोई तुमसब केहो लेहोंदावकबहु तुमसों हम बहुरकहातुमजेहों ।।४।।

★ राग रामकली ★ दृढव्रत कीनो मेरेहेत ।। धन्यकहें नंदनंदन जाऊसबनहीकेत ।।१।। करो पूरन काम तुमारो सरदरास रमाय ।। हरख भई यहे सुनत गोपी रहीसीस नवाय ।।२।। सबनको अंगपरसकीनो व्रतकीनोतनगार ।। सुरप्रभु सुख दियोमिलके व्रजचली सुकुमार ।।३।।

★ राग रामकली ★ व्रज घरगई सब गोपकुमार ।। नेकहूकहूं नहींमनलागत कामधामबिसार ।।१।। मातपिताको डर नमानत बदतनाहिनगार ।। हठकरत बिरझाततबजिय जननीजानतबार ।।२।। प्रातही सब चली उठ मिल यमुनातटसुकुमार ।। सूरप्रभुव्रत करन पूरन आये इनकी संभार ।।३।।

★ राग रामकली ★ देहोव्रजनाथ हमारीआंगी ।। नातर रंगबिरंग होय गोकेइबेरियाहममांगी ।।१।। बृजके लोगकहा कहेंगे देखपरस्पर-नागी ।। खरेचतुरहरिहो अंतरगत रेनपरी कबजागी ।।२।। सकलसूतकंचनकेलागे बीच रत्ननकी धागी ।। परमानंदप्रभु दीजिये नकाहेप्रेमसुरंगरंगपागी ।।३।।

★ राग रामकली ★ प्यारेनहिं करिये यह हांसी ।। दीजेचीर जायग्रहकों सब हमतोतुह्मारीदासी ।।१।। तुम ब्रजराजकुमार कहावत सबहिनके सुखरासी ।। श्रीविठ्ठलगिरिधरनलाल तुमरहत सदा वनवासी ।।२।।

★ राग रामकली ★ यमुनातट देखेनंदनंदन ।। मोरमुकुटमकराकृतकुंडल पीतवसनतनचर्चितचंदन ।।१।। लोचन तृप्तभये दरशनते उरकीतपत बुझानी ।। प्रेममग्न तब भई ग्वालिनीतनकी दशा भुलानी ।।२।। कमलनयन तटपर रहे ठाढे तहां सकुच मिली नारी ।। सूरदासप्रभु अंतरयामी व्रतपूरणवपुधारी ।।३।।

★ राग रामकली ★ अतितप करत घोखकुमारी ।। कृष्णपति हम तुरत पावे कामआतुरनारी ।।१।। नयनमुदितदरसकारण श्रवणशब्दविचार भुजाजोरतअंकभरहरिध्यानधर अंकवार ।।२।। सरदग्रीष्मनाहिदेखत करत तपतनुगार ।। सूरप्रभु सर्वज्ञस्वामी देखरीझेनार ।।३।।

★ राग रामकली ★ नीके तप कीयोतनगार ।। आपदेखत कदंबपें चढ मानलई मुरार ।।१।। बरषभरकितनेमसंयम इनकियो मोहिकाज ।। कैसेंहु मोको

भजेकोऊमोहि बिरदकीलाज ॥२॥ ध्यानव्रत इन कियो पूरण सीततपतनवारि ॥ कामआतुरभजें मोको नबतरुणी व्रजनारी ॥३॥ कृपानाथकृपालभयेतबजान जनकी भीर ॥ सूर प्रभू अनुमानकीनो हरूं इनकीपीर ॥४॥

★ राग रामकली ★ हमारो देहो मनोहर चीर ॥ कांपत दशनसीततन व्यापत हिमअतियमुनानीर ॥१॥ मानेंगी उपकार रावरो करहु कृपाबलबीर ॥ अतिदुखत वपुपरसत मोहनप्रचंड समीर ॥३॥ हमदासी तुम नाथहमारे विनतीकरत जलभीतर ठाढी ॥ मानो विकसिकुमुदिनी शशिसोअधिक प्रीतिबाढी ॥३॥ जोतुमहमहींनाथकर मानोयहमागेंहमदेहु ॥ जलतेनिकसिआयबाहिरव्हेवसन आपुनेलेहु ॥४॥ करधर सीसगई सन्मुखहरि मनमें करआनंद ॥ होय कृपाल सुरप्रभु सबविधअंबर दीने नंदनंद ॥५॥

★ राग रामकली ★ वनत नहीं यमुनाजी को नहिवो ॥ सुंदरस्याम घाटपर ठाढे कहो कोनविधि जयवो ॥१॥ केसे बसन उतारधरें हम कैसेंजलहीसमयवो ॥ नंदनंदन हमको देखेंगे केसेंकरकेन्हहेवो ॥२॥ चोलीचीरहार ले भाजत सो केंसे करपयवो ॥ अंकन भरभरलेत सूरप्रभु काल्हनयहिमगयैवो ॥३॥

★ राग रामकली ★ अतितप देख कृपा हरिकीनो ॥ तनकी जरनदूरभई सबकीमिल तरुणीसुख दीनो ॥१॥ नवलकिशोरध्यानयुवती मनमीडत पीठ जनायो ॥ विवश भईकछु सुधिनसंभारत भयोसबन मन भायो ॥२॥ मनमन कहत भयोतप पूरण आनंद उर न समाई ॥ सूरदासप्रभु लाज न आवत युवतिन मांझकन्हाई ॥३॥

★ राग रामकली ★ हसत स्याम व्रजघरको भागे ॥ लोगन यहकहिकहि सुनावत मोहनकरनलंगराईलागे ॥१॥ हम स्नानकरत जलभीतर आपुनमीडतपीठ कन्हाई॥ कहाभयो जोनंदमहरसुत हमसों करतअधिकहिं ढिठाई ॥२॥ लरिकाई तबही लोंनीकी चारबरषकोपाच ॥ सूरस्यामजाय कहेयशुमतिसो स्यामकरतहे नांच ॥३॥

★ राग रामकली ★ सीत तन लागत हे अतिभारी ।। देहों बसन सांबरे प्रीतम देह कंपत है सारी ।।१।। नेक दया नहीं आवत नंदनंदन अतिदुःखित व्रजनारी ।। गोविंदप्रभु करो मनोरथ पूरन हम तो दासी तिहारी ।।२।।

★ राग भैरव ★ हारि मानी नाथ ! अंबर दीजैं । नंदनंदन कुंवर रसिकवर मन-हरन, सुनहु गिरिवरधरन ! नीति कीजैं ।। सकल व्रज-नागरि दासी तुम्हरी सदा, तन-मांझ सीत अति होत भींजैं ।। 'छीत-स्वामी' अमित गुन-गननि आगरे ! बिनती करतिं सबैं मानि लीजैं ।।

## अथ वृतचर्या के पद

नंद नंदन वर गिरवर धारी, देखत रीझी घोष कुमारी ।
मोर मुकट पीतांबर काछे, आवत देखे गैयन पाछे ।।१।।
कोटि इंदु छबि बदन बिराजे, निरख अंग मनमथ लाजे ।।२।।
रवि सत छबि कुंडल नही तूते, दशन दमक दुति दामिनी भूले ।।३।।
नयन कमल मृग सावक मोहे, सुकनासा कि पटतर कोहे ।।४।।
अधर जंब फल पटतर नाही, विद्रुम अरु बंधु कल जाही ।।५।।
देखत रीझि रहीं बृजनारी, देह गृहे की सुरत बिसारी ।।६।।
यह मन में उनमान कियो तब, जब तप संयम नेम कियो अब ।।७।।
बार वार सविता हि सुनावत, नंद नंदन पति देहो उमापति ।।८।।
नेमधर्म वृत साधन कीजे, शिव सुं मांगि कृष्णपति लीजे ।।९।।
बरस दिवस को नेम लियो सब, सेवऊ मन बीच कर्म अब ।।१०।।
दृढ विसवास वृत ही को कीनो, गौरी पति पूजा मन दीनो ।।११।।
खट दस सहसृजुरी सुकुमारी, वृत साधत निके तन गारी ।।१२।।
प्रात उठी जमुना जल खोरे, सित उस्न कहुं अंग न मोरे ।।१३।।
पति के हेत नेम तप साधे, शंकर सुं यह कहि अवराधे ।।१४।।
कमल पत्र अरू माल चढ़ावे, नेन मूंदि यह ध्यान लगावे ।।१५।।

हमकुं पति दीजे गिरधारी, बडे देव तुम हो त्रिपुरारी ॥१६॥
ओर नहीं तुम सों हम मांगे, कृष्ण हेत यह कहि पाय लागे ॥१७॥
असेही करत बोहोत दिन बीते, प्रभु अंतर जामी मन में चीते ॥१८॥
एक दिवस आपुन आये तहां, नव तरुणी स्नान करत जहां ॥१९॥
बसन धरे जल तीर उतारी, आपुन जल पेठी सुकुमारी ॥२०॥
कृष्ण हेत अस्नान करत जहां, सब के पाछे आवत है तहां ॥२१॥
मीजत पीठ प्रीति अति बाढ़ी, चकित भई युवती फीर ठाडी ॥२२॥
देखे नंद नंदन गिरधारी, वृत फल प्रगट भयो बनवारी ॥२३॥
सकुची अंग जल पेठी लुकावे, बार बार हरि अंक मिलावे ॥२४॥
हसत चले तब नंद कुमार, लोगन सुनावत करत पुकार ॥२५॥
हार चीर ले चले कन्हाई, होंक दई करि नंद दुहाई ॥२६॥
डारी बसन भूषन सब भाजे, साम करन अब ढूंढन लागे ॥२७॥
भाजे कहां बचोगे मोहन, पाछे आय गई सब गोहन ॥२८॥
तनकी सुधि संभारी कछु नाहि, बसन आभूषन पेहरत जाहि ॥२९॥
चीर फटे कंचुकी बंध छूटे, ले तन बन हार लर टूटे ॥३०॥
प्रेम सहित मुख खीजत जाई, ढूंढहि बार बार पछिताई ॥३१॥
गई सबे त्रिय नंद महेर धर, जसोमति पास गई सब हर हर ॥३२॥
देखो महेर स्याम के ओगुन, जेसे हाल किये सब के उन ॥३३॥
चोली चीर हार दिखराये, आपुन भाजी इत कुं आये ॥३४॥
जमुना तट कोऊ जान न पावे, संग सखा लिये पाछे आवे ॥३५॥
सुत को बरजो हो नंदरानी, गिरधर भली करत नहीं बानी ॥३६॥
लाज लगत एक बात सुनावत, अंचर छोर हियो दिखरावत ॥३७॥
यह देखत हसि उठि जसोदा, कछु रिस कछु मन में मोदा ॥३८॥
आय गये तेई समे कन्हाई, बाह गही ले तुरत देखाई ॥३९॥

तनक तनक कर तनक अंगुरियां, तुम जोबन भरि नवल बोहोरियां ॥४०॥
जावो चलि तुम को हम चीनी, तुम्हारी जानि जानि में लीनी ॥४१॥
तुम चाहत सो इहां न पेहो, ओर बहोत बृज भीतर ले हो ॥४२॥
बार बार कहि कहा सुनावत, इन बातन कछु लाज न आवत ॥४३॥
देखोरी यह भांड कन्हाई, कहां गई तब की तरुनाई ॥४४॥
महरि तुम हि कछु दुखन नाही, हम कुं देख देख मुसकाही ॥४५॥
इनके गुन कैसे कोऊ जाने, ओर करत और घर ठाने ॥४६॥
देन उरानो तुम कुं आई, नीकी पहरावनी हम पाई ॥४७॥
चली जुवती सब घर घर को, मन में ध्यान करत हरि हर को ॥४८॥
बरस दिना तप पूरन कीनो, नंद सुबन को तन मन दीनो ॥४९॥
प्रात होत जमुना फीर आई, प्रथम चढी रहे कुंवर कन्हाई ॥५०॥
तीर आय युवती भई ठाड़ी, उर अंतर हरि सुरति बाढ़ी ॥५१॥
कहि सब जमुना जल खोरे, कर सों सिथल केस निरबोरे ॥५२॥
इत उत चितवत लोग निहोरे, कहो सबन अब चीर उतारे ॥५३॥
बसन आभूषन धरे उतारी, जल भीतर सब गई सुकुमारी ॥५४॥
माघ सीत को भीत न माने, षट रितु के गुन सब करि जाने ॥५५॥
बार बार बूड़त जल माही, नेकहु जल ते डरपत नाही ॥५६॥
प्रात ही ते एक जाम कन्हाई, नेम धर्म ही में दिन जाई ॥५७॥
इतनो कष्ट करे सुकुमारी, पति के हेत गोवर्धनधारी ॥५८॥
अति तप करत देख गोपाला, मन में कहि धन बृजबाला ॥५९॥
हरि अंतर जामी सब जाने, छिनछिन की यह सेवा माने ॥६०॥
वृत फल इन कुं तुरत दिखराऊं, बसन हरो ले कदंब चढाऊं ॥६१॥
तन साधे तप कर कुमारि, सब बसन हरे बनवारि ॥६२॥
हरत बसन कछु बार न लागी, जल भीतर युवती सब नागी ॥६३॥

भूषन बसन सबे हरि लाये, कदंब डार जहां तहां लटकाये ॥६४॥
अेसी नीप वृक्ष विस्तार, चीर हार धो कहुकित पार ॥६५॥
सबे समाने तरु प्रति डार, यह लीला रचि नंदकुमार ॥६६॥
चीर हार मानो तरु फूल्यो, निरख स्याम अपने मन फूल्यो ॥६७॥
नेम सहित युवती सब न्हाई, मन मन सविता विने सुनाई ॥६८॥
मूंदि नयन ध्यान उर धारे, नंद नंदन पति होऊ हमारे ॥६९॥
रवि कर विनय सबहीन दीनो, रदिया मांझ अवलोकन कीनो ॥७०॥
त्रिपुर सदन त्रीपुरार त्रिलोचन, गौरी पति पशुपति अघ मोचन ॥७१॥
गरल आसन अहि भूषन धारी, जेधर नंद गंगा सिर प्यारी ॥७२॥
करत बिने यह मांगत तुमसुं, करो कृपा हरि के आपुन सुं ॥७३॥
हम पावे जसुमति सुत पति, यह कहि कृपा करिदेहु रवि ॥७४॥
नित्यनेम करि चलि सुकुमारि, एक जाम तन कोहि बिसारि ॥७५॥
बृज ललना कहि तीर जु आई, अति आतुर हो तट को धाई ॥७६॥
जलते निकस तरुणि सबआई, चीर आभूषन तहां कछु नाही ॥७७॥
सकुच गई जल भीतर धाई, देख हसे तरु चढे कन्हाई ॥७८॥
बार बार युवती पछितांई, सबके बिन आभूषन नाई ॥७९॥
एसो कोन सबे ले भागो, लेत ही ताई बिलंबन लागो ॥८०॥
माघ तुसार युवती अकुलाई, हने कहुं नंद सुवन तो नांई ॥८१॥
हम जानत यह बात बनाई, अंबर हरि ले गये कन्हाई ॥८२॥
हो कहुं स्याम बिने सुन लीजे, अंबर स्याम कृपा करि दीजे ॥८३॥
थर थर अंग कंपती सुकुमारी, देख स्याम नहि सके संभारी ॥८४॥
यह अंतर प्रभु बचन सुनायो, वृत को फल दरसन सब पायो ॥८५॥
कहा कहेत मोसो बृज बाला, माघ सीत कित होत बिहाला ॥८६॥
अंबर जाय बताबहु तुम कों, तो तुम कहा देऊगी हम को ॥८७॥

तन मन अरपन तुमको कीनो, जो कछु हुतो सो तुम ही दीनो ॥८८॥
ओर कहा जु लेहो हम सुं, हम मांगत है अंबर तुम सुं ॥८९॥
यह सुनि हसि दीये लाल मुरारी, मेरो कह्यो करो सुकुमारी ॥९०॥
जल ते निकस सबे तुम आवे, तब ही भले तुम अंबर पावो ॥९१॥
भुजा पसार दीन होय भाखो, दोऊ कर जोर जोर तुम राखो ॥९२॥
सुन हो स्याम एकबात हमारी, नगन कहुं देखी है नर नारी ॥९३॥
यह महत कहां ते पाई, आज सुनी यह बात नवाई ॥९४॥
एसी साध मन ही में राखो, यह बानी मुख ते जिन भाखो ॥९५॥
हम तरुणी तुम तरुण कन्हाई, बिना बसन क्यों देऊ दिखाई ॥९६॥
पुरुष जात यह कहेत तुम जानहु, हा हा यह मुख में जिन आन हुं ॥९७॥
जो तुम बेठी रहो जल ही सब, बसन आभूषण नहि चाहत अब ॥९८॥
तबहि देहु जब बाहिर आवहु, बाह उठाय अंग दिखरावहु ॥९९॥
कित हुं सीत सहेत सुकुमारी, सकुच देहो जल ही में डारी ॥१००॥
फल्यो कदंब वृत करनि तुम्हारी, अब कहां लिजा करत हमारी ॥१०१॥
लेहु न आनि आपने वृत को, में जानत यहे बात के घत को ॥१०२॥
नीके वृत कीनो तन गारी, वृत लायो में धरि गिरधारी ॥१०३॥
तुम मन कामना पूरन करहुं, रास रंग रची रति सुख भरहु ॥१०४॥
यह सुनि के मन हरख बढायो, वृत को फल हम पूरन पायो ॥१०५॥
छांडो तुम यह टेक कन्हाई, नीर मांझ हम गई जड़ाई ॥१०६॥
आभूषन आपुन ही लेहो, चीर कृपा करि हम को देहो ॥१०७॥
हा हा लागे पाय तुम्हारे, पाप होत है जडन हमारे ॥१०८॥
आज हीते हम दासी तुम्हारी, केसे अंग दिखावे लुगाई ॥१०९॥
अंग दिखाये अमर पे नाही, तो ऐसे धो संग मे ही ॥११०॥
मेरे कहे नीकस सब आवहु, थोरे ही में भलो मनाव हु ॥१११॥

महा चुहि तरुनी मुसकानी, यह अपुनी थोरी कर जानी ॥११२॥
जोई जोई कहो सो तुम को सोहे, आज तुम्हारो पटतर कोहे ॥११३॥
हमारी पति सब तुम्हारे हाता, तुम ही कहो एसी बृज नाथा ॥११४॥
तप तन गरि कियो जेहि कारन, सो फल लगो नीप तरु डारन ॥११५॥
अबहु लेहो निकस पट भूषन, यह लागे हमकुं सब दुखन ॥११६॥
अब अंतर कित राखत हम सुं, बार बार कहेत हुं तुम सु ॥११७॥
गोपीन मील यह बात बिचारी, अब तो टेक परे बनवारी ॥११८॥
चलऊ न जाय चीर अब लीजे, लाज छाड़ नेकु सुख दीजे ॥११९॥
जलते नीकस तीर सब आई, बार बार हरि हरष बुलाई ॥१२०॥
बेठ गई तरुणी सकुनी, देहो स्याम हम अतिहि लजानी ॥१२१॥
छांड देहो यह बात सयानी, बेसे ही कर एक हि सो बानी ॥१२२॥
कर कुच अंग ढांकि भई ठाड़ी, बदन नवाय लाज अति बाढी ॥१२३॥
देहो स्याम अब अंबर डारी, हा हा दासी सबे तुम्हारी ॥१२४॥
एसे नहि बसन तुम पाव ऊ, बहां उठाय अंग दिखरावऊं ॥१२५॥
कहि बांह युवती कर जोरे, पुनि पुनि युवती करत निहोरे ॥१२६॥
धन धन कहे श्री गोपाला, नीकेवृत कीनो वृजवाला ॥१२७॥
आवहु निकट लेहो अब अंबर, चोली हार सुरंग पाटंबर ॥१२८॥
निकटई सुन के यह बानी, तरुणी नगन अंग अकुलानी ॥१२९॥
भूषन बसन सबन को दीने, त्रिया कहत कृपा हरि कीने ॥१३०॥
चीर आभूषन पहरे नारी, कहि तबहि ऐसे गिरधारी ॥१३१॥
तब हरि बोले कृष्ण मुरारी, मे तो तुम मेरी सवनी प्यारी ॥१३२॥
तुमहि हेत यहे बिपु बृज धारे, तुम कारन वैकुण्ठ विसारो ॥१३३॥
अब वृतकर तुम तनहि न गारो, हम तुम नेक न होत न्यारो ॥१३४॥
मो कारन तुम अति तप साधो, तन मन करी मोकुं अब राधो ॥१३५॥

जावो सदन अब सब वृजबाला, अंग परस मेटे जंजाला ॥१३६॥
जुवतीन बिदा दई गिरधारी, गई घरन सब घोष कुमारी ॥१३७॥
वस्त्र हरन लीला प्रभुकीनी, वृत तरुणी को वृत को फल दीनी ॥१३८॥
यहे लीला श्रवनन सुनि भावे, ओरन सिखावे, आपुन गावे ॥१३९॥
सूरस्याम तिन के सुखदाई, दृढ़ताई में प्रगट कन्हाई ॥१४०॥

★ राग रामकली ★ तिहारे बसन लेहो सुकुमारी तुम जल मांझ ऊधारी न्हाँई दोस लग्यो हे भारी ॥१॥ जलतें न्यारी होओ सबें तुम दोंऊ कर करो जुहारी ॥ जब निहपाप होओगी तुम सब व्रत फल होय कुमारी ॥२॥ ईतनि सुनत सबेमील निकसी कर प्रणाम जब हारी ॥ सूरदास प्रभु सर्वस लेके बसन दीये गिरधारी ॥३॥

★ राग रामकली ★ हमारे बसन देहो गिरधारी ईतनि दया तुमे नही आवत हम जल माझ ऊघारी ॥१॥ तुम ब्रजराज कुमार को डर कांपत हे अति भारी ॥ सुरदास प्रभु यहे बीनती तुम सबके दुख हारी ॥२॥

★ राग रामकली ★ हा हा करत घोख कुमारी ॥ सित तें तन कंपत थर धर बसन देहो मुरारी ॥१॥ मनही मन अति ही भयो सुख देख के गिरधारी ॥ पुरस ईस्त्री अंग देखे कहेते दोसन भारी ॥२॥ नेक नही तुमैं छोह आवत गई हा सब मारी ॥ सूर प्रभु अतही निठुर हौ नंदसुत बनबारी ॥३॥

★ राग रामकली ★ केसे बने जमुना असनान ॥ नंदको सुत तीर बेठ्यो बड़ो चतुर सुजान ॥१॥ हारतोरे चीर फारे नेन चले चुराय ॥ काल धोकें कान मेरी पीठ मिड़ी आय ॥२॥ कहेत जुवती बात सुन बस थकीत भई ब्रजनार ॥ सूर प्रभुको ध्यान धर मन रही बाम पसार ॥३॥

★ राग रामकली ★ अब कहा करि हे सुनि मेरी सजनी लालन खेल अनोखो पायो ॥ रूप भर्‌यो ईत रात चपल अति अंग अंग मनमथ निरखि लजायो ॥१॥ दीजे वसन प्रान पति सबके अवतो प्रात हों न आयो ॥ श्री विट्ठलगिरिधरन निरखि त्रिय तन मन मेघन तुम हाथ विकायो ॥२॥

★ राग रामकली ★ गोरी पति पूजत व्रजनारि ।। नेमधरम सों रहेंत क्रिया जुत बहुत करत मनुहारी ।।१।। यह कहेंत पति उमापति गिरिधर नंददुलार सरण राखिलीजेशिवसंकर तनही त्रखावत मार ।।२।। कमल पत्र मातुलप व्होत्र फल नाना सुमन सुवास ।। महादेव पूजन मनवचकर सूर स्याम की आस ।।३।।

★ राग रामकली ★ व्रजललनार विसोंकर जोरें ।। सीततन ही करत छेहोरितु त्रिविध काल जमुना जल खोरें ।।१।। गोरी पति पूजन तप साधत करतर हेंत नित नेम मागि रहे तजि सजागि चतुरदस जसुमति सुत के प्रेम ।।२।। हमकों देहों कृष्ण पति ईश्वर ओर कछू नहीं मन आन ।। मन वचनहिं हमारे सूरस्याम को ध्यान ।।३।।

## शीतकाल खंडिता के पद (मंगला शृंगार)

मागशर वद १४ से पोष वद १४ तक

★ राग ललित ★ आली तेरे आनन दृग आलसयुत राजत रसमसेरी । नवकिशोर अंग अंग रंगरेन रसेरी ।।१।। शिथिल वसन अधर दशन नखक्षत लसेरी ।। पीकछाप युगकपोल पिय मुख लाग हसेरी ।।२।। में जानें पहचाने वचन प्रीतम गुणग्रसेरी ।। पियविहारी लाल ललित उरोजन बीच वसेरी ।।३।।

★ राग ललित ★ कहो तुम सांचि कहांते आये भोरभये नंदलाल ।। पीक कपोलन लाग रही है घूमत नयन विशाल ।।१।। लटपटी पाग अटपटे बंदसो उर सोहे मरगजी माल ।। कृष्णदासप्रभु रसवश करलीने धन्यधन्य व्रजकी बाल ।।२।।

★ राग ललित ★ में जानीजु जहां रति मानी तुम आयेहो लालन जब चिरैयां चुहचुहानी ।। मुखकी बात कहा कहिये ठानी बात नहीं पहचानी ।।१।। एते पर अखियां रसमसानी और पगिया शिथिलानी ।। भाल यावक दृग अधरनअंजन देखियत प्रकट निसानी ।।२।। डगमगीचाल मरगजीमाल अंगचिन्ह उबटानी ।। सूरदासप्रभु गुणनिधानहो अंतरगतकी में जानी ।।३।।

★ राग ललित ★ भली हो कीनी लालगिरिधर भोर आये बोल सांचे ।। युवतिवल्लभ विरद कहियत याते तुम भलेहो वांचे ।।१।। यहां आये कोन

पठाये मानों मंत्रीकांचे ।। तहीहें सिधारो लालन जा त्रिया संग रंगराचे ।।२।। अधर सुकत स्वास थिर नहीं नवत्रिया संग बंदवाचे ।। सुन कृष्णदास नागरी कहत ज्योंही नचाये त्योंही नाचे ।।३।।

★ राग ललित ★ भोरभये मुखदेख लजाने ।। रतिकी केली बेलिरस सोचत शोभित अरूनयन अलसाने ।।१।। काजर रेख बनी अधरनपर ललितकपोल पीक लपटाने ।। मानों मधुप कंजपर बैठे उडनसकत मकरंद लुभाने ।।२।। हीयेहार अलंकृत बिनगुण आये सुरत रणजीत सयाने ।। सूरदासप्रभु पांउ धारिये जानतहौं परहाथ बिकाने ।।३।।

★ राग ललित ★ क्यों अब दुरतहो प्रकट भये ।। काहूके नयन उनीदे निकसे मानों शरसजे अरूण नये ।।१।। यावकभाल रागरस लोचन मशी रेखा जिहि अधर दये ।। वलयपीठ नितंब चरणमणि बिनगुण हारजु कंठ चये ।।२।। भुजताटंक ग्रीव वदनचिन्ह कपोलदशन धसये ।। आलिंगन चुंबन कुच चरचत मानों दोऊ शशि उर उदये ।।३।। चरण शिथिल अरू चाल डगमगी घूमत घायलसे समर जये ।। शोभितहै सब अंग अरूण अति स्यामा नख सायुज्य दये ।।४।। राजत बसन नील अरू राते आतुर मानों पलट लये ।। सूरदास प्रभुको मन मान्यों सुंदरस्याम जु कुटिल भये ।।५।।

★ राग ललित ★ कब देखो मेरी ओर नागर नंदकिशोर बिनती करत भयो भोर।। हम चितव तुम चितवत नाहीं मेरे करम कठोर ।।१।। जन्मजन्मकी दासि तिहारी तापर इतनो जोर ।। सूरदासप्रभु तुम्हारे रोमपर वारों कंचनखोर ।।२।।

★ राग ललित ★ तूतो मेरे प्राणनहूंते प्यारी ।। नेक चिते हँस बोलिये मोसों हों तो शरणतुम्हारी ।।१।। अंतर दूर करो अचराको खोलदे घूंघटपट सारी ।। कृष्णदासप्रभु गिरिधरनागर भरलीने अंकवारी ।।२।।

★ राग ललित ★ क्यों मोहन दरपन नहिं देखो ।। क्यों धरणि पग नखन खनावत क्यों मोतन नहिं पेखो ।।१।। क्यों ठाडे क्यों बैठत नाहीं कहा परी हम चूक ।।

पीतांबर गहि कह्यो बैठिये कहाजु रहे हो मूक ।।२।। उधरगयो उरते उपरेना देखियत अंगबिभाग ।। सूरस्याम लटपटी पाग पर यावककी छवि लाग ।।३।।

★ राग ललित ★ रमीरी तूं प्राण पियाके संग ।। मोसो कहा दुरावत प्यारी प्रकट जनावत अंग ।।१।। अधर दशन लागे निज पियाके पीक कपोल सुरंग ।। शिथिलित वसन मरगजी अंगिया नखक्षत उरज उतंग ।।२।। कृष्णदासप्रभु गिरिधर पियको रूप पियो दृग भृंग ।। डगमगात पग धरत धरणीपर करत मदन मानभंग ।।३।।

★ राग ललित ★ कहांते आये हो उठ प्रात अंगअंग अलसात ।। नयना दोऊ अरूण रगमगे घूमत आवत सुधि न कछू तन चिन्ह बने सब गात ।।१।। लटपटी पाग मरगजीमाला पीतांबर ऊपर जो विराजत मंदमंद मुसकात ।। यह छबि निरख निरखकें व्रजपति हँसत परस्पर लेत बलैया फूले अंग न समात ।।२।।

★ राग ललित ★ कहांते लाये हो इनसाथ आलस भरे हो जृंभात ।। जेअलि निपुण बसे तुम्हारे संग मधुपगुंज और न भाखत गावत गुणन गाथ ।।१।। हों तुमतेसूधेंव्है बूझत तुम उलटेही तरजत हम पर हमने कहा भरलीने बाथ ।। व्रजपति रसिक रसिक तुम दोऊ वेहुं रसिक जिन किये हैं चतुर्भुज सुन पिय गोकुलनाथ ।।२।।

★ राग ललित ★ आये आये हो तुम प्रीतम प्रातही रेन अनत वसे ।। रजनीमुख अवधि वदी हमसो बोल तिहारे नशे ।।१।। अंजन अधर भाल यावक रंग प्यारी पगपर सीस घसे ।। अटपटेभूषण मरगजी माला आधे सिर पाग धसे ।।२।। आलसयुत डगमगत चरणगति जिततित परत खसे ।। व्रजपति पिय ललनाको वचन सुन नागर नगधर नेक हँसे ।।३।।

★ राग ललित ★ आये आये हो तुम स्याम कहांते भोरही भवन हमारे ।। कहि गये हमसो वसे औरनके सांचे बोल तिहारे ।।१।। सगरीरेन मोहि मग जोवतभई बिरहव्यथा भई भारे ।। व्रजपति देहदिसा बिथकित भई तोऊ मेरे नयनके तारे ।।२।।

★ राग ललित ★ मेरेंआये भोर प्यारेबाकें सब निस जागे ।। सांची कहो तुम

वाही त्रिया कीसों पाये प्रेम रसचोर ।।१।। कहुं अंजन कहुं पीक लागरही काहेकों दुरावत नंदकिशोर ।। सूरदासप्रभु तुम बहु नायक रंगरंगे चहुंओर ।।२।।

★ राग ललित ★ मेरे आये भोर पियारे रेन कहां गमाई ।। कोन त्रिया संग वसपरे मोहन जानपरी चतुराई ।।१।। बिना हारबिनडोर बिराजत नखक्षत देत दिखाई ।। छीतस्वामी-गिरिधर वाही पे यावक पाग रंगाई ।।

★ राग ललित ★ कहांजु बसे सारी रात नंदसुत ।। चारपहर मोहि चार युग बीते तुमजो आये परभात ।।१।। लटपटीपाग नींदभरि अखियां काजर लाग्यो तेरे गात ।। चोलीके बंद चुभ रहे तनमें कसन भयो सब गात ।।२।। रहो रहो वृषभाननंदिनी सुनहै यशोदा मात ।। सूरदासप्रभु तिहारे मिलनकों रजनी कल्प सम जात ।।३।।

★ राग ललित ★ आज निस जागे अनुरागे कोनके रंगरंगेहो लाल ।। अरूण नयन अरु माल मरगजी देखियत शिथिल गतिचाल ।।१।। कहाकहों छबि कहत न आवे अंगअंग बोलत आल ।। कुम्भनदासप्रभु गिरिधर पिये भलें कहा कीये हाल ।।२।।

★ राग ललित ★ सांझजो आवन कहि गये मोहन भोर भये हीं देखे ।। गिनत नक्षत्र नयन अकुलाने चारपहर मानों युगते विसेखे ।।१।। कीनी भलीजो चिन्ह मिटाये अधरन रंग उरें नखरेखे ।। कुम्भनदासप्रभु भलीजो कीनी गिरिधर तुम्हारेहीं कहा लेखे ।।

★ राग ललित ★ ऐसेहीं ऐसे रेन बिहानी ।। चंद्र मलीन चिरैयां बोली शून्य कोककी वानी ।।१।। बे रसलुब्ध मानत नहीं काहू मनकी आस भुलानी ।। कोकिल स्याम स्याम अलि देख्यो श्याम रंगहै पानी ।।२।। स्याम जलद अरु स्याम कहावत सूरस्यामकी वानी ।। स्यामास्याम रंगरस क्रीडत स्यामहेतकीजानी ।।३।।

★ राग ललित ★ कमलसी अखियां लाल तिहारी ।। तिनसों तकतक तीर चलावत वेधत छतियां हमारी ।।१।। इन्हें कहा कोऊ दोष लगावत ये अजहूं न

संभारी ।। श्रीविट्ठल गिरिधारी कृपानिधि सुरतहीते सुखकारी ।।२।।

★ राग ललित ★ अरी तेरे नयन ललोने जिन मोहे स्याम सलोनें। अतिही दीरघ विमलअवलोकत कटाक्षन कोररी भारे पिय रस रीझेरी कोनें ।।१।। वदनजोति चंद्रहुते निरमल कुच कठोर भुजमृणाल बंकटटावक टोनें।। जनगोविंदप्रभु चलत ललित गति कसोटी लीक परी सोनें ।।२।।

★ राग ललित ★ ऐसेंई सांवरे रेन बिहानी ।। भोर भये बनधाम चले दोऊ मनमन नार सयानी ।।१।। प्यारी गई वृषभान पुरातन स्याम जात नंदधाम ।। प्रमदा महलद्वार व्है ठाढी बिनदेखी वेवाम ।।२।। प्रातभयो बनते व्रज आवत मनमन करत विचार ।। सुनहो सूर सकुचत ठठकत गृहगये नंदकुमार ।।३।।

★ राग ललित ★ तुमसों बोलवेकी नाहीं ।। घरघर गमन करत सुंदरपिय चित नाहीं एक ठाहीं ।।१।। कहा कहों सामलघन तुमसों समझ देख मन माहीं ।। कृष्णदासप्रभु प्यारीके वचन सुन हृदय माझ मुसकाहीं ।।२।।

★ राग ललित ★ आलस उनीदे नयना आवत घूमत झुक कैसे नीकें लागत अरूणवरन ।। जानतहों सुंदरस्याम रजनीके चारों याम नेक न पाये पलक परन ।।१।। अधरन रंग रेख उरही चित्र विशेष-शिथिल अंग डगमगात चरण ।। चतुर्भुजप्रभु कहां वसन पलटआये सांची कहो गिरिराजधरण ।।२।।

★ राग ललित ★ आज सगरी निशा कहां जागे लाल कहो किन सांची सुभग सांवरे माधो।। घोख मथनशब्द प्राणपति गहगह्यो रहोरहो मोहन सूर प्रकट भयो आधो ।।१।। कमल विकसत भये चक्रवाकी हसि सुमुखि पुलकित मुदित निज पति आराध्यो ।। विश्व मोहन बदन निरख नभ चंद्रमा सगुण लज्जित भयो प्रेम गुण बाध्यो ।।२।। ललित सुंदर राग चरचरी ताल धर मधुप गावत सुयशपिकन स्वर साध्यो ।। कहे कृष्णदास गोवर्धनधारी प्रिया धीर व्रजसुंदरी कृपण धन लाध्यो।।३।।

★ राग ललित ★ उनीदी आंखें रंगभरी दुरत नहीं पटओट ।। खंजनमीन मृगछीन भयेहें वार डारों लख कोट ।।१।। ढुरनमुरन झमकन अनियारे चंचल करतहै चोट ।। चतुरविहारी प्यारीकी छबि निरखत बांधत रसकी पोट ।।

★ राग ललित ★ लाल तुम आये रेन गमाय ।। रसबीती और तमचर बोले ग्वालन छोरी गाय ।।१।। चंद मलीन भयो दिनमणितें कुमुदरही कुमलाय ।। अरूण किरण कंजन पर परसत मधुप लिये मधु जाय ।।२।। आज रेन जागत भई सगरी तातें कछू न सुहाय ।। सूरदासप्रभु परे प्रीतिवश मिलके बिछुर्‍यो न जाय ।।३।।

★ राग ललित ★ सकल निश जागे केसें नयन ।। जानतहों कहां किये नंदसुत आनरमनि सुखचैन ।।१।। लटपटीपाग चालगति उलटी रसन अटपटे बेन ।। लगत पलक उघरत न उघारे मानों खंडित रस ऐन ।।२।। आज रेन जागत भई सारी अबहोंनी दुख देन ।। जानी प्रीति सूरप्रभु अब हम सुरत भई गति गेन ।।३।।

★ राग ललित ★ आज तो उनीदे होजुलाल ।। तुम पोढो हों चरण पलोंटों नां जानों जिय ख्याल ।।१।। नखक्षतपिय उर पीर हमारे देखियत हो बेहाल ।। सुनहिं सूर अब कठिन वचन त्रिय भरलीने अंकवाल ।।२।।

★ राग ललित ★ भलें भोर आये नयना लाल ।। अपनो पट पीत छांड नीलांबर लै बिलसे उरलाई लई रसिक रसीली बाल ।।१।। रति जयपत्र लिखत दीने ऊर स्यामघन विनगुण माल ।। नंददासप्रभु सांची कहिये फिरफिर प्यारे हमारे नंदलाल ।।२।।

★ राग ललित ★ आजतो उनीदे हो लाल ।। लाल लोचन पियके अलसाने बिनगुण बनी उरमाल ।।१।। डगमगात चरणधरत धरणी पर मेंजु लखे तबहीं बेहाल ।। अति तुतरावत बात बनावत लागोहो मोहि रसाल ।।२।। हमसो कपट औरनके वश भये हमारो मरणतुम्हारो ख्याल ।। तुम बहुनायक सुखके गाहक सूर बाल बेहाल ।।३।।

★ राग ललित ★ जहीं जाओ जहां रेन वसे ।। जानतहूंपिय रसिक शिरोमणि नागर जाघर रंगरसे ।।१।। अंजन अधर प्रकट देखियतहें नागवेल रंग निपट खसे ।। लटपटीपाग महावरके संग मानिनी पगपर सीस गसे ।।२।। घूमतहो मानों प्रियाउरगिणी नवविलास रस सहज दसे ।। शिथिलित वसन मरगजी माला पीठ वलयके चिन्ह कसे ।।३।। स्याम उरस्थल पर नखशोभित गगन द्वीज शशि उदित

जसे ।। सूरदासप्रभु प्यारीके बचन सुन नागर नगधर नेक हँसे ।।४।।

★ राग ललित ★ एकरंग स्याम सदा तुम आजभये पचरंग ।। चंदन वंदन अधरन अंजन पीककपोल सुरंग ।।१।। होंतो तिहारे हाथ बिकानी तुम औरनके संग ।। श्रीविट्ठल गिरिधर बहु नायक सीखे ऐसेढंग ।।२।।

★ राग ललित ★ रजनी राज लियो निकुंज नगरकी रानी ।। मदन महीपति जीत महारण श्रमजल सहित जृंभानी ।।१।। परम सूर सौंदर्य भृकुटी धनु अनियारे नयन बाणसन्धानी ।। दास चतुर्भुजप्रभु गिरिधर रससंपतिविलसी ज्यों मन मानी ।।२।।

★ राग ललित ★ जरीके जरायवेकों तातेतन तायवेकूं कटेलोन लायवेकूं द्वार आय ठरेहो ।। रेनबसे और ठोरअब आये मेरीओर वाहीपें पधारो कान्ह जाके वस परेहो ।।१।। बिनगुणमाल सोहे अधर अंजन रेख मेरीसों कान्ह अब जाओ तुम भरेहो ।। चारयाम वीते मोहि घडी भर कल्प न्याई सूरस्याम हियेहूते नेकहु न टरेहो ।।२।।

★ राग ललित ★ नख कहां लागे वन वानरा लगाये नख चख क्यों राते प्रात देख्यो ताते भानको ।। चंदन लग्योहे कहां विघ्नहरण पूजा कीनी वंदन लग्योहै कहां परस भयो थानको ।।१।। रेन रहे कहां नटनृत्य जहां अरवरे क्योंबोलो मोसों डरभयो आनको ।। गूजरीसों गुजरी अब आगे आय ठाडे सूर थेगरी कहांलों देत फाटे आसमानको ।।२।।

★ राग ललित ★ मदनमोहन पिय जागे रेन ।। आलस वश जृंभात शिथिल अंग अरूण तिहारे नयन ।।१।। उपटे उरहार प्रकट देखियत प्यारी कंठ लाग दियो सुख चेन ।। व्रजपति पियकी चाल चलन पर कोटिक वारो मेन ।।२।।

★ राग ललित ★ सुंदरलाल गोवरधनधारी कहां तुम रेन वसे मेरे लाल ।। आलस नयन वेन चलबोल छूटे बंद डगमगात चाल ।।१।। सारंग अधर रुचिर वपु नखक्षत कुच प्रसंग उर विलुलित माल ।। कररथ हीन मीन पति जीत्यो चढी धनुष मानो भ्रोंह विशाल ।।२।। नहीं सतभाय कहत प्रीतमसो फिरतहो पात पात अरूडाल ।। दास मुरारी प्रीति औरनसों देखत प्रकट तुम्हारे हाल ।।३।।

★ राग ललित ★ पिय बिन जागत रेन गई ।। अवधिवदि गए अजहूं न आये बडी वेर भई ।।१।। कछु कहत करत कछु कोने सीख दई ।। सांच नही एको अंग कहां रीत लई ।।२।। कैसे कीजे विश्वास भएहो बिषई ।। रसिकप्रीतम रावरीहे छिनछिन गति नई ।।३।।

★ राग ललित ★ रंगरसिक नंदननंदन रंगरसिक भामिनी मृगनयनी कमलनयन नागरनागरी ।। गिरिधर कल हंसहंसनी मानों गोप तरणि दोऊ समतूल गुणनसागर सागरी ।।१।। करवकेली बनविहार निरख जोटि लजतमार गावत स्वर मिलवत चारू ललित रागरी ।। खगमृग पशुसुनत नाद पीवत अधरसुधा स्वाद कृष्णदास वदत वाद सुफल भागरी ।।२।।

★ राग ललित ★ भोरही आये मेरे पाछे जोगिया अलख कही कही जागे ।। मोहनी मूरत एनमेनसे नेन भरे अनुरागे ।।१।। अंग भभूत भरे गरे सेली दरसतही वेरागे ।। तनमन वारोंगी धोंधी के प्रभुको राखोंगी एक सुहागे ।।२।।

★ राग ललित ★ कहांते आये जु चितचोर ।। चलत चलत पग परत हे पाछे मनो बधे रस डोर ।।१।। मुखकी बात करत हो मोसों जियकी कछु और ।। भूल पीताम्बर औढ नीलाम्बर अचरज उपज्यो जोर ।।२।। दरसन दिखावन कह गये मोसों ललित गावत आये भोर ।। बहुनायक धोंधीके प्रभु तुम नागर नंदकिशोर ।।३।।

★ राग ललित ★ धन्य धन्य ऋतु धन्य तेरे जोबन जनम करम गुन लच्छन ।। प्रेमरूप रसराज दुलारी उठ चल तुही विचिच्छन ।।१।। पठई तोहि लेन साँवरे मान छांड हठ रच्छन ।। तें बस कर लियो धोंधीको प्रभु साज भूखन पट दच्छन ।।२।।

★ राग ललित ★ आये अलसाने सरसानी में जाने जु लाल ।। दरक पाग अर्धसीस लटपटी महावर लाग्यो गाल ।।१।। नेना अरुन भये रंगराते सुन सुन हो स्याम तमाल ।। बेन बोलत कछु मुख नहीं आवत गोविंद हालबिहाल ।।२।।

★ राग ललित ★ कहांते आये चलेई जाओगे ठाडे रहो नेक स्याम ।। सुनो बात चित लाय लाडीले हमे छांड घनस्याम ।।१।। राखोंगी मधुर प्याय प्याय रस

बांधोगी कुच भुज दाम ।। तानसेनप्रभु छांडि अटपटी वसिये मेरेई धाम ।।२।।

★ राग ललित ★ बोलेरी आली कुहुक कुहुक कोयलिया ।। में बिरहिन कहां करुं पिया बिन हुक उठत मेरे जिया ।।१।। तेसिय मंद हेमन्त महाऋतु कांपत थिर थिर सिया ।। रसिक प्रीतम बिन कल न परत हे सुन आये घर पिया ।।२।।

★ राग ललित ★ भईरी आली तमचर बन खग रोर ।। आवन कह गये अजहू न आये जागत भयो मोहि भोर ।।१।। किन सोतनके बस परे प्रीतम चितवत चन्द चकोर ।। रसिक प्रीतम कुमुदिनी सकुचानी फूले कमल रवि भोर ।।२।।

★ राग ललित ★ सुनो मेरी वात ठाडे रहो ललना काहेको जु रुसात ।। घरी घरी पलपल देखे जुग बीते निस गई भयो प्रात ।।१।। पैयां परत हों तुमसों कर जोरों नेनन जल भर जात ।। सूरदास तुम्हारे रूसे पर हों तो हाहा खात ।।२।।

★ राग ललित ★ सुघर पिय आये भुज भरी कंठ लगाये नेनन हियो सिराए ।। खुले कपाट ठाड़ी मग जोवत सगरी रेन निवहाये ।।१।। को त्रिया के रति रंग राचे चारों जाम आनन नहिं पाये ।। रसिक प्रीतम ऐसे कबहू न कीजे बसि ब्रजजन सु पाये ।।२।।

★ राग ललित ★ सुघर पिय श्याम अजहु न आये धाम ।। सगरी रेन मोही मग जोवत भई बिसर गयो हरिनाम ।।१।। कोन सुघर जिन बस कर लीने राखे चारों जाम ।। रसिक प्रीतम रस वाही के भोगी ओरन सों नहिं काम ।।२।।

★ राग ललित ★ सुघर पिय एन जाके रहे तुमरेन ।। लटपटी पाग सुभग शीश डरक रहे कछुनेन ।।१।। कोन सुघर जिन रसबस कर लिने तनक नहिं चित्त चेन ।। रसिक प्रितम पिय निशके उनीदे बोलत अटपटे बेन ।।२।।

★ राग ललित ★ सुघर पियकोन वाईपें उतारो राइलोंन ।। नागर नटवर तनकचितवनमें वसेवाहीके भोन ।।१।। जासुखकों सनकादिक तरसत मुनिजन धरिहें मोंन ।। रसिक प्रितमचारी जामवसे अनहोनी भइहोन ।।२।।

★ राग मालकोस ★ जानन लागेरी लालन मिल विछुरनकी वेदन ।। दृग भर आयेरी मे कहीरी कछुक तेरी प्रीतिकि रीति आनाकानी भई घुमराई में गये एते

दिन ॥१॥ नेहकनावडेकी रूप माधुरी अंगअंग लागी सरस हियो वेदन ॥ नंददासप्रभु रसिक मुकुट मणि कर पर धर कपोल रहेरी ध्यान धर ररकत ढरकतहैरी तिलक मृगमेदन ॥२॥

★ राग मालकोस ★ प्यारेहौं बात कहत बिलग जिन मानों तुममोसों दुर जाय अनत रति मानी ॥ तुमहूं तोमेरें आये भलोजु मनावन सो तोही हम जानी ॥१॥ नखक्षत चिन्ह देखियतहें यहबात मेरेमनहूं न मानी ॥ तानसेनके प्रभु न्यारेव्है रहे क्यों याहीते सोतिनजानी ॥२॥

★ राग मालकोस ★ कहांते अधरनको रंग खोयो ॥ में जानी परिरंभन चुम्बन उरको चित्र सब धोये ॥१॥ तेरे संगम सुन व्रजसुन्दर लालन अनत न सोयो ॥ कृष्णदास पिय गिरिधर पियको करतल चिबुक परोयो ॥२॥

★ राग मालकोस ★ प्यारी तेरी पूतरी काजर हूतें कारी मानों भँवर दोऊ ऊडे बराबर ॥ चंपेकी डार कुन्द अलि बेठे लागी जीय बराबर ॥१॥ मानो कामको कटक सखीरी जब जिय होत डराडर ॥ हरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी दोउ मिल लरत झराझर ॥२॥

★ राग मालकोस ★ आवन कह गयै अज हू न आये सब निस बीति मोहे गिनगिन तारे । दीपक ज्योत मलिन भई हे किन दुतियन विरमाये प्यारे ॥१॥ तमचर बोले बगर सब खोले फले मधुप गुँजारे ॥ धोंधीके प्रभु तुम बहुनायक आये निपट सवारे ॥२॥

★ राग मालकोस ★ माई री रंग रहेरी लालन उन ही त्रियन संग, निरखत छबि ढंग परत ओरे ओरे ओरे ॥ ले दरपन मुख देखो जु प्यारे लाल, अधरनि अंजन लाग्यो ठोर ठोर ॥१॥ हमसों अवध बदी ओरनसों रत मानी, करत फिरत पीत नई नई पोर पोर ॥ जाओ जी जाओ तुम उनही के सूर प्रभु काहे को आवत प्रात मेरे दोर दोर ॥२॥

★ राग मालकोस ★ समे भयो मंगल मंगलनिध जागहु लाल रेन ढर आई ॥ आरती वदनकमल देखनको अरु सुरंग लोचन अरुनाई ॥१॥ नवरस केलि

बिलास किये छब प्रगटत जग सुन्दर ताई ।। बल्लभ सीलरूप गुन पूरन देहो सरस भागिन सुखदाई ।।२।।

★ राग मालकोस ★ सुफल भयोरी सिंगार कियो में पियसों रति मानी ।। धन्य घरी धन्य धन्य यह मुहुर्त जात जामिनी ।।१।। धन्य सुहाग भाग आजको सजनी कृपाकी दृष्टि चित मो कामनी ।। परमानंदस्वामी अरसपरस रस सानी ।।२।।

★ राग मालकोस ★ तेरी गति अगाध निरंजन निराकार नारायन ।। सप्तद्विप सप्तखंड पर्वत मेरु धा रच्यो नारायन ।।१।। तुही चंद तुही सूरज तुही उडगन निसके तारे तुही जल थल पवन तेज तुही धरनि आसमान ।। तानसेनके प्रभु घटघटमें करत गान अगमनिगम सकल सिष्ट धरत ध्यान ।।२।।

★ राग पंचम ★ जागेहो रेन तुम सब नयना अरूण हमारे ।। तुम कियो मधुपान घूमत हमारो मन काहेते जु नंददुलारे ।।१।। उर नखचिन्ह तुम्हारें पीर हमारे कारण कोन पियारे ।। नंददासप्रभु न्याय स्यामघन बरषे अनत जाय हम पर झूमझुमारे ।।२।।

★ राग पंचम ★ आये आये हो मन भावन कहांते भोरही भवन हमारे ।। तुम कियो रतिसुख हमदियो अति दुख सांचे बोल तिहारे ।।१।। तुम कियो मधुपान घूमत हमारो मन ऐसें कैसें बनै प्राणप्यारे ।। अबतो सिधारो जहां रेन बसे तहां गोविंदप्रभु पिय हमारे ।।२।।

★ राग पंचम ★ तुम कबतें सीखेरी लालन या लगनको जानन ।। सोवत नहीं रेन दिन लगी रहत ओसर कबहू हँस बोलत नहीं आनन ।।१।। ध्यान धरत पुनि अंक भरत हो गाय उठत वाके गुन गावत ।। सांची कहत हों बदन बिलोक्यो भामिनी भेद कटाच्छ जनायो नंददास पायन परे त्रन ले पानन ।।२।।

★ राग पंचम ★ उनीदी आंखें लागत प्यारी कजरारी कोरवारी ।। सगरी रेन जागी सुखसों पियाके संग तातें भई रतनारी ।।१।। घरी घरी पलछिन झपकत मानो करखत कंजपवारी ।। नंददासप्रभुकी छबि निरखत मोहे कुंजबिहारी ।।२।।

★ राग ललित ★ कब हूं वे ऐहें तुम बोलो मेरे हो मन मानी । उनने छल यह

कीनो मोसों। अनत जाय रति मानी ॥१॥ 'रसिकदास' प्रभु हैं बहु नायक। महा कपट की खानी ॥२॥

★ राग पंचम ★ सोनो सीतल लाग्यो सखी री मोहि ॥ मिलरस सदा प्रेम आतुर व्है चार जाम पिया जाग्यो ॥१॥ करि मनुहार बहोरि हों पठई अधर सुधारस माग्यों रसिक प्रीतम पिय वे बहुनायक तेरे प्रेम रस पाग्यो ॥२॥

★ राग मालकोस ★ कंचुकी के बन्द तरकर टुटे जात देखत मदन मोहन घनस्यामें ॥ काहेकों दुराव करत हेरी मोसो ऊमगत ऊरज दुरत क्यों यामें ॥१॥ बदन कमलपर अलकावल मानो खंजन मधुप लेत विस्त्रामें ॥ कृष्ण दास प्रभु गिरिधर नागर याही भांत लजावत कामें ॥२॥

★ राग मालकोस ★ स्याम अचानक आये सजनी फिर पाछे कहुं भागे। चोंक परी सपने में देखे बिमलवसन तन त्यागे ॥१॥ जरो यह नेना खुल गये मेरे पाये न ढिंग कहुं पागे ॥ नंददास बिरहिन केसे जीये पंचबान उर लागे ॥२॥

★ राग मालकोस ★ चढचढी अखियां तिन मधि पूतरी देखयत कोक पढीसी ॥ स्याम अरुन डोरे अछरसी पाटी मदन गढीसी ॥१॥ मृग जे सबे लजाय निहारो मानो मीन पढीसी ॥ व्रजाधीस हम कछु कहेगी देखियत प्रेम बढीसी ॥२॥

★ राग मालकोस ★ बडी बडी अँखियां नींदभरी ॥ लाल लाल डोरे कजरारी कोरे पियहिय माँझ गडी ॥१॥ सोचत रेन चेनकी बातें पीक लीक छबि छाप गडी ॥२॥ गोविंदप्रभु पिय बचन कहतहें बहुबिध लाड लडी ॥३॥

★ राग मालकोस ★ रेन बसे हो लाल जाके ताहीके फिर जाओ ॥ सियरे हाथ जिन मोय लगावो पाय परो किन ताके ॥१॥ खानपान भोजन सुध बिसरी चढ्यो रहत चित चाके॥ प्रभु कल्यान गिरिधर एते पर मोय करत कित नाके ॥२॥

★ राग मालकोस ★ लाल तुम किन सोतन बिरमाये ॥ कोन त्रिया ऐसी तुम पाई रति धन बहुत कमाये ॥१॥ स्यामसुंदर तुव मुख उपर चुंबन चिन्ह जमाये ॥ रसिक प्रीतम पिय जाओ जहां तहां आनंद उर न समाये ॥२॥

★ राग मालकोस ★ स्याम चले लालच में लपटाने ॥ कोन त्रिया ऐसी तुम पाई

नेना लख ललचाने ॥१॥ लंपट लोभी उडत भंवर ज्यों मदन जाल अरुझाने ॥ जगन्नाथ कवि राय के प्रभु के लच्छन हम सब जाने ॥२॥

★ राग मालकोस ★ स्याम तुम नेक निहारो मोतन ॥ ऐसे निठुर तुम कबके भये हो को त्रियनसों सो लाग्यों मन ॥१॥ में जान्यो कोऊ नवल नारने तुम्हें गहाय दीनोहे रतिधन ॥ चतुर बिहारी गिरधारी वश करके मनभर भुजदे चुंबन ॥२॥

★ राग मालकोस ★ प्रीतम प्यारी अधर रस घुंटत ॥ रति धन संचित करी कमाई मदन फोज गढ लुंटत ॥१॥ आलिंगन परिरंभन चुंबन नेन सेन गोला तहां छूटत ॥ चतुर बिहारी गिरधारी स्याम नाम के बचन भेद सब खूटत ॥२॥

## अभ्यंग और शृंगार दर्शन के पद (शृंगार से शयन सुधी)

★ राग टोडी ★ मजंन कर कंचन चोकी पर बेठी बांधत केशन झरोरी रुचिर भुजन की उपमा अनोपम ललित करन विच झलकत चूरोरी ॥१॥ लाल जटित बेंदीमाल विराजत तेसो ही फबि रह्योमांग सेंदूरी चतुर बिहारी पिय प्यारी के मुख पर वारों कोटिसरद ससिपूरोरी ॥२॥

★ राग टोडी ★ सोंधें न्हाय बेठी पेहेरिपर भूषन जहां फूलवारी तहां सुकवत अलकें॥ सो मास कलकरनख केससंभारत मानो उडगन में उडपति झलके॥१॥ विविध शृंगार लिए गडी पिय सखी भरिआये आनंद रति पति दलके॥ हरीदास के स्वामी स्यामा कुंज बिहारी छबि निरखत लागत नहीं पलकें ॥२॥

★ राग टोडी ★ मंज्जन करि चित्र चौकी वेगि प्यारी जू सहचरी चित्र विचित्र शृंगार करावत रतन जटित मनिन कें आभूषन सोहत तापर सुहा सारी चुनि पहरावत ॥१॥ सोडस विधि अलंकार रूप जीवन गुन अपार अपनी उपमां को आपु अंत न पावत॥ मुरारीदास प्रभु जाल रंध्र अवलोकत अति आतुर आतुलित छबि रई नेतिनेति निगम वनरानी को गावत ॥२॥

## कुल्हे के पद

★ राग रामकली ★ कहांलो वरनो सुंदरताई ॥ खेलत कुंवर कनक आंगन में

नयन निरख सुखदाई ॥१॥ श्वेत कुलहि शिर स्यामसुंदर के बहुविध रंग बनाई ॥ मानों नवघन ऊपर राजत मघवा धनुष चढाई ॥२॥ श्वेत पीत अरु असितलालमणि लटकन भाल रुराई ॥ मानों असुरदेवगुरु सनि मिल भूमि सुत समुदाई ॥३॥ अतिसुदेश मनहरत कुटिलकच लोचन मुख सकुचाई ॥ मानोंमंजुल कंजकोशपर अलि अवली फिर आई ॥४॥ दूधदंत अधरन छबि अद्‌भुत अलपतलपजलझाई ॥ किलकत हसत दुरतप्रकटत मानोघनमे विद्युलताई ॥५॥ खंडित वचन देतपूरणसुख अद्‌भुत यह उपमाई ॥ घुटुरुवन चलत उठत प्रमुदित मन सूरदास बलजाई ॥६॥

★ राग बिलावल ★ कुल्हे केसरी शीश बनी ॥ कटि केसरी पिछोरा सोहत अद्‌भुत बान बनी ॥१॥ अंग अंग भूखन छबिराजत हीरा मानिकमनी ॥ हरिदास प्रभु शोभा निरखत श्रीगोवर्धननाथ धनी ॥२॥

★ राग धनाश्री ★ क्रीडत मणिमय आंगनरंग ॥ पीत ताफस्ताकी झगुली बनीहे कुलही लालसुरंग ॥१॥ कटिकिंकिणी घोषविस्मित सखीधाय चलत बलसंग ॥ गोसुत पूंछ भ्रमावत करगहिं पंकरागसोहे अंग ॥२॥ गजमोतिन लरलटकन शोभित सुंदर लहरत रंग ॥ गोविंदप्रभुके जु अंगअंगपर वारों कोटि अनंग ॥३॥

★ राग धनाश्री ★ शोभित स्यामतन पीत झगुलिया ॥ कुलही लाल लटकन छविबघना चलन सिखावत मैया ॥१॥ डगमगात पग धरत मनोहर अतिराजत पेंजनियां ॥ यशुमतिमन प्रफुल्लित अति आनंदसों लेत बलैयां पुन पुनियां ॥२॥ किलक किलक करलेत खिलोना प्रेममग्न हुलसैयां ॥ अडबराय देखत फिरपाछे चलत घुटुरुवन धैया ॥३॥ गोपवधू मुखकमलनिहारत लालन सबसुख दैया ॥ ब्रजलीला ब्रह्मादिक दुर्लभ गावत दाससदैया ॥४॥

★ राग धनाश्री ★ खेलत लाल अपने रसमगना ॥ गिरगिर उठत घुटुरुवन टेकत किलककिलक जननी उरलगना ॥१॥ पायपैजनी ओर पनसूरा कटिकिंकिणी पहूंची जरीकंकना ॥ हारहमेल हसली ओर दुलरी कंठ सिरी लटकन छबिबघना ॥२॥ कुलही लाल ओर पीत झगुलिया रिंगन करत नंदजू के

अंगना ।। निरखत दासजायबलहारी चिरजीयो यशोदाको छगना ।।३।।

★ राग नट ★ आज बनेरी लालन गिरधारी या बानक पर बलहारी ।। चंपकभरी कुल्हे सिर लटकत कुसुंबी पाग छबभारी ।।१।। वरूहा पीत स्याम अंग पर अरगजा मोजे मोहे मनमथ मनुहारी ।। गोविंदप्रभु रीझी वृषभान नंदनी सोह कंचुकी छोरत भरत अंकवारी ।।२।।

★ राग नट ★ आज बने व्रजराज कुंवर बैठे सिंघद्वार निकस अंग अंग नव नव छबि वरणि नजाई ।। अलक तिलक नासिकाजो कपोल लोलकुंडल छबि देखत लजावत कोटिकोटि रबि अरुण अधर दशननमें झाईं ।।१।। लटपटी विच पाग लालके पीतकुल्हे भर गुलाल लटकत सिर सेहरो बन्यो शोभा अधिकाई ।। गोविंदप्रभुकी बानिक देखत विथकित सब व्रजजन मन रूपरास गिरिवरधर सुंदर मणिराई ।।२।।

★ राग नट ★ आज मनमोहन पिय ठाडे सिंघद्वार मोहत व्रजजन मन ।। तेसिय मोहन सिर पाग बनी तेसी कुल्हेसुरंग तेसिय बनी मालवन ।।१।। तेसीये कंठमणी तेसोई मोतिनहार तेसीये पीतवरणी खुलीहें स्यामतन ।। गोविंदप्रभुके जु अंग अंग पर वारफेर डारो कोटि मदन ।।२।।

★ राग गोरी ★ मोहन तिलक गोरोचन मोहन मोहन ललाट अति राजै । मोहन सिर पर मोहन कुलही मोहन सुरंग अति भ्राजै ।।१।। मोहन स्रवन कुसुम जु मोहन कपोल अवतंस विराजै । मोहन अधर पुट पै मोहन मुरलि मोहन कल बाजै ।।२।। मोहन मुखारविंदपै झूमत मोहन अलक-अलि मधुकाजै । गोविन्द प्रभु नखसिख जू मोहन मोहन घोख सिरताजै ।।३।।

★ राग कान्हरो ★ मोहन मोहनी सिर पाग ।। बहोत भांत सवारत रुचिकर श्रीदामा अनुराग ।।१।। स्याम श्वेत सुदेश कुल्हे बनी विचविच फुलनलाग ।। निरखत नेन सुहात सुभगता कृष्ण दास बड़ भाग ।।२।।

★ राग कान्हरो ★ स्याम सुभग तनझांई ।। उमग चली प्रीत वरनी ते ताहु में अति अंगराग शोभा कहियन जाई ।।१।। लालपाग चौकरी बिराजत कुल्हे सुरंग

ढरकाई ।। स्निग्ध अलक बीचबीच राखी चंपकली अरुझाई ।।२।। देखत रूप ठगोरी सी लागत नेनन रहे अरुझाई ।। गोविंद प्रभु सब अंग अंग प्रति सुंदर मणिराई ।।३।।

★ राग कल्याण ★ कनक कुसुम अतिशोभित श्रवणन ।। घूमत अरुण तरुण मदमाते मुसकात आनअन ।।१।। गोल पाग पर कुल्हे सुरंग तामें अलक रेख बणी ।। गोविंद प्रभु त्रैलोक विमोहत कौस्तुभमणी ।।२।।

★ राग कल्याण ★ बनी मोहनसिर पाग सांकरे पेचन चोकरी ।। कुल्है सुरंग कुसुम भरी और सेहरो चंपकभरी छबि लाग ।।१।। सूथनलाल पीतवरुनी और अरगजा मोजें शोभित स्याम सुभाग ।। गोविंदप्रभुकों व्रजवासिन प्रति छिन छिन नव अनुराग ।।२।।

★ राग अडानो ★ तेरी हों बलिबलि जाऊं गिरिधरन छबीले । कुलहि छबीली अरु पाग छबीली अलक छबीली तिलक छबीलो माई री नैन छबीले प्यारी जू के रंग रंगीले ।।१।। अधर छबीले बसन छबीले बेन छबीले हो अति सरस सु ढीले । 'गोविंद' प्रभु नखसिख अंग अंगन लालन अति ही रसीले ।।२।।

★ राग कान्हरो ★ आज की वानिक कही न जाय ।। रही धस पाग लाल आधे सिर कुल्हे चंपक तापर हीरा लटकाय ।।१।। वरुनी पीत पहरे छूटे बंद अरगजा मोजें तन बिंबित स्याम झांई ।। दरशनीय वनमाल तिलक देखिये बिथके कोटि मदन और गोविंद बलबल बलजाई ।।२।।

★ राग कल्याण ★ लाडले लालकी वंदस कही नपरेहो ।। कुल्हे चंपक भरीहो अतिसुरंग और लटपटी पाग रही आधे सिरधस ।।१।। वरुणी पीत हरे छूटी बंद अरग जामो जेसो स्याम उरस ।। गोविंदप्रभु सुरत शिथिल दंपति प्रेमगलित बैठी कुंजमहलतें निकस ।।२।।

★ राग नाईकीय ★ राखीहो अलकन बीच चंपकली गनगनी ।। जगमगात हीरा लाल कुल्हे पर पाग चोकरी अति बनी ।।१।। सुभग नयन तरुण मदमाते मुसकाते आनअन ।। गोविंदप्रभु व्रजराजकुंवर धन्य धन्यहो धन्य धन्य ।।२।।

★ राग बिहाग ★ पलछिन रजनी घटत ।। त्योंत्यों प्यारी राधा जुके नवल लाल के तिलक भाल पर कुलही चरन लोटत ।।१।। हां हां करत भरत अंकवारी मुसक मुसक मन मान सटत ।। धन धन भाग गोपीजन सूर सुख रहस्य बधाई बटत ।।२।।

★ राग बिहाग ★ पोढे नवल लाल गिरधारी ।। रंग महेल में रति सुखशय्या संग शोभित बृखभान दुलारी ।।१।। लाल झरी को वागो बन्यो अति लाल कुल्हे शोभित अति भारी ।। सूथन चरन बनी अति गाढी झलमलात वीच झरतारी ।।२।। अतलरु को लहेंगा प्यारी कटि कंचुकी झुमक सारी ।। मधुरे सुर गावत केदारो मीठीतान लेत सुखकारी ।।३।। परदा परे मनोहर द्वारे दिपक ज्योत सरस उजियारी । चत्रभुजदास निरख दंपत सुख तन मन धन कीनो बलिहारी ।।४।।

## कुल्हे टीपारो

★ राग टोड़ी ★ आज अति शोभित नंदकिशोर ।। सिरपर कुल्हे टिपारो राजत बनीहे चन्द्रिका मोर ।।१।। मल्लकाछ कटि बांध प्रीतपट अंग अंग छब छारे ।। सुंदर नेन बंकअवलोकन रसिक प्राण चित्तचोर ।।२।।

## टीपारो के पद

★ राग टोड़ी ★ नाचत गोविंद संग सखा मिल आवत नंदन आनंद हीये । उडपति निरख नयन छब लाज्यो पाय पयोध स्वरूप किये ।।१।। कोउ मृदंग कोउ ताल कोउ जंत्र कोउ रवाव मृदुल गान कीये । तीन ग्राम सुरभदे जनावत नंदकुमार कर वेनु लीये ।।२।। कमल बरन सिर बन्यो टिपारो काछनी पीत कटि बंदक सीये । मानीक दूती सभरन उपरेना कनक खचित मनि पदिक हीये ।।३।। उरवन मास मधुप झंकारत सुरन देत मधु स्वाद लीये ।। कृष्णदास लीला लाल गोवर्धनधारी वृजजन पीय रसीये ।।४।।

★ राग टोड़ी ★ कटि बरनी के लटपटात पीत पट ।। शीश टिपारो मोर चंदसो मिल धात प्रवाल विचित्र भेख नट ।।१।। पचरंग छींट उदार ओढनी लटकत चलत तरनि तनया तट ।। वृजभामनी के मोती हारसों उरझी रही कुंतल अलक लट ।।२।। ज्यों गजराज मत्त किरनी संग आलिंगत सुभग कनक घट ।। कृष्णदास

प्रभु गिरधर नागर विहरत वन विहार बंसीबट ॥३॥

★ राग टोड़ी ★ निर्तत रस दोऊ माई रंग ॥ सुलप संच गतिभेद ग्रग्रतकिट धिकिट धुमधुम धाजत मृदंग ॥१॥ कनक वरण टिपारो सिर कमल बरन काछनी कटि वनजुधात अति विचित्र स्याम अंग ॥ गोविंद प्रभु त्रैलोक विमोहित देखत ठगे से ठाडे मोहत कोटि अनंग ॥२॥

★ राग सारंग ★ छबीलो लाल दुहत धेनु धोरी ॥ माथे कमलवरणको टिपारो ओढे पीतपिछोरी ॥१॥ कहारी कहूं कछु कहत न आवे डारी कठिन ठगोरी ॥ कुमनदासप्रभु सुख गिरिधरको जब भेटूं भरकोरी ॥२॥

★ राग सारंग ★ हौं बलिहारी आजकी बानिक पर। श्वेत काछ काछे नंदनंदन श्वेत टिपारो सोहत सिर पर ॥१॥ नख सीख लौं सिंगार कहा कहौं जमुना पुलिन ठाडे कदमतर। 'सुघरराय' प्रभु बेनु बजावत मोहि लिये सब व्रजनार ॥२॥

★ राग पूर्वी ★ गायनके पाछेंपाछें नटवर काछेंकाछें बन्योहे टिपारो आछो लालगिरिधारिके ॥ धातुको तिलक किये बनी गुंजमाल हिये वनके शृंगार सब विपिन विहारीके ॥१॥ नटवरवेष किये ग्वालमंडली संगलिये गावतबजावत देत कर तारीके ॥ गोविंदप्रभु वनते व्रज आवतदोरदोर व्रजनारी झांकत मध्य जारीके ॥२॥

★ राग पूर्वी ★ नाचत गावत वनते आवत लाल टिपारो सीस रह्यो फबि ॥ घनतन वसन दामिनी मानों कुंडल किरण निरख मोहे रवि ॥१॥ हित हरिबंस और शोभानिधि गौरज मंडित अलकनकी छबि ॥ स्यामधाम सरस्वती सकुच रही या बानिक वरणत को कवि ॥२॥

★ राग गोरी ★ आज लालटिपारे छबि अधिक बनी ॥ बिचबिच चारुसी खंड बिचबिच मंजूरीन्यू त बिराजनी ॥१॥ धेनुरेणु रंजित अलकावलि सगमगात सोंधे सनी ॥ मधुप यूथ उडकें बैठत सखी पारिजात अवतंसनी ॥२॥ अंगद वलय करमुद्रा खचित नग कटितटपीत काछें काछनी ॥३॥ श्रीवत्सलछाउरहा विशद सखी कंठलसत कौस्तुभमणी ॥४॥ त्रिभंगभवरी लेत

सूखग्रग्रताधिमिधिमिकटि थुंगथुंगनि ग्वाल ताल गत उघटनी ।। गोविंदप्रभु त्रैलोक विमोहत नृत्यत रसिक शिरोमनी ।।५।।

★ राग गोरी ★ गोपवृंदसंग नृत्यत रंग ।। सारीगमपधनी अलाप करत रसउपजत तान तरंग ।।१।। सीसटिपारो कटिलालकाछनी वनजु धातुचित्रित सुभग अंग ।। गोविंदप्रभु त्रैलोक विमोहत वारफेर डारूं कोटि अनंग ।।२।।

★ राग गोरी ★ अग्र तकतक धुमधुम ध्रंध्रं ध्रंदनन नित्र्यंत रसिकवर आवत गोधन संग ।। लालकाछिनी कटिकिंकिणी पगनूपुर झझं झंझनन पीत टिपारो सिरखरोई सुरंग ।।१।। उरपतिरपचंद चाल मुरलिका मृदंग ताल संग मुदित गोपग्वाल गावत तान तरंग ।। व्रजजन सबहरख निरख जयजय कहि कुसुम वरषत गोविंदप्रभु पर वारूं कोटि अनंग ।।२।।

★ राग गोरी ★ निर्तत मोहन रसिक सखन सहित ग्रग तत थेई-थेई तत थेई तता। मृदंग ध्रुम-ध्रुम ताल उपंग मिलि स्तुति देत मधुपगन मधुमता ।।१।। टिपारो सिर पीत लाल काछिनी बनी किंकिनी झुनझुनात गावत सुरसता । गोविन्द प्रभु गोप बालक संग जै जै जै करत प्रेम अनुरता ।।२।।

★ राग सारंग ★ सकल कला गुन प्रवीण एरी ए वृंदावन रंग ।। सारीगमपधनी अलाप करत सरस ऊपजत अवधर तान तरंग ।।१।। सीस टिपारो कटि लाल काछनी वनजी धात विचित्र सोहे सुभंग अंग ।। गोविंद प्रभु के अंग अंग पर वारों कोटि अनंग ।।२।।

★ राग नट ★ बनतें आवत मोहनलाल । सीस विराजित जटित टिपारौं, नटवर-भेषु गोपाल ।।१।। ग्वाल-मंडली-मध्य विराजित कूजत बेनू रसाल । सूनत स्रवन गृह-गृह के द्वारें आई सब ब्रजबाल ।।२।। निरखि सरूप स्याम सुंदर कौ मिटी बिरह की ज्वाल । 'छीत-स्वामी' गिरिधरन रसिकवर मुसकि चले तिहि काल ।।३।।

★ राग नट ★ गिरिधर आवत बन तें री ! सोहैं । पीत टिपारौं सीस बिराजित, मनसिज कौ मन मोहैं ।।१।। गाँइनि के पाछें-पाछें आवत हैं चलि री ! दिखाऊं

तोहैं ।। 'छीतस्वामी' सब कौ चित चोरत मंद मुसकि जब जोहैं ।।२।।

★ राग कल्याण ★ आज सखी मोहन अति बने ।। सीसटिपारो फरहरात वरुहा चंदअलक वीच वीच चंपकली अति गने ।।१।। लालकाछ कटिक्षुद्रघंटिका पगनूपुर रुनझुनात गतिलेत ग्रग्नता ततततत रंगसने ।। गोविंदप्रभु रसभरे नृत्यकरत सकलकला गुणप्रवीन व्रजनृपतितन ।।२।।

## पगा के पद

★ राग सारंग ★ अखियां काहूकी न लगो ।। सांवरो सो ढोरा काहुको ता सिर ग्वाल पगो ।।१।। रूप रंग्यो मेरो मन वाके रोमरोम प्रति मेन जग्यो ।। कुंभनदास लाल गिरधर विन को काहुंको न सगो ।।२।।

★ राग टोडी ★ सुन्दर श्याम छबिलो ढोटा डार गयो मोपे मदन ठगोरी । निर्तत गावत वेनु बजावत संग सखा हलधर की जोरी । कबहुंक गेंदन मार मचावत ग्वाल भजावत हें चहु ओरी ।। चंचल वाजन चावत धावत कबहुंक आय होत इक ठोरी ।। कुंदन लोल लोल लोचन छबि शीश पगा ओढे पीत पिछोरी ।। सूरदास प्रभु मोहन नागर कहांरि करुं किनी जग जोरी ।।

★ राग गोरी ★ अरि ये कोन छबीलो याके शीश पगा । सांवरे वरन अंग अंग सुंदर धर्यो हे शीश पगा ।।१।। कुटिल अलक बदन पर राजत कुंडल जटत नगा। मेरो मन अटक्यो यो वा मूरति बांध्यो प्रेम तगा ।।२।। श्याम समें गायनकी पाछे सखा मंडली संगा। कृष्णदास गिरिधर जुकी बानिक दिन दिन नव नव रंगा ।।३।।

★ राग गोरी ★ बनतें बने माई आवत नंदनंदन शीश पगका । ओरे पीत पिछोई रूप रात जदुपति जगवंदन संध्या समें खिरकके द्वारे अपने अपने भाव विरारत। नंददास प्रभुको मुख निरखत त्रिविध ताप तनतें सब टारत ।।२।।

## फेंटा शृंगार

★ राग बिलावल ★ गोपके भेख गोपाल गायन हेटा दृगन सुख देत । शिर सुभग फेंटा सखि परच रह्यो भ्रों पर पेच पचभास ढर लागत सोहावनो । दाहेंनो ऐंठा

सखि ॥१॥ लेत आकसि चितवन चारू चलन गती गोपीजन मन बसन आनन अमेंठा सखी। धाय सन्मुख जाय दास परमानंद चाह क्षित करत यों करिये भेंटा सखि ॥२॥

★ राग बिलावल ★ फूग्यो फेंटा सखि ललित लाल के शिश पर निरखी छबि माधुरी अखियां सिरातरी प्रेमकी बावरी हों सखी व्हे रही सुधबुध बिसर गईं द्वार व्हे जावरी ॥१॥ रूपके गर्व कछू आव आदर कियो बहोरो कृपालगे मुसकातरी। दास कुंभन नाथ गोवर्धनधर साथ गोपीजन रीझे मिलसांवरे गातरी ॥२॥

★ राग गोरी ★ लालके फेंटाअेंठा अमेठा बन्यो फब्यो भ्रगुटीभाल पर नवल नंदलाल के आवत बनते बने सांझ सुरभिन मांझ। अटक लटक नरहि डगन ब्रज बालक ॥१॥ चलत गजगति चाल मन हरत तेहि काल बाहु अंसन धरें सखा प्रिय ग्वाल के। गोपीजन युथ जुरे द्वार द्वार खडा निरख नंदलाल युवति जन जालके ॥२॥

★ राग हमीर ★ पूत महेरको खिरक दोहावत गैया। संध्या समें बांधे फेंटा गरे गुंजमाल पहेरे तनिया ठाडे हें अधपैया ॥१॥ कोंधनि बनि हाथ हंसतातर रूप मोहनी मदन हरैया। रसिक प्रीतमकी बानिक निरखत लीजे रीझ बलैया ॥२॥

## दुमाला

★ राग मालकोस ★ आज पिय नैनबान सज मारी। दृष्टि परी तबतें नंदनंदन सुरत सुध न रही हमारी। भूषन बिचित्र बन्ये सब अंग अंग लाल दुमालो सीस अतिभारी। कृष्णदास प्रभु पिय बहुनायक सकल त्रियन सुखकारी ॥२॥

★ राग आसावरी ★ अधिक रजनी मानी हो नंदलाल। दुलहनि संग बिराजत चित्रसारी सुंदर नेन विसाल ॥१॥ पीत दुमालो सुखद गुनमें दरसी सीमावारो करत अधरामृत रसपान रसाल। रंगमहल बैठे 'नंददास' प्रभु सीत बस होत मनहु अधिक गोपाल ॥२॥

★ राग आसावरी ★ ए दोऊ एक रंग रंग गहरे रंग मजीठ। हौं वाके मन वे मेरे मन बस रहे आली री कहां करेगो बसीठ ॥१॥ पीत दुमालो लाल सिर सोहे तासो

मेरो मन मोह्यो अद्भुत छबि देखि सिला भई लीठ। 'व्रजाधीश' प्रभु संग लाज गई मेरी मुसक ठगोरी लागी ताते बावरी डोले वे तो लंगर ढीठ ।।२।।

★ राग आसावरी ★ अति छबि देत दुमालो सीस। मनमथ मान हरे हसि चितवत बने है गोकुलके ईस ।।१।। ठाडे सिंघपोर अपने रंग संग सखा दस वीस। 'चत्रभुज' प्रभु गिरिधरन लाल लखिं जीयो कोटि वरीस ।।२।।

★ राग बिलावल ★ देख सखी नव छेल छबीलो चिते लियो मेरो चित चोर। अरविलो आनत ऐंडानी ओर आकृति नेननकी कोर।।१।। शोभा अंग प्रति रूप माधुरी शीश दुमालो अति छबछोर। कुंडल लोल कपोलन झांई अरुन उदेमानो किरन चहुं ओर ।।२।। कहत न बने देखही बन आवे सदा वसो मन नंदकिशोर। चत्रभुज प्रभु गिरिधरन लाल पर रीझ डारत त्रन तोर ।।३।।

★ राग टोडी ★ देखो सखि ठाडो मदन गोपाल। पहेर कवाय धरे सिर टोपा फल गुल ओढे लाल ।।१।। वागो सरस तासको सोहे सुथन मोजलाल। किशोरी दास प्रभु की छबी निरखत उर राजत वनमाल ।।२।।

## घटा के पद (शृंगार)

★ राग सारंग ★ लालही सुंथन लालही बागो लालही पाग बनी अतिभारी ।। लालही ठाडे आभूखन राजत लालही लाल व्रखभान दुलारी ।।१।। लालके चरण जेहर अति राजत हार हमेल सोहत गिरिधारी ।। दरपनले निरखो मनमोहन गोविंद बलबल हारी ।।२।।

★ राग सारंग ★ बागो लाल सुनेरी चीरा ।। तापर मोर चंद्रिका धरके उर सोहत गिरिधरजुके हीरा ।।१।। सूंथन बनी अनार रंगकी हंसूली हिम ग्रथित मन धीरा ।। गोविंद प्रभु सखा संग लीने बिहरतहें कालिंदी तीरा ।।२।।

★ राग टोडी ★ लाल लालके लाल जु लोचन लाल ही के मुख लाल जु बीरा। लाल बनी काछनी अति सुन्दर लालके सीस लाल ही चीरा ।।१।। लालही पाग सोहे अति सुन्दर लाल खडे जमुनाके तीरा। गोविन्द प्रभुकी लीला दरसत लालके कंठ विराजत हीरा ।।२।।

★ राग धनाश्री ★ लालही लाल के लालही लोचन लालही के मुख लालही बीरा ।। लाल बनी कटि काछनी लाल की लाल के शीश मुकेसी चीरा ।।१।। लालही बागो सोहत सुन्दर लाल खड़े यमुना तट तीरा ।। गोविन्द प्रभु की सोभा निरखत लाल के कंठ विराजतहीरा ।।२।।

★ राग आसावरी ★ हरि को शृंगार हरचो देख के मो मन अरचो ।। हरचो बागो सिर टिपारो पाग कटि सुंथन विराजे है ।।१।। ओढे हैं कवाय हरचो पटुका हरचो है आली ।। भूषण जड़ाय पहरे अति छबि छाजे है ।।२।। मरगजी कंठ दुलरी हरि जे हरि विछीया अनुवर पगनुपूर विराजे है ।। हरें वाजुबन्द चोकी मुद्रिका हरि है आली यमुना के कूल शोभा अधिक विराजे है ।।३।। हरि मुरली मनमोहन ले अधर धरी सुनत ही ब्रज वधू छांड़े सब काजे है ।। कहे भगवान हित रामराय प्रभु प्यारो राधा गल बांहिदे निकुंज में विराजे है ।।४।।

★ राग टोडी ★ लीले वृन्दावन अति सुन्दर लीली वेली परम रुचिकारी । लीले कीर बिरछ पर सोहत लीले कोकत भोर सुढारी ।।१।। लीली भूमि बनी अति कोमल लीली तुलसी माला धारी । लीली बनी व्रजकी वनिता अरु लीली चुरी करन में सारी ।।२।। लीलो सिंगार किये तन सोभित करन फूल बेसर मुक्ता री । चरन-कमल पर नूपुर बिछुवा छबि पर कृष्णदास बलिहारी ।।३।।

★ राग ललित ★ सारी हरि चुनिकें पेहेरे तन चोली हर सब सोंधे भरी हे पोत हरी मुख जोतिहरी नवजोवन जोरजराय जरी हे ।।१।। चुनरी हरी कर पोहोंचिहरी हरि हाथन मेंहदी गव्हेरी ।। हे कुंज हरी ब्रज भोमिहरी हित गोपीनाथ सो प्रीति जुरी हे ।।२।।

★ राग सारंग ★ आज सिंगार श्याम सुंदर को देखेही बन आवे ।। श्याम पाग अरु श्वेत चोलना छूटेबंद सुहावे ।।१।। मोतीन माल हार उर उपर कर मुरलीजु बजावे ।। नंददास प्रभुरसिक कुंवरको ले उछंग हुलरावे ।।२।।

★ राग टोडी ★ श्याम ही सुन्दर स्याम ही अलकें स्याम बनी बेनी अति भारी । स्याम ही भ्रोंह सोहनी बांकी स्याम ही नेनन अंजन सारी ।।१।। स्याम कपोलन

स्याम डिठौना स्याम ओढे कामरिया कारी। स्याम दृगन के स्याम हैं तारे स्याम सुन्दर गोविन्द गिरिधारी ॥२॥

★ राग टोडी ★ स्याम पाग सिरपेच चन्द्रिका कलगी करनफूल छबि भारी। भाल तिलक लर लटकन सोभित दुलरी दुगदुगी पोहोंची कर धरी ॥१॥ स्याम हि सुन्दर स्याम हि अलकें स्याम बनी बेनी अति भारी। स्याम ही भौंह सोहनी बांकी स्याम हि अंजन नेन रसारी ॥२॥ स्याम कपोलन स्याम डिठोना स्याम वसन पर पीत किनारी। स्याम दृगनके तारे कारे स्याम ही सुन्दर गिरिवरधारी ॥३॥ बाजुबंद मुद्रिका सोभित कटि किंकिनी नूपुर झनकारी। जुगल चरन अनबट बिछुवा छबि पर 'कृष्णदास' बलिहारी ॥४॥

★ राग धनाश्री ★ कारे स्याम सुजान मनोहर कारे बार कपोल लगाये ॥ कारेई नेंना कारोई अंजन कारी भोंह कमान चढाये ॥१॥ कारी कामर कारी बंशी कारी गईयन टेर सुनाये ॥ गोविन्द प्रभु की सोभा निरखत कालिन्दी तट कारी छाये ॥२॥

★ राग धनाश्री ★ सामरी पाग विराज रही सिर बेनी बनी मानो नागिन कारी ॥ स्यामही भुषण छबि लागत स्याम कंचुकी लागत भारी ॥१॥ फोंदना मखतूल को स्याम बन्यो छबि देखत व्रषभान दुलारी ॥ स्याम शृंगार की शोभा निरखत अपनो जियवार नोछावर डारी ॥२॥

★ राग टोडी ★ पीरेई कुंडल नूपुर पीरे पीरो पीतांबरो ओढे ठाडो। पीरीई पाग लटक सिर सोहे पीरो छोर रह्यो कटि गाढो ॥१॥ पीरी बनी कटि काछनी लालके पीरो छोर रच्यो पटुकाको। गोविन्द प्रभुकी लीला दरसत पीरोई लकुट लिये कर ठाडो ॥२॥

★ राग धनाश्री ★ पीरे कुन्डल पीरे नूपुर पीरो पीताम्बर ओढे ठाढो ॥ पीरी बनी कटि काछनी लाल की पीरोई छोर रच्यो पटि कारो ॥१॥ पीरे मुकुट लकुट कर सोहे पीरी खोर दीये छिन गारो ॥ गोविन्द प्रभु की सोभा निरखे पीरोई नन्दन नन्द दुलारो ॥२॥

★ राग ललित ★ चंद बदन पर चांदनी सोहत घूंघट को पट मानो स्वेत सारी ॥ पिय द्रग दोऊ चकोर पीवन को सोमानोविध सुहस्त संभारी ॥१॥ प्रगट होत तब हीते पिय हिय गई विरह उजियारी ॥ अंचर दूरि करि गरे व्हे बाँहधर भेट रसिक पिय प्यारी ॥२॥

★ राग टोडी ★ धोरे मोहन धोरे सोहन धोरे सोहन धोरे चंदन खोर दुसाला। धोरे कडा कर हाथन सोहे धोरी सोहे गजमोतिन माला ॥१॥ धोरो दधि बेचन जात ग्वालनि जाय लुटाये नंदको लाला। गोविन्द प्रभुकी लीला बरनी धोरी सोहे गल फूलन माला ॥२॥

★ राग भैरव ★ चमक आयो चंदसो मुख कुंजते जब निकसी ॥ सुंदर सांवरो किशोर गोहन लाग रहे चकोर ललितादिक कुमुदावलि निरख नयन विकसी ॥१॥ पहिरें तन श्वेत सारी मानों शरद उजियारी मानों सुधासिंधु मध्य दामिनी धसी ॥ कहत भगवानहित रामरायप्रभु प्यारी वशकीने कुंजविहारी छबि निरख मंद हसी ॥२॥

★ राग ललित ★ नव निकुंज के द्वारे ठाडे करत शृंगार परस्पर ॥ स्वेत पाग ओर स्वेत पिछोरा मोतीनमाल विराजत उर पर ॥१॥ चंपक तन प्यारी पेहेरें स्वेत सारी स्याम कंचुकी खुली हें अद्भुत तर। रसिक प्रीतम की वांनिक निरखत लेत बलैया दोऊ करकर ॥२॥

★ राग सारंग ★ बलिहारी आजकी बानिक पर। श्वेत काछ काछे नंदननंदन श्वेत टिपारो सोहत सीस पर ॥१॥ नख सीख लौं सिंगार कहा कहों जमुना पुलिन ठाडे हैं कदम तर ॥ 'सुघरराय' प्रभु बेनु बजावत मोहे सब व्रज नारी नर ॥२॥

★ राग टोडी ★ ॥ बांकी घटा ॥ बांके आसन बांके सिंघासन बांके तकियनकी छबि न्यारी ॥ बांके रासविलास बने अरु बांकी बनी राधा जू प्यारी ॥१॥ बांके मंदिर कंचनके अरु बांकी बनी व्रजकी व्रजनारी। गोविन्द देखत नेन ताकि रही झुकि झरोखन बांके बिहारी ॥२॥

★ राग सारंग ★ ॥ गुलाबी घटा ॥ फूल गुलाबी साज अति सोभित ताहि राजत

बालकृष्ण विहारी। फेंटा गुलाबी पिछोरा रह्यो फबि फूल गुलाबी रंग अति भारी ॥१॥ वाम भाग वृषभान नंदिनी पहेरे गुलाबी कंचुकी सारी। फूल गुलाबी हस्तकमल में छबि पर कुंभनदास बलिहारी ॥२॥

★ राग टोडी ★ फेंटा अमरसी धरे भ्रूकुटी पर नेत्र कमल नासा गजमोती। भाल तिलक सिरपेच सीसफूल मोतिनमाल पहोंची लर जोति ॥१॥ हँसत दसन जु दामिनी दमकत सुभग कपोल सोहे कंठपोती। कटितट छुद्रघंटिका नूपुर अरु नख छबि सोभित है जोति ॥२॥ साज पिछोरा अमरसी सोभित श्वेत किनारी चमक ससि जोति। जमुनाजल भर कंचनझारी पोहोपमाल सोई छबि बोहोति ॥३॥ दरपन ले देखत दोऊ हँसमुख आरती वारत दीपक जोति। कुंभनदास प्रभुकी छबि निरखत रसना कहा कहैं छबि बोहोति ॥४॥

★ राग टोडी ★ लहेरिया साज सुभग अति सोभित तहाँ राजत बालकृष्ण बिहारी। लहेरिया पाग पिछोरा सुभग अति सुरंग लहेरिया कंचुकी सारी ॥१॥ सहज सिंगार किये अति सुन्दर सुगंध सहित मुख बीडी सुधारी। पोहोपमाल सिर कंठ बिराजत दरपन ले देखत पियप्यारी ॥२॥ घरघरतें आई व्रजनारी जमुनाजल भर कंचनझारी। मात जसोदा करत आरती छबि पर कुंभनदास बलिहारी ॥३॥

## शीतकाल के पद (शृंगार के)

★ राग टोडी ★ जामो बन्यो जरतासको सुन्दरलाल बन्द अरु जरद किनारी। झालरदार बन्यो पटुका झटक्यो दिल ता बीच जात कहां री ॥१॥ बांकी चाल करै जु निहाल करै गजराज हु मोज तिहारी। गोविन्द देखत नेन तकि रही झांक झरोखन बांके बिहारी ॥२॥

★ राग टोडी ★ बंकचितवन चिते रसिकतन गुप्तप्रीतिको भेद जनायो ॥ मुखकी रुखाई मिटत नहीं कबहू हृदयको प्रेम कैसे जात दुरायो ॥१॥ सगमगी अलक वदनपर विथुरी यह बिधि लाल रहसि चित लायो ॥ कृष्णदासप्रभु रसिकमुकुटमणि नवनिकुंज अपने कर पायो ॥२॥

★ राग टोडी ★ भलें पाउधारें मेरे अंगना यशोदाके छगनमगना ॥ जो पगधरो

मेरी अखियन पर हों बलबलजाऊ न्योछावरकरो हारचीर कंगना ॥१॥ कंठमाल सोहे नगन जटित मन मोहे पायन पेजनी सोहे खेलें दोऊ संगना ॥ कल्यानके प्रभु गिरिधरदेखें सुखभयो गयोदुःख दूरभयो मन लगना ॥२॥

★ राग टोडी ★ आधो मुखनीलाम्बरसो ढांप्योविथुरी अलके सोहे ॥ एक दिशामानों मकरचांदनी एकदिशा घनबिजरी कोंधत हसे हरें मनमोहे ॥१॥ कबहूं करपल्लवसों निखारत ऊंचेले धरत जब निकसत पुर्णशशिजोहे ॥ सूरदासमदनमोहन कबके ठाढे निहारत त्रिभुवनमें उपमाकूं कोहे ॥२॥

★ राग टोडी ★ बहुत प्रसन्न भये पियप्यारी टोडीराग वेणुधरगायो ॥ सुरसंगीत बधानमधुरस्वर ऐसो अद्‌भुत भेद बनायो ॥१॥ बीन तरंग उपजत नानारंग प्रतिछिन ओरसो ओर मिलायो ॥ चतुर्भुजदासस्वामिनीगुणनिधि रसिकराय गिरिधरण रिझायो ॥२॥

★ राग टोडी ★ नवल निकुंज महलरसपुंजही रसिकाय टोडी स्वरगायो ॥ मिटगयोभान नवलनागरिको अंगहि अंग अनंग जगायो ॥१॥ दोरी आय कंठलपटानी एही तानमेरे मनभायो ॥ चतुर्भुजप्रभु गिरिधरनागर नट यह बिधि गाढोमान मनायो ॥२॥

★ राग टोडी ★ बोलत तोहि विनोदमूरति नंदकुमार सुघर नटवेषरी ॥ तूअति सुघर कोकिला प्रवीन स्वर रतिरंग भूसेज सुदेशरी ॥१॥ मिलतप्रवाह सुखवारनिधीमें कबहु नरहतदेश सुखलेशरी ॥ कृष्णदास प्रभुगोवरधनधर विरहगयंद विदारण केशरी ॥२॥

★ राग आसावरी ★ मेरी अखियनके भूषण गिरिधारी ॥ बलबलजाउं छबीली छबिपर अतिआनंद सुखकारी ॥१॥ परमउदार चतुरचिंतामणि दरसपरस दुखहारी॥ अतुल प्रताप तनक तुलसीदल मानतसेवा भारी ॥२॥ छीतस्वामीगिरिधरन विशदयश गावत गोकुलनारी॥ कहावरनो गुणगाथ नाथके श्रीविट्ठल हृदयविहारी ॥३॥

★ राग आसावरी ★ गोवर्धनगिरिपर ठाडे लसत॥ चहूंदिश धेनुधरणी धावत तब

नवमुरली मुखलसत ॥१॥ मोरमुकुट बनमालमरगजी कछुक फूलसिर खसत ॥ नवउपहार लिये वल्लभत्रिय निरख दृगंचल हसत ॥२॥ छीतस्वामी वशकियो चाहतहें संग सखागुण ग्रसत ॥ झूठे मिष कर इतउत चाहत श्रीविट्ठल मन वसत ॥३॥

★ राग रामकली ★ राधिका स्यामसुंदरकों प्यारी। नख सिख अंग अनूप बिराजित कोटि चंद-दुतिबारी ॥१॥ इक छिनु संग न छाँडत मोहन निरखि-निरखि बलिहारी। 'छीत-स्वामी' गिरिधर बस जाके सो वृषभानु-दुलारी ॥२॥

★ राग आसावरी ★ मेरे नैननि इहै बानि परी। गिरिधरलाल-मुखारविंद-छबि छिनु-छिनु पीवत खरी ॥१॥ पाग सुदेस लाल अति सोहति मोतिनि की दुलरी। हरि-नख उरहिं विराजत मनि-गन-जटित कंठ कंठसिरी ॥२॥ 'छीत-स्वामी' गोवर्धनधर पर वारों तन मन री ! विट्ठलनाथ निरखि के फूलत, तन सुधि सब बिसरी ॥३॥

★ राग आसावरी ★ आज बने मोहन रंग भीने। केसरी पाग सिथिल अलकावलि सीस चन्द्रिका दीने ॥१॥ केसरी वागो अति ही राजे हरी इजार चरनन में दीने। हार हमेल दरपन ले निरखत रसिक प्रीतम जु चरनन दीने ॥२॥

★ राग टोडी ★ ते जु अलापी प्यारी सुन्दर टोडी। रिझवे रसिक गोपाल विनोदी वदन देखि उडपति नभ विथकित हर्षित मन गति भई निगोडी ॥१॥ दंपति सुघरराय चूडामणि केलिकला केतक रस कोडी। 'कृष्णदास' गिरिधरन बिलोकत लज्जित मन्मथ लहो नवोडी ॥२॥

★ राग टोडी ★ पूछत जननी कहां ते आये। आज गयो श्री वल्लभके घर बहोतक लाड लडायै ॥१॥ विविध भांत पट भूषण ले ले सरस सिंगार बनाये। सीस पाग सिरपेच बांधे तहां मोर चन्द्रिका लाये ॥२॥ बहोत भांत पकवान मिठाई विंजन सरस बनाये। पायस आदि समर्पित मोहि मेरी लीला गाये ॥३॥ प्रेम सहित वल्लभ मुख निरखत और न कछु सुहाए। 'रसिक' प्रीतम कहत जननी सों आज अधिक सुख पाये ॥४॥

★ राग आसावरी ★ नवरंग ललनविहारी मेरो कहे जाडो मोहि अधिक सुहाय। पहिरी कवाई ओढि लई फरगुल तोहु सीत सतावत आय ।।१।। अचरज भये सुनि वल्लभनंदन कनक अंगीठी धरि मंगाय। पुनि जिय सोचि मंगाई उढाई भजि गई सीत हसे जदुराय ।।२।। ऐसे परमकृपाल दयानिधि विसरत नही सुधि करत सहाय। त्रिपुरारी गिरिधारीकी बातें कहा जाने कोउ देहु बताय ।।३।।

★ राग बिलावल ★ मनमोहन पगिया आज की बांधी पाग बनाम लाडिले अति सुंदर बड साज की ।।१।। कहि न सकत शृंगार हार के ओर गुंजावन माल की ।। चत्रभुज प्रभु गिरिधरन लाल छबि नीकी बनी नंदलाल की ।।२।।

★ राग बिलावल ★ वदन निहारत हे नंदरानी कोटि काम छबि कोटि छंद छबि कोटिरविवारत जियजानी ।।१।। सिवि विरंचि जाको पारन पावत सेस सहश्र गावत रस नारी ।। गोद खिलावत महेरि जसोदा परमानंद कीनो बलिहारी ।।२।।

★ राग बिलावल ★ मनहरन छेल नंदरायको छबि सों निकस्यो आयरी मोय देखत ठाडो भयो तन चिते चिते मुसिकायरी ।।१।। चंपकली दल कुटिल अलक छबि भुजभरि एंडएडायरी सूधो कमल कमल दल लोचन पगिया के पेंच झुकायरी ।।२।। छेल छबीलो सांभरो अंग प्रेम चुचायरी ।।३।।

★ राग बिलावल ★ आज मोहन छबि अधिक बनी जरकसी पाग केशरियो वागो ओर राजत गिरधर कें मनी ।।१।। सूथनलाल सुनहरी सोभित ओर सोंधेसों भीजीतनी चत्रभुज गिरिधरनलाल छबि कापेजात गनी ।।२।।

★ राग टोडी ★ जीते सुघर सकल त्रिभुवन के जवते राग बजाई टोडी ।। तो नत्तरंग को भेद पायो रसिक कुंमरसों खेलत होडी ।।१।। रूप की रासि सुरत वरकीनें लोचन रसडारत दे डोरी ।। कृष्णदास गिरिधर रसवस कीए मनमथ कोज धर्म द्वार छोडी ।।२।।

★ राग टोडी ★ माईरी लालन आए आएरी मया कर तन मन धन सब वारों ।। व्हों बलिगई सखी आज की आवनी पर पलकन सों मगझारो ।।१।। अति सुकुमार कोमल पद कारन सखीरी कांकर गुन सबटारों ।। नंददास प्रभु नंद नंदन सों एसी

प्रीति नित धारों ।।२।।

★ राग टोडी ★ सूधें न बोल कहा ईतराने ।। या व्रज में कोंन कोंनते को वडो कहा रंग कहारांने ।।१।। कोंन टेव दिन दिन प्रति प्रति की ताकत अंग विरानें ।। जेजे हाल की एकहि देहों आन स्वामी रहे छांने ।।२।।

★ राग टोडी ★ कहुं अकेले पाए प्रीतम ले बेठी वे गोपी गोद सिखवत चोरी मिस आवोगेह ।। सांमग्री धरि राखी छिनक पर भावे सो लीजिये यह तुमारी देह ।।१।। जनकोऊ ओर छिए यह वडो ताप दिए अकेले ही भोजन करो वरसावो मेह ।। रसिक प्रीतम हम उराहने के मिस आवेंगी जसुमति के आगे तुम मन में मति दीजो छेह ।।२।।

★ राग धनाश्री ★ अरी ईन मोंहन की बलिजाऊं ।। मेरे मन आनंद उठत हें फूली अंग न माऊं ।।१।। तन मन धन न्योंछावरि करि हों ईत के चरण गहराऊं ।। दास गोपाल कों यह वर दीजें व्रज तजि अनतन जाऊं ।।२।।

★ राग धनाश्री ★ देखोरी गोपाल कहांहे खेलत ।। के गायन संग गये अगाऊके खिरक वछरू वन मेलत ।।१।। कहत यशोदा सखियन आगें परोस धरीहे थारी।। भोजन आन करो दोऊभैया बालक सहेत मुरारी ।।२।। ऐसी प्रीति पिता माताकी पलक ओट नहींकीजे ।। वारंवार दासपरमानंद हरिकी बलैया लीजे ।।३।।

★ राग धनाश्री ★ नंद बुलावतहें गोपाल ।। चल सुत वेग बलैया लेहों चंचल नयनविशाल ।।१।। परोस्यो थार धरेमगचितवत सुन घनश्याम तमाल ।। भात सिरात तात अतिआतुर बेग चलो प्यारेलाल ।।२।। होंवारी न्हेने पायनपर दोर दिखावो चाल ।। छांडदेहो मोहन अटपटी वह गति मंद मराल ।।३।। सोई राजा जो पहेलें पहोंचे सूर सुभवन उताल ।। जो जेहें बलभद्र अगाऊ तोहसहें संगके ग्वाल ।।४।।

★ राग धनाश्री ★ भूखो भयो आज मेरो बारो ।। भोरही ग्वाल उराहनो लाई उठतहीं कियो पसारो ।।१।। पहिलेही रोहिणीसों कहिराख्यो तुर्तकरो जो नार ।।

ग्वालबाल सब बोललये मिलै बैठे नंदकुमार ॥२॥ भोजन वेग लावो कछु मैया भूख लगी मोहि भारी ॥ आजु सवारे कछु न खायो सुनत हसी महेतारी ॥३॥ रोहिनी चितेरही यशुमति तनसिर धुनधुन पछितानी ॥ परोसों वेग वेर कित लावत भूखो सारंगपानी ॥४॥ बहुव्यंजन बहुभांत रसोई षटरस किय प्रकार ॥ सूरस्याम हलधर दोऊ भैया और सखा सब ग्वार ॥५॥

★ राग धनाश्री ★ भोजनको बोलत महतारी ॥ बलसमेत आओ मेरे मोहन बैठे नंदपरोसी थारी ॥१॥ खीर सिरात स्वाद नहिं आवे वेग ग्रास तुम ल्हेहो मुरारी ॥ हितवत चित्तनीकें कर जेंवो पाछें कीजे केलि विहारी ॥२॥ अहो अहो सुबल अहो श्रीदामा बैठो नेक करो मनुहारी ॥ परमानंददासकी जीवन मुख्यव्यंजन दे जाहुं बलहारी ॥३॥

★ राग धनाश्री ★ चलहु गोपाल बोलत महतारी ॥ परोसेथार धरेमग चितवत नयनन आंसू डारी ॥१॥ विविध भांत पकवान मिठाई मेवा मिश्री ठानी ॥ रामदासप्रभु रसिक छबीलो व्रजयुवतिन सुखदानी ॥२॥

★ राग धनाश्री ★ बोलत स्याम यशोदा मैया ॥ अतिआनंद प्रेमरस उमगी हंसहंस लेत बलैया ॥१॥ उरअंचल श्रमजल पोंछत पुनपुन अपने हाथ ॥ भोजन करो लडेते मोहन सब ग्वालनके साथ ॥२॥ सुतमुखचंद विलोक सजलही इनहीं मित्र समाज ॥ परमानंदप्रभु परम मनोहर अतिविचित्र व्रजराज ॥३॥

★ राग धनाश्री ★ नेक गोपालेंदीजो टेर ॥ आज सवारे कियो न कलेऊ सुरत भई बडिवेर ॥१॥ ढूंढत फिरत यशोदामैया कहांकहांहो डोलत ॥ यह कहि यो घर जाउ सांवरे बावानंद तोहि बोलत ॥२॥ इतनी बात सुनही आये प्रीतिजु मनमें जानी ॥ परमानंदस्वामी की जननी देखवदन मुसकानी ॥३॥

★ राग धनाश्री ★ प्रेममग्न बोलत नंदरानी ॥ अहो अहो सुबल अहो श्रीदामा ले आवहु किन टेर मृदुवानी ॥१॥ भोजनवार अवार जान जिय सुरतभई आतुर अकुलानी ॥ ढुंढत घर घर आंगन द्वारलों तनकी दशाहिरानी ॥२॥ जननी प्रीति जान उठदोरे शोभितहें कच रज लपटानी ॥ परमानंद नंद नंदनको अखियां

निरख सिरानी ।।३।।

★ राग धनाश्री ★ बल गई स्याममनोहर गात ।। तिहारो वदनसुधानिधि शीतल अचवत दृगन अघात ।।१।। पलक ओट जिन जाउ पियारे कहत यशोदामात ।। छिन एक खेलन जात घोष में पल युग कल्प बिहात ।।२।। भोजन आन करो दोऊ भैया कुंवर लाडले तात ।। परमानंद कहत नंदरानी प्रेम लपेटी बात ।।३।।

★ राग धनाश्री ★ न्हात नंद सुधि करत सुतनकी लावो बोल कान्हबलराम ।। खेलत बडीवारक्यों लागी ब्रजभीतर काहूके धाम ।।१।। बैठे आय दोऊ मेरे संग विनभोजभयो निकाम ।। यशुमति सुनत चली अतिआतुर व्रज घरघर टेरत ले नाम ।।२।। आज अवार भई कहुं खेलत बोललेहु हरिकों कोऊ वाम ।। ढुंढ फिरी नहिं पावत हरिकों अतिअकुलानी चितवत धाम ।।३।। वार वार पछितात यशोदावासर वीतो भये युगयाम ।। सूरस्यामकों कहूं न पावत बहुबालक देख्यो इकठाम ।।४।।

★ राग धनाश्री ★ यशुमति थार परोस धर्‍योहे तुह्मे बुलावे चलो दोऊ भैया ।। बाबानंदकी गोदबेठकें भोजनकरो हों लेहुं बलैया ।।१।। पाछे करो केलि मनमोहन तुमकों देहों बहुत मिठैया ।। गोविंदप्रभु गिरिराजधरन चले बैठी जहां यशोदामैया ।।२।।

## अथ सीतकाल के भोजन के पद

★ राग धनाश्री ★ जेंवत कान्ह करत किलकारी ।। भर बुकटा मेलत मुखभीतर कर पकरत महतारी ।।१।। फूक फूक दूध मुख लावत डारत बाहां उछारी तैसें ही चपल हरत सबको मन श्रीविट्ठलगिरिधारी ।।२।।

★ राग धनाश्री ★ सुतहि जिमावत यशोदा मैया ।। सानत कोर मधुर मृदु मीठो देमुख लेत बलैया ।।१।। खेलनकों उठ उठ भाजत हें राखतहें बोहोरैया ।। आवो चिरैया आवो खुमरैया ग्वालिन लेत बलैया ।।२।। तुम जेवों मिल संग लालके बहुविध ख्याल खिलैया ।। श्रीविट्ठलगिरिधर माताकी प्रीति कही नहिं जैया ।।३।।

★ राग धनाश्री ★ जेंवत नंद कान्ह एक ठोरें ।। कछुक खात लपटात तुहूं कर

बालकेलि रसभोरें ॥१॥ वरा वदनमें मेल्यो जबही मिरच दशन टक टोरें ॥ तीक्षणलगे नयनभर आये खीजत बाहिर दोरें ॥२॥ फूक कपोलन देत रोहिणी लिये लगाय अंकोरें ॥ सूरस्यामको मधुरे कोरदे कीने तात निहोरें ॥३॥

★ राग धनाश्री ★ जेंवत कान्ह नंदजूकी कनियां। कछुक खात कछू धरणि गिरावत छबि निरखत नंदरनियां ॥१॥ बरी बरा बेसन बहुभांतन व्यंजन विविधअगनियां ॥ आपन खात नंदमुख लावत यह सुख कहत न बनियां ॥२॥ आपुन खात खवावत ग्वालन करमाखन दधि दुनियां ॥ सदमाखनमिश्रीमिश्रितकर मुख नावत छबिघनियां ॥३॥ जोसुख महरि यशोदा विलसत सो नहिंतीन भवनियां ॥ भोजनकर अचवन जबकीनो मागतसूर जुठनिया ॥४॥

★ राग धनाश्री ★ जेंवत नंदगोपाल खिजावत ॥ पहर पन्हैया बावाजूकी निपट निकट डरपावत ॥१॥ व्रजरानी बरजत गोपालें हरे हरे ढिंग आवत ॥ परमानंददासको ठाकुर पूत बावाको भावत ॥२॥

★ राग धनाश्री ★ जेंवत नंद कान्ह बलभैया ॥ कनकथार षटरस बहुव्यंजन माखन दूध मिठैया ॥१॥ उठ भाजत सुतकेलिचावलख प्रफुल्लित यशुमति मैया ॥ व्रजाधीशप्रभु सुख व्रजजनको दृगनसुधा वरखैया ॥२॥

★ राग धनाश्री ★ यह तो भाग्य पुरुष मेरीमाई ॥ मोहनकों गोदी में लीयें जेंवतहे व्रजराई ॥१॥ चुचकारत पोंछत अंबुज मुख उर आनंद न समाई ॥ लपटेकर लपटात थोंद पर दुध लार लपटाई ॥२॥ चिबुक केश जब गहेत किलकके तब यशुमति मुसकाई ॥ मागत सिखरण देरी मैया बेला भरके लाई ॥३॥ अंग अंगप्रति अमितमाधुरी शोभा सहज निकाई ॥ परमानंद नारदमुनि तरसत घर बैठे निधिपाई ॥४॥

★ राग धनाश्री ★ भोजन करतहें गोपाल ॥ षटरस धरे बनाय यशोदा साजे कंचनथाल ॥१॥ करत वियार निंहारत सुतमुख चंचलनयनविशाल ॥ जो भावेसो लेहो मेरे मोहन माधुरी मधुररसाल ॥२॥ जो सुख सनकादिक को दुर्लभ दुरदेखत व्रजबाल ॥ परमानंददासको ठाकुर चिर जीयो नंदलाल ॥३॥

★ राग धनाश्री ★ लालको रोटी और वडी ।। हींग लगाय मिरच पुटदीनो करुबे तेल तरी ।।१।। आन कनिक द्वयविरिया छानी बेलन बेल करी पतरी ।। कटहरियाप्रभुको रुचि उपजी माखनसो चुपरी ।।२।।

★ राग धनाश्री ★ लालको मीठी खीर जो भावे ।। बेला भर भर लावत यशोदा बूरो अधिक मिलाव ।।१।। कनिया लियें यशोदा ठाढी रुचिकर कोर बनावे ।। ग्वालबाल वन चरनके आगें झूठे हाथ दिखावे ।।२।। व्रजरानी जो चहूंधा चितवत तनमन मोद बढावे ।। परमानंददासको ठाकुर हसहस कंठ लगावे ।।३।।

★ राग आसावरी ★ क्योंरी तूं द्वारे बोली आय ।। तेरो बोल सुनत मेरो मोहन भोजन कछू न खाय ।।१।। दोर चले भींतरते बाहिर उखट्यो होतो पाय ।। श्रीविट्ठलनंदरानी खीजत तेरोकछु न सुभाय ।।२।।

★ राग आसावरी ★ मोहन जेंवतहैंरी अबजिनजावोतिवारी ।। सिंघपोरते फिर फिर आवत वरजीहे सोवारी ।।१।। रोहिणी आदि निकस भई ठाडी देदे आड मुखसारी ।। तुम तरुणी जो बनमदमाती एसीएदेखन हारी ।।२।। गरजत लरजत प्रतिउत्तरदे कोऊ बजावत तारी ।। कुंभनदासप्रभु गोवरधनधर अबही बैठेथारी ।।३।।

★ राग आसावरी ★ हरि भोजन करत विनोदसों ।। करकर कोर मुखारविंद में देंत यशोदा मोदसों ।।१।। मधु मेवा पकवान मिठाई दूध दह्यो वृत ओदसो ।। परमानंदप्रभु भोजन करतहे भोगलग्यो संखोदकसों ।।२।।

★ राग आसावरी ★ पांडे भोग लगावन न पावें ।। करकर पाक वही अर्पतहें तब तब तूं छुहि आवें ।।१।। में श्रद्धाकर ब्राह्मण न्योत्यो तू जो गोपाल खिजावे ।। वह अपने ठाकुरहें जिवावत तूं योंही छुइ आवे ।।२।। तू यह बात न जानेरी मैया मोहे कित दोष लगावें ।। परमान्द वह नयन मूंदकें मोहीकों जु बुलावें ।।३।।

★ राग सारंग ★ गोपालहिं प्रेम उमगि बोलति नंदरानी । अहो श्रीदामा ! लै आवहु किन टेरि-टेरि मधु बानी ।। भोजन बार अवार आनि जिय सुरति भई आतुर अकुलानी ।। ढूंढति घर घर आंगन द्वारे लौं तन की दसा हिरानी ।। जसुमति

प्रीतिजानि उठि दौरे सोभित मुखकचरजलपटानी, 'परमानंद' नंद-नंदन कों अंखियां निरखि सिरानी ।।

★ राग सारंग ★ हरिहिं ल्याउ री ! भोजन करन। बडी बार खेलत भई मोहन गिरि गोवर्द्धन-धरन ।। बैठे नंद बाट चाहत हैं ताती खीर सिराई। बालक सब संगहि लै आवहु कहति जसोदा माई ।। धेनु दियो दूध अधिकाई सुनहु कान्ह कान्ह ! इहि बात। 'परमानंद' प्रभु बल-समेत तुम घरहिं आइए तात ।।

★ राग बिलावल ★ जेंवो मेरे कुंवर कन्हाई ! सखा-मंडली समेत जेंइये बलि जाउं कहति जसोदा माई ।। खीर खांड घृत माखन मिश्री जो चाहौ सो लेहौ भाई। हंसि-हंसि मागि लेत मनमोहन सखा-मंडली सब पधराई ।। चिरजीयौ मेरौ छगनुवा सब गोपीजन लागति पांई। 'परमानंददास' कौ ठाकुर सब ब्रज-जन के अति सुखदाई ।।

★ राग जेतश्री ★ भोजन करत किशोर किशोरी। मदन गोपाल राधिका बनी अनुपम जोरी ।।१।। विविध पाक पकवानथार भर, सखियन आन धरे। जेंवत लाल लाडिलो रुचिसों स्वादित भोग खरे ।।२।। यमुनाजल ललिता ले आई ले जलपान कर्यो ।। पिय प्यारी कों बीरी दे गोकुल पाय पर्यो ।।३।।

★ राग जेतश्री ★ जेहों दुल्हे लाल दुल्हैया ।। बहु विधि साक सुधारे विंजन और बनायो घैया ।।१।। कंचनथार कंचन की चोकी परोसत मोद बढै ।। ठाडी पवन करत रोहिनी लेत वारन मैया ।।२।। कर अचवन मुख बीरी दीनी आनन्द उर न समैया ।। लाल लाडिली की छबि ऊपर परमानन्द बल जैया ।।३।।

★ राग जेतश्री ★ खीचरी भोर ही रुचि देन। परत हित सों प्रीत सजनी करत हे द्रुम बेन ।।१।। प्रान पति दृग पूतरी मय उभे सब सुख ऐन ।। गोरस रुचि सों लेत भोगी वलित आलस नैन ।।२।। चलत इत उत नेह पूरित कलकटाच्छन सेन ।। स्वाद भेदी अघस अंगन पुनि जगावत मेन ।।३।। सीत हेमंत प्रीत पोष सहचरी दे चेन ।। वृन्दावन हितरूप अचवन लगत बीरी लेन ।।४।।

★ राग जेतश्री ★ नवल कुंवर ब्रजराज लाडिलो जेंवत हे रोटी ओर बरी ।। बरा

भूजेना और खीचरी सद्घृत अधिक सुगंध परी ॥१॥ पापर कोमल हरे संधाने जामें राई बहोत चढी। त्रिपुरारी गिरिधर रुची उपजी पीवत मीठी माग कढी ॥२॥

★ राग जेतश्री ★ दंपति रसभरे भोजन करत लाडिली लाल। व्यंजन मधुरे चरपरे खाटे खारे खटरस धरे बनाय जसोदा जिमावत जोरी रसाल ॥१॥ पय ओदन अरु दारभात गुंजा मठरी जलेबी घेवर फेना रोटी चंद्रकला रुचीसों जेंवत प्यारो मदन गोपाल। नंददास प्रभु प्रिया प्रीतम परस्पर हसत कोर भरत ललिता मनुहार करत छबि पर बल बल जात ॥२॥

★ राग टोडी ★ अरी तुं बार बार उझक उझक आवे जानि भोजन की बिरियां। जेंवत नंद गोद ले ढोटा वरजोहे सौ बिरियां ॥१॥ घर न सुहात जाय बिन देखे डोलत फिरत निडरिया। श्री विट्टल गिरिधरन छेल को तकिहि रहित दिन भरिया ॥२॥

★ राग ललित ★ भोजन करत पिय अरु प्यारी। रंग महल में धरी अंगीठी परदा परे सुखकारी ॥१॥ दोउ परस्पर लेत देत हे बहुविध कर मनुहारी। रसिक प्रीतम प्रभु की यह लीला डारत तन मन वारि ॥२॥

★ राग धनाश्री ★ जेंवत ललना लालन संग। मणिमय महेल बिराजत दोउ परदा परेहे सुरंग ॥१॥ धरी अंगीठी धिकत कनक की सनमुख दोउराजे ॥ रतन जटित सिंहासन तामें गादी तकिया साजे ॥२॥ सुंदर झारीभरि यमुनाजल धरिसखी की और। कनकथार नव ओदन खीचरी धरि व्रजजन चहुं और ॥३॥ रोटी लीटी बहु घृत चुपरी नीकी धरि कर प्रीत। ललितादिक मनुहार करत दोउ जेंवत अतिरस रीत ॥४॥ प्यारी कोर देत प्रिय के मुख प्यारो मुख में मेले। रसिक प्रीतम रस रीत प्यारी रतिनाथ कंठ भुजा दोउ झेले ॥५॥

★ राग धनाश्री ★ गोद बेठाय जिमावत मैया ॥ सुओदन घृतसानि जसोदा श्रीमुखमेलत कुंवर कन्हैया ॥१॥ आसपास व्रजके सबलरिका संगके सखा बलभैया ॥ खेलत खात हसत लाडीलो जसुमति लेत बलैया ॥२॥ रुची अपनीसो भोजन कीनो कछु पियो कर धैया ॥ रसीक सुहेत बीरी आरोगत जे

पठाइ नंदरैया ॥३॥

★ राग धनाश्री ★ जेंवत रामकृष्ण दोऊ भैया जननी जसोंदा जीमावेरी ॥ व्यंजन मीठे खाटे खारे स्वाद अधिक उपजावेरी ॥१॥ करत व्यार चहुं ओर सहचरी मधुर बचन मुख भाखेरी ॥ परमानंद प्रभुमाता हितसों अधिक परम रस चाखेरी ॥२॥

★ राग नट ★ आज हमारे जेवो मोहन सोई कि जे नंद रानिजु ॥ कहा भवन में दुर जो रहे हो धर्यो दध ओदन पा निजु ॥१॥ बड़ी बेर की ऊठी बहु बेटी कोऊ भोरी कोऊ स्यानि जु ॥ बो विध बिजन खाटे ऊर मिठे ले आई मन मानिजु ॥२॥ कहेत रोहनि जसोधा आगें प्रेम लपेटी बानिजु ॥ सेनन में सब समुझ समुझके मनही मन मुसक्यानिजु ॥३॥ बल दाऊ कों टेर लेत हें केहे केहः मधुरी बानिजु ॥ कुंभनदास प्रभु भोजन मेहेमां निग मन जात बखानिजु ॥४॥

★ राग नट ★ लाड़ली ओर लाल जेंवत दोऊ ॥ रतन जटित चोकी धरी सनमुख तापर कंचन थार रहे लस ॥१॥ मधु मेवा पकवान मिठाई पुरी दुध मलाई प्यारी सेहेत हरी जेवन बेठे रामदास बलजाई ॥२॥

★ राग नट ★ भोजनकरत नवल पीय प्यारी ॥ नवल मेहेल नवरंग सिंघासन बेठे नवरंग नवल बिहारी ॥१॥ नवल थार नव खट रस बींजन परोसत नवल सखी ललीतारी ॥ अरस परस भ्रकुटी चितवन पर हीत हरीबंस जाय बलहारी ॥२॥

## श्री व्रज भक्तन के भोजन के पद (शीतकाल)

★ राग धनाश्री ★ यशोदा एक बोल जो पाऊं ॥ रामकृष्ण दोऊ तुम्हारे सुतको सखनसहित जिमाऊं ॥१॥ जो तुम नंदरायजीसो सकुचो तो हों उन्हे सुनाऊं ॥ जोपें आज्ञा देहो कृपाकर भोजन ठाट बनाऊं ॥२॥ जब बाके घर गये स्याम घन अपनो भवन बतायो ॥ परमानंद प्रेम भर उमगी घर बैठें पहुंचायो ॥३॥

★ राग धनाश्री ★ रानीजू एक बचन मोहि दीजे ॥ पठवो सदन हमारे सुतकों कह्यो मान मेरो लीजे ॥१॥ तब कछु नीकी सोंज बनावत तब घर जिय अकुलात ॥ अटक रहत तुम्हारे सुतपर इन बिन लियो नजात ॥२॥ निशदिन खेलो मेरे आंगन

नयननिरख सिराऊं ।। चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन छेलको हंसहंस कंठ लगाऊं ।।३।।

★ राग धनाश्री ★ आज गोपाल पाहुने आये निरखे नयन अघायरीं ।। सुंदरवदन कमलकी शोभा मोमन रह्योहे लुभायरी ।।१।। के निरखूं के टहलकरूं एको नहिं बनत उपायरी ।। जैसे लता पवन वश द्रुमसूं छूटत फिर लपटायरी ।।२।। मधुमेवा पकवान मिठाई व्यंजन बहुत बनायरी ।। रागरंग में चतुर सूरप्रभु केसे सुख उपजायरी ।।३।।

★ राग आसावरी ★ कछु भूलगईहों परोसत फिरलाई मुसकाई ।। झूठे मिसकर आयो चाहत सोतो सांची भईहो लालरी झरहेत केंहभाई ।।१।। जो भूलीसो लाई अधिक छबि अरसाय आछें बनाई ।। वृंदाबनचंद सुखदेवेको चतुराईहो जनाई ।।२।।

★ राग टोडी ★ चित्र सराहत चितवत मुरमुर गोपी बहुत सयानी ।। टक झकमें झुक वदन निहारत अलक संवारत पलक नमारत जान गई नंदरानी ।।१।। परगये परदा ललिततिवारी कंचनथार जब आनी ।। नंददास प्रभु भोजनघरमें उरपर करधर्‌यो बे उतते मुसकानी ।।२।।

★ राग टोडी ★ परोसत गोपी घूंघटमारें ।। कनक लतासी सुंदरसीमा आईहें ज्यों नारें ।।१।। झनक मन आंगनमें डोलत लावण्य मोर सवारें ।। नंदराय नंदरानीते दुरलालेंभलें निहारें ।।२।। घरकी सोंझ मिलाय थार में आगें ले जब धारें ।। परम मिलनियां मोहनजूकी हांसी मिष हुंकारें ।।३।। रुचिर काछिनी जटित कोंधनी जूरावांह उधारें ।। परमानंद अवलोकन कारण भीर बहुत सिंघद्वारे ।।४।।

★ राग टोडी ★ जेंवत दोऊ रंगभरे ।। च्यार भांतके व्यंजन आने खटरस रुचिरकरे ।।१।। गोपीजनके मंडल राजत लोकवेद विसरें ।। सकलमनोरथ पूरक नंदनंदन प्रतिप्रति रूपधरें ।।२।। वासरकेलि मुदित गिरिधारी सुखविलसत सगरें ।। लालदास प्रभु यह विधि क्रीडत भोजन अखिल करें ।।३।।

★ राग सारंग ★ गोपवधू अपनी सोंझ बनाई ।। रुनकझुनक त्योंत्यों ढिंग आवत नूपुर शब्द सुहाई ।।१।। कोऊ ठाढी श्रीमुखचितवत आनंद उर नसमाई ।। व्यंजन

मीठे खाटे खारे जेंवत हरि नअघाई ॥२॥ कोऊ कहत अवके कब मिलहो देओ संकेत बताई ॥ प्रभुकल्याण व्रजजनको जीवन गिरिधर सब सुखदाई ॥३॥

★ राग सारंग ★ आज हमारे भोजन कीजे ॥ बहुत भांत पकवान मिठाई षटरस व्यंजन लीजे ॥१॥ सद्य घी खिचरी और खोवा स्याम सलोने लीजे ॥ उरदके वरा दहीमें बोरे कछु कोरे कछु भीजे ॥२॥ संग समान सखा बुलावहु वांट सबनको दीजे ॥ आसकरणप्रभु मोहननागर पान्यों पछावर पीजे ॥३॥

★ राग सारंग ★ कहत प्यारी राधिका अहीर। आज गोपाल पाहुने आये परोसि जिमाऊं खीर ॥१॥ बहुतप्रीति अंतरगतिमेरें पलक ओट दुःख पाऊं ॥ जानत जाउ संगगिरिधरके संग मिले गुणगाऊं ॥२॥ तिहारो कोऊ विलगनमाने लरकाईकी बात ॥ परमानंदप्रभु भवनहमारे नित उठ आवो प्रात ॥३॥

★ राग सारंग ★ परोसत पाहुनी त्यो नारी ॥ जेंवत रामकृष्ण दोऊ भैया नंदबावाकी थारी ॥१॥ मोही मोहनकी मुख निरखत विकल भई अतिभारी ॥ भूपर भात कोरें भई ठाढी हसत सकल व्रजनारी ॥२॥ के याहि आंच हियेंकी लागी नवजोवन सुकुमारी ॥ परमानंद यशोमति ग्वालिन सेनन बाहिर टारी ॥३॥

★ राग सारंग ★ ग्वालन करते कोर छुडावत ॥ जूठो लेत सबनके मुखते अपने मुख लेनावत ॥१॥ खटरसके पकवान धरे सब तामें रुचि नहिं आवत ॥ हाहा करके मांग लेतहें कहत मोहि अतिभावत ॥२॥ यह महिमा यह पन जानत जाहे आप बतावत ॥ सूरस्याम स्वपने नहिं दरसत मुनि जन ध्यान लगावत ॥३॥

★ राग सारंग ★ जेंवत श्रीवृषभाननंदिनी कान्हकुंवरकी परछाई ॥ जोड़ जोड़ व्यंजन भावत रुचिसों सोइ सोइ सब ललिता लेआई ॥१॥ हितसों जिमावत मोहन प्यारो मधुमेवा पकवान मिठाई ॥ अतिअनुराग बढ्योजु परस्पर द्वारकेश तहां बलबल जाई ॥२॥

★ राग सारंग ★ दोऊ मिल जेमत कंचन थारी ॥ मधुमेवा पकवान मिठाई परोसतहे ललितारी ॥१॥ भोजन करत छहो रससो मिल सुन वृषभान दुलारी ॥ अचवनको

यमुनाजल सीतल कनक रत्न जरी झारी ।।२।। अतिसुगंध कपूर लोंग युत प्रीतिसो रुचिर सवारी ।। हस मुसकाय दशन खंडित बीरी सूरदास बलहारी ।।३।।

★ राग धनाश्री ★ जसोदा पेंडे पेंडे डोले ।। यह गृहकाज उनें सुत को डर दुहु भांतिन मन तोले ।।१।। अबहु कुंवर तुम भोजन कीजे जननी रोहिनी बोले ।। परमानंद प्रभु वह फिर चितयो आनन्द हृदे कलोले ।।२।।

★ राग धनाश्री ★ हरि ही बुलावो भोजन करत ।। खेलत वार भई मनमोहन गिरि गोवर्द्धनधरन ।।१।। बेठे नन्द बाट चाहत हे ताती खीर सिराय ।। बालक सकल संग ले आयो कहत जसोदा माय ।।२।। आज दूध रंधन अधिकाई सुनहो कुंवर कन्हाई ।। परमानन्द प्रभु बल समेत तुम बेग चलो उठ धाई ।।३।।

★ राग आसावरी ★ लेऊ बलाय लाडीले तेरी भोजनकों कित करत अवार ।। गाल लगाय कीयो मुख चुम्बन आतुरताई परोसी थार ।।१।। नंदबाबा समझावत मोहन करत बालकेलि सुखसार ।। गोविन्द प्रभु रसिक गिरिधर पिय व्रजसुखदाई नंदकुमार ।।२।।

★ राग आसावरी ★ भोजन कीजे मोहनलाल ।। भांति भांति के विंजन कीने रसिक रसिली बाल ।।१।। परोसत ही अधिक छवि उपजत बोलत बचन रसाल ।। चितवन में तनमन धन दीनो मोहन मदनगोपाल ।।२।। अतिही सुख बिलसे बहु भांतिनसों भावे परम रसाल ।। श्रीविठ्ठल गिरिधर मुख निरखत अखियां भई निहाल ।।३।।

★ राग सारंग ★ मिल जेंमत लाडिली लाल दोऊ खट विंजन चारु सबे सरसे हठ के मनमोहन हेरि रहे निज हाथ जिमायन कों तरसे ।।१।। करकंपत वीच हि छूटि परयो कबहूंक मास मुखलों पर से मनरसको रस जो उपज्यो सुख माधुरि कुंज सदादरसे ।।२।।

★ राग धनाश्री ★ जेंवत रंगमहल गिरिधारी ।। सखिन जुगल कनकचोकी धरि उपर कंचन थारी ।।१।। ललिता ललित परोसती रुचिसों दोऊ जन मन रुचिकारी ।

प्रीतन भरी सखी जल जमुना आन धरी जुग झारी ।।२।। मंद मंद मृदु गावत सहचरी सुन्दर सब धुनि न्यारी ।। चहुंदिस द्रुमलता मन्दिर पर कूजत सुक पीक सारीं ।।३।। कर अचवन प्रभु नवल बिछावे बेठे ही रस भारी ।। रच बीरी कर दे परमानन्द हरख जाय बलिहारी ।।४।।

★ राग जेतश्री ★ जेहों दुल्हे लाल दुल्हैया ।। बहु विधि साक सुधारे बिंजन ओर बनायो घैया ।।१।। कंचन थार कंचन की चोकी परोसत मोद बढैया ।। ठाडी पवन करत रोहिनी लेत वारने मैया ।।२।। करि अचबन मुख बीरी दीनी आनन्द उर न समैया ।। लाल लाडिली की छबी ऊपर परमानन्द बल जैया ।।३।।

★ राग आसावरी ★ पुरोहित आयो नृप के द्वारे। जसुमति अति आनंद मुदित मन आसन पै बैठारे।। पिता-सदन कुल-प्रोहित मानति दोऊ कर चरन पखारे। तेल लगाइ दंतधावन करि न्हाइ बसन तन धारे।। कर्‍यो पाक प्रोहित अपनी रुचि विंजन विविध नियारे। करि सामग्री भोग समरप्यो बात करत हरि वारे।।

★ राग धनाश्री ★ पियही जिमावत नवल किशोरी।। रहें सिखीरन रहेंत मुखदेत मधुर जब चिते हसत मुखमोरी ।।१।। छिन छिन प्रीति प्रबल प्रीतम उर प्रीया प्रेंम झलकोरी।। यह सुख सदा सखी विलसत परमानंददास बलहोरी ।।२।।

★ राग धनाश्री ★ हरिकों टेरत हे नंदरानी ।। बहुत वेरभई कहुंखेलत कहां रह्यो सारंग पानी ।।१।। सुनत ही टेरि दोरितव आए कबके निकसे लाल।। जेंमत नहीं नंद तुम ही विनु वेगि चलो गोपाल ।।२।। स्यामहिल्याई महेरिं जसोदा तुरत ही पाव पखारे।। सूरदास प्रभु संग नंदके बेठे दें दोऊ वारे ।।३।।

★ राग आसावरी ★ ग्वालिनी फिरि के वेचि दह्यो ।। तेरो बोल सुनत मोरी मोहन हाथ ही कोर रह्यो ज्यों ज्यों उर अंचल सों ढांपत त्यों त्यों मरम लह्यो ।। परमानंददास को ठाकुर अचराधाय गह्यो ।।२।।

★ राग आसावरी ★ राणीजसोदाजीनें खोले बैठो सुंदर व्रजनों नाथ रे ।। भोजन करताएं ने डीठोजेनो जूठोहाथरे ।।१।। वालेमरिभूषण सघला एंठाकीधा अंगेवलगोभातरे ।। रमवाने कारणे उठता जननीऐभीडीबाथरे ।।२।।

मरकलडाते मुखनां जोतां गोपी जन नो साथ रे ।। रसिकराय आनंदे गाये गोविंदना गुन गाथरे ।।३।।

★ राग धनाश्री ★ रूचि सों जेवत जुगलकिशोर ।। होसविनोदकरत हें बहुविधि देत परस्पर कोर ।।१।। जो भावे सो लेत हें दोऊ ललितादिक त्रनतोर ।। सूरदास यह सोभा ऊपर देत हें प्रान अकोर ।।२।।

★ राग धनाश्री ★ लेऊं वलाय लाडिले तेरी भोजन कों कित करत अवार गरें लगाय कीयो मुखं चुंबन अति आतुर व्हे परोसत थार ।।१।। नंदबाबा संग जेंवत मोहन करत वाल केलिसुखसागर गोविंद प्रभु गिरिराज धरन पिय व्रज सुखदाई नंदकुमार ।।२।।

★ राग धनाश्री ★ सुंदर वर भोजन करत दिखाए विविध भांति देत सबन को ओरन को दहकाए ।।१।। कोऊ हँसत कोऊ तारी बजावत कोऊ उठत हँसिगाय मानंदास देखत यहू लीला कोटि मदन मुरिझाय ।।२।।

## भोग सरायवे के पद

★ राग टोडी ★ खंभकी ओझल ठाढो सुबल प्रवीण सखा करमें जटितडबा वीरासों भर्‍यो जेमतहेंरी मोहन ।। परदापरे तिवारी तीन्यो तामध्य झलकत अंग अंग रंग सोहन ।।१।। जाहीको देखत रानी ताहीको उठतझुक कोऊ नहीं पावत समयो जोहन ।। नंददासप्रभु भोजनकर बैठे तब में दईरी सेन पान खाये आंवन कह्योरी गोहन ।।२।।

★ राग धनाश्री ★ भोजन भली भांत हरि कीनो ।। खट रस व्यंजन मठा सलोना मांगमांग हरि लीनो ।।१।। हसत लसत परोसत नंदरानी बालकेलि रस भीनो ।। परमानंद उबर्‍यो पनवारो टेर सुवलको दीनो ।।२।।

★ राग धनाश्री ★ भोजनकर उठे दोऊ भैया ।। हस्त पखार सुद्ध अचमन कर बीरी लेहु कन्हैया ।।१।। मातयशोदा करत आरती पुनपुन लेत बलैया ।। परमानंददासको ठाकुर व्रजजन केलि करैया ।।२।।

★ राग धनाश्री ★ अचमन कीजिये कृपानिधान ।। यमुनोदक कंचन झारी भरलाई चंद्रावली सुजान ।।१।। पनवारों भक्तनकोंदीजे नारद तुंबरगान ।। जेंवत युगल उठे जो परस्पर गावत जनकल्यान ।।२।।

★ राग धनाश्री ★ अचवन करत लाडिली लाल । कंचन झारी गहत परस्पर श्री राधा गोपाल ।।१।। जलमुखलेत हसत हसावत देख सखीन की ओर । राधा माधो खेलत रसभर श्रीभट करत विचार ।।२।।

★ राग धनाश्री ★ भोजन कर मोहन को अचवत ले राधे कंचन की झारी । यमुना जल भर के लाई अपने कर तातो कर प्यारी ।।१।। ठंडो जल ले आन समोयो अचवन करत हसतगिरिधारी ।। धोंधी के प्रभु श्रीमुख पोंछन अंचर मुसकत सकुमारी ।।२।।

★ राग धनाश्री ★ आरोगे गिरिधारीलाल शयाने । बहुविद पाक मिठाई मेवा दूध दहि पकवाने ।। अचावावते हें जशोदा मैया शीतल जल गोपाल अघाने । परमानंद प्रभु भोजन कर बैठे तब बिरीलेहु रुचीमाने ।

★ राग धनाश्री ★ बाबा आज भूख अति लागी । भोजन भयो अघानो निकेतृर्पत होय रुची भारी ।।१।। अचवन कर यमुनोदक लिनो मुर ज्रभांत पल लागी । भोज अंत शीत लागे परमानंद दिजे मेरी आंगी ।।२।।

## बीरी के पद

★ राग धनाश्री ★ पान खवावत कर कर बीरी ।। एकटक व्हे मोहन मुख निरखत पलकन परत अधीरी ।।१।। हसत निहारत वदन स्यामको तनकी सुधबिसरी ।। रसिकप्रीतमके अंग संग मिल छतियां भई अतिसीरी ।।२।।

★ राग धनाश्री ★ सब भांति छबीली कान्हकी ।। नंदनंदनकी आवन छबीली मुख छबि बीरी सुपानकी ।।१।। अलक छबीली तिलक छबीलो पाग छबीली सुबानकी ।। भ्रोंह छबीली दृष्टि छबीली सेन छबीली सुमानकी ।।२।। चरनकमलकी चाल छबीली शोभा अंग सुठानकी ।। परमानंदप्रभु बेन छबीलो सुरत छबीली सुगान की ।।३।।

★ राग धनाश्री ★ बीरी नवल ग्वालिनी लाई ।। उज्वल पानसों लोंग सुपारी करप्रणाम ढिंग आई ।।१।। चूनो खेरसार सुगंध मृगमद सुखद सनाई ।। श्रीविट्ठलगिरिधारी कृपानिधि हाथन लेहित सोज बनाई ।।२।।

★ राग धनाश्री ★ बीरी अरोगत गिरिधरलाल ।। अपने करसो देत राधिका मोहनमुखमें मधुर रसाल ।।१।। ज्योंज्यों रुचि उपजावत उर अंतर त्योंत्यों परस्पर करत विहार ।। कबहु देत दशन खंडित कर कबहुं हसकर देत उगार ।।२।। सहचरी सब मिल अंतरी न राखत हीये आनंद अपार ।। जय जय कृष्ण जय श्री राधे यश गावत परमानंदसार ।।३।।

★ राग धनाश्री ★ बीरी खवावत स्यामहिं प्यारी ।। पाके पान पीरे सुंदरताभरेतेगो सरस संवारी ।।१।। काथा चूना लोंग इलायची कपूर सरस उज्वल सुपारी ।। जावत्री फल मृगमद सौर सबे सजलाई बहु रुचिकारी ।।२।। खाय खवाय दोऊ परस्पर रसभरे नयन कमल मनुहारी ।। आनन उडुपति अधरबिंब फल रसना पर बलहारी ।।३।। उभय सिंघासन मिलके बैठे कामकेलि क्रीडत सुखकारी ।। इंद्रनीलमणि हारबन्योहे माधोप्रभु श्रीगोवरधनधारी ।।४।।

## हिलग के पद (शीतकाल राजभोग दर्शन में)

★ राग रामकली ★ किहिं मिस यशोमतिहीकें जाऊं ।। सकलसुखनिधि-मुखअवलोकूं नयननतृषा बुझाऊं ।।१।। द्वारआरज सभाजुरीहे निकसवेनहिंपाऊं विनागयेपतिव्रतछुटे हसेगोकुलगाऊं ।।२।। स्याम गात सरोजआनन-मुदितलेलेनाऊं ।। सूरहिलगनकठिनमनकी कहीकाहि सुनाऊं ।।३।।

★ राग रामकली ★ तुमकुंटेरतहैजू कान्ह ।। गोरीसी भोरीथोरे दिननकी कछुएकवेसउठान ।।१।। छूटी अलकलालपट ओढेंनागरीचतुरसुजान ।। कहाकहूंमुखअंबुजशोभा मानों उग्यो भान ।।२।। बंसीवटकी ओरगईहे रसिकशीरोमणिजान । सूरदासप्रभुमिलवेकों आईभईनईपहेचान ।।३।।

★ राग रामकली ★ सखीरी मोहि हरिदरशन की चाय ।। सांवरेसोंप्रीति बाढीलाखलोगरिसाय ।।१।। स्यामसुंदरलोललोचन देख मन ललचाय ।।

सूरहरिके रंगराची सीसरहा केंजाय ।।२।।

★ राग रामकली ★ नंदसदनगुरुजनकी भीरतामें मोहनवदन नीकेदेखननपाऊं।। विन-देखें जिय अकुलायजाय दुःखपाययद्यपि बडरेछिनछिन उठधाऊ ।।१।। ले चलरी सखीमोहियमुनाके तीरजहांहोय बलबीर देखदृग सिराऊं।। नंददासप्यासेकों पानीपिवायलेजिवायलेजीयकी जानतहो तोसों कहांलो जनाऊं ।।२।।

★ राग रामकली ★ हिलगन कठिन हे यामनकी ।। जाके लियें सुनों मेरीसजनी लाजगईसबतनकी ।।१।। लोकहसो परलोकहिजाओ ओर देओ कुलगारी ।। सोक्योंरहे ताहि विनदेखें जोजाकोहितकारी ।।२।। रसुलब्धनिमिषनहीं छांडत ज्यों आधीनमृगगानें ।। कुमनदासस्नेहमरमकी श्रीगोवर्द्धनधर जानें ।।३।।

★ राग आसावरी ★ नंदलालसों मेरो मनमान्यों कहाकरेंगो कोयरी ।। होंतोचरणकमललपटानी जोभावेसोहोयरी ।।१।। गृहपति मातपिता मोहि त्रासतहँसतबटाऊलोंगरी ।। अबतो जिय ऐसी बनिआई बिधनारच्योहै-संयोगरी ।।२।। जो मेरेयहलोक जायगोऔर परलोकनशायरी ।। नंदनंदनको तोऊ नछाडू मिलूंगीनिशानबजायरी ।।३।। यह तनधर बहुरच्योनहींपड़ये वल्लभवेषमुरारिरी ।। परमानंदस्वामी केऊपरसर्वस्व डारों वाररी ।।४।।

★ राग आसावरी ★ जाको मन लाग्यो गोपालसोंताहि और कैसें भावेहो ।। लेकर मीन दूधमें राखोजलविन सचुनहीं पावेहो ।।१।। ज्यों सूरारणघूम चलतहे पीर नकाहूजनावे ।। ज्योंगूंगो गुरखायरहें तहेंसुखस्वाद नहि बतावे ।।२।। जैसेंसरिता मिली सींधुमेउलटपरवाहनआवे ।। जैंसें सूर कमलमुख निरखत चितईतउतनडुलावे ।।३।।

★ राग आसावरी ★ मेरोमाई हरिनागरसों नेह ।। जबते दृष्टिपरेमनमोहन तबते विसरयोगेह ।।१।। कोऊ निंदो कोऊ वंदो मो मनगयोसंदेह ।। सरितासिंधुमिली परमानंद भयो एकरसतेह ।।२।

★ राग आसावरी ★ मेरोमाई नयनन ने बढ्यो ।। कमल नयन घनस्याम छबीलो

चितमें रहतचढ्यो ॥१॥ को जाने कहो धों कहा कीनो मोहन मंत्र पढ्यो ॥ यह बंसी गोपालहि दई विधिजु बनाय गढ्यो॥२॥ मन गज परयो रूप सरिता में नाहिन परत कढ्यो॥ विद्यादास सकलव्रज बाज्यो प्रेम निसान मढ्यो ॥३॥

★ राग आसावरी ★ नयना माई नाहिन करत कह्यो ॥ कहा करूं केसे नहिं छूटे जो हठ हरख गह्यो ॥१॥ आवत हुतीसहज मग अपने चपलन उलट चह्यो ॥ निगम स्वरूप धाय खनअपने लोभित चाहि लह्यो ॥२॥ जोव्रत लियो प्रथमही निरखत अंतहूसो निवह्यो ॥ विद्यापति श्रीगोपाल सदा इन अखियन लागरह्यो ॥३॥

★ राग आसावरी ★ नंदलालसों माई अरुझ रह्यो मन मेरो क्यों सुर जाऊंरी ॥ श्रवण बेन रूप नयन मन मनसा नाहिंने चेन रोम रोमरही मूरति कितन गुरुजन दुर्जन धरे नाऊं ॥१॥ जंत्र मंत्र टोना टमना सो कछून कीनो हों उपाऊं ॥ खेम रसिक प्रभुपे अबकेसेंछूटन पाऊंकोनसो देव मनाऊं ॥२॥

★ राग बिलावल ★ बात हिलगकी कासों कहिये सुनरीसखी व्यवस्था यातनकीसमझसमझमन चुप कररहिये ॥१॥ मरमीविना मरमको जानें यह उपहासजान जगसहिये॥ चतुर्भुज प्रभुगिरिधरनमिलेंजबतबही सबसुख पैये॥२॥

★ राग बिलावल ★ लगन मनलागीहोलागी ॥ कहाकरेंगे लोगमेरो होंप्रीतमरसपागी ॥१॥ कछूनसुहायजायन कहूंमन ऐसीवनि आईअनमांगी ॥ अबधरीयत चितआसपासरहिये रसीकप्रीतमबडभागी ॥२॥

★ राग बिलावल ★ सखीरीहों जीवतहरिमुखहेरें ॥ कोऊमेरोसग्योनहोंकाहूकीकहत-सबनसोटेरें ॥१॥ जोईयह हठ सोईभलेंकरहोकहा भयोकहेतेरें ॥ परमानंद हिलगकी बातेंनिवरत नाहि निवेरें॥२॥

★ राग धनाश्री ★ चितवतआपही भई चितेरो ॥ मंदिरलखतछाँड हरि

अकबकदेखनकोंमुखतेरो ॥१॥ मानोठगीपरीजोएकटक इतउत करतफेरो ॥ ओर न कछुसुनतसमझत कोऊश्रवणनिकट व्हे टेरो ॥२॥ चतुर्भुजप्रभुमन-मृगकोपकरचो कठिनकामकोघेरो ॥ गोवरधनधरस्यामसिंधुमें परचो प्राणकोबेरो ॥३॥

★ राग धनाश्री ★ अंखियन ऐसी टेवपरी ॥ कहाकरोवारिजमुखऊपर लागतज्योंभ्रमरी ॥१॥ हरखहरख प्रीतममुख निरखत रहतनएकघरी ॥ ज्योंज्योंराखत यतनन करकर त्योंत्योंहोतखरी ॥२॥ गडकररही रूप जलनिधिमें प्रेमपीयूषभरी ॥ सूरदास गिरिधर नगपरसत लूटतनिधिसगरी ॥३॥

★ राग धनाश्री ★ मोल लईइननयनकी सेन ॥ श्रवणसुनत सुधिबुधिसबविसरी लुब्धीमोहनबेन ॥१॥ कमलनयन खिरकते आवन एक जोवातकहीहंसएन ॥ परमानंदप्रभुनंददुलारे मेरीगायकही दुहिदेन ॥२॥

★ राग धनाश्री ★ मेरोमाई माधोसो मनमान्यो ॥ अपनो तन और वाढोटाको एक मेककरसान्यो ॥१॥ लोकवेदकुलकानत्यजी मेंन्योतिआपने आन्यो ॥ एकनंदनंदन के कारण वैरसबनसो ठान्यो ॥२॥ अब क्यों भिन्न होयमेरी सजनी मिल्योदूधअरुपान्यो ॥ परमानंददासको ठाकुरहे पहिलोपहिचान्यो ॥३॥

★ राग धनाश्री ★ सखीमन लाग्यो वहिठोर ॥ विव्हलभई सकलव्रजडोलत बातविसर गईऔर ॥१॥ मारगजात अचानकदेखे अखियनकीनीदोर ॥ प्रफुल्लित कमलनिरखमुख हरिकोछबिरसगीधेभोंर ॥२॥ विरचनसक्यो कहाकरूं यद्यपिबंघूबगर सबखोर ॥ विद्यादासबिलोकविमोही श्रीगोपालसिरमोर ॥३॥

★ राग धनाश्री ★ नयनामाई अटकेशामलगात ॥ निरखनिरख सादर चकोरज्योंमुखशशि मुरमुसकात ॥१॥ कहांकरोबनीयह कहांते नेंकन इतउतजात ॥ भयेरहेनौका के खगज्यो विसरगई सबबात ॥२॥ कटिपटपीतउरसुमननमालानिरखतनयन सिरात ॥ कुंडलमकरकपोलमिली छबि अंबुजकणजिमप्रात ॥३॥ सुभगभुजनमणिभूषण राजतपद अंबुज सुखदात ॥ विद्यापति श्रीगोपाल विलोकत निमिषण अतिअनखात ॥४॥

★ राग धनाश्री ★ में अपनो मनहरिसो जोर्‌यो ॥ हरिसों जोर सबनसों तोर्‌यो ॥ नांचनच्योत बघूंघट कैंसो लोकलाज डर पटकपिछोरच्यो ॥१॥ आगे पाछें सोचमिट्‌यो जियको बाटमाझ मटुकालेफोरच्यो ॥ कहनो होय सोकहो सखीरीकहाभयो काहूनेमुखमोरच्यो ॥२॥ नवललालगिरिधरन पियासंगप्रेमरंगमें यहतनबोरच्यो ॥ परमानंदप्रभु लोग हसनदे लोकवेदतिनुका ज्योंतोरच्यो ॥३॥

★ राग धनाश्री ★ मेरो मन बावरो भयो ॥ लरका एकइहांहुतोठाढोताहीकेसंगगयो ॥१॥ जानोंनहीं कोनको ढोटाचित्रविचित्र ठयो ॥ पीतांबरछबि निरख हरच्यो मनपढकछु मोहिदयो ॥२॥ ग्वालनी एकपाहुनी आई ताकी यहगति कीनी ॥ परमानंदप्रभुहसतसेनदे प्रेमपाणिगहि लीनी ॥३॥

★ राग धनाश्री ★ मेरोमनकान्ह हरच्यो ॥ गयोजो संगनंदनंदनके वहांते नहीं टरच्यो ॥१॥ कहाकहूंजो बगदन आयो स्याम समुद्रपरयो ॥ अतिगंभीरबुद्धिको आलयप्रेमपीयूषभरच्यो ॥२॥ अबतो जियऐसीबनिआई भवनकाज बिसरयो ॥ परमानंदभलेटांअटक्यो यह सबरह्योधरयो ॥३॥

★ राग धनाश्री ★ मेरोमनहरच्यो दुहुंओर ॥ सुंदरवदनमुकुटकीशोभाश्रवणनमुरलीघोर ॥१॥ तबहों भाज भवनतेनिकसी हरिआये इहिओर ॥ मृदुमुसकायबंक अवलोकन सर्वस्वलीनोचोर ॥२॥ होंबहुतौंसमझायरहीयेकछुवश नाहिनमोर ॥ रह्योउपचार दासपरमानंद बिन नागरनंदकिशोर ॥३॥

★ राग धनाश्री ★ जादिनते आंगनखेलतदेख्यो श्रीयशोदाकोपूतरी ॥ तबतेगृहसूं नातोटूटच्यो जेसें काचो सूतरी ॥१॥ अतिबिशाल वारिजलोचनपरराजतकाजररेखरी ॥ रच्छादे मकरंदलेतमानों अलिगोलकके वेषरी ॥२॥ राजत द्वेद्वेदूधकीदतिया जगमगजगमग होतरी ॥ मनोमहातममंदिर में रूपरत्नकीजोतरी ॥३॥ श्रवण उत्कंठारहित सदाईजबबोलततुतरायरी ॥ मानोकुमुदिनी कामनापूजी पूरणचंदर्हिंपायरी ॥४॥ परमानंददेखसुंदरतन

आनंदउरनसमायरी ।। चले प्रवाहनयनमारगव्है कापें रोक्यो जायरी ।।५।।

★ राग धनाश्री ★ मेरोमनगोविंदसोंमान्योंतातेंऔर न जियभावे ।। जागतसोवतयहउत्कंठा कोऊ व्रजनाथमिलावे ।।१।। बाढीप्रीति आनउर अंतरचरणकमलचितदीनो ।। कृष्णविरहगोकुलकीगोपी घरही में वनकीनो ।।२।। छांड अहारबिहार सुखदेह औरनचाहत काऊ ।। परमानंद वसतहैंघरमेंजेंसे रहत बटाऊ ।।३।।

★ राग धनाश्री ★ लगन इननयननकी वाकी ।। देखेंहींदुःख विनेदेखेंहींदुःखपीरहोत दुहुधाकी ।।१।। टारी न टरतजाय बिनदेखेजिहीफबतहेंसाकी ।। रसिकराय प्रीतममनअटक्यों कहूं लगत नहींटांकी ।।२।।

★ राग धनाश्री ★ मनहरलेगये नंदकुमार ।। बारकदृष्टिपरीचरणनतन देखन न पायोबदनसुचार ।।१।। होंअपनेघरसुचसो बैठी पोवतही मोतिनके हार ।। कांकर डार द्वारव्हेनिकसेबिसरगयोतन करतशृंगार ।।२।। कहारीकरों क्योंमिलहें गिरिधर किहिमिस हों यशोदाघरजाऊं ।। परमानंदप्रभुठगीरी अचानक मदनगोपालभावतोंनाऊं ।।३।।

★ राग धनाश्री ★ मेंतो प्रीतिस्यामसोंकीनी ।। कोऊनिंदो कोऊवंदो अबतो यह धर दीनी ।।१।। जोपतिव्रतती या ढोटासों इनेसमर्प्योदेह ।। जोव्हभिचारतो नंदनंदनसो बाढ्यो अधिकसनेह ।।२।। जोव्रतगह्यो सो औरनभायोमर्यादाकोभंग ।। परमानंदलालगिरिधरकोपायो मोटो संग ।।३।।

★ राग धनाश्री ★ करन दे लोगनकों उपहास ।। मनक्रमवचन नंदनंदनको निमिष नछांडोपास ।।१।। सबकुटुंबकेलोक चिकनिया मेरेजानेघास ।। अबतोजिय एसीबनि आई क्योंमानोलखत्रास ।।२।। अबक्योरह्योंपरें सुन सजनीएकगामकोवास ।। ये बाते नीकी जानतहें जन परमानंददास ।।३।।

★ राग धनाश्री ★ होंनंदलालबिना न रहूं ।। मनसावाचा और कर्मणा हितकी तोसोंकहूं ।।१।। जोकछु कहोसोईसिर ऊपरसोहोंसबेसहूं ।। सदासमीप रहूं

गिरिधर के सुंदर वदनचहूं ॥२॥ यहतनअर्पणहरिकोंकीनो वहसुखकहालहूं ॥ परमानंदमदनमोहनके चरणसरोजगहूं ॥३॥

★ राग धनाश्री ★ सखीरी लोभी मेरेनयन ॥ बिनदेखेंचटपटीलागत देखत उपजेचेन ॥१॥ मोरमुकुटकाछेंपीतांबरसुंदरताके एन ॥ अंगअंगछबिकही नपरतहै निरखथकित भयोमेन ॥२॥ मुरली एसी लागत श्रवणन चितवत खगमृगधेन ॥ परमानंदप्रेमीके ठाकुर वे देखठाढे एन ॥३॥

★ राग रामकली ★ मनमृगवेध्योमोंहननयनबानसो ॥ गूढभावकी सैनअचानकतकि तान्यों भृकुटी कमानसो ॥१॥ प्रथम नादबल घेरनिकटले मुरलीस्वरसप्तकबंधानसो ॥ पाछें बंक चितैमृदुहसके घातकरीउलटी सुठानसों ॥२॥ चतुर्भुजदास पीर यह तनकीमिट तनऔषधआनसों ॥ व्हेहैंसुखतबहीउरअंतर आलिंगनगिरिधरसुजानसों ॥३॥

★ राग रामकली ★ ठाढेरी खिरक माई कोनकोकिशोर ॥ सांवरेवरण मनहरण बंसीधरण कामकरन कैसी मति जोर ॥१॥ पवन परसजात चपलहोत देख पियरे पटको चटकीलो छोर ॥ सुभगसांवरी छोटीघटाते निकसि आई वे छबीलीकटाकों जैसोछबीलो और ॥२॥ पूछतपाहुनीग्वार हाहाहोमेरी आलीकहानाउं को हैचितबितचोर ॥ नंददासजहिं चाहि चकचोंधीआय जाय भूल्योरी भवनगमनभूल्यो रजनीभोर ॥३॥

★ राग रामकली ★ माईहों गिरिधरनकेगुणगाऊं ॥ मेरेंतो व्रत यह निशदिन और न रूचि उपजाऊं ॥१॥ खेलन आंगन आउ लाडिलेंनेकहु दरशन पाऊं ॥ कुंभनदास हिलगके कारन लालच लागिरहाऊं ॥३॥

★ राग रामकली ★ करतहो सबै सयानीबात ॥ जो लों देखें नाहिन सुंदरकमलनयन मुसकात ॥१॥ सब चतुराई बिसर जातहै खानपानकी तात ॥ विनदेखें छिन कल न परतहे पलभर कल्पविहात ॥२॥ सुन भामिनिकें वचन मनोहर मनमें अतिसकुचात ॥ चतर्भुजप्रभु गिरिधरनलाल संग सदा वसों दिन रात ॥३॥

★ राग रामकली ★ एक गांवकोबास धीरज कैसेके धरों ।। लोचन मधूप अटक नहीं मानतयद्यपि यत्न करों ।।१।। बे यह मगनितप्रति आवतहैं हों लेदधि निकरों।। पुलकित रोमरोम गदगद स्वर आनंद उमंग भरों ।।२।। पल अंतर चलिजातकल्पभर विरहाअनल जरों ।। सूर सकुच कुलकान कहांलग आरज पथ न डरों ।।३।।

★ राग रामकली ★ कबही मह्यो लिये शिर डोले ।। झुठेई इतउत फिर आवत यहां आय यह बोले ।।१।। मुंहलों भरी मथनियां तेरी तोहि रटत भई सांझ ।। जानतहों गोरसको लेंवों याही बाखर मांझ ।।२।। इततो आय बात सुन मेरी कहे बिलग जिन मांनें ।। तेरे घरमें तुही सयानी और बेच नहिं जानें ।।४।। भ्रमतहि भ्रमत भर मगई ग्वालिन बिकल भई बेहाल ।। सूरदास प्रभु अंतरयामी आयमिले ततकाल ।।३।।

★ राग रामकली ★ भई मन माधोकी अवसेर ।। मौन धरे मुख चितवत ठाढी या वन आवे फेर ।।१।। तब अकुलाय चली उठवनको बोल्ले सुनत न टेर ।। विरहाविवश चहूंधा भ्रमतिहीं स्याम कहा कियो झेर ।।२।। आवो बेग मिलो नंदनंदन दासन करो निवेर ।। सूरस्याम अंक भरलीनी दूर कियोदुःख ढेर ।।३।।

★ राग रामकली ★ स्याम नग जान हृदय चुरायो ।। चतुरबर नागरी महामणिलख लियो प्रिय सखी संग ताहि न जनायो ।।१।। कृपण ज्यों धरत धन ऐसे दृढ कियो बन जननी सुन बात हस कंठलायो ।। गास दियो डार कहि कुवरि मेरी वावरी सूरप्रभु नाम झूंठें उडायो ।।३।।

★ राग रामकली ★ मनतो हरिके हाथ बिकान्यों ।। निकस्यो मान गुमान सहित बहमैं यह होत न जान्यों ।।१।। नयननसाट करी मिलनयनन उनहींसों रुचि मान्यों।। बहुत यतन करहों पचिहारी फिर इतकों न फिरान्यों ।।२।। सहज सुभायठगोरी परी सीस फिरत अरगानों ।। सूरदास प्रभु रसवश भई गोपी बिसर गयो तन ज्ञानो ।।३।।

★ राग रामकली ★ लोचन भये स्यामके चेरे ।। एते पर सुख पावत कोटिक

मोतन फेर नहेरे ।।१।। हाहा करत परत हरिचरण न ऐसे वश भये उनहीं उनको वदन विलोकत निशदिन मेरो कह्यो न सुनहीं ।।२।। ललितत्रिभंगी छबि पर अटके फटके मोसो तोरी ।। सूरदास हमपें रिस कीनी आपन स्यामसों जोरी ।।३।।

★ राग रामकली ★ स्याम रंग रंगे नयन ।। धोये छुटत नहीं यह कैसेहुं मिलेपघिलव्हैमेन ।।१।। येगीधे नहीं टरत वहांते मोसो लेन न देन ।। सूरजप्रभुके संगसंग डोलत नेंकहू परत न चेन ।।३।।

★ राग रामकली ★ नयन भये बश मोहनते ।। ज्यों कुरंगबश होत नादके टरत नहीं ता भ्रूहनते ।।१।। ज्यों मधुकर वश कमलकोशके ज्यों चंदचकोर ।। तेसेई वश भये स्यामके गुडिया वश ज्यों डोर ।।२।। ज्यों वश स्वातीबूंदन चातक ज्यों वश जलके मीन ।। सूरजप्रभुके वश भये एसे छिनछिन प्रतजु नबीन ।।३।।

★ राग रामकली ★ नयना मान अपमान सह्यो ।। अति अकुलाय मिलेरी वरजत यद्यपि कोटिकह्यो ।।१।। जाकी बान परी सखि जैसी वेही टेक रह्यो ।। ज्यों मरकट मूठी नहिं छांडत नलिनीसूआ गह्यो ।।२।। जैसे नीर प्रवाह समुद्रहि मांझ बह्यो सुबह्यो ।। सूरदास इन तैसियकीन्हीं फिर मोतन न चह्यो ।।३।।

★ राग रामकली ★ सजनीमोते नयन गये अबलों आस रहीं आवनकी हरिके अंगछये ।।१।। जबते कमल वदन उनदरस्यों दिनदिन और भये ।। मिले जाय हरदी चूना ज्यों एकहि रंग रये ।। मोकों त्यज भये आपस्वारथी वे रसमत्त भये ।। सूरस्यामके रूपसमाने मानों बूंद तये ।।३।।

★ राग रामकली ★ सखी होंजो गई दधि बेचन व्रजमें उलटी आप विकाई ।। विनग्रथ मोल लई नंदनंदन सर्वस्व लिखदे आईरी ।।१।। श्यामलवरण कमलदललोचन पीतांबर कटि फेंटरी ।। जबते आवत सांकरी खोरी भईहे अचानक भेटरी ।।२।। कोनकीहें कोनकुलबधू मधुरमधुर हस बोलेरी ।। सकुच रही मोहि उत्तर नहीं आबत वलकर घूंघट खोलेरी ।।३।। सास नणद उपचार पचिहारी काहू मरम न पायोरी ।। करगहि वैद ढंढोर रहे मोहि चिंतारोग बतायोरी ।।४।। जादिनतें में सुरतसंभारी गृह अंगना विष लागेरी ।। चितवत चलत

सोवत ओर जागत यह ध्यान मेरे आगेंरी ।।५।। नीलमणि मुक्ताहल देहूंजो मोहि श्याम मिलायेंरी ।। कहे माधो चिंता क्यों विसरे विन चिंतामणि पायेंरी ।।३।।

★ राग रामकली ★ ग्वालिनी प्रकट्यो पूरणनेह ।। दधिभाजन सिरपर धर्‌योरी कहत गोपालहि लेह ।।१।। कोन सुने कासों कहूंरी काके सुरतसंकोच ।। काको डर पथ अपथकोरी कोउत्तमको पोच ।।२।। वाटघाट निजपुर गली जहां तहां हरिनाम ।। समझाये समझे नहीं बाहि सिखदेवि थक्योगाम ।।३।। दीपक जो मंदिर वरे बाहिर लखे न कोय तृणपरसत प्रज्वलित भयो गुप्त कोन विधि होय ।।४।। पान किये जैस वारणी मुख भलकन तनन संभार।। पग डगमग जित तित धरेंविथुरी अलक लिलार ।।५।। सरिता निकट तडागके दीनोकूल विदार ।। नाममिट्‌यो सरिता भई को निवेरवेवार ।।६।। लज्या तरल तरंगिणीगुरुजन गहरी धार ।। दोऊ कुलकूल परमित नहीं ताहि तरत न लागी वार ।।७।। विधिभाजनओछ्यो रच्यो लीलासिंधु अपार ।। उलट मग्न तामें भयो कोन निकासनहार ।।८।। चित आकरष्यो नंदके मुरली मधुर बजाय ।। जिहिलज्या जगलाजयो सो लज्या गई लजाय ।।९।। प्रेममग्न ग्वालिन भई सूरदासप्रभु संग ।। नयन श्रवण मुख नासिका ज्यो कंचुकी त्यजत भुजंग ।।१०।।

★ राग रामकली ★ जोपें चोप मिलन की होय ।। तो क्यों रह्योपरेविन देखे लाखकरो जिनकोय ।।१।। जोपें विरह परस्पर व्यापे तो कछु जिये बने ।। लोक लाज कुलकी मर्यादा एको चित न गिने ।।२।। कुंभनदास जाहि तन लगी ओर नाकछू सुहाय ।। गिरिधरलाल तोहि विनदेखे पलछिन कल्प विहाय ।।३।।

★ राग रामकली ★ हेली हिलगकी पहिचान ।। जोपें हिलग हियेमें होती तो कहा करे कुलकान ।।१।। हिलग करी ज्यों पतंग दीपकसों तन सोंप्योहै आन ।। शंकत नहीं जरत ज्वालामें सही प्राणकी हान ।।२।। हिलग करी ज्यों चकोर चंदसों पावक चुगतजु जान ।। ऐसेंही कुरंग नाद मृदु मोहे हने पारधी वान ।।३।। हिलगनहींसोवधें सवे त्यजमधुप कमल हित जान ।। ऐसी हिलग लालगिरिधरसों सूरदास पहिचान ।।४।।

★ राग आसावरी ★ कृष्णनाम जबतें श्रवणसुन्योरी आली भूली भवन हों तो बावरी भईरी ॥ भरभर आवें नयनचितहूं नपरे चेन मुखहूं नआवेबेन तनकीदशा कछू औरें भईरी ॥१॥ जेतेक नेमधर्म कीनेरी में बहुविध अंगअंग भई हूंतो श्रवण मईरी ॥ नंददासजाके श्रवणसुने यह गति माधुरीमूरति केंधों कैसी दईरी ॥२॥

★ राग आसावरी ★ चलरी सखी नंदगाम जाय वसिये खिरक खेलत व्रजचंदसों हसिये ॥१॥ वसें बेठन सबे सुखमाई ॥ एककठिन दुःख दूरकन्हाई ॥२॥ माखनचोरे दुरदुर देखूं ॥ जीवन जन्म सुफल कर लेखूं ॥३॥ जलचर लोचन छिनछिन प्यासा ॥ कठिनप्रीति परमानंददासा ॥४॥

★ राग आसावरी ★ नयनन ऐसी बान परी ॥ बिनदेखे गिरिधरनलालमुख युगभर जात घरी ॥१॥ मारग जात उलटतन चितयोमोतनदृष्टिभरी ॥ तबहींते लागीचटपटी इकटक कुलमरयाद टरी ॥२॥ चतुर्भुजदास छुडावनको हठ में बिधि बहुत करी ॥ तब सर्वस्व हरमन हरिलीनो देहदशा विसरी ॥३॥

★ राग सारंग ★ कैसे करि कीजै वेद कह्यो । हरिमुख निरखत विधि-निषधकौ नाहिन ठोर रह्यो ॥१॥ दुःखको मूल सनेह सखीरी सो उर पैठि रह्यो । परमानंद प्रभु केलिसमुद्रमें परच्योसु लै निबह्यो ॥२॥

★ राग सारंग ★ जबतें प्रीति स्याम सों कीनी । ता दिन तें मेरे इन नैननि नेंक हु नींद न लीनी ॥१॥ सदा रहत चित चाक चढच्यो सों और कछु न सुहाय । मन में रहे उपाय मिलनको इहै विचारत जाय ॥२॥ परमानंद पीर प्रेमकी काहु सों नहीं कहिये । जैसे बिथा मूक बालककी अपने तन मन सहिये ॥३॥

★ राग सारंग ★ मदन मोहन सौं प्रीति करी मैं कहा भयो जो कोऊ मुख मोर्यौ । इह व्रततें हौं कबहु न टरिहौं जानि सबनिसों नातो तोर्यौ ॥१॥ सास रिसाऊ मात गृह त्रासौं हौं पतिसों मानहुँ घट फोर्यो । कुंभनदास गिरिधरसों मिलिहौ आरज-पथ हौं सबनिसों छोर्यौं ॥२॥

★ राग आसावरी ★ प्रीति करि काहु सुख न लह्यो । प्रीति पतंग करी दीपकसों आपुन आप दह्यो ॥१॥ अलिसुत प्रीति करी जलसुतसों सम्पुट मांझ गह्यो ।

सारंग प्रीति करी सारंग सों सन्मुख बान सह्यो ।।२।। हमहु प्रीति करी माधोंसों जात कछु न कह्यो । उधो सुर प्रभु बिनु देखे नैननि नीर बह्यो ।।३।।

★ राग धनाश्री ★ मोही लै इन नैननकी सैन ।। स्रवन सुनत सुधबुध बिसरी सब हौं लुबधी मोहन मुख बैन ।।१।। सुंदर वदन घूंघट पट कीनौ चलरी सखी प्रीतम सुख दैन । अंगअंग प्रति सहज माधुरी तेरी सौंह चित रहत न चैन ।।२।। कर गहि कमल खरिकके मारग उनसों बात कही कछु मैंन । परमानंद प्रभु सौंह बबाकी मेरी या गांई कही दुहि दैन ।।३।।

★ राग धनाश्री ★ या सांवरेसो में प्रीति लगाई ।। कुल कलंकतें नांही डरोंगी अबतो करों अपने मनभाई ।।१।। बीच बजार पुकार करूं में चाहे करो तुम कोटि बुराई ।। लाज मर्यादा मिली ओरन को मृदु मुसकान मेर बट आंई ।।२।। बिन देखे मनमोहन को मुख मोही लगन त्रिभुवन दुःखदाई ।। नारायन तिनको सब फीको जिन चाखी यह रूप मिठाई ।।३।।

★ राग आसावरी ★ अब हों कहा करोरी माई ।। सुन्दर स्याम कमलदल लोचन मेरो मन लियो हे चुराई ।।१।। लोग कुटुम्ब सबन मिलके मोहे बारबार समुझाई ।। तोऊ मोहे उन बिन नाहिन परत रहाई ।।२।। अबलों कठिन हिलगके कारन लोकलाज बिसराई ।। कुंभनदास प्रभु सैलधरनपिय मुसक ठगोरी लाई ।।३।।

★ राग आसावरी ★ चितको चोर अब जो पाउ ।। द्वार कपाट बनाय जतन कर नीके मांखन दूध चखाऊं ।।१।। जेसे निसंक धसत मंदिर में तिहिं ओसर जो अचानक आउं ।। गहि अपने कर सुदृढ मनोहर बहोत दिननकी रूचि उपजाऊं ।।२।। ले राखों कुचबीच निरंतर प्रति दिननको ताप बुझाऊं ।। परमानंद नंदनंदनको घर घर ते परिभ्रमन मिटाउं ।।३।।

★ राग आसावरी ★ श्यामसों नेह कबहू न कीजे ।। मन श्याम तन श्याम श्यामही सलोने टेढी प्रीत करे तन छीजे ।।१।। श्याम पाग सिर छबिसों सांवरेकी आली सर्वस अपनो दीजे ।। चतुर्भुज प्रभु गिरिधर सों हिलमिल अधरसुधारस पीजे ।।२।।

★ राग आसावरी ★ कहियो मेरे दिलजानी सों ।। बिरहकी अगन बुझत न बुझाई इन नैननके पानीसों ।।१।। रसकी बतियां आन मिलावो अबला दरद दिवानीसों ।। रसिक प्रीतमसों मेरे मन लाग्यो सुरत खूब बरसानीसों ।।२।।

★ राग आसावरी ★ जा दिन प्रीत स्यामसो कीनी ।। तादिनतें मेरी अखियनमें नेक हु नींद न लीनी ।।१।। चढ्यो रहत चित चाक सदाई यह विचार दिन जाय ।। मनमें रहत चाह मिलनकी और कछु न सुहाय ।।२।। परमानंद प्रेमकी बातें काहुसो नहिं कहिये ।। जेसें व्यथा मूक बालककी अपनें जीयमें सहीये ।।३।।

★ राग धनाश्री ★ कहा करों मेरी माई ! नंद-लडैते मनु चोरच्यो । स्याम सरीर कमलदललोचन, चितवत चले कछुक मुख मोरच्यो ।।१।। हौं अपने आंगन ठाढी ही तबहि तें द्वार ह्वै निकसे आई, नेंकु दृष्टि दीनी उन ऊपर कर मुख मूँदि चले मुसिकाई ।।२।। तब तें मोहि घर की सुधि भूली जब तें मेरे नैननि लाई, 'परमानंद' काम रति बाढी कबहिं मिलें कब देखों जाई ।।३।।

★ राग आसावरी ★ सखि ! हौं अटकी इहि ठौर । देखि कमल-मुख स्यामसुंदर कौ नैना उ भए भौंर ।। घर ब्यौहार करत नहिं आवै स्रवन सुने कल गीत । अपनी ओर बचै हौं लीनी सुबल श्री दामा मीत । लोक वेद कौ मारगु छांड्यो मातपिता की लाज । सबै अंग सुधि भई 'परमानंद' भए राम के राज ।।

★ राग आसावरी ★ जा दिन तें सुंदर बदन निहारच्यो । ता दिन तें मधुकर-मन सों में बहुत करी निकस्यो न निकार्‌यो ।। लोकलाज कुल-कानि जानि जिय, दुसह बिलोकि फिरौ करि छार्‌यो । तात मात पति भ्रात भवन में, सबहिनी कौ कहिबौ सिर धार्‌यो । होनों होइ सु होउ करम-बस, सजनी जिय कौ सोचु निबार्‌यो । दासी भई 'दास परमानंद', भलौ पोच अपनों न बिचारच्यो ।।

★ राग आसावरी ★ माई री ! नाहिंन दोस गोपालै । मेरो मन अटक्यो उनि मूरति अंबुज-नैन बिसालै ।।१।। कौन-कौन कौ मनु न चुरायो वह मुसकनि वह गावनि। वह मुरली वह चालि मनोहर वह कल बेनु बजावनि ।।२।। अपनौ बिगारु कौन सों कहिए आपहि काज रति जोरी । 'परमानंद' स्वामी मनमोहन

हौं अजान मति भोरी ।।३।।

★ राग आसावरी ★ लगनको नाम न लीजे सखीरी ।। लगनको मारग अति ही कठिन हे पाय धरे तन छीजे ।।१।। जो तू लगन लगायो चाहे शीसकी आस न कीजे ।। परमानंदस्वामी के ऊपर वार वार तन दीजे ।।२।।

★ राग आसावरी ★ नैनन निरख हरि कौ रूप। निकसि सकत नहीं लावनि-निधि तें मानों पर्यौ कोऊ कूप ।।१।। छीत-स्वामी गिरिधरन विराजित नख-सिख रूप अनूप। बिनु देखें मोहिं कल न परत छिनु सुभग वदन छबि-जूप ।।२।।

★ राग आसावरी ★ मेरी अखियन देख्यौ गिरिधर भावै। कहा कहों तोसों सुनि सजनी ! उत ही कों उठि धावै ।।१।। मोर-मुकुट काननि कुंडल लखि, तन गति सब विसरावै। बाजूबंद कंठमनि भूषन निरखि निरखि सचु पावै ।।२।। 'छीत-स्वामी' कटि छुद्रघंटिका नूपुर पद हिं सुहावै। इह छबि बसत सदा विट्ठल-उर मो-मन मोद बढावै ।।३।।

★ राग आसावरी ★ सखीरीतु जनम सरोवर जाय ।। अपने रसको तज चकवा की बिछुर चलत दुःख पाय ।।१।। सकुचीत कमल अकाल पायके अली ब्याकुल समुदाय ।। तेरे सेहेज आन कि यहे गत येहे अपराध कह काय ।।२।। यह अद्भुत ससि रच्यो बिधाता सहज समें ऊपचाय ।। कुंभनदास प्रभु गिरिधर सागर देखत ऊमगत ताय ।।३।।

★ राग सारंग ★ श्रीगोकुल राजकुमारसों मेरो मन लागि रह्यो। घूंघरवारे केस सांवरो अमल कमलदल नैना। जटित टिपारो लाल काछनी अरु पियरो उपरैना। कुंडल अलक झलक गंडन पर हंसि बोलत मृदु बैना। कमल फिरावत कर बनमाला नूपुर बजत नगैना ।।१।। काल्ह दुपैरा बिरियाँ ए सखी इन कदमनकी और। मोहन मंडली संग लीने हेली खेलत हैं चकडोर। हौं जु हुति सखियनमें ठाढी निरखी हँसे मुख मोर। सबकी दृष्टि बचाय आली मोपै डारी नंद किशोर ।।२।। आज भोर गई भवन नंदके मैं जु कछुक मिस कीनो। सोय उठे राजत सिज्जा पै नंदलाल रंगभीनौ। लटपटी पाग रसमसे नैना मोहि देखि हंसि दीनो। पुनि अंगराय

दिखाय वदन छबि चितवत चित हरि लीनो ।।३।। जाकी गति मति रति लागी जासों ता बिन क्यों हू न सर ही। जैसे मीन रहे जल बाहिर तलपि तलपि जिय मर ही। कोऊ निंदौ कोऊ वंदौ त्रासो एकौ जीय न धर ही। कहे 'भगवान हित रामराय' प्रभु नेकु हियतें न टर ही ।।४।।

## शीतकाल भोग समय के पद

★ राग नट ★ सुरंग दुरंग सोहत पागकुरंगलाल केसेंलोयनलोने ।। कपोल विलोलनमें झलकेकल कुंडल कानन कोने ।।१।। रंगरंगीलेके अंग सबें नवरंगरंगे ऐसे पाछें भये न आगें होने ।। नंददास सखी मेरी कहां बचले कामके आये टटावक टोने ।।२।।

★ राग नट ★ मोहन मोहनी घाली सिरपर जोई मोहि रहत सदाई ।। निशदिन सखीरी जोलों नहीं देखियत पिय व्रजराजकुंवर ।।१।। यद्यपि धीरज धर रहत सखीरी तदपि मुरली ध्वनि सुनत प्राणहर।। अबन रह्यो परें मिलूं गोविंदप्रभुसों रसिककुंवर बलबल स्यामसुंदर ।।२।।

★ राग नट ★ लालन नाहिं नेरी काहूके वसके ।। बावरी भईरी त्रिया उनसों मन उरुझायो वेतो सदाई अपने रसके ।।१।। निरखपरख देख जियको भरम गयो कामिनीवृंदनके मननकसके ।। तदपि कछु मोहनी गोविंद प्रभुपें युवतीसभामें वदत यशके ।।२।।

★ राग नट ★ प्रीतम प्रीतिहीते पैये ।। यद्यपि रूपगुण सील सुघरता इन वातन नरिझैये ।।१।। सत कुल जन्म करम शुभलक्षणवेदपुराण पढैये ।। गोविंद विनास्नेहसुआलो रसना कहाजु नचैये ।।२।।

★ राग नट ★ आज बनठन लालन आयेरी तेरे मान कर न्योछावर ।। यद्यपि बहुनायक कहूंनमन अरुझोरी तेरे गुणरूपमोहे ताते तोसोंहैरी भांवर ।।१।। ऐसेरी लालनपर तन मन धन दीजे समझ सयानी पलछिन घटत विभावर ।। दूतीके वचनसुन प्रेममगन भई मिलीरी गोविंदप्रभुसो राखे बांधे सुहागदांवर ।।२।।

★ राग नट ★ हँसत हँसत लालन आयेरी तेरे अंगना ।। होंतो तेरो रूपदेख ठग रही

मेरी आली जोकछु कहि आवे छबिदेख भई मगना ।।१।। जियकी रिस गई अधिक रुचि वाढी मोहन मोहीरी भयोरी मनलगना ।। करसों कर गहत्हृदयसों लगाय लई मिलेरी गोविंदप्रभु सबसुख निशजगना ।।२।।

★ राग नट ★ झूठी मीठी बतियां ललन मनुहार करन आये ।। कहा कहिये तेरे हृदयकी सुंदरताई जैसे तन स्याम तेसेई हो मन तातें व्रजयुवतिन मनभाये ।।१।। कित सकुचत पिय खरे नीके लागत प्राणपियाके रंगछाये ।। धन्यधन्यहो ते त्रिया कोन सुकृत कीने ताते गोविंदप्रभु पिय पाये ।।२।।

★ राग नट ★ चल अंगदुराये संग मेरें ।। मुखही मौन धर अधर ओटदे दशन दामिनी चमकत तेरें ।।१।। त्यज नूपुर कटि क्षुद्रघंटिका श्रवण सुनत खगमृग हेरें ।। चतुर्भुजदास स्वामिनी शृंगार सोंज निपटनिकट गिरिधर पियनेरें ।।२।।

★ राग नट ★ रूप देख नयना पलक लागें नहीं ।। गोवरधनधरके अंग अंग पर दृष्टि परत चित रहत तहींतहीं ।।१।। कहारी कहों अंग अंगकी बानिक चितचोर्‌यो माग दही ।। कुमनदासप्रभुके मिलनकी सुंदर बात सखियनसो कही ।।२।।

★ राग नट ★ मोहन नयननहुंते नहिं टरत ।। विनदेखे तालावेलीसी लागत देखत मनजो हरत ।।१।। अशनवसन सेननकी सुध आवे अब कछू नकरत ।। गोविंद बल इम कहत पियारी तृसिखदेरीकेसेक आवे भरत ।।२।।

★ राग नट ★ राधे दू दधिसुत क्यों नदुरावे ।। सुन सुंदरवृषभाननंदिनी काहेको मन तरसावे ।।१।। सारंग दुःखी होत सारंग बिन तोहि दया नहीं आवे ।। जलसुत दुःखी दुःखीवे मधुकर द्वयपंछी दुःखपावें ।।२।। सारंगरिपुकी नेंक ओट कर जो सारंग सचुपावें ।। सूरदास सारंग के धोखें सारंगकुलहिं लजावें ।।३।।

★ राग नट ★ राधे तेरे नयनकेंधोंबट पारे ।। अखियन डोरे चटक रहे हे घूंमत जों मतवारे ।।१।। अंजन दे पियको मनरंजत खंजन मीनमृग हारे ।। सूरदासप्रभु के मिलवेकों नाचत ज्यों नटवारे ।।२।।

★ राग नट ★ प्यारी तेरे लोयन लोनें ।। रसके आलवाल रंगीले बिशाल ऐसे पाछें भये न आगें होनें ।।१।। रूपके रिझोने जब मुसक चलत कोने कामके हेंरी

टटावक टोनें ॥ नंददास नंदनंदनके नयनतें नेक नाहिं नेंहोनें ॥२॥

★ राग नट ★ होंतो भई विरह खिलानो अवधि आस लागी सजनीरी ॥ घरीघरी पलपल वरस वरस जात विनके दरस विन पलक लगें न पलकोना ॥१॥ जोईजोई कहें रंगरटना देखो पंछी परवश रात जगोना ॥ कही न जाय कछु सुंदरघनके प्रभु प्रीतकरीकेधोंटोना ॥२॥

★ राग नट ★ हमें व्रजराज लाडिलेसों काज ॥ यश अपयशको हमें काहा डर कहिनों होय सो कहिलेउ आज ॥१॥ केधों काहू कृपाकरीधो न करीजो सन्मुख व्रजनृप युवराज ॥ गोविंदप्रभुकी कृपा चाहिये जोहें सकलघोष सिरताज ॥२॥

## संध्या आरती के पद अथ गाय बुलायवेके पद

★ राग पूर्वी ★ गोविंद गिरिचढ टेरत गाय ॥ गांग बुलाई धौमर धौरी टेरत वेणु बजाय ॥१॥ श्रवण नादसुन मुख तृणधर सब चितई सीस उठाय ॥ प्रेम विवशव्हे हूंकमार चहुंदिशते उलटी धाय ॥२॥ चतुर्भुजप्रभु पटपीत लियें कर आनंद उर न समाय ॥ पोंछत रेणु धेनुके मुखतें गिरि गोवर्धनराय ॥३॥

★ राग पूर्वी ★ कदंबचढ कान्ह बुलावत गैयां ॥ मोहनमुरलीको शब्दसुनतही जहाँतहाँ ते उठ धैयाँ ॥१॥ आवोआवो सखा संगके पाई है एकठैयां ॥ गोविंद प्रभु बलदाऊसो कहनलगे अब घरकों बगदैयां ॥२॥

★ राग पूर्वी ★ टेरहो टेर कदंब चढ दूरजातहें गैयां ॥ तुह्मारी टेर सुनत बगदेंगी पाछें पीजे घैयाँ ॥१॥ झटकत रई पतूखी फारत द्यावत नंददुहैयां ॥ हमतें बहुत तिहारे गोधन हसत कहाहो भैया ॥२॥ आज हमारी घिरतन-घेरी उतहीकों जातहें धैया ॥ रामदासप्रभुपर हूँकत आंई हेरी देत कन्हैया ॥३॥

## आवनीके पद

★ राग पूर्वी ★ आगे गाय पाछें गाय इत्त गाय उत गाय गोविंद को गायन में वसवोई भावे ॥ गायन के संग धावे गायनमें सचुपावे गायन कीखुर रेणु अंग लपटावे ॥१॥ गायनसों व्रजछायो वैकुंठ विसरायो गायन के हेत कर गिरिले

उठावे छीतस्वामी गिरिधारी विट्ठलेश वपुधारी ग्यारियाको भेख धरें गायनमें आवे ॥२॥

★ राग पूर्वी ★ हाकें हटक हटक गाय ठठक ठठक रही गोकुलकी गली सब सांकरी॥ जारी अटारी झरोखन मोखन झांकत दुरदुर ठोरठोरते परत कांकरी ॥१॥ चंपकली कुंदकली वरषत रसभरी तामें पुन देखियत लिखेहें आंकरी ॥ नंददासप्रभु जहीं जहीं द्वारें ठाढे होत तहीं तहीं वचन मांगत लटक लटक जात काहूसों हांकरी काहूसें नाकरी ॥२॥

★ राग पूर्वी ★ धरे टेढी पाग टेढी चंद्रिका टेढे त्रिभंगीलाल॥ कुंडलकिरण मानों कोटि रवि उदय होत उर राजत वनमाल ॥१॥ सांवरे वदन पीतांबर ओढे बजावत मुरली मधुर रसाल ॥ नंददास वनते व्रज आवत संगलिये व्रजबाल ॥२॥

★ राग पूर्वी ★ धरें वांकी पाग वांकी चंद्रिका वांके विहारीलाल॥ वांकी चाल चलत वांकी गति वांके बचन रसाल॥१॥ वांको तिलक वांकी भृगुरेखा वांकी पहिरे गुंजमाल ॥ गोवरधन अपने कर धरकें वांके भयेहें गोपाल ॥२॥ वांकी खोर सांकरी वांकी हमसूधीहे गिरिधरलाल ॥ नंददास सूधेकिन बोलोहें वरसानेकी ग्वाल ॥३॥

★ राग पूर्वी ★ मोसो क्यों न बोलेरे नंदके लाल तेरो कहा लिये जात ॥ छांडदे अंचलहोतहेगहरुजानतहो ऐसी बाल ॥१॥ वनते आवत कमल फिरावत तापर गावत तान रसाल ॥ धोंधीके प्रभु हाथ दूर राखो टूटेगी मोतिन माल ॥२॥

★ राग गोरी ★ गौरज राजत सांवल अंग॥ देख सखी बनतें व्रज आवत गोविंद गोधन संग ॥१॥ अंबुज बदन नयन युगखंजन क्रीडत अपने रंग॥ कुंचित केश सुदेश मानों अलि शोभित ये संग प्रसंग ॥२॥ कबहुंक वेणु बजावत कर धर नानातान तरंग॥ चतुर्भुज प्रभु गिरिधरनागर पर वारो कोटि अनंग ॥३॥

★ राग गोरी ★ आवें माई व्रजललना दुःखमोचन ॥ गोधनसंग क्वाणितकरमुरली शरद कमलदल लोचन ॥१॥ कटितट लालकाछिनी काछें ओढें पीत पिछोरी ॥ आपन हसत हसावत ग्वालन राग अलापत गोरी ॥२॥

तुलसीके पत्र पहुपकी मालागुहि ग्वालन पहिरावें ।। बालगोपाल नंदजूकेढोटा मधुरिसी वेणु बजावें ।।३।। बरषत कुसुम देवमुनिहरषत मोही व्रजकीनारी ।। कृष्णदासप्रभु रसिकमुकुटमणि लाल गोवर्धनधारी ।।४।।

★ राग गोरी ★ मैया याते भई अबेर ।। आवत भाज गई एक गैया जाय धसी बन फेर ।।१।। दोर ग्वाल सब वाके पाछे पकरनकी कर आस ।। चढकदंब पीतांबर फेरचो आय गई मोपास ।।२।। में चुचकार पीठ कर फेर्‌यो लहडे लई लगाय ।। बतिया सुनत रसिकप्रीतमकी मनफूली यशुमति माय ।।३।।

★ राग गोरी ★ चंद्रमा नटवारी मानों सांझसमें वनते व्रज आवत नृत्य करण ।। उडुगण मानों पहोप अंजुली अंबर अरुण वरण ।।१।। नंदीमुख सनमुख व्हे वामदेव मनावेन विघ्नहरण ।। नंददास प्रभु गोपिनके हित वंसी धरी गिरिधरण ।।२।।

★ राग गोरी ★ वरजूं कोटि घूंघटकी ओट ।। तोउ न रहत नयन नियारे निकस करतहें चोट ।।१।। पाछें फिर देखें कोऊ ठाढे सुंदरवर एक ढोट ।। परमानंदस्वामी रतिनायक लगी प्रीतकी चोट ।।२।।

★ राग गोरी ★ मोहन नेक सुनावहू गोरी ।। बनते आवत कुंवरकन्हैया पहोपमाल ले दोरी ।।१।। नंद लाडले मुरली बजाई परगई प्रीति ठगोरी ।। परमानंद प्रभु सुवन नंदके दुहदई धूरम धोरी ।।२।।

★ राग गोरी ★ कनककुंडल कपोलमंडित गौरजछुरत सुकेश ।। मदगज चाल चलत सुरनर मुनि लाडिले व्रज कुंवर नरेश ।।१।। नयन चकोर किये व्रजवासी पीवत वदन राकेश ।। अतिप्रफुल्लित मुख कमल सबनके गोपकुलनलिनदिनेश ।।२।। अतिमदतरण विघूर्णित लोचन अतिविकसत कृपा आवेश ।। चलत मधुर वरषत गोविंदप्रभु व्रज द्वारेंद्वारें प्रवेश ।।३।।

★ राग गोरी ★ आओ मेरे गोविंदगोकुलके चंदा ।। भई बडी वार खेलत यमुनातट वदन दिखाय देउ आनंदा ।।१।। गाय आवनकी भईहे विरियां दिनमणि किरण होत अतिमंदा ।। आये मेरे तातमात छतियां लाग गोविंदप्रभु व्रजजन सुखकंदा ।।२।।

★ राग गोरी ★ कमलमुख शोभित सुंदर वेनु ।। मोहन ताल बजावत गावत आवत चारे धेनु ।।१।। कुंचित केश सुदेश बदनपर जनु साज्यो अलिसेन ।। सहि नसकत मुरली मधुपीवत चाहत आपने एन ।।२।। भृकुटी चारु चापकरलीने भयो सहायकमेन ।। सूरदासप्रभु अधरसुधा लग उपज्यो कठिनकुचेन ।।३।।

★ राग गोरी ★ बनते आवत गावत गोरी ।। हाथ लकुटिया गायनपाछे ढोटा यशुमतिकोरी ।।१।। मुरलीअधरधरें नंदनंदन मानों लगी ठगोरी ।। याहीते कुलकानहरीहे ओढे पीतपिछोरी ।।२।। व्रजवधू अटन चढ देखत रूप निरख भई बोरी ।। नंददास जिन हरिमुख निरख्यो तिनको भाग्य बडोरी ।।३।।

★ राग गोरी ★ हरिसों एक रस प्रीति रहीरी ।। तनमन प्राण समर्पण कीनो अपनो नेम व्रत लेनि वहीरी ।।१।। प्रथम भयो अनुराग दृष्टितें मानों रंकनिधि लूट लईरी ।। कहत सुनत चित अनत न भटक्यो वेही हिलगजिय पेठ गईरी ।।२।। मर्यादा उल्लंघ सबनकी लोकवेद उपहास सहीरी ।। परमानंददास गोपिनकी प्रेमकथा शुक व्यास कहीरी ।।३।।

★ राग गोरी ★ आवत काल्हकी सांझ देख्योरी गायन मांझ कोनको ढोटारी माई सीसमोर पखियां ।। अतसी कुसुम तन चंचल दीरघ नयन मानों रस परी लरत युगअखियां ।।१।। धातूको तिलकदियें गुंजनके हार हियें उपमानवनेदियें जेतीतेतीनखियां ।। राजत पीत पीछोरी मुरली बजावे गोरी देख भई बोरी एकटक रही अखियां ।।२।। चलत नसूधे मग डगमगत परत पग भामिनी भवन लांई हाथ धरें कखियां ।। मानदासप्रभु चितचोर देखजिऊं ओरना उपावदाव सुनो मेरी सखियां ।।३।।

★ राग गोरी ★ चल सखी चल अहो व्रज पेंठ लगीहै तहां बिकात हरिप्रेम ।। सुठसोंघो प्राणनके पलटें उलट धरो यह नमे ।।१।। आनभांत पायवो दुर्लभ कोटिक खर्चो हेम ।। रामदासप्रभु रत्नअमोलक सखी पाइयतहें एम ।।२।।

★ राग गोरी ★ कोन रस गोपिन लीनो घूंट ।। मदनगोपाल निकट करपाये प्रेमकामकी लूट ।।१।। निरख स्वरूप नंदनंदनको लोकलाज गई छूट ।। परमानंद

वेदसागरकी मर्यादा गई टूट ।।२।।

★ राग गोरी ★ परम रस पायो व्रजकी नारि ।। जो रस ब्रह्मादिक कों दुर्ल्लभ सो रस दियो मुरारि ।।१।। दरशनसुख नयननकों दीनों रसनाको गुणगान ।। वचनसुनन श्रवणनको दीनो वदन अधररसपान ।।२।। आलिंगन दीनो सब अंगन भुजन दियो भुजबंध ।। दीनी चरण विविधगति रसकी नासाको सुखगंध ।।३।। दियो कामसुख भोग परमफल त्वचा रोमआनंद ।। ढिंग बेठ वोदियो नितंबनले उछंग नंदनंद ।।४।। मनको दियो सदारस भावन सुखसमूहकी खान ।। रसिकचरण व्रजयुवतिनकी अति दुर्लभ जियजान ।।५।।

★ राग गोरी ★ आज सखी तोहि लागी हे यह रट ।। गोविंद लेहु लेहु कोउ गोविंद कहत फिरत वनमें ओघटघट ।।१।। दधिको नाम विसरगयो देखत स्याम सुंदर ओढ़े पीरोपट ।। मांगत दान ठगोरी मेली चतुर्भुज प्रभु गिरिधरनागर ।।२।।

★ राग गोरी ★ ब्रज की बीथी निपट साँकरी । इह भली रीती गाँऊ गोकुल की, जितही चलिए तितही बांकरी ।। जहिं जहिं बाट घाट बन उपबन, तहिं तहिं गिरिधर रहत ताकरी । तहाँ ब्रज बधू निकसि न पावत इत उत डोलत रारत कांकरी ।। छिरकत पीक, पट मुख दिए मुसकत छाजें बैठि झरोखें झाँकरी । 'परमानंद' डगमगत सीस घट, कैसे कें जैये बदन ढांक री ।।

★ राग गोरी ★ आबै माई ! नंदनंदन सुख-दैनु । संध्या समै गोपलक सँग आगें राजत धैनु ।। गोरज-मंडित अलक मनोहर, मधुर बजावत बैनु । इहि विध घोष मांझ हरि आवत सब कौ मन हरि लैनु ।। कियौ प्रवेस जसोदा-मंदिर जननी मथि प्यावति पय-फैनु । 'छीत-स्वामी' गिरिधरन-वदन-छबि निरखि लजानौ मैनु ।।

★ राग गोरी ★ नंद-नंदन गो-धन संग आवत, सखा-मंडली-मध्य विराजित गौरी राग सरस सूर गावत ।। मोर-चंद्रिका मुकुट बन्यौ सिर, मंद अधर धरि मुरली बजावत । गृह-गृह प्रति जुवति भई ठाढीं निरखि विरह की सूल मिटावत ।। सिंघ-पौरि पे जाइ जसोदा सुत-मुख हेरि हियें सुख पावति । 'छीत-स्वामी' गिरिधरनलाल-कर अपनें कर धरि उर सों लगावति ।

★ राग गोरी ★ मेरे री ! मन मोहन भाई। संझा समै धेनु के पाछैं आवत हैं सुखदाई ।। सखा-मंडली मध्य मनोहर मुरली मधुर बजाई। सुनत स्रवन तन की सुधि भूलि, नैन की सैन जताई ।। कियौ प्रवेस नंद-गृह-भीतर जननी निरखि हरषाई। 'छीत-स्वामी' गिरिधर के ऊपर सरवसु देत लुटाई ।।

★ राग गोरी ★ मोहन नटवर बपु-काछै आवत गो-धन संग लिऐं लटकत। देखन कों जुरि आईं सवै त्रिय मुरली-नादस्वाद-रस गटकत ।। करत प्रवेस रजनी-मुख व्रज में देखत रूप हृदै मैं अटकत। 'छीतस्वामी' गिरिधरनलाल-छबि देखत ही मन कहुं अनत न भटकत ।।

★ राग कान्हरो ★ आरती करति जसुमति मुदित लाल कों। दीप अद्भुत जोति, प्रगट जगमग होति, वारि वारति फेरि अपनें गोपाल कों ।। बजत घंटा ताल, झालरी संख-धुनि, निरखि व्रज-सुंदरी गिरिधरन लाल कों। भई मन में फूलि, गई सुधि-बुधि भूलि, 'छीत-स्वामी' देखि जुवति-जन-जाल कों ।।

★ राग गोरी ★ ए आज कौन बन चराई येती गैयां कहां धों लगाई एती बेर ।। बैठे व कहा सुध लेहो नेन ओसेर ।।१।। एक बन ढूंढ सकल बन ढूंढी तोउ न पाई गायनकी नेर ।। तानसेनके प्रभु तुम बहोनायक देहो कदमचढ टेर ।।२।।

## शयन दर्शन के पद (शीतकाल)

★ राग नाईकी ★ जान्यो प्रीतको मरम ।। मुख कीमोसोजियकी औरनसों पायो है तिहारो भरम ।।१।। ऐसीहै जो कोन बाल जिन रस वस कर लीने जानियत हियके नरम ।। हरिनारायण स्यामदास के प्रभु माई भलीकीनी भोर आये चतुर परम ।।२।।

★ राग नाईकी ★ लोचन लालची भये ।। रोके न रहत प्रेमके माते पलक कपाट दये ।।१।। ले मनदूत पवनव्है निकसे बहुर्‍यो स्यामपें गये ।। सूरके प्रभु खरेई सोदागार बिनुग्रथ मोल लये ।।२।।

★ राग नाइकी ★ प्यारे पैया परन नदीनी ।। जोईजोई व्यथा हुती मेरे मनमें छिन एक में दूरकीनी ।।१।। जो सोतिन मोसो अनख कर तही सोई आनंद भीनी ।।

नंददासप्रभु चतुरशिरोमणि प्रीत छाप कर लीनी ।।२।।

★ राग नाइकी ★ मिलेकी फूल नयनाही कहे देत तेरे ।। स्यामसुंदर मुखचुंबनपरसे नाचत मुदित अनेरे ।।१।। नंदनंदनपें गयो चाहत है मारग श्रवणनघेरे ।। कुमनदास गिरिधरन मिलनकू करत चिन्ह दशफेरे ।।२।।

★ राग नाइकी ★ चले अनत धोखे आये मेरेंसो तो सकुच रहेही बनेगी ।। तिहारे मिलेकी फूलपीर आवे वांकी मोहि अवधि आस तारे भोरलो गनेगी ।।१।। तुम बहुनायक सबसुखदायक दोऊधाकों सोचकिये प्रीतती तनेगी ।। जाहीको सुहाग भाग ताहीको लहनो जगन्नाथप्रभु प्यारे रसमेंसनेगी ।।२।।

★ राग नाइकी ★ प्यारे अवधिवदी घर आवन की ।। जिहिजिहि जानी तिहि रति मानी टेव परीरी मोहि खिजावनकी ।।१।। बहुत गई अब थोरीसी रही यारे विरहनी विरह जगावनकी ।। सूरदासप्रभुसो जाय कहियो आपही रीझे और रिझावन की ।।२।।

★ राग नाइकी ★ प्यारे अवधि टरी ।। जिहिं डर डरपत सोई भईहें नाजानो दृष्टि कोन करी ।।१।। एक निमिष मोपें रह्यो नपरेरी आलीरी उडक्यो नजात गगन चढिरे ।। सूरदासप्रभु वे बहुनायक विरहअग्निमें जात जरी ।।२।।

★ राग नाइकी ★ मेरो पिय रसियारी सुनरी सखी तेरो दोष नहीं ।। नवल लालको सब कोउचाहत कोन कोन के मन बसियारी ।।१।। एकनसों नयना जोरे एकनसो भ्रोंह मरोरें एकनसों मुख हसियारी ।। कृष्णजीवन लछीराम के प्रभुमाई संग डोलत पूरण शशियारी ।।२।।

★ राग नाइकी ★ यह मन लाग्योरी मेरो सुंदरस्याम अहीर सों ।। निश बासर मोहि कल नपरतहें कैसे राखो मन धीरसों ।।१।। घाटवाट मोहि रोकत टोकत ग्वालबाल संग भीरसों ।। कृष्णजीवन लछीराम के प्रभु मोहि यों सुध जाय शरीरसों ।।२।।

★ राग नाइकी ★ बारों मीन खंजन आलीके दृगन पर भ्रमर मन ।। अतिहसि लोने लोने अतिही सुढार ढारे अति कजरारे भारे विनही अंजन ।।१।। श्वेत असित

कटाक्षन तारे उपमाको मृगही कुंजन ।। परमानंदप्रभु रसवश करलीने प्यारीजूके मनके रंजन ।।२।।

★ राग नाइकी ★ सखीहो अलकन वीच चंपकली गनगनी ।। जगमगात हीरा लाल कुल्हे पर पाग चोकरी अति बनी ।।१।। सुभग नयन तरुण मदमाते मुसकाते आनअन ।। गोविंदप्रभु व्रजराजकुंवर धन्य धन्यहो धन्य धन्य ।।२।।

★ राग कान्हरो ★ रंगमहलमें रंगीलो लाल बैठे रंग भरे। हस गिर जात प्रीतमकी अंक मध्य बलहासरसमत परस्पर मन हरे ।।१।। कुच अंतर गाढे आलिंगन देत ललन प्रिय भुजवशपरे ।। गोविंदप्रभु प्यारी संग गावत तान बितानतरे ।।२।।

★ राग कान्हरो ★ प्यारी कमलवदन तेरो याहीते धरे हीं रहत हें कमल कर ।। वरहीचंद देख कछु अनुसारयाहीते धरेयही रहतहें माथें पर ।।१।। दशनजोत अनुसार याहीतें धरत कंठ मोतिन लर ।। कंचन वरण तेरो याहीतें प्यारी याहीते धरे रहत पीतांबर ।।२।। तुव स्वर कंठ मिलत कछुयाहीते धरत बंसी अधर ।। गोविंदबल इम कहत प्यारी सो इनवातन नेक नरह्यो जात वीतत वासर ।।२।।

★ राग कान्हरो ★ आज बने सखी नंदकुमार ।। वामभाग वृषभान नंदिनी ललितादिक गावे सिंघद्वार ।।१।। कंचनथार लियेजु कमलकर मुक्ताफल फूलनके हार ।। रोरीको सिर तिलक विराजत करत आरती हरख अपार ।।२।। यह जोरी अबिचल श्रीवृंदावन देत असीस सकल व्रजनार ।। कुंजमहलमें राजत दोऊ परमानंददास बलहार ।।३।।

★ राग कान्हरो ★ आवरी बावरी ऊजरी पागमें मेलकें बांध्यो मंजुलचोटा ।। चंचललोचन चारु मनोहर अबही गहि आन्योहै खंजन जोटा ।।१।। देखत रूपठगोरीसी लागत नयनन सेन निमेषकी ओटा ।। नंददास रतिराज कोटिवारों आज बन्यों व्रजराजको ढोटा ।।२।।

★ राग कान्हरो ★ अधर मधुर मुखरित मोहनवंस ।। चलत दृगंचल चपल करत अतिबिलुलित पारिजात अवतंस ।।१।। मानों गजराज कलभ अतिमद गलित आवत लटकत भुजधरें प्रिया सखा अंस ।। गोविंदप्रभुको जु श्रीदामा प्रभृति सब

जयजय करत प्रसंस ।।२।।

★ राग कान्हरो ★ नयन छबीले तरुण मदमाते ।। चंचल चपल भृकुटी छबि उपजत आनआन मुसकाते ।।१।। भक्त कृपारस सदाई प्रफुल्लित मानहु कमलदल राते ।। गोविंदप्रभुको श्रीमुख निखरत पानकरत न अघाते ।।२।।

★ राग कान्हरो ★ सुंदर सब अंगअंग रूपरास राई ।। ग्रथित कुसुम अलकावली धुनत मधुप अवतंसन लटकत सिर लालपाग शोभा कछु कही नजाई ।।१।। सुभग कसुंभी वरुनी बिथुरत पीतबंद विविध मोजे प्रतिबिंबित स्याम सुभग झाई ।। गोविंदबल वानिकपर त्रिभुवन मन मोह्यो कोटि कामवारोरी चरण जुन्हाई ।।२।।

★ राग कान्हरो ★ आज माई वनेरी लालन गोवरधनधर ।। रतन जटित छाजे पर बैठे वृंदारण्य पुरंदर ।।१।। ग्रथित कुसुम अलकावलि अतिछबि ध्वनित मधुप अवतंसन पर ।। लटकलटक जात श्रीदामा अंकमध्य हस मिलवत करसो कर ।।२।। मणिकौस्तुभ हृदयपदक विराजत कंठबनी गजमोतिनकी लर ।। गोविंदप्रभुजो सकल व्रजमोह्यो अंग अंग ललन सुंदरवन ।।३।।

★ राग कान्हरो★ आवत माई राधिका प्यारी युवती यूथ में बनी ।। निकस सकल व्रजराज भवनतें सिंघद्वार ठाढे ललन कुंवर श्रीगिरिवरधारी ।।१।। निरख वदन भ्रोंह मोरी तोरतृण ओर चाल चितवन ओर तिहिछिनु अंचल संभारत घुंघटकी ओटव्है लीयोहें लाल मनुहारी । गोविंदप्रभु दंपतिरस मूरति दृष्टिसो भरत अंकवारी ।।२।।

★ राग कान्हरो ★ सिर सोने के सूतन सोहत पागपेंचन ऊपर नग लगे ।। रतनारे भारे ढरारे नयनन देखत मूर्छित मेंनजगे ।।१।। मुखकी मंजुलताई बरनी नजाई चंचलता देखि दूर भगे ।। नंददास प्रभु नंदरानी छबी निरखत वार पीवतपानी जिन काहुकी दृष्टि लगे ।।२।।

★ राग केदार ★ नयनमेंवस रहीरी लालकें नागरि नेंक न निसरत ।। तेरे तनकी नवरंग बानिक रसिक कुंवरके चिततें न विसरत ।।१।। तेरो मन अरु गिरिधर प्रियको बहु विधान एको करि मिसरत ।। कृष्णदास गिरिधर रसिकवर

सुवशकरणकों सीखीहें कसरत ।।३।।

★ राग केदार ★ चिबुक कूप मध्य पिय मनपर्‌यो अधरसुधारस आस।। कुटिल अलक लटकत ऊपर काढनकों कंडक डार्‌यो बांधप्रेमके पास ।।१।। चंचल लोचन ऊपर ठाढ़ेहें अेचनको मानो मधुरहास ।। नंददासप्रभु प्यारी छबि देखें बढीहें अधिक पियास ।।२।।

★ राग केदार ★ नां जानो किन कान भरेरी सखी प्रीतम अनत ढरेरी ।। रसके समय कहें जोमोसो तेहू बोल विसरेरी ।।१।। केसें कर सचुपावें प्राण ए विरही अनल जरेरी ।। रसिक प्रीतम अबमिलवों केसें ओरनके पालेजु परेंरी ।।२।।

★ राग अडानो ★ जर जाओरी लाज मेरें ऐसी कोन काज आवें कमलनयन नीके देखन न दीनें। वनतें आवत मारग में भेटभई सकुच रही इन लोगनके लीनें ।।१।। कोटि यतन कर रहीरी निहारवेकू अंचराकी ओट देदे कोटि श्रमकीने ।। नंददासप्रभु प्यारी तादिनतें मेरे नयना उनहींके अंगसंग रंगरस भीनें ।।२।।

★ राग अडानो ★ तेरी भ्रोंहकी मरोरनतें ललितत्रिभंगीभये अंजनदे चितयो भयेजू स्यामवाम ।। तेरी मुसकान देख दामिनीसी कोंधजात दीनव्हे याचत प्यारी लेत राधे आधोनाम ।।१।। ज्यों ज्यों नचायो चाहो तैसेहरि नाचत बल अवतो मयाकीजे चलिये निकुंजधाम ।। नंददासप्रभु बोलोतो बुलायलाऊ उनकोतो कलपवीतें तेरीघरीयाम ।।२।।

★ राग अडानो ★ जहां तहां ढर परत ढरारे मोहन तेरे नयन ।। जे निखरत तिनके मन वशकर सोपतहे ले मेंन ।।१।। छिनसन्मुख छिनही होत टेढे एके अवस्था कबहुं नऐंन ।। रसिक प्रीतम ताकें विनदेखें छिन नहीं मनमें चेन ।।२।।

★ राग अडानो ★ पिय तोहि नयननहीमें राखूं ।। तेरी एक रोमकी छबीपर जगत वार सबनाखूं ।।१।। भेटों सकल अंग सांबलकूं अधरसुधारस चाखूं ।। रसिक प्रीतम संगम की बातें काहुसो नहि भाखूं ।।२।।

★ राग अडानो ★ पिय तेरी चितवनहीं मे टोना ।। तनमनधन विसर्‌यो जबहीते देख्यो स्यामसलोना ।।१।। ढिंगरहवेकू हो विकलमन भावत नाहिं नभोना ।।

लोग चवाव करत घरघर प्रतिधर रहिये जियमोंना ।।२।। छूटगई लोकलाज सुतपतिकी ओर कहा अब होना ।। रसिक प्रीतमकी बांनिक निरखत भूलगई गृहगोना ।।३।।

★ राग अडानो ★ स्याम सलोने गातहें काहूको ढोटा ।। आईहूं देख खिरक मुख ठाढो नकछु कहेनकी बात ।।१।। कमल फिरावत नयन नचावत मोतन मुरमुसकात ।। छबिकेबल जगजीत गर्वभरयोमेन मानों इतरात ।।२।। नखसिख रूपअनूपरूप छबि कविपे वरन्यो न जात ।। नंददास चातक की चोंचपुट सबघन कैसे समात ।।३।।

★ राग अडानो ★ कहारी कहों मोहन मुखशोभा कहा करुं सिरपरीहै ठगोरी रूपदेख मेरो मन भयो लोभा ।।१।। अंग अंग लावण्यरूप छबि मानोंहो मदनद्रुम उपजी गोभा ।। कृष्णदास गिरिधरन किये वश चपल कटाक्ष गढ्यो मन चोभा ।।२।।

★ राग अडानो ★ तेरे लोचन लालच करत ।। पियके नयनन सन्मुख चितवत भूले नेंक न टरत ।।१।। कवहुक सुमुखि तिरछे व्हैके नवरंगकों मनहरत ।। कृष्णदास प्रभु गिरिधरनागर सेनन दै दै लरत ।।२।।

★ राग अडानो ★ तेरे लोचन लालच रासी ।। पियके नयन मधुप वशकीने भ्रोंह मेनकी पांसी ।।१।। अव सखी तन देतन चितवन मिले करत उपहास ।। कृष्णदासप्रभु गिरिधरमोहन रिझवत रूपविलास ।।२।।

★ राग अडानो ★ तेरे लोचन लाचन मोट ।। प्राणनाथकों मन चितेंचोरत दे घूंघटकी ओट ।।१।। गिरिधर पियके नयन सन्मुख मिले करत रसघोट ।। सुन कृष्णदास निरख बल इनकों न्याय लजत मनटोट ।।२।।

★ राग अडानो ★ घूंघटके वगरोट ओटरहि चोटशरासन भ्रोंह सायक दृग ।। वेध्योविदित्त चपल पलकन अलकनफणि नृशंसवलि ढिग ।।१।। तेकरसायल नायक कानन सुन सुंदरी सुंदर सरको जग ।। बचन प्रसंस असंभुज हरिधर करि करुणा ज्यूं आभूषणको नग ।।२।। चितचितयो फिर दसा अनोंखी अधरमधुर

सुधि भई जोहूं लग ।। सूरदास संयोग येहि गति रतिविछुरेकी अकथ कथा खग ।।३।।

★ राग अडानो ★ माईरी सांवरो जबते दृष्टि पर्‌यो ।। वेष किशोर स्यामघनसुंदर अंग अंग प्रेम भर्‌यो ।।१।। टेढी पाग लटकी रही वामभाग तापर पेच जराय जर्‌यो ।। साजे वागे रस अनुरागे मनमथ मानहर्‌यो ।।२।। मोतन हेर हसे मनमोहन तवते सुधिबुद्धि सब विसर्‌यो ।। श्रीविठ्ठलगिरिधरन छबीलो नयननमांझ अर्‌यो ।।३।।

★ राग अडानो ★ तव मुख चंद सहज सीतल जामें याबिधुतें ओर भांति ।। जाकों निशाराहु डर नाहि कलंक धर ओर नकछु दोष जाकी नित्यप्रति बढतीहें कांति ।।१।। अलकनके मिष जाढिंग निसदिन रहतहें मधुपन की पांति ।। रसिक प्रीतमकों ताहीतें तो यह तज औरन सुहात ।।२।।

★ राग अडानो ★ तेरेरी नव जोवन के अंगरंगसे लागत परम सुहाए ।। जगमग जगमगहोत मनोमृदु कनक डंड पर ललित नग लगाए ।।१।। तामें तू कुंवरि करउरजनकी प्रीति निरख यातें मोमन भोए ।। नंददासप्रभु प्यारीके अंतरठोर दे बाहिरनिकस आये ।।२।।

★ राग अडानो ★ सब व्रत भंग भए सखि तबतें एक हि व्रत निश्चें कर लीयो ।। खेलत खिरिक रसिक नंदनंदन आय अचानक दर्शन दियो ।।१।। लोकलाज कान कुलसीमा मानों सब संकल्पही कीयो ।। मदनगोपाल मनोहर-मूरति नवरस सिंच सिरांनो हियो ।।२।। व्यसन पर्‌यो संतत चितचाहत रूपसुधा लोचनभर पीयो ।। चतुर्भजुप्रभु गिरिधनलाल छबि विनु देखें पल परत न जीयो ।।३।।

★ राग अडानो ★ भावे तोहे हरिकी आनंद केलि ।। मदनगोपाल निकटकरपाए ज्यों भावें त्यों खेलि ।।१।। कमलनयनकी भुजमनोहर अपुने कंठले मेलि ।। प्रेमविवश ओर सावधानव्है छूटी अलक संकेलि ।।२।। तरुण तमाल नंदके नंदन प्रिया कनककी बेली ।। यह लपटानी दासपरमानंद मुक्ति पायनसी ठेली ।।३।।

★ राग अडानो ★ न्यायरी तू अलक लडी ।। निसीवासर गिरिधरन लालके

हृदयमेंरहेत गडी ।।१।। तोहीलों सुख जोलों समीपरहे एकनिमिष भावत नही छडी ।। कुमनदास स्वामिनी राधाहे व्रजयुवतिन माझ बडी ।।२।।

★ राग अडानो ★ देख जिऊं माई नयन रंगीलो । ले चल सखीरी तेरे पायलागों गोवरधनधर छेलछबीलो ।।१।। नवरंग नवल नवलगुण नागर नवलरूप नवभांत न बीलो ।। रसमें रसिक रसिकनी भ्रोंहन रसमय वचनरसाल रसीलो ।।२।। सुंदर सुभग सुभगता सीमा सुभगसुदेश सुभाग्य सुशीलो ।। कृष्णदास प्रभु रसिक मुकुटमणि सुभगचरित्र रिपुदलन हठीलो ।।३।।

★ राग बिहागरो ★ मिले पिय सांकरी गली ।। मदनमोहन पिय हसकर डारी मोतन चंपकली ।।१।। वारिज वदन देख विथकित भई घुंघटमें न समात अली ।। गोविंदप्रभुप्यारी जु परस्पर रहे रसमत्तरली ।।२।।

★ राग बिहागरो ★ विधाता विदहूं नजानी ।। सुंदर वदन पानकरवेकूं रोमरोम प्रति नयनन दीने करी यह बात अयानी ।।१।। श्रवणसकल वपु होतरी मेरे सुनत पिय मुख अमृत मधुरबानी ।। अरी मेरे भुजाहोती कोटिकोटि तोहों भेटती गोविंदप्रभुसो तो उनतपत बुझानी ।।२।।

★ राग बिहागरो ★ मोहन मुखारविंदपर मनमथ कोटिक वारोंरी माई ।। जहीं जहीं अंगना दृष्ट परतहें तहीं तहीं रहत लुभाई ।।१।। अलक तिलक कुंडल कपोल छबि एक रसना मोपें वरणि न जाई ।। गोविंद प्रभुकी सुंदर बानिक पर बलबल रसिक चूडामणि राई ।।२।।

★ राग बिहागरो ★ बलबल बलकुंवरि राधिका नंदसुवन जासों रतिमानी ।। तूं अतिचतुर वे चतुरशिरोमणि प्रीतिकरी केंसें रहतहें छानी ।।१।। वे जोधरत तन कनक पीत पटसो तोसब तेरी गति ठानी ।। तें पुन श्याम सहज वे शोभा अंबरमिष अपने उर आनी ।।२।। पुलकरोम अबहींहै आयो निरखरूप निजदेह सयानी ।। सूर सुजान सखीके बूझें प्रेमप्रकाश भयो वे हसानी ।।३।।

★ राग कल्याण ★ सखी आज कहा कहो तव रूपकी निकाई ।। नखसिखसो अंग अंग लालगिरिधरन हित रचिपचि बिरंचि अद्भुतबनाई ।।१।। चाल

अतिमराल जंघ कदलीखंभ कटिसिंघ गौरतन सुभग सींवा ।। उरज श्रीफलपक्व अलककेकी छटा बचन पिक मोहन कपोत ग्रीवा ।।२।। तरल युगलोचन नील नलिन श्रीमोचन चिबुक स्यामलबिंदु चारू लसे ।। श्रवण ताटंक हाटक रत्नखचितसो मधुछबि शोभित कपोलवसे ।।३।। अधरबंधूक द्युतिकुंद दशनावली ललितवर नासिका तिल प्रसूनबने ।। निरख मुखचंद्रमा रवि संभ्रम चितचलत ततक्षण छबिकोकनदबने ।।४।। सकल श्रीसिंधु यह कहा भग वरणिये कोटिमुख जीभ परमित न पावे ।। दासकुमनस्वामिनीको सुयश अंतरंग सहचरी मुदित गावे ।।५।।

★ राग कल्याण ★ लालकी रूपमाधुरी नयननिरख नेक सखीहो मनसिज मनहरन हससांवरो सुकुमार नखशिख अंग उमग सौभाग्य सीमानकीहो ।।१।। लटपटी सुरंग पाग ढरकरही वामभाग चंपकली कुटिल अलक बीच बीच रखी ।। आइयत दृगअरुण दंपति लोलकुंडल मंडित कपोल अधर अरुण दंपतिकी छबि क्योंहूं नजात लखी ।।२।। अद्भुत भुजदंड मूलपीन अंस सानुकूल कनक कपिश दुकूलन शिख दामिनी दरषी ।। उरपर मंदारहार मुक्ता लखरसुढार मत्तद्विरद गति त्रियनकी देह दशा करषी ।।३।। मुकुलितवय नव किशोर वचन रचन चितके चोर मधुरितु पियसाय नूतमंजरी चरखी ।। नटबर हरिवंश गान न रागिनी कल्याण तान सदन देख स्वरन कल इतेपर मुरलीका वरखी ।।४।।

★ राग ईमन ★ लाल फव्यो उदो फेंटा गोरे भाल पर बेंदी लाल सोनेके सूतबने कलंगीके झुकेहैं दाहिने अलक स्यामपर करत हाल ।।१।। सुमन बनी नथ फेर फेरत पानखात मुसकात बाल ।। दरशन लखरिझवार रसिकपिय चले गोरस भरे वल्लभ रसिक रसाल ।।२।।

★ राग नायकी ★ काजर बिन कारी तेरी अंखियां फुलेल बिन चिकुर चिकने अधर राते बिन पान ।। मंजन बिन जोत दसन आछे आभूषण बिन केसी नीकी लागे तू सुजान ।।१।। बिन सुगन्ध तो तन सुगन्धमय कोककला पढे बिन रति की खान ।। प्रभु कल्याण गिरिधरन लाल के तूही जीवन प्राण ।।२।।

★ राग कल्याण ★ सहज उरज पर छूट रही लट ॥ कनक लतातें उतर भुजंगनि अमृतपान मानो करति कनकघट ॥१॥ चितवति चारु तोहे देखें त्रिक मोहे चिबुक बिन्दु बर अधर निकट ॥ चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन रंगी रंग अतिबिचित्र गृहकुंज जमुनतट ॥२॥

★ राग कल्याण ★ प्यारी तेरो मुखचंदा सम करवेको चंदा बहुत तपयो ॥ उडगनको ईस भयो पुनरोसधीस भयो ईससील लों गयो ॥१॥ सुधामय सरीर कियो बांटबांट सुरन दयो मरमरके फेर जियो तन धरकें नयो ॥ नंददासप्रभु प्यारी तदपि कछु न अर्थ सर्यो जाय समुद्र पर्यो बिधि बूडन न दयो ॥२॥

★ राग अडानो ★ सेन दे बुलावो लाल बैठी हें झरोखे बाल बनठन के छिपरी ॥ इत सिंघद्वार ठाडो ललन रसिकवर हाथन नौलासी लिये किये बिचित्र भेख अंग अंग रहे दीप री ॥१॥ रूप रिझवार ब्रजराज को कुंवर आली दृग अंकवार भर लिये पलकन झपरी ॥ दोऊ ओर प्रेम की झकोरन में नंददास प्रीत की ललित गत चित चितेरेने लिख लई कठिन लिपरी ॥२॥

★ राग अडानो ★ चटकावरी पावरी पगन नगन जरी पहरि निकसे नंदलाल पिया ॥ कटि तट चटकीलो रंगीलो छबीलो चपलाहूतें चपल काम रही सी बिलोवत हिया ॥१॥ जब उन मुसकाय चितयेरी मो तन निठुरन मुरझन झपकन मन पलकन मनु पवन उलावे प्राण दिया ॥ नंददास प्रभु ता दिनतें मेरी गति हों जानों के जाने मो जिया ॥२॥

★ राग ईमन ★ लालन कहां चले छिप छिप के धरत पग बैयां पकर मोसों कहोगे बात ॥ ऐसी कौन त्रिय सोहागिन भागिन वाही के भुवन तुम रहोगे रात ॥१॥ ऐसी कोन मनमानी मेरी ओर देखो नाहीं काहे कों सांची जुठी आय मिलाय सोंहे मेरी खात ॥ चतुर बिहारी पिया तुम बहुनायक सांचे बोल करवे को आवोगे प्रात ॥२॥

★ राग अडानो ★ मैं जब देखेरी गोपाललाल मोहनी मूरति नंदलाल तन मन धन नोछावर करन को ले गईरी ॥ सुन्दर स्याम उजागर नागर बाकी छबी चित चितेरे

ने लिख लई ॥१॥ गर सोहे बन माल देख मोही ब्रज की बाल या छबीपें हो मगन भई ॥ सूरदास प्रभु कौन मंत्र पढ डार्योरी मुरली में गावत धुनि नई नई ॥२॥

★ राग बिहाग ★ बसो मेरे नैनन में दोऊ चंद ॥ गौर वरन वृषभान नंदिनी स्याम वरन नंद नंद ॥१॥ कुंज निकुंज में बिहरत दोऊ अति सुख आनन्द कंद ॥ रसिक प्रीतम पिया रस में माते परो प्रेम के फंद ॥२॥

★ राग कान्हरो ★ ए सिर सोने के सुतन सोहत पाग पेचन उपर नग लगे ॥ रतनारे ढरारे से लोचन मुरत मेन जगे ॥१॥ मुखकी मंजुलताई कापें बरनि न जाई चंचलता हसदूर भगे ॥ नंददास नंदरानी छबिनिरखत बार पिबत जल जिन काहुकी दृष्टि लगे ॥२॥

★ राग कान्हरो ★ तेरेरी बदन कमलपर नंदनंदन चली मुरली नादकरत गुंजार ॥ ललित त्रिभंगी तेरे रोमरोम रमरमे कर राखों उर हार ॥१॥ जा सुखकों सनकादिक इच्छत सो तेरे बसभए मुरार ॥ कल्यानके प्रभु कमलापति मिलवेको किनहुंन पायो पार ॥२॥

★ राग बिहाग ★ राधेजुको प्रान गोवरधनधारी ॥ तरुन तमाल ढिंग कनकलतासी हरिजुके प्रान राधिका प्यारी ॥१॥ मरकत मणि नंदलाल लाडिलों कंचन तन वृषभान दुलारी ॥ सूरदासप्रभु प्रीत निरंतर जोरी जुगलबने बनवारी ॥२॥

★ राग बिहाग ★ हिमकर सुखद सरस रितुआई अद्‌भुत शोभा बरनी न जाई ॥ प्यारीजुके फरगुल सोहे प्रीतम ओढे सरस रजाई ॥१॥ परेहें परदा ललित तिबारी धरी अंगीठी सुखदाई ॥ बरत अंगार धुप अंबरलों सरस सुगंध रह्यो तहांछाई ॥२॥

★ राग कान्हरो ★ हिमऋतु सिसिरऋतु अति सुखदाई ॥ प्यारी जू के फरगुल सोहे प्रीतम ओढे सरस कवाई ॥१॥ पर गये परदा ललित तिवारी धरी अंगीठी अति सुखदाई ॥ जरत अंगार घूम अंबर लों सरस सुगंध रह्यो तहां छाई ॥२॥ जब-जब मधुर सीत तन व्यापत बैठत अंग सों अंग मिलाई ॥ श्री वल्लभ पद

रज प्रताप ते रसिक सदा बलि जाई ।।३।।

## मान के पद

★ राग कान्हरो ★ आजबनी वृषभानकुंवरिदूती अंचलवारत तृणतोरत कहेंत भलेजु भलें भामा ।। वदनजोति कंठपोति छोटी छोटी लरमोतिन की सादाशृंगारहार कुचविच अतिशोभितहें बोरसरीदामा ।।१।। एकरसनां गुणअपार केसेंक वरणों विशदकी रति अंगअंग पियनमत अभिरामा ।। गोविंदबल सखी कहें रचिपचि विरंचि कीनी स्यामरमणको माई तूहीहे श्यामा ।।२।।

★ राग कान्हरो ★ मानिनी मान निहोरो ।। हों पठई तोहि लेन सांवरे चलरी गर्व कर थोरो ।।१।। कुंजमहल ठाढे मनमोहन चितवत चंदचकोरो ।। हरी दासके स्वामी स्यामा कुंजविहारी चलोरी होतहें बोरो ।।२।।

★ राग कान्हरो ★ चढबढ विडर गई अंगअंग मानवेली तेरें सयानी ।। हृदय आलवाल मध्य प्रकटभईरी आली प्रीतिपालीनीके कर छिन छिन रूसबो भयोपानी ।।१।। कोनकोन अंगनते निरवारोरी आली अलक तिलक नयनन बेनन भ्रोंहसों लपटानी ।। नंददासप्रभु प्यारी दूती के वचनसुन छबीली राधे मंद मंद मुरमुसकानी ।।२।।

★ राग कान्हरो ★ अरी तू काहे अनमनी बोलतनाहिं बुलायें ।। अवलोंतो तू हसत खेलतही कहाभयो मोहिं आये ।।१।। नयन नीचेंकियें चितवन रुखदियें तिरछिभ्रुंह चढायें ।। रसिक-प्रीतमपिय कबके ठाडे विनवत हे परपायें ।।२।।

★ राग कान्हरो ★ हरिहोंते हारीहों लालतिहारी प्यारीके पायंन परपर ।। रही सिरधरचरणन बडीबारभई लीजिये मनाय रूठी मानत मानिह क्योंहूं कर ।।१।। जेसेंजेसें रातजात तेसेंतेसें सतरात मोसों नबतरात मानीहे में यांसूंहार ।। सुनतही वचन रसिकप्रीतम दूतीके आप उठ चले देखत वदन जात इतहीं ढार ।।२।।

★ राग नाईकी ★ तू मोहि कित लाईरी यह गली ।। जो जिय डरपतहीं सोईभई आगें ठाडे मोहन अब कैसें जैवो मेरी माई ।।१।। रशन दशनधर करसुं करमीडत दूतीसों खीजत आनंद उर नसमाई ।। गोविंदप्रभु की तेरी हिलमिल बातेंहो

सबजानत भलीकीनी भले नगसों भेटकराई ।।२।।

★ राग नाईकी ★ रूसनों नकर प्यारी रूसवो निवार ।। कबकीहों ठाडी तोसो अरज करतहों रेनरही घडी चार ।।१।। मेरो कह्यों तू मान सुहागिन अतिसुंदर सुकुमार ।। गोविंदप्रभुसों हिलमिल भामिन तनमन जोबनवार ।।२।।

★ राग नाईकी ★ हो तोसों अब कहा कहों आलीरी कोनवेरकी बुलावतही मोहि ।। नवलनागर नवलकुंज कवके निस जागतहें प्रीतिकीतोवरही नकछू इतनी सकुच नाहिन तोहि ।।१।। कहा आयुस होतहै मोकों तुमतो सुहागके भर आवेश वसोई ।। मोहि कहा तरोई प्राणप्रीतम सुखपावें सोईतो करोरीआली गोविंद प्रभु अपने कंठराखति पोहि ।।२।।

★ राग नाईकी ★ लालन मनायो नमानत लाडिली प्यारी तिहारी अतिशय कोपभरी ।। तुह्मारीसों अनेक यत्न छलबल सबकिये मानतो अब घटतनाहिन त्योंत्यों अतिरीस होतहैं खरी ।।१।। सामदाम भेददंड एकोनहीं चितचुभत तापरहो पायपरी दंततृणधरी ।। नाहिन कछू और उपाव आनबन्यो यह दाव गोविंदप्रभु आपुन चलिये तुम देखतही वाको मानछूट जेहें तिंहिंघरीं ।।२।।

★ राग अडानो ★ तुम पहिलें तो देखो आय मानिनीकी शोभा लाल पाछेंतो मनायलीजें प्यारेहो गोविंदा ।। करपर धरकपोल रहीरी नयननमूद कमलविछाय मानों सोयो सूखचंदा ।।१।। रिसभरी भ्रोंह तापर भ्रमर बेठे अरबरात इंदु तर आयो मकरंद अरविंदा ।। नंददासप्रभु एसी काहेंकुं रुसैये बल जाको मुखदेखेते मिटत दुःखद्वंदा ।।२।।

★ राग केदारो ★ आपन चलिये लालन कीजिये नलाज ।। मोसी जोतुम कोटिक पठवो प्यारी नमानत आज ।।१।। होंतो तिहारी आज्ञाकारी मोसों कहाकहेत महाराज ।। नंददासप्रभु बडरे कहे गये आपकाज महाकाज ।।२।।

★ राग केदारो ★ मानगढ क्यों हूं नटूटत अबलाके बलको प्रताप ।। आपन ढोवाचढ गिरिधरपिय अबलातू चिलाचांप मुक्तकटाक्ष घूंघटदरवाजो नहीं खूटत ।।१।। विविध प्रणतहथ नालगोला बोलेंजू उछटपरत काम कोट नहीं

फूटत ।। गोविंदप्रभु सामदाम भेद दंड कर घेरापरच्यो चहूं दिशसंचित रुख्याई जलक्योंहूं नहीं खूटत ।।२।।

★ राग केदारो ★ तूं न मानन देत आलीरी मन तेरो मानवेको करत ।। पियकी आरतदेख मेरेजिय दयाहोत तेरी दृष्टि देखदेख डरत ।।१।। मोसो कहत कहा मेरो नदोष कछू निपट हठीली धायक्योंन अंकभरत ।। नंददासप्रभु दूतीकें वचनसुन ऐसे अंगढरच्यो जेसे आंचके लगेते राग ढरत ।।२।।

★ राग केदारो ★ उत्तर न देत मोहनी मौन धर बैठी पियवचन सुनत नेकहु न मटकी ।। तूं कब चलेंगी आली रजनी गईरी सब शशिवाहन धरनी धुकलटकी ।।१।। घरेंरी पाणिकपोलन में करेंकलोल भुव नखलिखत तेरे कहा जात घटकी ।। मुग्धवधु रीस काहेको करत हठ परम भामती तू नागरनटकी ।।२।। ध्रुवसमान फिर आयेरी सप्तरिषि अबही वारहेंतमचोररटकी ।। मानदासबल राधिका कुंवरी चल नीकी शोभा लागे तेरे नीलांबर पटकी ।।३।।

★ राग बिहागरो ★ लाडिली नमानेहो लाल आपहीं पाऊंधारो जैसे हठत्यजे प्यारी सोई यतन विचारो ।।१।। बातेंतो बनाय कही जेती मति मेरी ।। एकहूं नमाने हो लाल ऐसी त्रिया तेरी ।।२।। आपनी चोंपके काजें सखीभेष कीनो ।। भूषण वसन साजें वीना करलीनो ।।३।। उतते आवत देखी चक्रत निहारी ।। कोन गाम वसतहो रूपकी उजियारी ।।४।। गाममतोहें नंदगाम तहांकीहों प्यारी ।। नामहै सांवलसखी तेरे हितकारी ।।५।। करसों करजोरें स्यामा निकट बैठाई ।। सप्तस्वरन साज मिल स्वल्प बजाई ।।६।। रीझ मोतीहार चारु उरले पहरावें ।। ऐसेहीं हमारो भटू सांवरो बजावें ।।७।। जोईजोई इच्छा होय सोई माग लीजे ।। ऐसी बातें सांवरेसो कबहुं मान न कीजे ।।८।। मुखसो मुखजोरें स्याम दरपन दिखावें ।। निरख छबीली छबिप्रतिबिंब लजावें ।।९।। छल तोऊ घर आयो हस पीठ दीनी ।। नंददास बलप्यारी आंकों भरलीनी ।।१०।।

★ राग बिहागरो ★ काहेकूं तुम प्यारे सखी भेष कीनो ।। भूषणवसनसाजें वीनाकरलीनो ।।१।। मोतिन मांग गुही तुम कैसेहों प्यारे ।। हम नहिं जाने पहचाने

कोनके दुलारे ॥२॥ रूंसवेको नेम नित्य प्यारी तुम लीनो ॥ ताहीके कारण हम सखी भेषकीनो ॥३॥ सबसखी दुरदुर देखी कुंजनकी गलियाँ ॥ नंददास प्रभुप्यारे मानलीनी रलियां ॥४॥

★ राग बिहागरो ★ मान न घट्योआली तेरो घटजु गई सबरेन ॥ बोलन लागे तमचर ठोर-ठोरतू अजहूं नबोलीरी पिकबेन ॥१॥ कमलकली विकसी तूं न नेक हसी कोन टेवपरी मृगशावक नयन ॥ नंददास प्रभुको नेह देख हांसी आवत वे बैठेहें रचिरचि सेन ॥२॥

★ राग बिहागरो ★ मनावत हार परीरी माई ॥ तू चटतें मटहोत नराधे हों हरि लेन पठाई ॥१॥ राजकुमार होयसो जाने के गुरुहोय पढाई ॥ नंदनंदनको छांड महातम अपनी राखबडाई ॥२॥ ठोडीहाथचलीददूती तिरछी भ्रोंह चढाई ॥ परमानंदप्रभु करोंगी दुल्हैया तो बावा की जाई ॥३॥

★ राग बिहागरो ★ तूं चल मेरो राख मान ॥ वे तो तिहारो मगजोवतहें तू तो निपट अयान ॥१॥ काहूकी कही सुन धरीये जियमें करीये अपने मनकों सयान ॥ ऊठ चल हिलमिल कहत गदाधर नेक न करेंरी तूं कोनकी कान ॥२॥

★ राग बिहागरो ★ आवत जातहौं तो हार परीरी ॥ ज्यों ज्यों प्यारो विनतीकर पठवत त्यौंत्यौं तूं गढमान चढीरी ॥१॥ तिहारे बीच परेसोई बावरी हौं चौगानकीगेंद भईरी ॥ गोविंदप्रभुकों वेगमिल भामिनी सुभग यामिनी जातवहीरी ॥२॥

★ राग बिहागरो ★ कृष्ण चंद्र आवेंगे मेरे आजरी माई बहुतदिननकी अवधि आज ॥ तनमन जोबन आनंदित वदनहास नयन सेनवेनमधुरथार मध्यकरकें पहेलें मिलहोरी भेटसाज ॥१॥ गृहगृहतें सखी बाल लेंहुंरी अति प्रवीन वीनाकरधर हरिसंग करहों रतिसुख समाज ॥ मकरंद नंद सुतकिशोर रिझवोंगी गानतान आनआन आछेहूं कृष्ण रागरंग रिझायकें लेहोंरी एक छत्रराज ॥२॥

★ राग बिहागरो ★ मोहनराय मानीरी तेरी बतियां ॥ मदनमोहन पिय बैठे एकांतव्है दीनो सुहस्त जाय पतियां ॥१॥ जबलग धीरजधररी सयानी दिनगत

याम जोलों होय अधरतिया ।। कुमनदासप्रभु दूती के वचनसुन परमसीतल भई छतियां ।।२।।

★ राग बिहागरो ★ कहो केंसे कीजे हो ऐंसे कपटिन को विश्वास ।। एकनके चित्तलेत चोरकें एकन लेत उसास ।।१।। जो कोऊ मान करत ताहि मनावत चेरीव्हे रहें तासों होत उदास ।। रसिक-प्रीतमकी जानी नपरे हांसी कीधों उपहास ।।२।।

★ राग बिहागरो ★ अतिहीं निठुरत्रियमानवती क्योंहू क्योंहूं मनाई ।। आपने जानमें बहुतभांत करनीकी युक्ति बनाई ।।१।। जे तुमकही कपटकी बातें अनेक यत्न करकें दिखराई ।। रसिकप्रीतम आप चलियें मिलवें रसवशकीजें मोहिदीजें रीझ बधाई ।।२।।

★ राग बिहागरो ★ चलचल मेरो कह्योतूंमान नातर पछतेहे करमान ।। अबहींतो पिय पायपरतहें त्यज अभिमान पावेंगी अधिक सनमान ।।१।। बहुनायक सुखदायक सोंकरि काहूको निवह्योहे गुमान ।। रसिक प्रीतमसो पियजो पैयेतो सहिये कोटिक अपमान ।।२।।

★ राग बिहागरो ★ आजशुभलग्न तेरे मिलन कों गिरिधरनागर गुनिन गनायो ।। प्रथमसमागमतें कित डरपत बडेभाग्य संचित फलपायो ।।१।। नवनिकुंज मंडप सखी सुमति-विधाता सुहस्त बनायो ।। रसिकलाल तव संग प्रमुदित कृष्णदास मंगलयश गायो ।।२।।

★ राग बिहागरो ★ मेरे बुलाए नाहिन बोलतरी काहेकों भुलावत ।। हों पठई प्यारे तोहि बोलन उलटी नागरी आंख दिखावत ।।१।। तेरे मन भावे नंदनंदन तू हरिके चितमन बुद्धिभावत को जाने कामिनी कौतुककी मोसिनकुं बात नबोरावत ।।२।। धरतमुरलिका आपतें अधरकर तनमनभई मधुर कलगावत ।। कृष्णदास स्वामीगिरिधरकी मोहनमूरति कुचवीच अरुझावत ।।३।।

★ राग बिहागरो ★ बोलत मदनगोपाल विनोदी चलरी नागरी छांडदेगजू ।। मेरे जानगिरिधरन मिलनकों फूलेफूले तेरे अंगजू ।।१।। तब उर पर युगल

नारंगफलरंग छबीले स्यामरंगजू ।। कृष्णदासप्रभू गिरिधर नवरंग भू चपलमन्मथ मानभंगजू ।।२।।

★ राग बिहागरो ★ आज आली अचरज सुन मेरें प्रीतम आए मनावन ।। तूं जोनहिन दुहुनसमझावत रूसगए मनभावन ।।१।। जांकी चरणरज ब्रह्मादिक सुरमुनि पशुपंछीगन पावन ।। तबतें नबिसरत मोहि सखीरी रसिकराय मुखलावन ।।२।।

★ राग बिहागरो ★ राधा हरि अतिथि तुम्हारे ।। रतिपति अशनकाल गृहआए उठ आदरदे कहें हमारे ।।१।। आसनआधी सेज सरक दे सुख पगरस पखारे ।। अरघादिक आनंदअमृतले ललितलोल लोचनजल ढारे ।।२।। धूप सुवास स्वास सौरभ मुखविहसनिदरधरें दीपउज्यारे ।। वचनरचन भ्रूभंग अवरअंग प्रेममधुररस परोसन न्यारे ।।३।। उचितकेलि कटुतिक्त करजद्विज अमलऊरोजफल कठिन करारे ।। मर्दनक्षार कषायकवचग्रह चुंबनादिसमर्पि संभारे ।।४।। अधरसीधुउपदेशसिंचशुचि विधिपूरण मुखवास संवारे ।। सूर सुकृत संतोष स्यामकों बहुत पुण्य यह व्रतप्रतिपारे ।।५।।

★ राग बिहागरो ★ दोरीदोरी आवत मोहि मनावत दामखरच कछु मोललईरी ।। अचरापसार के मोहि खिजावतहों तेरे बाबा की चेरी भईरी ।।१।। जारीजा सखी भवनआपने लखबातनकी एक कहीरी ।। नंददास वे क्यों नहीं आवत उनके पायन कछु मेंहदी दईरी ।।२।।

★ राग बिहाग ★ सुनत खिसयानी परी चल दूती प्रीतम पें गई हे लजाय ।। वे तो नहि मानतकोटि जतन कीए हो पचिहारी बोहोत मनाय ।।१।। आपुहि मनाइ लीजे मोसों एसी कही सुनो अब कहा कीजे लाल दूसरो उपाय ।। नंददास प्रभु एसी सुनि आपहि पधारे तब पोढे अपनी प्यारी कों उर लाय ।।२।।

★ राग कल्याण ★ सिखवत केती राति गई । चंद्र उदै बर दीसनि लाग्यो तू नहिं और भई ।। सुनि हो मुगध ! कह्यौ नहिं मानति जामी हदै कई । 'परमानंद' प्रभु कों नहि मिलती तौ प्रतिकूल दई ।।

★ राग कान्हरो ★ मनावन आयेरी मनावन जान्यो हे प्राणेश्वर प्राणनके प्यारे ।। कोन कोन गुन रूप बरनों प्यारे तिहारे उनतन नयना न्यारे ।।१।। मेरी सी मोसों ओरनकी ओरनसों एसे व रंग ढंग प्यारे तिहारे ।। नंददास प्रभु एक रस क्यों न रहो केसे के प्राण पत्यारे ।।२।।

## पोढवे के पद

★ राग केदारो ★ आज में देखे आलीरी सो दोऊ मिल पोढे बातें करत ।। वदननिहारत परस कपोलन हँसहँस आंको भरत ।।१।। कबहुक रतिकी सुरत भईरी जीयमनो एक लाज धरत ।। रसिकप्रीतम पियप्यारी परस्पर एकरसव्है विहरत ।।२।।

★ राग केदारो ★ पोढेमाई ललन सेज सुखकारी ।। मणिगण खचित रंगमहल में संग श्रीराधाप्यारी ।।१।। सहचरी गानकरत मधुरेस्वर श्रवणसुनत सुरत हितकारी ।। तनमन मगन भये पियप्यारी निरखदास बलहारी ।।२।।

★ राग बिहाग ★ चांपत चरण मोहनलाल ।। पलका पोढी कुवरिराधे सुंदरी नवबाल ।।१।। कबहुं करगहि नयनमिलावत कबहु छुवावत भाल ।। नंददासप्रभु छबिनिहारत प्रीतके प्रतिपाल ।।२।।

★ राग केदारो ★ पोढेमाई ललन सेज सुखकारी ।। रत्नजटित सारोटा बैठी चांपत चरण वृषभान दुलारी ।।१।। चरणकमल कुच कलशनपर धरें अंग अंग पुलकित व्रजनारी ।। कर कर बिरी खवावत पियकों मधुरवचन बोलत मनुहारी ।।२।। कंठ लगाय भुजदें सिरहानें अधर पान मुखकरत पियारी ।। रीझउगार देत गोविंदप्रभु सुरत तरंग रंगरह्यो भारी ।।३।।

★ राग केदारो ★ सुभग शय्यापेंपोढे कुंवर रसिकवर रसमसे अंगसंग जाय रेन जागेहें ।। शिथिल बसन बिचभूषण अलकछबि सोंये मुखसुखसो लपट उरलागेहें ।।१।। झुकझुक आवें नयन आलस झलक रह्यो लटपटी बात कहेत अति अनुरागेहें ।। सूरदास नंदसुवन तुह्यारो यश जानों प्राणपिया सुखहीमें रसपागे हें ।।२।।

★ राग केदारो ★ सखियन रुचिरुचि सेज बनाई ।। रंगमहलमें पेरेहें परदा धरी अंगीठी सुखदाई ।।१।। सीतसमें ग्रीष्म ऋतुकीनी अतिसुंदर वरराई ।। श्रीविठ्ठलगिरिधारी कृपानिधि पोढे ओढ रजाई ।।२।।

★ राग केदारो ★ सोवत नींद आय गई स्यामहीं ।। महरि उठ पोढाय दुहनको आपन लगी गृहकामही ।।१।। वरजतहें घर के लोगनकों हरी ये लेले नामही ।। गाढेबोल नपावत कोऊ डर मोहन बलराम ही ।। शिवसनकादिक अंत नहिपावत ध्यावतहें हिनयामही ।। सूरदासप्रभु ब्रह्मसनातन सो सोवत नंदधामहीं ।।३।।

★ राग केदारो ★ देखत नंदकान्ह अतिसोवत ।। भूखेभये आप वन भीतर यह कहि कहि मुख जोवत ।।१।। कह्यो नहीं मानत काहूको आप हठीले दोऊ वीर ।। वारवार तन पोछत करसों अतिहि प्रेमकी पीर ।।२।। सेज मंगाय लई तहां अपनी जहां स्यामबलराम ।। सूरदासप्रभुके ढिंग सोईसंग पोढी नंदवाम ।।३।।

★ राग केदारो ★ जाग उठे तब कुंवर कन्हाई ।। मैया कहांगई मो ढिंगते संगसोवत जान्यो बलभाई ।।१।। जागे नंद यशोदा जागी बोललिये हरिपास ।। सोवत झिझक उठे काहेते दीपक कियो प्रकाश ।।२।। सपने कुदपर्यो यमुना दहमें काहूदियो गिराय ।। सूरस्यामसों कहत यशोदा जिनहो लाल डराय ।।३।।

★ राग नायकी ★ हेम ऋतु सिसिर ऋतु अति सुखदाई ।। प्यारी जु के फरगुल सोहे प्रीतम ओढी हे सरस कवाई ।।१।। रंगमहेल में परदा सोहाये धरी अंगीठी अति सुखदाई ।। बरत अंगार अंबर अति महकत सरस सुगन्ध रह्यो तहां छाई ।।२।। कबहुक मधुर सीत तन व्यापत बेठत अंगसों अंग मिलाई । श्रीवल्लभपदरज प्रतापतें दास रसिक तहां बल जाई ।।३।।

★ राग नायकी ★ नीकी ऋतु लागत हें अति सीत की ।। अंस भुजा दे पोढे पिय प्यारी बात करत रसरीत की ।।१।। बन गइ एक रजाई भीतर होत परस्पर जीतकी ।। गदाधर प्रभु हेमन्त मनावत चाह बढी नव प्रीत की ।।२।।

★ राग नायकी ★ विलसत रंगमहल रंग लाल ।। रंगरस की करत वतियां संग

पोढी बाल ।।१।। खचीत परदा परे चहुं दिस मुंदे झरोखा जाल ।। जगमगात पावक अंगीठीं गान तान रसाल ।।२।। नवल नारी नींहारी प्रीतम व्हे रही उरमाल ।। नंददास प्रभु युगल छबी उपर डारो सर्वस वार ।।३।।

★ राग नायकी ★ पोढे स्याम श्यामा संग ।। रंगमहल की ललित तीबारी परदा परे सुरंग ।।१।। जगमगात पावक अंगीठी भरे रतिरसरंग ।। नंददास दम्पति सुरत सुख जीत्यो मनमथ अंग ।।२।।

★ राग नायकी ★ पोढे नवल लाल गिरिधारी ।। रंगमहल में रचित सुख सज्या संग सोभित व्रखभान दुलारी ।।१।। लाल जरी दही को बागो बन्यो अंग लाल कुल्हे शोभित अति भारी ।। सुघन चरण बनी अति गाढी झलमलात बीच बीच जरतारी ।।२।। अतलस को लहेंगा प्यारी कटि कंचुकी झुंमक सारी ।। मधुरे सुर गावत केदारो मीठी तान लेत सुखकारी ।।३।। परदा परे मनोहर द्वारे दीपक जोत सरस उजीयारी ।। चतुर्भुजदास निरक दम्पति सुख तनमन धन कीनो बलिहारी ।।४।।

★ राग नायकी ★ पोढे प्यारी राधिका संग श्याम ।। कनक मनिमय जगमगात अति रंगमहल निज धाम ।।१।। परे परदा सरस सुन्दर सहचरी ढिंग भाम ।। सुरत केलि विलास विलसत राधिका भुज बाम ।।२।। किये रसबस प्रानपिय को लुंटी सब निश काम ।। जान्यो न हित हरिवंस बीतत जात बासर बाम ।।३।।

★ राग नायकी ★ पोढे लाल सेज सुरंग ।। अधरामृत पावत पिवावत प्राणपिया के संग ।।१।। जगमगात आगे अंगीठी परदा परे पचरंग ।। रंगमहेल में फीरत दोउ बढी प्रेम तरंग ।।२।। ओढ रजाई। (ओढे) दोउ पोढे लिपटाय अंगसो अंग ।। सुरत रस विलसत जबही तब मनही उठत तरंग ।।३।।

★ राग नायकी ★ पोढे रहे क्रीडत रंगराई ।। रंग महल की ललित तिबारी परदा परे सुखदाई ।।१।। अरसपरस दोउ करत रंगरस पोढे ओढ रजाई ।। जगमगात अंगीठी हुतासन सोभा सहज निकाई ।।२।। रीझ उगार लेत हँसी प्यारी आनन्द उर न समाई ।। जुग जुग राज करो पिय प्यारी सूरदास बल जाई ।।३।।

★ राग नायकी ★ पोढी रही पिय संग प्यारी ।। रंगमहल में धरी अंगीठी परदा परे सुखकारी ।।१।। चित्र-विचित्र बनी चित्र सारी जगमगात अति भारी ।। मुख तंबोल ले खात खवावत अंक भरे गिरिधारी ।। अति विचित्र गुनरूप आगरी ललिता सखी प्रचारी ।। सूरदास प्रभु को अद्भुत सुख तनमन धन बलिहारी ।।३।।

★ राग बिहाग ★ पोढे माई प्रीतम प्यारी संग ।। रंगमहल की ललित तिवारी परदा परे हे सुरंग ।।१।। जगमगात पावक अंगीठी धरि रति रसरंग ।। नन्ददास प्रभु प्यारी जीति हे मुदित अनंग ।।२।।

★ राग नायकी ★ पोढे रंगमहल नन्दलाल ।। दोऊ ओर धरी हे अंगीठी परदा परे रंग लाल ।।१।। ललितादिक सखी चरन चांपत निरखत होत बेहाल ।। रसिक स्वामिनी लाय लई उर भरि लीनी अंक वारि ।।२।।

★ राग बिहाग ★ रतन जटित पलका पर पोढे केलि करत दोऊ मिलत परस्पर ।। पर गये परदा ललित महल में जगमग होत अंगीठी ढींग धरि ।।१।। रति रसकेल विलास हरिरस अधरामृत पीवत हे दृग भरि ।। मदनमोहन गिरधर क्रीडा विनोद मुदित परस्पर भवर चहेल करि ।।२।।

★ राग बिहाग ★ पोढे माई रंगमहल गिरधारी ।। सुंदर गादी तकीया सेज रची धरी अंगीठी सुखकारी ।।१।। कंठ लगाये भुज दे सिरहाने अधरामृत पीवत सुकुमारी ।। वीन मधुरे सुर बजावत ललिता कृष्णदास बलिहारी ।।२।।

★ राग बिहाग ★ अरी इन सोर संवार ओढाई ।। सीरतें खसि पायन तर आई सीत सतावन आई ।।१।। अतिसे श्रमित जानि प्यारीने दीनी सोर संवारि ।। परमानन्द प्रभु पर तनमन जोबन वार ।।२।।

★ राग बिहाग ★ ए दोऊ सुरत सेज सुख सोये ।। करत पान मकरंद प्रिया प्रिय अधर पानरस जोये ।।१।। तनसों तनमन सों मन मिलवत नेंन पानरस भोहे ।। कृष्णदास प्रभु सुखनिधि विलसत मदन मान सब खोए ।।२।।

★ राग बिहाग ★ पोढे श्याम राधे संग ।। सुरंग पलंग सुरंग बिछोना कसना कसे सुरंग ।।१।। सुरंग सरस रजाई नीकी ओढी हे दोउ अंग ।। रहे हे लपटाय दोऊ मिल

रसिक निरखत ढंग ।।२।। पोढे पिय दोउ सेज हरे ।। प्रमुदित बान रस बरखत आनन्द नेन भरे ।।३।। कनकबेली वृखभान नन्दिनी श्याम तमाल तरे ।। रतिपति केलि करत रसिक पिय दसनन दिव्य झरे ।।४।।

★ राग बिहाग ★ गोद लिये बल मोहन दोउ ओढ रजाई बेठी नन्दरानी ।। परदा डारे द्वार द्वारन प्रति रोहिनी धरी अंगीठी आनि ।।१।। मुख देखन गृह-गृह तें आई व्रज ललना गावत मृदु वाणी ।। द्वारकेस हरि हलधर मैया भैया बदन रहे लपटाई ।।२।।

★ राग केदारो ★ पोढे रंगमहल ब्रजनाथ ।। रंग रसकी करत बतियां राधिका ले साथ ।।१।। दोउ ओढ रजाई क्रीडत ग्रीवा भुजभर बाथ ।। परमानंदप्रभु कामआतुर मदन कियो सनाथ ।।२।।

★ राग बिहाग ★ पोढे हरि राधिका के संग ।। रंगमहलमें ललित तिबारी परदा परे सुरंग ।।१।। झलमलात पावक अंगीठी रतन जटित बहोत रंग ।। कुंभनदास प्रभु गोवर्धनधर मोहत कोटि अनंग ।।२।।

★ राग बिहाग ★ पोढे रंगरमनीराय ।। रंगमहेल चित्र किये सुंदर जगमगात जुराय ।।१।। रत्नजटित की आगे अंगीठी परदा परे सुहाय ।। बल जाऊं छबिली छबिपर कृष्णदास बलि जाय ।।२।।

★ राग बिहाग ★ पोढे हरि रंगमहल पिय प्यारी । सुंदर रची हे सेज ता ऊपर तकिया धरे हे सवारी ।।१।। जगमग होत अंगीठी पावक गोखन धरे हे दीप सुधारी । मधुर सुर गावत कोकिल कल कृष्णदास बलिहारी ।।२।।

★ राग अडानो ★ मेरे लाडिलेहो लाल अजहून नींदकरो पलनाँ न सोहायतो गोदले सुवाऊं ।।ध्रु।। आर छांडो गीत गाऊं हालरो हुलराउ ग्वालनके मुखकी कहानी सुनाउं ।।१।। कोनधों भवन आये काहूकी नजर लगी भोर ऋषिराज रक्षा बंधाउं ।। मेरे व्रजइश तुम एसी बुझो न रीस भोरहो कुंवर कान्ह झगुली सिवाउं ।।२।।

# मंगला आरती के पद (उष्णकाल)

★ राग भैरव ★ मंगलं मंगलम् व्रज भुवि मंगलम् ।। मंगलमिह श्रीनंदयशोदा नाम स्वकीर्तनमे तद्रूचिरोत्संग सुलालित पालित रूपम् ।।१।। श्री श्रीकृष्ण इति श्रुति सारं नाम स्वार्तजनाशयतापापहमिति मंगलरावम् ।। व्रजसुंदरी वयस्य सुरभीवृंद मृगीगणनिरूपमभावा:मंगल सिंधु चयायम् ।।२।। मंगलमीषत्स्मितयुतमीक्षण भाषणमुन्नतनासापुटगत मुक्ताफलचलनम् ।। कोमलचलदंगुलिदल संगत वेणुनिनाद विमोहित वृंदावन भुवि जाता ।।३।। मंगलमखिलं गोपीशितुरति मंथरगति विभ्रममोहितरासस्थितगानम् ।। त्वं जय सततं गोवर्धनधर पालय निजदासान् ।।४।।

★ राग भैरव ★ मंगल माधो नाम उच्चार ।। मंगल वदन कमल कर मंगल मंगल जनकी सदा संभार ।।१।। देखत मंगल पूजत मंगल गावत मंगल चरित उदार ।। मंगल श्रवण कथा रस मंगल मंगल तनु वसुदेव कुमार ।।२।। गोकुल मंगल मधुवन मंगल मंगल रूचि वृंदावनचंद ।। मंगल करत गोवर्धनधारी मंगल वेष यशोदानंद ।।३।। मंगल धेनु रेणुभू मंगल मंगल मधुर बजावत बेन ।। मंगल गोपवधू परिरंभण मंगल कालिंदी पयफेन ।।४।। मंगल चरणकमल मुनिवंदित मंगल कीरति जगत निवास ।। अनुदिन मंगल ध्यान धरत मुनि मंगलमति परमानंददास ।।५।।

★ राग भैरव ★ मंगल रूप यशोदानंद ।। मंगल मुकुट कानन में कुंडल मंगल तिलक विराजत चंद ।।१।। मंगल भूषण सब अंग सोहत मंगल मूरति आनंद कंद ।। मंगल लकुट कांखमें चांपे मंगल मुरलि बजावत मंद ।।२।। मंगल चाल मनोहर मंगल दरशन होत मिटे दुखद्वंद ।। मंगल व्रजपति नाम सबनको मंगलयश गावत श्रुतिछंद ।।३।।

★ राग भैरव ★ मंगल आरती गोपालकी माई ।। नित्यप्रति मंगल होत निरख मुख चितवन नयन विशालकी ।।१।। मंगल रूप स्याम सुंदरको मंगल भृकुटी सुभालकी ।। चतुर्भुजप्रभु सदा मंगलनिधिबानिक गिरिधरलालकी ।।२।।

★ राग भैरव ★ भोर भये देखो श्रीगिरिधरको कमलमुख ।। मंगल आरती करो प्रातही नयन निरखत होत परम सुख ।।१।। लोचयन विशाल छबि संचि हृदयमें धरो कृपा अवलोकवेकोचारू भृकुटीरूख ।। चतूर्भूजप्रभु गिरिधर आनंदनिधि दूर कर हो सबरेनको विरहदुख ।।२।।

★ राग भैरव ★सबबिध मंगल नंदकोलाल ।। कमलनयन बलजाय यशोदा न्हात खिजो जिन मेरे बाल ।।१।। मंगल गावत मंगल मूरति मंगल लीला ललित गोपाल ।। मंगल व्रजबासिनके घरघर नाचत गावत दे करताल ।।२।। मंगल वृंदावन के रंजन मंगल मुरली शब्द रसाल ।। मंगल यश गावे परमानंद सखामंडली मध्य गोपाल ।।३।।

★ राग बिभास ★रत्नजटित कनकथाल मध्यसोहें दीपमाल अगरादि चंदनसो अतिसुगंध मिलाई ।। घनन घनन घंटा घोर झनन झनन झालर झकोर ततथेई बोलेव्रजकी नारि सुहाई ।।१।। तननतनन तानमान रागरंग स्वरबंधान गोपी सब गावतहैं मंगल बधाई ।। चतुर्भुज गिरिधरनलाल आरती बनी रसाल तनमनधन वारत है यशोमति नंदराई ।।२।।

★ राग बिभास ★मंगलकरण हरण मन आरति वारत मंगल आरती बाला ।। रजनीरसजागेअनुरागे प्रातअलसात शिथिल वसन और मरगजीमाला ।।१।। बैठे कुंजमहल सिंघासन श्रीवृषभानकुंवरि नंदलाला ।। व्रजजनमुदित ओटव्हे निरखतनिमिष न लागत लताद्रुमजाला ।।२।।

★ राग बिभास ★प्रात समें गिरिधरजूके सन्मु नीकीबनी मंगल आरती ।। कनकथाल दीपमाल बालन के करन में जगमग जगमग जोत होत चक्र सुकुमार ती ।।१।। झंझंझालर मधुर घंटा घननघनन बलैया कलैयाकी धुनि होत जब चमरढारती ।। मुरारीदासप्रभुकी वदनकी छबि निरखत धन्यधन्य ये निकट निहारती ।।२।।

★ राग बिलावल ★मंगल आरती कीजे भोर ।। मंगल जनम करम गुणमंगल मंगल यशोदा माखन चोर ।।२।। मंगल बेन मुकुट गुणमंगल मंगलरूप

रमेमनमोर ।। जनभगवान जगतमें मंगल मंगलराधा जुगलकिशोर ।।२।।

★ राग बिलावल ★मंगल आरती करमन मोर ।। भरम निसा बीती भयो भोर ।।१।। मंगल बाजत झालर ताल ।। मंगल रूप उठे नंदलाल ।।२।। मंगल धूपदीप करजोर ।। मंगल सबविधि गावतहोर ।।३।। मंगल उदयो मंगलरास ।। मंगल बल परमानंददास ।।४।।

★ राग बिलावल ★मंगल आरती मिल वारती व्रजनारी मंगलनिधि मंलरूपकी ।। वदनथार किरण नयन दीपजोति तामें पूरत नेह अनूपकी ।। घंटा ताल मृदंग झालरी उपजत अवघर भूपकी ।। पियसुजान गिरिधरको वदनचंद देख मिटत धूपतें तपत मदन धूपकी ।।२।।

★ राग बिलावल ★व्रज मंगलकी मंगलआरती ।। बहुबिध रत्नजटित कनकथार भरे तामध्यजतरकपूरकी लेलेबारती ।।१।। लेतबला करत न्योंछावर तनमनप्रान बारने वारती ।। दास रसभरी यशोदा मगन भई अपआपनपो न संभारती ।।३।।

## मंगला दर्शन के पद

★ राग भैरव ★सुमरो नटनागर वर सुंदर गोपाललाल ।। सबदुख मिटजैहें बे चिंतित लोचन विशाल ।।१।। अलकन की झलकन लख पलकन गति भूलजात भुवविलास मंदहास रदनबदन अति रसाल ।। निंदित रवि कुंडल छबि गंडमुकुर झलमलात पिच्छ गुच्छ कृत अवतंस इंदु मिल बिंदु भाल ।।२।। अंग अंगजित अनंग माधुरी तरंगरंग विमद मद गयंद होत देखत लटकीली चाल ।। हसनलसन पीतवसन चारू हार वर शृंगार तुलसी रचित कुसुम खचित पीन उर नवीनमाल ।।३।। व्रजनरेश वंश दीप श्रीवृंदावनवरमहीप श्रीवृषभानमानपात्र सहज दीनजन दयाल ।। रसिक भूप रूपरासगुणनिधानजान राय गदाधर प्रभु युवती जनमुनि मनमानस मराल ।।४।।

★ राग भैरव ★नागरी नंदलाल संग रंग भरीराजें ।। स्यामअंस बाहुदिये कुंवरि पुलक पुलकहिये मंदमंद हसन प्रिये कोटिमदन लाजें ।।१।। तरूतमाल स्यामलाल

लपटी अंग अंगवेलि निरख सखी छबि सुकेलि नुपूर कलवाजें ।। दामोदर हित सुदेश शोभित सुंदर सुवेष नवलकुंज भ्रमरपुंज कोकिलकल गाजे ।।२।।

★ राग बिभास ★ बांकी भौंह टेढी पागपियरे अनुराग पियरे पिछोर मध्य झलकत तनियां ।। निसके उनीदे नयन तोतरात मीठेबेन काजर की रेख माल छूटी लरमनियां ।।१।। यावक लग्यो ललाट सजकें सुरत नांट खोलूं कपाट तुम कुहकके मनियां ।। मोहि त्यज रहोन्यारे सुनों गिरधारी प्यारे ताहीपे सिधारो क्योंन जाके निशबनियां ।।२।। सुन प्रियावचन रसिक धायलई उरलाय आनंदविनोद कीये प्रेम मगनियां ।। गिरिधारीगोकुलेश रससों भीजे विशेष चतुरकों चित्त चोर्‌यो चतुर चिकनियां ।।३।।

★ राग बिभास ★ श्री वृंदावन नवनिकुंज ठाढे उठभोर ।। बाहें जोर बदन भोर हसत सुरत रतिसकुचत पुनकछु लजात नयन कोर ।।१।। कबहुं करत वेणु नाद पायो सुधास्वाद पंछीजन प्रेममुदित बोलत चहू ओर ।। रसिक प्रीतम छबि निहार प्रकट्‌यो रवि जियविचार बारबार उमग तहां नाचतहें मोर ।।२।।

★ राग बिभास ★ स्यामसिंधुअंग चंदनादिगंध पूजत पटपीत मदन लजावत सुभगतरंगमा ।। युवती सरिता अनंत मिलत शोभा समंत गुणसहित गरिष्टभाव भावसलिल संगमा ।।१।। बदनकमल अलक मधुप नयन खंजरीट बीच अद्‌भुत तिलकुसुमनाक भ्रोंह भंगमा ।। श्रवणसुनत विमाहन चलकुंडल ताटंक गंडमंडित मुसकान अधर रंगमा ।।२।। नखसिख भूषण अमोल मनोहर मादक सुबोल वैजयंती भूषित श्री उरज उतंगमा ।। कृष्णदासप्रभु गिरिधर सुरत नाथ राधावर विहरत नवकुंजमध्य थेईथेईथुंगमा ।।३।।

★ राग बिभास ★ प्रातसमें नवकुंजमहल में श्रीराधा ओर नंद किशार ।। दक्षिणकर मुक्तास्यामाके त्यजत हंस ओर चुगत चकोर ।।१।। तापर एक अधिक छबि उपजत उपर भ्रमर करत घनघोर ।। सूरदासप्रभु अति सकुचाने रवि शशि प्रकटत एकहि ठोर ।।२।।

★ राग बिभास ★ प्रातसमें हरिनाम लीजिये आनंदमंगलमें दिन जाय ।। चक्रपाणि

करूणामय केशव विघ्नविनाशन यादवराय ।।१।। कलिमल हरण तरण भवसागर भक्तचिंतामणि कामधेनु ।। एसो समर्थ नाम हरीको वंदनीक पावनपद रेनु ।।२।। शिव विरंचि इंद्रादि देवता मुनिजन करत नामकी आस ।। भक्तवत्सल हरिनाम कल्पतरू वरदायक परमानंददास ।।३।।

★ राग बिभास ★ माईरी स्यामसुंदर भोरभवन आगेंव्है आवे ।। कबहू मुख मंदहास मेरे सखि सुखकी रासि कबहूं बेन कबहुं नयन सयनही जनावे ।।१।। मेरी दधि मथन वार उनकी उठनी सवार रई नेत माट समेत सकलहो विसरावें ।। चतुर्भुज प्रभु गिरिधर अंग अंग कोटि मदन मूरति हसत चलत वनको सबहिनके चित्तही चुरावे ।।२।।

★ राग बिभास ★ जयतिकदंबकिंजल्करुचिरवासे ।। मेघशामल अंग तन मन सदन भ्रुवभंग घोखसीमंतिनी भागरासे ।।१।। जयति युवतीमुख विधु करतपान मत्तचकोर क्वणितकर मृदुमुरली नवरस विलासे ।। कृष्णदासनिनाथ रसिक गिरिधरकुंवर क्वणितनूपुरदिव्य रंग रासे ।।२।।

★ राग बिभास ★ उरझो नीलांबर पीतांबर महियां ।। कुंडलसों लरलट बेंसर सों पीतपट हारहीमें वनमाला बैयांमें बहियां ।।१।। हंसगति अतिछबि अंग अंग रही फबि उपमाअवलोकवेकुंपटतर नहियां ।। कामके कलोल छुटे सेजहूके सुख लूटे सूरप्रभु बिलसत कदंमकी छहियां ।।१।।

★ राग रामकली ★ नंदकूलचंद उदित कौमुदी वृंदा विपिन विमल आकाशे ।। निकलंकवेदीसतसखी वृंदवर तारका लोचन चकोर वित्य रूपरस प्यासे ।।१।। रसिकजन अनुराग उदित विविध तनमरयाद भाव अगणित कुमुदिनी गण विकासे कहें गदाधर सकल विश्व असुरनविना भान भवताप अज्ञानि तिमिरनासे ।।२।।

★ राग रामकली ★ राधिका स्यामतन देख मुसकानी ।। हार विनगुण लेख अधर अंजनरेख नयन तंबोल तुतरात वानी ।।१।। पाग लटपट बनी उरें छूटी तनी अंगकी गति देख जियमें लजानी ।। उपट कंकनपीठ वक्र विव्हल दीठ ईठकीईठता लखी छानी ।।२।। पाणिपल्लव अधर दशन सोंगहि रही मधुरवच बोल जिय

हारमानी ।। सूरप्रभु प्राणपति अंक भर नागरी नवलनागर उरें घालसानी ।।३।।

★ राग रामकली ★ जयति श्रीराधिके सकल सुख साधिके तरुणिमणि नित्य नौतन किशोरी ।। कृष्णतन नीलघन रूपकी चातकी कृष्णमुख हिमकिरणकी चकोरी ।।१।। कृष्णदृग भृंग विश्राम हित पद्मिनी कृष्णदृग मृगज बंधन सुडोरी ।। कृष्ण अनुराग मकरंदकी मधुकरी कृष्णगुणगान रससिंधुबारी ।।२।। परम अद्भुत अलौकिक मेरी गति लखमनसि सांवरें रंग अंग गोरी ।। और आश्चर्य में कहूं न देख्यों सुन्यो चतुर चौसठ कला तदपि भोरी ।।३।। विमुख परिचित्त ते चित्त याको सदा करत निजनाहकी चित्तचोरी ।। प्रकृत यह गदाधर कहत कैसे बने अमित महिमा इते बुद्धि थोरी ।।४।।

★ राग रामकली ★ कुंवरी राधिका तुव सकल सौभाग्यकी सीमा वदन पर कोटिशत चंदवारों ।। खंजन कुरंग मीन शतकोटि नयननऊपर वारनें करत जियमें विचारों ।।१।। कदली शतकोटि जंघनऊपर वारनें सिंह शतकोटि कटिपर उतारो ।। मत्तगज कोटिशत चालपर कुंभ शतकोटि इन कुचनपर वारडारों ।।२।। कीर शतकोटि नासा ऊपर कुंद शतकोटि दशनन ऊपर कहीनपारों ।। पक्वकंदूर बंधूक शतकोटि अधरन ऊपर वार रूचि गर्व टारों ।।३।। नाग शत कोटि बेनी ऊपर कपोत शतकोटि ग्रीवा पर दूर सारों ।। कमल शतकोटि कर युगल पर वारने नाहिन कोऊ लोक उपमा जु धारों ।।४।। दासकुमनस्वामिनी सुनखशिख अंग अद्भुत सुठान कहांलग संभारों ।। लालगिरिवरधरन कहत मोहि तोहिलों सुख जोंलों वह रूप छिनछिन निहारों ।।५।।

★ राग खट ★ आज उठ भोर नवकुंज कानन सखी ठाडी भई राधिका रंगभीनी ।। विलस सुख संग नवरंग पिय स्यामघन कामकी सेन सब जीतलीनी ।।१।। सुभग विकसत वदन नयन अति रसमसे मोर मुखहास कछु सकुच कीनी ।। श्रीविठ्ठल गिरिधरन संग नागरी जाग सबरेन आनंद दीनी ।।२।।

★ राग खट ★ बने आज नंदलाल सखी प्रेममादिक पियें संग ललना लियें यमुना तीरें ।। फूली केसर कमल मालती सघन वन मंद सुगंध सीतलसमीरें ।।१।।

नीलमणि वरण तन कनक मंडित वसन परम सुंदर चरण परस माला ॥ मधुर मृदुहास प्रकाशदशनावली छबि भरे इतरात दृग विशाला ॥२॥ कियें चंदनखोर वदनारविंद मकरंद लुब्ध भ्रमरकुटिल अलकें ॥ हलत कुंडल लटक चलत जब स्यामघन मणिनकी कांति कलगंड झलकें ॥३॥ एक चंपकतनी कृष्ण रसमाती करे रागपंचम संग लागि सोहें ॥ एक हरिमुख निरख धररही ध्यान मन चित्रसम भई हरि हिये मोहें ॥४॥ एक दामिनसी भुजमेल ग्रीवा बात कहन मिस मुखसोंजु मुख मिलायो ॥ एक नवकुंजमें खेंचरही कटिबंध आपनो लाल चितचोर पायो ॥५॥ एक स्यामहिं हेर सुभग लोचन फेर विहस बोली भलें कान्ह कपटी ॥ एक सोंधे भरी छुटे वारन खरी एक बिन कंचुकी रीझ-लपटी ॥६॥ एक स्यामा कनक कंज वदनी प्रेम मकरंद भरी हरि निरख विकसी ॥ ताके रसलुब्ध रहे लपट सांवरो भ्रमर प्राण प्यारी भुजन बीच जुलसी ॥७॥ रसिकमणि रंगभरे विरहत वृंदाविपिन संग सखी मंडली प्रेमपागी ॥ कहत भगवान हित रामरायप्रभु सोईजाने जाही लगनलागी ॥८॥

★ राग खट ★ आज नंदलाल मुखचंद नयनन निरख परममंगल भयो भवन मेरे ॥ कोटि कंदर्प लावण्य एकत्रकर वारूं तबही जब नेक हेरे ॥१॥ सकल सुख सदन हरषित वदन गोपवर प्रबल मदनदल संग घेरें ॥ कहो कोऊ केसें हूनहिं सुधबुद्ध बने गदाधर मिश्र गिरिधरनटेरे ॥२॥

★ राग खट ★ पाछली रात परछाही पातन की लालजू रंगभीने डोलत द्रुमद्रुम तरन ॥ बने देखत बने लगत अद्भुत मने जोतकी सोतमें निकस रही सबघरन॥१॥ कृष्ण के दरसको अंग के परसको महा आरति मानचली मज्जन करन ॥ नुपुरध्वनि सुनत चक्रतव्हे थकिरही परगयो दृष्टि गोपाल सांवलवरन ॥२॥ जरगसी पागपर मोरचंद्रिका बनी कमलदल नयनभ्रूवबंक छबि मनहरण ॥ धाई सब गहन को रसबचन कहनको भामिनी बनी अति छबि सुधारत चरण ॥३॥ रोमरोम रमरह्यो मेरोमन हरलियोनाहिं विसरत वाकी झुकनमें भुजभरन ॥ कहे भगवानहित रामरायप्रभुसों मिली लोकलाज भाजगई प्राण परवस परन ॥४॥

★ राग खट ★ नवल व्रजराजको लाल ठाढो सखी ललित संकेत वट निकट सोहे ।। देखरी देख अनिमेष या वेषको मुकुटकी लटक त्रिभुवनजु मोहे ।।१।। स्वेदकण झलक कछु झुकीसी रहेत पलक प्रेमकी ललक रसरास कीये ।। धन्य बडभाग वृषभान नृपनंदिनी राधिका अंसपर बाहु दीये ।।२।। मणिजटित भूमिपर नवलता रहीझूम कुंजछबि पुंज वरणी न जाई ।। नंदनंदन चरण परसहित जान यह मुनिनके मनन मिल पांत लाई ।।३।। परम अद्‌भुत रूप सकल सुख भूप यह मदनमोहन विना कछुन भावे ।। धन्य हरिभक्त जिनकी कृपा तें सदा कृष्ण गुण गदाधर मिश्र गावे ।।४।।

★ राग खट ★ बनी सहज यह लूट हरिकेलि गोपीनकें सुपनें यह कृपा कमला न पावे ।। निगम निरधार त्रिपुरारहूं विचार रह्यो पचरह्यो शेष नहीं पार पावे ।।१।। किंनरी बहुर अरु बहुर गंधर्वनीपनगनी चितवन नहीं माझ पावें ।। देत करतार वेलाल गोपालसों पकर व्रजबाल कपि ज्यों नचावें ।।२।। कोऊ कहे ललन पकराव मोहि पावरी कोऊ कहेलाल बल लाओ पीढी ।। कोऊ कहे ललन गहाव मोहि सोहनी कोऊ कहे लाल चढ जाउ सीढी ।।३।। कोऊ कहे लालन देखों मोर केसे नचें कोऊ कहे भ्रमर केसे गुंजारें ।। कोऊ कहे पौर लग दौर आवो लाल रीझमोतीन केहारवारें ।।४।। जो कछु कहें व्रजवधू सोइसोइ करत तोतरेबेन बोलनसुहावें ।। रोय परत वस्तुजब भारी न उठेतबे चूम मुख जननी उरसों लगावें ।।५।। बेन कहि लोनीपुनचाहि हरत बदन हँस स्वभुज वीच लेले कलोलें ।। धामके काम व्रजबाम सब भूलरहीं कान्ह बलराम के संग डोलें ।।६।। सूर गिरिधरन मधुचरित्र मधुपान के और अमृत कछु आनलागे ।। और सुख रंककी कोन इच्छा करें मुक्तिहों लोनसी खारी लागे ।।७।।

★ राग देवगंधार ★ नवल दोऊ बनेहें मरगजे वागे ।। नवल कुंजते चले भोर उठ पियपाछे धनआगे ।।१।। छूटीलट टूटी मणिमाला अर्धघुंघट छबिलागे ।। खंडित अधर पयोधर मंडित प्रफुल्लित गंड विराजत दागे ।।२।। नखशिख कुसुम विशिख की सेना रण छूटेमन पागे ।। व्यास स्वामिनीको सुख सर्वस्व लूट्यो स्याम सुभागे ।।३।।

★ राग देवगंधार ★ सखीरी ओर सुनों एक बात ।। आज कृष्ण मेरे गृह आये उठत प्रातही प्रात ।।१।। लटपटीपाग अटपटी बातन आलस वंत जृंभात ।। काहेकूं तेरेनयन ऊनींदे मोहन गृहकों जात ।।२।। आगें नंदद्वारव्है ठाडे ताते गएन संकात ।। मानो साहराजगृह ठाडे देदे वीच भुजगात ।।३।। ऐसी भीति कहांहें मोहनमें पूछी मुसकात ।। कहाकरों जो प्रकट जानियों सूरस्यामसकुचात ।।४।।

★ राग भैरव ★ आज नंदलाल नवकुंज रसपुंजते, लटकि आये सखी भवन मेरे ।। हों जु गमार सुख सेज में फस रही गिरिधरन सेन दे मधुर टेरे ।।१।। जब में निंद्रा तजी सकल सिंगार सजि द्वार कपाट खोल चलि सवेरे । मुरली को नाद सुनि श्रवन तब उठी चलि ढिंग आय पाय परी नाथ केरे ।।२।। मानों मकरंद उर महल में ले चली हसि हसि प्रेमसों वदन हेरे ।। कृष्णदास कर जोर विनति करे धन्य बड़भाग सखी आजतेरे ।।३।।

★ राग बिभास ★ दोऊ अलसाने राजत प्रात ।। श्रीवृखभान नंदनी नंद सुत रसिक सलौने गात ।।१।। नील पीत अम्बर लपटानो छिन छिन अधिक सुहात ।। मानहु घन दामिन अपनी छबि होई एक बिकसात ।।२।। बिन मकरंद अरबिंद वृन्द मिल अंग अंग बिकसात ।। सुखसागर गिरिधरन छबीलो निरख अनंग लजात ।।३।।

★ राग बिलावल ★ अहो नंदलाल हो आज लटपटी पाग ।। छूटे चिहुर मानो मत्त मधुपगन उनमद राजीव राग ।।१।। पीक कपोल बोल अति व्याकुल अधरन अंजन लागे ।। दूरत न खंजन लसें रस भरे उनमद जामिनी जागे ।।२।। चंदन कूच उपटत उर नवनखहार बन्यो बिन बाग ।। विद्यापति रति श्रीगोपाल संगता भामिन के भाग ।।३।।

★ राग भैरव ★ मदभरे मतवारे नेन खोलो क्यों न पलकें ।। प्यारी उठ घरतें आइ झारी लाइ भरकें ।।१।। मुखतो सोहे पूरणचंद एसी आइ बनके ।। अधरनकी लाली लाइ लरन मोती लटके ।।२।। चलत मृदुगयन्द चाल शीशफूल झलके ।। सूरके सलोनें श्याम देखो नयन भरके ।।२।।

★ राग रामकली ★ एक दिन आपुने खिरकको जातरी मिल गयो साँवरो हौं अकेली । देख मोहि मंद मुसकाय नेनन हस्यो किंधौरी है तू कनकबेली ।।१।। अतिही जगमग रही चूनरी रंगभरी कंचुकी कुचन पर अति विराजे ।। शरदके चन्दसों वदन झगमग रह्यो देख या रूपको कौन ब्राजे ।।२।। नासिका नथनि झलमल विराजे रह्यो ऐसो बडो मुक्ता तें कहाँजु पायो ।। ऐसो न देख्यो सुन्यो कहुँ ना या देसमें लगत ही लपट मन लटक आयो ।।३।। चाल गजराजकी लंक मृगराजकी चिबुककी छबि देख चित्त चुरायो ।। बंक अवलोकनि बडी अँखियनमांझ कौनके ठगन अंजन बनायो ।।४।। जानती नाहि मैं नाथ तुम कौन हो करत हो जान जाकी बडाई ।। या गामकी रीत रसरीत जानों नहीं भये दिन चार गौनें जु आई ।।५।। या गामकी रीत रसरीत सब हौं कहों नेक बैठो चलो कुंज छाँही ।। जान गई बात मग जा चल्यो साँवरे कुंज तर हमें कछु काज नाहि ।।६।। मुसक ठाडी भई धाय भुज गहि लई अधरन पान दे उर लगाई ।। दई एक फूलकी माल पहेरायके कही जू मैं हाथ अपुने बनाई ।।७।। ता दिनतें लाल उरमांझ जगमग रह्यो रैन दिन कछुहु नाहीं सुहावे ।। सूर किसोर यह प्रेमरस छाँडिके अंब तज कौनको नींब भावे ।।८।।

★ राग आसावरी ★ नेंक चितेव चलेरी लालन सखी ले जुगए चितचोर ।। कबकि द्वारेठाडी चितवत पियको मुसक्यानी मुखमोर ।।१।। हों दधि मथन करत जो भवन में उझक चले व्रजराज किशोर ।। लटपटी पाग केस विलुलित सखी ना जानों कहांतें उठि आये मेरे भोर ।।२।। सबनिश जागे पग धरत डगमगे खसिखसि परत पीत पट छोर ।। गोविंद प्रभुकी लखिन जात एसी व चतुर नागरी कोर ।।३।।

★ राग भैरव ★ प्रात समय नवकुंज डगरतें तनमन फुली आवत राधे ।। मानो मिले अंक भर माधो अंग अंग प्रगटत प्रेम अगाधे ।।१।। नेनबेन मुसक्याय बदन छबि बिकसत पद्‌म् जु आधे ।। चंचल चपल बंक अवलोकिन काम नचावत ततथै ताधे ।।२।। जिही रस मत फीरत मानो मधुकुर भ्रमत रेहेत दिन साधे ।। सो

रस दियो दास परमानंद सुनिकट आराधे ।।३।।

★ राग भैरव ★ राधा प्यारी तु अतरंग भरी ।। मेरी जान मिली मोहन सो अंचल पीक परी ।।१।। छुटी लट टुटी नकबेसर मोतिनकी दुलरी ।। हो जानत जोंलो फोज मदनकी जीत लई सगरी ।।२।। अरुन अधर मुख स्वास निकासत गलीत ललीत कवरी ।। सूरदास प्रभु नगधरके संग सुरत समुद्र तरी ।।३।।

★ राग बिभास ★ कुंजते आवत बनी वृषभाननंदिनी कैसी नीकी लागे मानो मकर चांदनी । अति अलसात जृंभात उनींदी ता पर भंवर गुंज फूली घन दामिनी।।१।। प्रथम समागम भयो गिरिधरसों रतिपति जीत मुदित जागी जामिनी। 'कृष्णदास' संकेत विटप तरु भुज भरि भेटि मिलि गजगामिनी ।।२।।

★ राग बिलावल ★ जानत हों जैसे गुनन भरे हो ।। काहुको दुराव करत नंदनंदन जहीं जाउं तहीं कान्ह ढरे हो ।।१।। रैन उनींदे नैन अरुन छबि आलस बस सब अंग परे हो ।। चंदन तिलक लग्यो कहुं बदन स्याम सुभग तन नख उघरे हो ।।२।। सब बिध चोर चतुर चिन्तामनि वृजजुवतिन के मन जो हरे हो ।। ऐते ऊपर कोहे सूर प्रभु सोंह करन को होत खरे हो ।।३।।

★ राग देवगंधार ★ एसें कोन धोरंगे हो लाल तन चुनरी कीनो ।। कहूं पीक कहुं अंजनलीक जावक चावक दनो ।।१।। कहुंचंदन कहुं वदन लग्यो कहुं भुजभर गाढो अलिंगन दीनो ।। धोंधीके प्रभु नवलनेह कहुं चापचटक रंगदीनो ।।२।।

★ राग बिभास ★ आज बने नवरंग छबीलेरी ।। डगमगात पग अंगअंग ढीलेरी।।१।। यावक पाग रंगी धों कैसें जैसें करी कहो पियतैसें ।।२।। बोलत बचन होत अलसाने ।। पीककपोल अधर लपटाने ।।३।। कुमकुम हृदय भुजन छबि वंदन ।। सूर स्याम नागर मनरंजन ।।४।।

★ राग बिलावल ★ लाडली सुहाग देख ललीताँ दीक फुली ।। बदन की बलैया लेत तन मन सुध भूली ।। अरुन ऊदे अरुन बदन कुंज सदन मदन केल सिथल झेल आलस बसनि कसी रस फुली ।।१।। पिक छाप जुग कपोल घुमत लोचन बिलोल गलत राग अधर मधुर अद्भुत छब छाजे ।। दरक कंचुकी ऊतंग गल

अंग राग रंग मरगजी ओर कुंद माल देखत रति लाजे ।।२।। प्रीतम गरें लाय लटक चलत ललीत गत बिलास मंदहास छब प्रकास दसन दुत बिराजें ।। दासि जन हरख निरख जनम सुफल लेख लेख ठाड़ी कर जोर जोर मुख तमोल काजें ।।३।।

## खण्डिता के पद

★ राग भैरव ★ प्रातकाल प्यारेलाल आवनी बनी ।। उरसोहे मरगजीमाल डगमगी सुदेशचालचरण कंज मदनजीत करतगामिनी ।।१।। प्रियाप्रेम अंगराग सगमगी सुरंग पाग गलित वरुहा तुलसीचूर अलकन सनी ।। कृष्णदासप्रभु गिरिधर सुरत कंठपत्र लिख्यो करजलेखनी पुनपुन राधिका गुनी ।।२।।

★ राग भैरव ★ भोरही डगमगत जीत मन्मथ चले ।। सकल रजनी जगे नेक नहीं पल लगे अरूण आलस वलित नयन लागत भले ।।१।। कितव नागरनटचिन्ह प्रकटित करत वसन आभूषण सुरतरण दलमले ।। चतुर्भुज दास प्रभुगिरिधरन छबि बाढी अधर काजर कुंकुम अंगअंग रले ।।२।।

★ राग भैरव ★ अरुझरहे मुक्ताहल निरवारत सोहत घूघरवारे वार ।। रति मानी संग नंदनंदनके छूटेबंद कंचुकी टूटे हार ।।१।। निशिके जागे दोऊ नयना ढरकरहे चलत जोबन भार ।। सूरस्याम संग सुख देखत रीझे वारंवार ।।२।।

★ राग भैरव ★ भोरभये आयेहो ललन नीकी बतियां ।। यावकके अंगचीनें नीलपट प्यारी दीने नयन आलस भरे जागे सबरतियां ।।१।। छूटी ग्रीव वनदाम नखक्षत अभिराम केसें अब तुरतस्याम डगमगी गतियां ।। केसोदास प्रभु नंदसुवन काहे लजात भलेजू सावरे गात जानी सब घतियां ।।३।।

★ राग भैरव ★ शोभित सुभग लटपटी पाग भीने रसिक त्रिया अनुराग ।। कुंकुम अलक तिलक सेंदूर छबि घूमत आवत और निश जाग ।।१।। कछुक जृंभात और माल मरगजी पीक कपोल अधर मिस दाग ।। चतुर्भुजप्रभु गिरिधर नीके जानत आलसवश सबअंग विभाग ।।२।।

★ राग भैरव ★ भोर निकुंज भवनते भामिनी ।। आवतहे लटकत गजगामिनी ।।१।। अलक सुकंध सगमगीछूटी ।। निशके उनींदे नयना बीरबहूटी ।।२।। पलटत रशन

वसनमणि भूषण ।। शोभा अंग अंग प्रति दूषण ।।३।। गुणनिधान वृषभान दुलारी।। दासगोपाल लालजूकी प्यारी ।।४।।

★ राग भैरव ★ भलीकीनी भोर आये मेरे अंगना ।। अरूण उनीदे नयना आलस वलित बेंना कुमुदिनी चित्त चोर्‌यो चंद वस्यो गगना ।।१।। अधरन रंग नीको काजर कपोल पीक यावक ललाट लीक कहेत गोपीलगना ।। भुजन बंदन फबी कुचहार मुद्रिकाठबी नखरेख छाती छबी पीठ गढ्यो कंगना ।।२।। वसन सुहात नीले चिकुर छूटे छबीले चरणधरत ढीले निशि कियो जगना ।। सूरदास श्रीगोपाल सुरतसमें अतिबिहाल तहीपें सिधारो लाल जहां मन लगना ।।३।।

★ राग भैरव ★ भोर तमचोर बोले दीजेजु दरसनां ।। आतुरव्हे उठ धाये डगमगात चरण आये आलसमें नयनबेन अटपटे रसनां ।।१।। एक संध्याजु कहि सिधारे वचन जियमें विचारे सकुचकें मंद प्रकटत दशनां ।। चतुर्भुजप्रभु गिरिधरन सिधारो तहां जहां रतिरंग कियें पलट आये वसनां ।।२।।

★ राग भैरव ★ ऐसी कौन नागरी जिन कुंजमें वसाये ।। अरूण उदय तमचरको बोलसुन काहेको अरबराय उठ धाये ।।१।। सुधिकर देख कहां पीयरो पट सुभगकुंकुम उर लपटाये ।। पीठ वलयके चिन्ह विराजत ढांपलेहु जोआछे बनि आये ।।२।। वदन बिंदु सुयशको टीको सुरत जीत रणधीर कहाये ।। कृष्णदासप्रभु गिरिधर नागर पोढरहो निश बहुत जगाये ।।३।।

★ राग भैरव ★ आइयेजू भलेआये कित सकुचतहो ।। सुरत संग्राम कीने सोतिनकों सुख दीने तेई रंगभीने पें मोको तो रुचतहो ।।१।। तुमदेखे रिसगई उपजी प्रीति नईभई सोतोभई अबकहाधों सोचतहो ।। नारायण वल्लभजू मोहि जानें वह चेरी कोंन हैं येतो अभिलाष मोचत हो ।।२।।

★ राग भैरव ★ डगमगात आये नटनागर ।। कछुत जृंभात अलसात भोर भये अरूण नयन घूमत निश जागर ।।१।। रसिक गोपाल सुरत रणको यश सकल चिन्ह लिखलिये उरकागर ।। चतुर्भुजप्रभु गिरिधर कुंज गढ रति पति जीत्यो रतिपति सुखसागर ।।२।।

★ राग बिभास ★ ढीले ढीले पग धरत ढीली पाग ढरकरही ढयेसेहि फिरत ऐसे कोनपें जु ढहेहो ।। गाढेतो हीयके पिय ऐसी गाढी कोंन त्रिय गाढे गाढे भुजन वीच गाढे कर गहे ।।१।। लाललाल लोंयन में उनीदे लाग लागजात सांचीकहो प्राणपति मेतो लाललहे ।। नंददास प्रभु पिय निशके उनीदे आये भयो प्रात कहो बात रात कहां रहे ।।२।।

★ राग बिभास ★ गोवरधनगिरि सघनकंदरा रेन निवास कियो पियप्यारी ।। उठचले भोर सुरत रंगभीने नंदनंदन वृषभान दुलारी ।।१।। इत विगलित कचमाल मरगजी अटपटे भूषण रगमगी सारी ।। उतही अधर मिस पाग रही धस दुहूदिश छबि वाढी अति भारी ।।२।। घूमत आवत रतिरणजीते करिणि संग गज गिरिवरधारी ।। चतुर्भुजदास निरख दंपतिसुख तनमनधन कीनों बलिहारी ।।३।।

★ राग बिभास ★ आवत कुंजनतें पोंहोपीरी ।। पिय अलसात जृंभात रसभरे ललन खवावत बीरी ।।१।। सुरत शिथिल अंग अंग शिथिल अति भुजभर स्यामा रसकी रसीली ।। विठ्ठपबिपिन विनोद करो मिल नई ललितादिक नीली ।।२।।

★ राग बिभास ★ रसमसे नंददुलारे आये हो उठे भोर ।। अरूण नयन बेन अटपटे भूषण देखियत अधरन रंग भारे ।।१।। कितववाद कितकरत गुसांई जहीं जावोहो जाके प्राण पियारे ।। गोविंदप्रभु पिय भलेंजुभलें आये जान पाये जेसे तनस्याम ऐसे ही मन कारे ।।२।।

★ राग बिभास ★ ललनकी प्रीति अमोली एक रसना कहांकहों सखीरी ।। हसन खेलन चितवन जो छबीली अमृत वचन मृदुबोली ।।१।। अति रसभरे मदनमोहन पीय अपने करकमल खोलत बंद चोली ।। गोविंदप्रभुकी बहुत कहां कहूं जेजे बातें कहीं अपनो हृदो खोली ।।२।।

★ राग बिभास ★ कोंनके भुराये भोर आये हो भवन मेरे ऊंची दृष्टि क्योंन करो कोनतें लजानेहो ।। जाहीको भवन भावे ताहीके सिधारो कान्ह ऐसी कोंन चाडपरी कोनगहि आनेहो ।।१।। भोरी भोरी बतियन मोहि भुरवन आये तुम गिरिधारी जू निपटसयानेहो ।। कृष्णदासप्रभु मोहन नागर मैं लालन नीके कर जानेहो ।।२।।

★ राग बिभास ★ तू आज देखरी देख मनमोहन ये बलबीर राजें ।। मदनमोहन पिय मनमंदिरतें बैठे बनिकस आये छाजें ।।१।। लटपटी पाग मरगजी माला लपटात मधुप मधु काजें ।। गोविंदप्रभुकेजु शिथिल अरूण दृग देखियत कोटि मदन लाजें ।।२।।

★ राग बिभास ★ मदनमोहन पिय भयोनभोर ।। प्राचीदिश नहिं अरुण देखियत और सुनियत नहीं बन खगरोर ।।१।। गृहीतकंठ परस्पर दंपति पिय विषलेशकातरअतिजोर ।। गोविंदप्रभु पिय रसिक शिरोमणि प्यारी के वचन लीनो चित चोर ।।२।।

★ राग बिभास ★ जहिंजहिं नयना लगत तहिंतहिं तासोखगत अंगअंग माधुरी वरनिनजाई ।। सुंदर भाल कपोल मोहन मधुरे बोल नासिका देखत मन रह्योहै लुभाई ।।१।। हसत लालन मुख दशन लुनाई यह छबि कहा कहूं देख धोंरीहों आई ।। गोविंदप्रभुकी सुंदर बानिक पर बलबलबल जाई ।।२।।

★ राग बिभास ★ आज लाल अति राजें बैठेबनिकस आय छाजें सुधि न कछूरी गात प्यारी प्रेम मगनां ।। लटपटी पाग सिर शिथिल चहुर चारू उपटत उरहार प्यारी कंठ लगनां ।।१।। आलस अरुनअति खरेरी विलोचन भरभर आवत प्रियासे अनुरगना ।। गोविंदप्रभु पिय रसिक शिरोमणि सुरत रसकेली भोर लों जगना ।।२।।

★ राग बिभास ★ अतिही कठिन कुच ऊंचे दोऊ नितंबनीसे गाढे उरलायकें मेंटी कामहूक ।। खेलतमें लर टूटी उरपर पीक परी उपमावलोक बरणत भई मति मूक ।।१।। अधरामृत रस ऊपरते अचवायो अंगअंग सुख पायो गयो दुःख दूक ।। छीत स्वामी गिरिधारी राजा लुट्यो मन्मथ वृंदावन कुंजनमें में सुनीहै कूक ।।२।।

★ राग बिभास ★ मरगजी और कुंदमाल लोचन अलसात लाल डगमगात चरण धरणि धरत रेन जागे ।। भालतें खस मोरमुकुट भृकुटी तट आयो निकट शिथिल चपल चंद्रिकासो बांधी पाट तागे ।।१।। अतसी कुसुम तन सुभांत कहूंकहूं कुंकुमकी कांति मदन नृपति पीक छाप युग कपोलन लागे ।। छीतस्वामी

गिरिवरधर सौरभ रसमत्त मधुप संगमगुण गान करत फिरत आगे आगे ।।२।।

★ राग बिभास ★ कमलनयन स्यामसुंदर निशके जागेहो आलस भरे।। करनख उर राजत मानों अर्धशशि धरे।।१।। लटपटी सिर पाग खिसत वदन तिलक टरे।। मरगजी उर कुसुममाल भूषण अंगअंग परे ।।२।। सुरत रंग उमग रहे रोम पुलक होत खरे ।। परमानंद रसिकराय जाहीके भाग्य ताहीके ढरे ।।३।।

★ राग बिभास ★ सांवरे भलेहो रतिनागर।। अवके दुराय क्योंदुरतहे प्रीतिजु भई उजागर।।१।। अधर काजर नयन रगमगे रची कपोलन पीक।। उरनख रेख प्रकट देखियतहैं परी मदनकी लीक ।।२।। पलटपरे पट तिलक गयो मिट जहांतहां कंकण गाढे।। परमानंदस्वामी मधुकर गति भली आपनी चाढे ।।३।।

★ राग बिभास ★ इतनी बार तुम कहां रहे।। सगरी रेन पथ चाहत नयनदहे ।।१।। कुंमनदासप्रभु भये ताहीके वशजिनहि गहे ।। गिरिधर पिय भले बोल निवाहे संध्याजु कहे।।२।।

★ राग बिभास ★ निसके उनीदे मोहन नयन रसमस्ये ।। काहेको लजात कैंधो कहो लालन कहा वस्ये ।।१।। डगत चलत आलस जृंभातहो देखियत वसन खस्ये।। कुंमनदासप्रभु गिरिधर तुम भुजबंधन कर उरहिलाए कस्ये ।।२।।

★ राग बिभास ★ अरूण उनीदे आएहो रसमसे निसिके चिन्ह पिय कहां दुराये।। नखक्षत प्राणप्यारीके मोहन कांति न छिपत छिपाये ।।१।। कुंकुम रंजित उर वनमाला विलुलित सुख मधुर जनाये ।। गिरिधर नवकेलिकला रस प्रमुदित कृष्णदास अलि गाये ।।२।।

★ राग देवगंधार ★ एसें कोन धो रंगे हो लाल तन चूनरी कीनो ? कहूं पीक कहूं अंजनलीक जावक चावक दीनो ।।१।। कहुं चंदन कहुं बंदन लग्यो कहुं भुजभर गाढो अलिंगन दीनो।। धोंधी के प्रभु नवलनेह कहुं चापचटक रंग दीनो ।।२।।

★ राग रामकली ★ कछु कहीं न जाय तेरी उनकी विकट बात ।। आन आन प्रकृत केसे बनि आवें जो तू डार डार तो हों पात पात ।।१।। अब कहा कहत सो कहों प्रीतमसों छांड देहों इत उतकी पांच सात।। अब तो एतेपर गोविंदप्रभु पिय

सुमुख मनाय लेहों बातन बातन भयो प्रात ॥२॥

★ राग देवगंधार ★ भोर भये नवकुंज सदन तें आवत लाल गोवर्धन धारी ॥ लटपटी पाग मरगजी माला शिथिल अंग डगमगी गतिन्यारी ॥१॥ बिन गुन माल बिराजत उरपर नखक्षत द्विजचंद अनुहारी ॥ छीतस्वामी जब चितये मोतन तब हों निरख गई बलिहारी ॥२॥

★ राग बिभास ★ बने लाल रंग भरे नीके रहे तुम रजनी आज नेंन तो अरुण भये बैन तुतरात भले जु भले राजाधिराज ॥१॥ कौन की उपरैनी लाये अपनी तो छांड आये सकुचत नाहीन डारी सब लाज ॥२॥ कल्याण के प्रभु गिरधरन राज रहो केधों कहो कछु हमसों काज ॥३॥

★ राग बिभास ★ चल ले अलबेली देखत सोंत सहेली । सब निस जागी और रस पागी पीक कपोलन लागी प्रगटी प्रीत नवेली ॥१॥ कंचुकी ठोर ठोर दरकी गई छूटे बारन अतुलसें जगमगात अधर चटपटी हेंली । 'तानसेन' प्रभुके रस पागी या ही ते गर्व गहेली ॥२॥

★ राग बिलावल ★ घूमत रतनारे नेन सकल निस जागे । लटपटी सुदेश पाग, अलकन झलकन बीच पीखछाप युगकपोल अधरनमिस दागे ॥१॥ बिनगुन उरमाल बनी बिचबिच नख रेख ठनी पलटि परे पीत बसन कंकन सो दागे । तिलक बन्यो बदन बनमाल लगी चंदनसो डगमगात चरन धरत रेन सुख लागे ॥२॥ वचन रचन कियो सांझ तुम आये भोर मांझ बलबल या बदनकमल शोभित अनुरागे । जाय वसो वाहि धाम बिलसे जहां चारो जाम गोविंदप्रभु बलिहारी करजोर मांगे ॥३॥

★ राग बिलावल ★ माई आजु लाल लटपटात आए अनुरागे । सोभित भूखन अंग अंग आलस भरे रैन उनींदे जागे ॥१॥ लटपटी सिर पेच पाग छूटे बंदन बागे । 'सूरस्याम' रसिकराय रस बस कीने सुभाय जागे जहाँ सोई तिया बडभागे ॥२॥

★ राग टोडी ★ लालन आयेरी अनत रतिमानी भलेजु आये मेरे गेह अलसाने

नेन बने तुतरात ।। अधरन अंजन पीक लीक सोहे काहेको लजात जूठे सोहें खात ।।१।। पाग बनावत पेचन आवत तापें तिरछे नेन चलावत उमंग अंग न समात ।। नंददास प्रभु प्यारी जियमें बसतहें, भूले नाम वाहीको निकस जात ।।२।।

★ राग बिलावल ★ आज देखियत नेना आलस भरे रगमगे ।। रेनपलकनपरी सुरत ईनजेकरी भोर आये लाल धरत पग उगमगे ।।१।। तनओरे भांत कछुब कही न जात लसत अद्भुत क्रांत अंग अंग जग मगे ।। चत्रभुज प्रभु गिरिधर न आये भलीकरी पलट लाए बसन सोधे मील सग बगे ।।२।।

★ राग बिलावल ★ तेसोई स्याम नाम तेसो तन कीयो स्याम भलीकीनी स्याम आज मेरे ग्रेहे आये हो जु ।। अमी लगत हुते अरुनअधर दोऊः आछे निके लागे लालः कजरा रंगाये होजु ।।१।। तेसोई नीलपट तेसोई पीतपट चटक दुर कुंदन वै आये होजु ।। नंददास प्रभु तनमन भले स्याम धन हे बाम जीन निके कर पाये होजु ।।२।।

★ राग बिलावल ★ प्यारीके महल तें उठचले भोर ।। सखिवृंद अवलोक अग्रस्थित ढकत नीलकंचुकी पीतपट छोर ।।१।। राधाचरित्र विलोक परस्पर ते जुहास इतउत मुखमोर ।। गोविंदप्रभु लेचले दगादे नागरनवल सभाचित चोर ।।२।।

★ राग बिलावल ★ सांचे बोल तिहारे सांझके ।। रजनी अनत जागे नंदनंदन आये निपट सवारे ।।१।। आतुरभये नीलपट ओढे पीरे वसन विसारे ।। कुमनदासप्रभु गिरिधरन भलेजुभले वचन प्रतिपारे ।।२।।

★ राग बिलावल ★ तिहारे पूजिये पिय पाय ।। केसीकेसी उपजत तुमपें कहत बनाय बनाय ।।१।। आतुरभये नीलपट ओढें वसन पीत पलटाय ।। रूचिर कपोल पीक कहां पागे अरु यश पत्र लिखाय ।।२।। गिरिधरलाल जहां निस जागे तन सुख जियकी जाय ।। कुमनदासप्रभु जांनि ये बतिया अब तुम कोन पत्याय ।।३।।

★ राग बिलावल ★ पायेहोजु जान लाल तुम पायेहोजु जान ।। तुमसो कोन बलैया बोले निपट कपटकी खान ।।१।। औरनसो तुम हसत खेलतहो हमसे रहत मुखतान ।। सूरदासप्रभु अपनी गरज को हियतपरमसुजान ।।२।।

★ राग बिलावल★ तहीं जाओ जहां रेन हुते ।। काहेको दुराव करत मनमोहन मिटे न चिन्ह उर अंक जु ते ।।१।। दशनन दाग नखरे खवनी वर काम कुटिल कुच वीच धुते ।। विना सूत उरहार बन्यों वर परम चतुर हृदे लाय जुते ।।२।। अंबर अलक अटपटे भूषण भामिनी भवन भाग भुकते ।। सूरज दीन अधर मधु पीकें अंबुजनयन उनीदें हुते ।।३।।

★ राग बिलावल ★ आज और छबि नंदकिशोर ।। मिल रिस रुचिर लोचन भये अंतर चितबत चित्त तुम्हारी ओर ।।१।। प्रकटत पीठ वलय करकंकण देखियत हार हिये विन डोर ।। सोहत वसन नील अरू राते अधरन अंजन नयन तंबोर ।।२।। नखसिखलों शृंगार अटपटो पायेमानों पलाने चोर ।। फूले फिरत दिखावत ओरन निडर भये देह सन अकोर ।।३।। देखत बने कहत न बनि आवे सोभा सींधु बिना कहुं ठोर ।। अचरज क्यों न होय इन बातन सूर गहन देख्यो बिन भोर ।।४।।

★ राग बिलावल ★ मोहन घूमत रतनारे नयन सकुचत कछू कहत बेन सेन हीं सेन उत्तर देत नंदके दुलारे ।। भूषण वसन अटपटे सीस पाग लटपटी रतिरण लई झटपटी सुभग स्याम प्यारे ।।१।। सुवश कियो कुंजसदन मोर आये जीत मदन पलट परे बसन अजहुं न संवारे ।। चतुर्भुज प्रभु गिरिवरधर दर्पन ले देखिये जू सेंदुरको तिलक भाल अधरन मिस कारे।।२।।

★ राग बिलावल ★ ए आज अरून अरून डोरे दृगन लालके लागत हैं अतिभले ।। बंदन भरे पगन अलि मानों कुंजदलन पर चले ।।१।। लालकी पगियामें न समात कुटिल अलक आलस झलमले ।। नंददासप्रभु पोहोपन मध्य मानों मधुप गुंज सोवत ते कलमले ।।२।।

★ राग बिलावल ★ नयनकी चंचलता कहां कीनें भीने रंग क्यों न कहो स्याम

हमसो कित दुरावत ।। औरके बदन देखनकों नेम लीनो किधों पलकन मधि राखी प्यारी ताके भार भरे नये लेंले आवत ।।१।। मधुपगुंज लुब्धरहे जेसमीप निसबसे संगलागे आवत रति कीरतिगावत ।। सूरदासमदनमोहन गुप्तप्रीतिप्रकट भई मुख नहीं बनत बनावत ।।२।।

★ राग बिलावल ★ लटपटी पागकेपेच सवारो ।। करदर्पन ले निरखबारनें सुंदरबदननिहारो ।।१।। रंगभीने मुसकात मनोहरनेहकहानिखारो ।। सूरदासप्रभु सबसुखदाता चिततेनेंक न टारो ।।२।।

★ राग बिलावल ★ ऐसी ऐसी बातन लालन क्यों मनमानें ।। उरमें बनायबनाय जासोंकहिये जो यह नहींजानें ।।१।। रतिकेचिन्ह प्रकट देखियत सबकै सेकदुराने ।। कुमनदासप्रभु गोवरधनधर तुमहो भले सयाने ।।२।।

★ राग बिलावल ★ जानपायेहो ललना वलवल ब्रजनृपतिकुंवर ।। जाकेविवशसबनिशजागेतबही अनुसर ।।१।। अपनी प्यारीके रतिके चिन्हहमहिं दिखावन आये देते लोन दाधे पर ।। गोविंदप्रभु शामलतन तैसेई मन जनमतहीते युवतिन प्राणहर ।।२।।

★ राग बिलावल ★ राधा हरिके गर्वभरी ।। सखियनको आगम जबजान्यो बैठीरही खरी ।।१।। उतब्रजनार संग जुरकें बिहसत करत परहास्य ।। चल्यो नजायदेखियेरी वा राधाकोआस्य ।।२।। कैसो वदन शृंगार कौनविधि अंगदशाभई कैसी ।। सूरस्याम निशरसवशकीये निधरक व्हेकें वैसी ।।३।।

★ राग टोडी ★ सोंह दिवाय बूझतही मोंहनसांची कहो मोसूं यह बात ।। छूटी अलकबदन परराजत कछूईडत जृंभात ।।१।। अंजन रेख अधरपर शोभित भूषण वसनसिथिल सबगात ।। उरज चिन्ह उरपरशोभा देखियत दूरकरो अब हियोपिरात।।२।। सुनसुन श्रबणन बचन हमारे झूठी कहत नतुमसों यहबात ।। जाही केतुमरंगरगेहो जासो अंगअंग लपटात ।।३।। कहिये कहाकहत नहिं आवत जैये तहांजहां जागेरात ।। सूरदासप्रभु निपट निलज तुम एतेपर ठाडे मुसकात ।।४।।

★ राग टोडी ★ आये अलसाने लालजोंये हम सरसाने अनतजगे हो रंगरागके ।।

मेंतोजानी मेरें आये भोरकाहूऔर के रसके चखैया भ्रमर काहू वागके ।।१।। जहीते जुआयेलाल तहींक्योंनजाऔ जू जाहीके भाग जागेपरमसुहाग के ।। तानसेनके प्रभु तुमवहुनायक वातेंतोबनाओ पैं संभारो पेचपाग के ।।२।।

★ राग बिभास ★ भलेंजु भलें आये मोमन भाये प्यारे रतिके चिन्ह दुराये ।। सबरस दे आये अंजन लीक लाये अधरन रंगपाये कहां जाय ठगाये ।।१।। हौंहीं जानत और कोई नहीं जानत घड छोल बतियां बनाय तुम लाये ।। नंददासप्रभु तुम बहुनायक हम गँवार तुम चतुर कहाये ।।२।।

★ राग बिभास ★ नंद-नंदन वृषभानु-दुलारी कुंज-भवन तें चले उठि प्रात। अँसनि बाहु दिऐं जु परस्पर आलस बस अँग-अँग, जृंभात ।। विलुलित माल मरगजी सारी गंडनि पीक नख-छत बनी सात। 'छीत-स्वामी' गिरिधर निसि विलसे राति के चिन्ह लखि अति सकुचात ।।

★ राग बिलावल ★ पिय-सँग जागी वृषभानु-दुलारी। अंग-अंग आलस जृँभात अति कुंज-सदन तें भवन सिधारी ।। मारग जात मिलि सखी औरें तब हीं सकुचि तन-दसा विसारी। 'छीत' स्वामिनी सों कहति भामिनी ! तोहिं मिले निसि गिरिवरधारी ।।

★ राग देवगंधार ★ भलें तुम आए मेरें प्रात। रजनीसुख कहुं अनत कियौ पिय ! जागे सारी रात ।। झपि-झपि आवत नैन उनींदि कहा कहौं ? यह बात। ज्यों जलरुह तकि किरन चंद की अति समित मुंदि जात ।। कहुं चंदन, कहुं वंदन लाग्यौ देखियतु सांवल गात। गंगा सरसुति मानों जमुना अँग ही मांझ लखात ।। भली करी व्रत वोल निवाहे, मेरे गृह परभात। 'छीत-स्वामी' गिरिधर सुनि बातें बदन मोरि सकुचात ।।

★ राग देवगंधार ★ साँचे भए आए परभात। नंद-नंदन ! रजनी कहां जागे ? कहिये साँवलगात ! पीक कपोलनि लगी तुम्हारें, जावक भाल लखात। उर हि विराजित बिन-गुन माला, मो तन लखि सकुचात ।। भली करी, अब तहीं पगु धारौ जहाँ बिताई रात। 'छीत-स्वामी' गिरिधर ! काहे कों झूठीं सौहें खात ।।

★ राग बिभास ★ जागे हो जू रावरे ये नैंना क्यों न खोलो ।। भये हो त्रिया बस, रेनि जागे सब रस, भोर भए उठि आए भूले कहाँ डोलो ।। चंदन लगाए गात, अति ही कहा अलसात, नागरी की पीक लीक कपोलों ।। पीतांबर भूलि आए प्यारी जू को पट लाए भोर भए उठि 'सूर' कहि आइ जोलो ।।२।।

★ राग बिभास ★ लालन अनतरतिमान आयेहोजू मेरे गेह रसीले नयन वेन तुतरात ।। अंजन अधर धरें पीक लीक सोहें तोहें काहेकोंदुरावत झूठी सोहें खात।।१।। वातेंहू बनावत बातहु नआवत एतेपर रतिके चिन्ह दुरात तिरछे चितवत गात ।। नंददासप्रभु प्यारी के वचनसुन भूले नाम वहीको निसरजात ।।२।।

★ राग बिभास ★ अहो भटु पीक लीक कित लागी ।। मोसो कहा दुरावत आली स्याम रंग रस पागी ।।१।। कहें देत नैना रतनारे विरह वेदना जागी ।। कृष्णदास प्रभु संग मिली री देखियत तू बड़भागी ।।२।।

## अभ्यंग के पद

★ राग देवगंधार ★ करमोदकमाखनमिश्रीले कुवरकेसंग डोलत नंदरानी ।। मिसकर पकर न्हवायोचाहतबोलत मधुरी बानी ।।१।। कनकपथ आंगनमें राख्यो सीतउष्णधर्‌यो पानी ।। कनककटोरा सोंधो उबटना चंदनकांकसी आनी ।।२।। यों लाईमंजनहित जननीचितचतुराई ठानी ।। मनमेंमतो करत उठभाजें दुखित के अरुझानी ।।३।। निरखनयनभर देखत रानीशोभाकहत न बानी ।। गात सचिक्कण योंराजेंतहै ज्यौघनतडित लपटानी ।।४।। आओ मनमोहनमेरे ढिंग बात कहूं एकछानी ।। खिलौनाएक तातजोलाये बलअजहूनहिंजानी ।।५।। राज कुंवर अधन्हातोभाजो ताकीकहूंकहानी ।। बेनीनबाढी रहीतनकसी दुलहनिदेखहंसानी ।।६।। बैठे आयन्हाय पटपहरे आनंदमनमें आनी ।। विष्णुदासगिरिधरन सयाने मात कही सोईमानी ।।७।।

★ राग देवगंधार ★ प्रातसमेंउठ यशोमतिजननी गिरीधरसुत को उबटन्हवावे ।। करतशृंगार वसन भूषणले फूलन रुचिरुचिपागबनावे ।।१।। छूटेबंदबागो अति सोहत विचविच अरगजा चोवालावे ।। सूथनलाल फोंदनाफबिरह्यो यह छबि

निरखनिरख सचुपावे ॥२॥ विविधकुसुमकीमाल कंठधर श्रीकरमेंलै वेणु गहावे॥ ले दरपण सुतकोमुखनिरखत गोविंदतहां चरणरज पावे ॥३॥

★ राग देवगंधार ★ कहा ओछीह्वैजैहैजात ॥ सुनयशुमति तुमबडरन आगेंजोछिन एक बितात ॥१॥ अतिनीको सतभावभलाई जो यातनतेकीजे ॥ मायबापको नामलिवावत लोकमांझ यशलीजे ॥२॥ सासननद और पारपरोसन हँस बहु भांतकह्यो ॥ तौहूमोहि तिहारेघरबिन नाहिन परत रह्यो ॥३॥ बोललेहो संकोचकरो जिनजबतुमसुतहि न्हवावो ॥ श्रीविट्ठलगिरिधरलालको मोहीपें उबटावो ॥४॥

★ राग देवगंधार ★ यशुमति जबही कह्यो न्हवावनरोय गयेहरि लोटतरी ॥ तेलउबटनोंले आगेंधर लालहीचोटींपोततरी ॥१॥ मैंबलजाऊ इनमोहनकी कितरोवत बिन काजे ॥ पाछे धरराख्योचुरायके उबटनोतेलसमाजे ॥२॥ महरि बहुत बिनती कर राखतमानत नहीं कन्हाई॥ सूरस्याम अतिहीबिरुझानें सुरमुनि अंतनपाई ॥३॥

★ राग देवगंधार★ मंजनकरत गोपालचौकीपर ॥ अतिसुगंधफुलेलउबटनो विविधभांत कीसोंझराखीधर॥१॥ प्रथमन्हवाय फिरकेसरचर्चत शोभित अंगअंग सुंदरवर॥ व्रजगोपी सबमिलगावत हैं अंग उबटकर परससीसकर ॥२॥ विविध भांति शृंगारकरत हैं अपनीअपनी रूचिसुघरवर ॥ लेदर्पण श्रीमुखहिदिखावत निरखनिरख नयनहँसेहरि ॥३॥ भांतिभांतिसामग्रीकरकर लेआयींसब घरघर ॥ छीतस्वामीगिरिधरन आरोगत अतिआनंदप्रफुल्लितकर ॥४॥

★ राग देवगंधार ★ करतशृंगार मैयामनभावत ॥ सीतलजल उष्ण कदराख्यो लेलालन को बैठ न्हवावत ॥१॥ अंगअंगोछ चौकीबैठारत प्रथमहीले तनिया पहरावत ॥ देखोमेरेलाल औरसबबालक घरघरतें कैसे बनआवत ॥२॥ पहरोलाल झगाअतिसुंदर आंख आंजके तिलकबनावत॥ सूरदासप्रभु खेलत आंगन लेतबलैया मोदबढावत ॥३॥

★ राग बिलावल ★ आज मोही आगम अगम जनायो ॥ सोंधों छानी अरगजा

चंदन आंगन भवन लीपायों ।।१।। आगम आवन जान प्रीतम कों गोपीजन मंगल गायो ।। आनंद उर न समाय सखी नव साजि सिंगार बनायों ।।२।। तन सुख पागपिछोरा झीनो केसर रंग रंगायो ।। मुक्ता के आभूषन गुही मनी पहिरावत हुलसायो ।।३।। पंखा बहु सिर प्रीतम कों, नित राखुंगी छिरकायों ।। ग्रीषम ऋतु सुख देति नाइक यह औसर चलि आयों ।। आबेंगे महेमान आज हरि भाग्य बडे दिन पायों ।। 'कुंभनदास' नव नेह नई ऋतु आगम सुजस सुनायों ।।४।।

## शृंगार धरायवेके और दर्शन के पद

★ राग बिलावल ★ आवो गोपाल शृंगारबनाऊं ।। विविधसुगंधनकरो उबटनो पाछेउष्णजल लेजु न्हवाऊं ।।१।। अंगअगोछ गुहूंतेरीबेनी फूलन रुचरुचमाल बनाऊं ।। सुरंगपाग जरतारीतोरारत्नखचित शिरपेचबंधाऊं ।।२।। बागोलाल सुनेरीछापो हरीइजारचरणन विचराऊं ।। पटुकासरस बेंजनीरंगको हँसलीहार हमेल बनाऊं ।।३।। गजमोतिनकेहार मनोहर वनमालाले उरपहराऊं ।। लेदर्पण देखोमेरे प्यारे निरखनिरख उर नयनसिराऊं ।।४।। मधुमेवा पकवानमिठाई अपने करले तुम्हें जिवाऊं ।। विष्णुदासको यही कृपाफल बाललीलाहों निशदिनगाऊं ।।५।।

★ राग बिलावल ★ माईरी प्रातकाल नंदलाल पागबंधावत बालदिखावत दर्पण भालरह्योलसि ।। सुंदर नवकरनबीच मंजुमुकरकीछबि रहीफबिमानों गहि आन्योहै युगकमलनशशि ।।१।। बिचबिचचितकेचोर मोरचंद्र माथेंदिये तिनढिंगरत्न पेचबांधतहैंकस ।। नंददासललितादिक ओटभये अवलोकत अतुलितछबिकहिनजात फूलझरेंहँस ।।२।।

★ राग बिलावल ★ भोगशृंगारयशोदामैया श्रीविठ्ठलनाथके हाथ को भावें ।। नीकेंन्हायशृंगारकरतहै आछीरुचिसों मोहिपागबंधावें ।।१।। तातेसदांहौंउहांहीरहतहों तूडर माखन दूधछिपावें ।। छीतस्वामीगिरिधरन श्रीविठ्ठल निरखनयना त्रयतापनसावें ।।२।।

★ राग बिलावल ★ खुल्योहेमुकेसीचीरा कलगीनगजटितहीरा

ढिंगसिरपेचललित संभार्‍योहै ।। जंघाऊपर कमलकाछिनी कंचन के विविधरंगएकछोर पटकाकोछेल तासोंडार्‍योहै ।।१।। दुगदुगी कंठमोतीमाल कंठीकंठसोहेलालशोभित वनमालवेंदीभाललाल आज मैंनिहार्‍योहै। गोलगोल पहुँचनमें पहुँचीरत्नजटित एँठवेकरानमें मेरोमनडार्‍यो है ।।२।। नखशिखशृंगारबनाये निरखलोचन अघाये अरुगहनोसबनखसियलों रत्नजटित धार्‍यो है ।। कहत बल नंदनंदन वृषभानकीदुलारी आजहीयह लाडिलोतें नीकेहीशृंगार्‍योहै ।।३।।

★ राग बिलावल ★ पीतांबर को चोलना पहरावतमैया ।। कनकछाप तापरधरी झीनी एक तनैया ।।१।। लालइजारचुनायकी औरजरकसी चीरा ।। पहुँचीरत्नजरायकी उरराजतहीरा ।।२।। ठाडी निरखयशोमति फूली अंगसमैया ।। काजर लेबिंदुकादियो व्रजजनमुसकैया ।।३।। नंदबाबा मुरलीदई कह्योऐसेंबजैया।। जोईसुने ताकोमनहरे परमानंद बलजैया ।।४।।

★ राग बिलावल ★ आजतन राधासजतशृंगार ।। नीरजसुतवाहन को भक्षण अरुणस्यामरंकोनविचार ।।१।। मुद्रापति अचवनतनयासुत उरहीबनावतहार ।। सारंग सुतपतिवशकरिवेको अक्षतलेपूजतरिपुमार ।।२।। पारथपितु आसनसुतशोभित स्यामघटाबगपांतविचार ।। सूरदास प्रभु हंसासुतातटविहरत राधानंदकुमार ।।३।।

★ राग देवगंधार ★ श्याम श्यामा प्रात उठे बेठे अरसपरस दोउ करत सिंगार ।। लटपटी पाग सँवारत श्यामा अलक सँवारत नंदकुमार ।।१।। एक पहेनी वाकी मोतिनमाला एक पहनी वाको नवसर हार ।। श्रीभट जुगलकिसोर द्युति मेरे आंगन करत बिहार ।।२।।

★ राग बिलावल ★ कुसुम कुंज मधि करत सिंगार ।। प्यारी पियहीं फुलेल लगावत कोमल कर सुरजावतवार ।।१।। चंदन घसि अंग मज्जन कीनो यमुना जल झरी कर धार ।। न्हाय बहीरी अंग पोंछि स्वच्छ कर सरस बसन पहरावत हार ।।२।। पीत पिछोरी बांधि फेंट कसि तापर कटि किंकिनी झनकार ।। फेंटा

पीत शीश बांध्यो कटि दुहु दिश अलक लटकि घुघरार ॥३॥ दोउ चरन नूपुर धुन बाजत कंठ पदक सुज मुक्ताहार ॥ बाजु बंध जटित हथ पोंची पुष्पमाल पहरें करि प्यार ॥४॥ पुष्प गुच्छपर मोर चंद्रिका ले दर्पन देखत रिझवार ॥ चतुर्भुजदास श्याम मुख निरखत तन मन धन कीनो बलिहार ॥५॥

★ राग बिलावल ★ पिय प्यारी के करत सिंगार ॥ सरस सुगंध फुलेल लगावत कोमल कर संभारत वार ॥१॥ पीत कुसुम सिर बेनी गूंथी सिंदुर मांगजो भरत समार ॥ टेढी लर लटकन मटकनपर गलित कुसुम सिर भार ॥२॥ लेहेंगा कटितट क्षुद्र घंटिका अंगियापर गज मोतीनहार ॥ पोंची कंकण जराव बठोना एक एक कर बिच चूरी चार ॥३॥ सारी सरस कंसुभी सोहेले दरपन देखत रिझवार ॥ रामदास पीय प्यारी उपर तन मन धन डारत सब वार ॥४॥

★ राग बिलावल ★ सुभगशृंगार निरखमोहनको लेदर्पणकर पियहिदिखावें ॥ आपननेकनिहारियेबलजाऊं आजकी छबि कछूकहत न आवें ॥१॥ भूषणवसन रहेफबिठांईठांई अंगअंगछबि चितहिचुरावें ॥ रोमरोमप्रफुल्लित व्रजसुंदरि फूलन रचिरचि मालबनावें ॥२॥ अंचलवार करत न्योंछाबर तनमन अति अभिलाष बढावें ॥ चतुर्भुजप्रभु गिरिधरकोंस्वरूप सुधापीवतनयनपुट तृप्तिनपावें ॥३॥

★ राग बिलावल ★ आजशृंगारनिरखस्यामाको नीको बन्योस्याम मनभावत ॥ यह छबि तनहींलखायोचाहत करगहिके नखचंददिखावत ॥१॥ मुखजोरें प्रतिबिंबविराजत निरखनिरखमनमें मुसकावत ॥ चतुर्भुजप्रभु गिरिधर श्रीराधा अरसपरसदोऊ रीझरिझावत ॥२॥

★ राग बिलावल ★ आजकोशृंगार सुभगसांवरे गोपालजूको कहत नबनआवे देखेंहीं बनआवें ॥ भूषनवसनभांतिभांति अंग अंग छबि कहीनजात लटपटी सुदेशपाग चित्तकोचुरावें ॥१॥ मकरकुंडल तिलकभाल कस्तूरी अतिरसाल चितवनलोचनविशाल कोटिकामलजावें ॥ कंठसरी बनमाल फेटाकटिछोरनछबि निरखतत्रिभुवनत्रिया धीरनमनलावें ॥२॥ मेरेसंगचलनिहार ठाढ़ेहरिकुंजद्वार हितकीचितबातकहूं जोतेरेजियभावें ॥ चतुर्भुजप्रभु गिरिधर

नखसिखसुंदरसुजान बडभागिनताहिगिनो सुजातहीलपटावें ।।३।।

★ राग बिलावल ★ सुंदरस्वरूप अतिसेवासोंसरसरस मारग प्रवीणयाते ज्ञानहुंकथित हैं ।। तैसोईबागोबनाय तैसीयझुकरहीपाग चंद्रकासवारनीके फेटाहुं कसतहैं ।।१।। मोतीमालगुंजहार हियेपदककंठलाल सूथनसंभारचरणजेहर सजत हैं ।। करके शृंगार गिरिधारी जूकोबारबार आरसीदिखाय श्रीहरिरायजु हँसत हैं ।।२।।

★ राग बिलावल ★ प्रातसमेगिरिधरराधादोऊ मुखदेखत दर्पण में ।। जोरकपोलकहत आपस में तुमनीकेकिधोंहमनीकी औरकरोविचार सोचअपने मनमें ।।१।। हरिकीलटपटीपागविराजत उनकीबिथुरी अलक मांगशिथिल गोरेतनमें ।। गोवर्धनधारी इतनीबाख जेहे उमगचली युगलरूप वसिथोरी स्यामतन में ।।२।।

## अथ शृंगारसन्मुख के पद

★ राग बिलावल ★ सुंदरमुख पर वारो टोंना ।। बेनीबारनकीमृदुवेना ।।१।। खंजननयनन अंजसोहे भ्रोंहनलोयन लोना ।। तिरछीचितवनयोंछबिलागे कंजपलन अलिछोना ।।२।। जोछबिहै वृषभानसुतामें सोछबिनाहिनसोना ।। नंददास अविचलयहजोरी राधास्याम सलोना ।।३।।

★ राग बिलावल ★ ये दोऊनागर ढोटा माईकौनगोपकेबेटा ।। इनकीबात कहा कहों तोसों गुणनबड़े देखन के छोटा ।।१।। अग्रज अनुजसहोदरजोरी गौरस्यामग्रथित सिरचोटा ।। नंददासबलबल यहमूरति लीलाललित सबहीविधिमोटा ।।२।।

★ राग बिलावल ★ आजबन्योनवरंग पियारो ।। व्रजवनितामिल क्योंननिहारो ।।१।। लटपटीपाग महावरपागे ।। कुंवरमनावत अतिबडभागे ।।२।। नीलांबर नखरेखजोसोहे ।। देखतमन्मथको मनमोहे ।।३।। कहूंचंदन कहूंवंदनकी छबि ।। अंगरागबहुभांतिरह्योफबि ।।४।। मदनमोहनपिय यहविधदेखों ।। दासगोपाल जीवनफल लेखों ।।५।।

★ राग बिलावल ★ मोहनलालके चरणारविंद त्रिविधतापहारी ।। कहिनजात कौनपुण्य करजूसिरधारी ।।१।। निगमजाकीसाखबोले सेवकअधिकारी ।। धीवरकुल अभयकीनो अहिल्याउद्धारी ।। ब्रह्माजाकोपारनपावे गोपलीला वपुधारी ।। आसकरणप्रभु पदपराग परममंगलकारी ।।३।।

★ राग बिलावल ★ शोभाआज भलीबनि आई ।। जलसुतऊपरहंसबिराजत तापरइंद्र बधूदरसाई ।।१।। दधिसुतलियो दियोदधिसुतमें यह छबिदेख नंदमुसकाई ।। नीरजसुतबाहनकोभक्षण सूरस्यामले कीर चुगाई ।।२।।

★ राग बिलावल ★ देखियतप्रकट द्वादशमीन ।। खटइंदुद्वादश तरणिशोभित विमलउडुगणतीन ।।१।। दशअष्टअंबुजकीर खठमणिकोकिलोस्वर एक ।। द्वादशविद्रुम दामिनीखटब्यालतीनबिशेक ।।२।। त्रिवलीपर श्रीफलविराजत परस्परब्रजनार ।। कुंवरगिरिधर कुँवरिछबिपर सूरजनबलहार ।।३।।

★ राग बिलावल ★ देखसखीएक अद्‌भुतरूप ।। एक अंबुजमध्यदेखियत बीसदधिसुतयूप ।।१।। एक अबली दोयजलचर उभयअर्कअनूप ।। पंचवारजएकहींढिंग कहोकहास्वरूप ।।२।। शिशुगत में भईशोभा अर्थकरोबिचार ।। सूरश्रीगोपालकी छबि राखिये उरधार ।।३।।

★ राग बिलावल ★ देखोचारचंदएकठौर ।। चितवरहीनितंबिनी पियसंगसारसुताकीओर ।।१।। द्वैविधुकीगति स्यामबरणहै द्वैविधुकीगतिगौर ।। जाकेमध्यचारशुकराजत द्वयफलआठचकोर ।।२।। शशिशशिसंगप्रवालकुंदअलि तहां अरुझोमन मोर ।। सूरदासप्रभुउभयरूपनिधि बलबलयुगलकिशोर ।।३।।

★ राग बिलावल ★ अद्‌भुत एक अनुपमबाग ।। युगलकमल पर गजवर क्रीडत तापरसिंहकरतअनुराग ।।१।। हरिपरसरवरसरपरगिरिवर तापरफूलेकंज पराग ।। रुचिरकपोतवसत ताऊपर तापरअरुणअमृत फललाग ।।२।। फलपरपुष्प पुष्पपरपल्लव तहांवसतशुकपिकमृगखाग ।। खंजनधनुषचंद्र ताऊपर तहींबसत एक मणिधरनाग ।।३।। यहरसविरसहोतनहीं कबहू शोभानेक करत नहिं त्याग ।। सूरदासप्रभुवसतनिरंतर तिहिंहित बाढ्यो सिंधुसुहाग ।।४।।

★ राग बिलावल ★ कोई एक सांवरोरी इतह्वैआवेजाई ।। ज्योंज्योंनयनन देखियेरी त्योंत्योंमन ललचाई ।।१।। बदनमदनमनमोहना घुंघरवारे केश ।। मोहनमूरति माधुरी नृत्यतमनोहरवेश ।।२।। श्यामवरणहियो वेधियो जोबनमदछकेनैन ।। रूपठगोरीमोहिलगीरी बिनदेखेनहिंचैन ।।३।। धीरहरनबडरीभुजारी मदगजराजकी चाल ।। उरदेखेंमनआवही ह्वैरहियेबनमाल ।।४।। समझाये समझतनहीं रहीं छक मनरह्योभोय ।। रामरायप्रभुसोंरमी कहिभगवान सखीसोय ।।५।।

★ राग बिलावल ★ इनमें को वृषभानकिशोरी ।। स्यामबतायदेहोअपने कर बालापन की जोरी ।।१।। वहदेखो ठाडी युवतिनमें नीलवसन तनगोरी ।। बालापनमें मोहिसिखायो छलबलबहुविध चोरी ।।२।। तिहारेगुणनकी ग्रथितमाल भैंउरहीते नहीछोरी ।। सूरदासप्रभु तिहारे मिलनको जैसेपाट की डोरी ।।३।।

★ राग बिलावल ★ नंदभवनको भूषणमाई ।। यशुदाकोलाल वीर हलधर को राधारमण सदासुखदाई ।।१।। इंद्रकोइंद्र देवदेवन को ब्रह्म को ब्रह्म अधिक अधिकाई ।। कालकोकाल ईशईशन को वरण कोवरण महावरदाई ।।२।। शिवकोधन संतन को सर्वस्व महिमा वेदपुराणनगाई ।। नंददास को जीवन गिरिधर गोकुल मंडन कुंवर कन्हाई ।।३।।

★ राग बिलावल ★ सुंदरढोटाकौनको सुंदरमृदुबानी ।। सुंदरभालतिलकदिये सुंदर मुसकानी ।।१।। सुंदरनयननहरलियो कमलनकोपानी ।। सुंदरतातिहूंलोककी लेव्रजमेंआनी ।।२।। भेदबतयोग्वालिनी जायोनंदरानी ।। परमानंदप्रभुमात यशोमति सबसुखसों लपटानी ।।३।।

★ राग बिलावल ★ लरलटकसोहे लालके ।। जानोघनमें विधुमंडलराजत करनवनीत गोपालके ।।१।। स्यामगातपर दधिकेछींटा उडुगणछबि नयनविशालके ।। आसकरनप्रभु मोहननागर प्रेमपुंज व्रजबालके ।।२।।

★ राग बिलावल ★ जसोमतिकें हो आज गईरी करि सिंगार ठाडे नंदनंदन निरखि बदन हों थक्ति भइरी ।।१।। लोभी लोभपरयो मन मेरो रूप रास अंग अंग छईरी ।।

कुंभनदास प्रभु गोवर्धनधर हँसि मोंसो कछु बात कहिरी ॥२॥

★ राग बिलावल ★ आज अति शोभित हे नंदलाल ॥ कोर केसरी धोती पहरे ओर उपरना लाल ॥१॥ चंदन अंग लगाय सांवरो अरु राजत बन माल ॥ अति अनुराग भरी ब्रजबनिता बल बल दास गोपाल ॥२॥

★ राग बिलावल ★ सखी नंदको नंदन सांवरो मेरो चित चोर जायरी। रूप अनुप दिखायके सखी गयो हे अचानक आयरी ॥१॥ टेढी चलनि मधुर चंचल गति टेढे नेन चलायरी। टेढी हीं कछु ह्वे रहे हे सखी मधुर बेंन बजायरी ॥२॥ कानन कुंडल मोर मुकुट छबि सोभा बरनी न जायरी। चतुर्भुज प्रभु प्रानको प्यारो सब रसिकनको रायरी ॥३॥

★ राग आसावरी ★ उलटी फिर आवतही निजद्वार ॥ गृहआंगनसुहात नतबतेदेख्योनंद-कुमार ॥१॥ सुंदरस्यामकमलदल लोचनसुंदरताजु अपार ॥ तादिनतें आतुरयहमनतन चितवत वारंवार॥२॥ भोरभवनते निकसेमोहन चलत गयंदसुढार ॥ चतुर्भुजप्रभु गिरिधरनमिलनकों करत अनेक विचार ॥३॥

★ राग कान्हरो ★ कहा री कहों मनमोहन को सुख बरनत मोपै बरन्यो न जाय। आलिंगन परिरंभन चुंबन अधरामृत रसपीवत पिवाय ॥१॥ निस वासर संग तजत न तिल भर राखथ अपुने हृदय लगाय ॥ 'कृष्णदास' ढिंग ठाडी ललिता कर लै बीन बजावत गाय ॥२॥

★ राग बिलावल ★ चढ़ गोवर्धन सिखर सांवरो बोलत धोरी धेन ॥ पीत बसन सिर मोर चंद्रकाधर मोहन मुख बेन ॥१॥ बन जु धात विचित्र किये हैं संग सखा सब सेन ॥ कुमनदास प्रभु दोहे दोहे गैया मथ मथ पीवत धेन ॥२॥

★ राग आसावरी ★ आज बने मोहन रंग भीने। केसरी पाग सिथिल अलकावलि सीस चन्द्रिका दीने ॥१॥ केसरी वागो अति राजत हि हरी इजार चरननमें दीने। हार हमेल दरपन ले निरखत 'रसिक' प्रीतम चरनन दीने ॥२॥

★ राग बिलावल ★ जब भार जे हरि जराई सब लोंग भार तुलसी के भींज भार नासिकाको बेसर। मालाभार चुनरी आप मासा भार चार फुलनभरी अंगियासो

भीजरही केसरी ।।१।। नासापर शुक बाहु कंठ पर कपोत वारूं सुरन पर पीक वारुं बेनी पर सेसरी । कहें गुनि तानसेन बरनी न जात छबि जाकी कटी पर वारो कोटि कोटि के हरि ।।२।।

## खसखाने के पद

★ राग बिलावल ★ अतर गुलाब नीर परदा लपटें उसीर त्रिविध समीर की झकोर हैऔं करें।। छूटति फुहारे हौद भरे अति भारे सारे नाना बिधि चादरन की धार बहवौ करैं ।।१।। रंग जमें राग गुन रहत सारंग की धुनि ग्रीषम निवास गुनी गान कहवौ करैं।। ऐसें निज मंदिर में बिराजे बालकृष्ण प्रभु 'व्रजाधीस' आठों पहर दरसन देवौ करें ।।२।।

★ राग पंचम ★ लरकाई में जोबनकी छबि देखो सुंदर नयनन भरभर ।। बिथुरी अलक बदन छबि राजत सुरत केलि मानो सीख दई हर ।।१।। गंड चखोडापर चख बिंदुला चिह्न किये मानो चुंबन करकर ।। नेन सलोने भ्रमर भमत मानो ललित गिरा राजत अति तोतर ।।२।। आंगन डोलत फिरत महागज लेत सखी लरकारे भुजन भर ।। सूरस्याम सब समे महारस देत लाला पावत सुख नागर ।।३।।

★ राग बिलावल ★ मुखसों मुख मिलाय देखत आरसी ।। विकसत नीलकमल ढिंग उदित भयो कैधों शशी ।।१।। निरख वदन मुसकाय परस्पर करत बिहार गिरि जात अंक हँसी ।। गोविंदप्रभु प्यारीजु परस्पर दंपति प्रेरि प्रेमफँसी ।।२।।

★ राग बिलावल ★ मेरो मुखनीकोकै तेरोरी प्यारी ।। दर्पनले देखो मृगनयनी सांची कहो वृषभान दुलारी ।।१।। तुमहो नंदजूके छैलछबीलै हमहैं गुजरियां दासी तुम्हारी ।। कृष्णदासप्रभु गिरिधरनागर चरणकमल पर राधाजु वारी ।।२।।

★ राग बिलावल ★ सुमन मन गोपाललाल सुंदर अति रूपजाल मिटहें जंजाल निरखत सब गोपबाल ।। मोरमुकुट सीसधरे बनमाला सुभगगरे सबकोमन हरे देख कुंडलकी झलकगाल ।।१।। आभूषन अंगसोहे मोतिनके हार पोहे कंठ सरि मोहेद्रग गोपीन निरखत निहाल ।। छीतस्वामी गोवरधनधारी कुंवर नंद सुवन गायनके पाछें पाछें धरतहें लटकीली चाल ।।२।।

# शृंगार दर्शन के पद (सुबह से शाम तक) पगा शृंगार के पद

★ राग बिलावल ★ सुंदर श्याम छबीलो ढोटा डार गयो मोपे मदन ठगोरी ।। निर्तत गावत वेनु बजावत संग सखा हलधर की जोरी ।।१।। कबहुंक गेंदन मार नचावत ग्वाल भजावत हें चहु ओरी ।। चंचल बाजत चावत धावत कबहुंक आय होत ईक ठोरी ।।२।। कुंदनलाल लाल लोचन छबि-शीश पगा ओढे पीत पिछोरी ।। सूरदास प्रभु मोहन नागर कुहांरि करूं किनी जगजोरी ।।३।।

★ राग रामकली ★ लाल तुम सीखे हो करन दगा ।। रजनी अनत जाय सुख बिलसत धरच्यो है शीश पगा ।।१।। ओढे कवाय लालचन्द्र छीपावत अब तुमरी बिध जानी ।। कुंभनदास प्रभु गोवर्द्धन धर रहत नहीं कछु छानी ।।२।।

★ राग सारंग ★ बन्यो माई पगा स्याम सिर नीको ।। धोती ओर उपरना ओढे ओर गहेनो मोतीको ।।१।। अंग अरगजा कमल हाथ में लीनु मिल्यो भावतो जीकों ।। नेन चकोर चंद मुख निरखत रसिक प्रीतम सबहीको ।।२।।

★ राग सारंग ★ अखियां काहू की न लगो ।। सांवरो सो ढोटा काहु को जासीर ग्वाल पगो ।। रूप रंग्यो मेरो मन वाके रोम रोम प्रति मदन जग्यो ।। सुनि कृष्णदास लाल गिरिधर विन को काहु को न सगो ।।२।।

★ राग गोरी ★ अरि येह कोन छबीलो या के शीश पगा ।। सांवरे वरन अंग अंग सुंदर धरच्यो हे शीश पगा ।।१।। कुटिल अलक वदन पर राजत कुंडल जटित नगा।। मेरो मन अटक्यो वा मूरति बांध्यो प्रेम तगा ।।२।। श्याम समें गायन के पाछें सखा मंडली संगा ।। कृष्णदास गिरिधर जुकी बानिक दिनदिन नव नव रंगा ।।३।।

★ राग गोरी ★ बनते बने आवत नंद नंदन शीश पगा ।। ओरे पीत पिछोई रूपरात जदुपति जगवंदन ।।१।। संध्या समें खिरक के द्वारे अपने अपने भाव विरारत ।। नंददास प्रभु को मुख निरखत त्रिविध ताप तनते सब टारत ।।३।।

## फेंटा सिंगार के पद

★ राग बिलावल★ गोप के भेख गोपाल गायन हेत दृगन सुखदेत ।। शिर सुभग फेंटा सखी ।। परस रह्यो भ्रों पर पेज पच भास ढर लागत सोहावनो दाहेंनो औरि सखी ।।१।। लेत आकसि चितवन चारू चलन गती गोपिजन मन वसन आनन अमेंठा सखी ।। धाय सनमुख जाय दास परमानंद चाह क्षित करत यों करिये भेंटा सखी ।।३।।

★ राग बिलावल ★ फब्यों फेंटा ललित लाल के शिश पर निरखी छबी माधुरी अखियां सिरातरी ।। प्रेमड़ी बावरी हों सखी व्हे रही सुध बुध बिसर गई द्वार व्हे जातरी ।।१।। रूप के गर्व कछू आव आदर कियो बहोरो कृपाल मुस्कातरी ।। दास कुंभन नाथ गोवर्धनधर साथ गोपीजन रीझ मिल सांमरे गातरी ।।२।।

★ राग हमीर ★ लालके फेंटा ऐंठा अमेठा बन्यो फब्यो भ्रगुटी भाल पर नवल नंदलालके आवत बनतें बने सांझ सुरभिन मांझ ।। अटक लटक नरही दृगन ब्रजबालक ।।१।। चलत गजगति चाल मनहरत तेहि काल बाहु अंस न धरें सखा प्रिय ग्वालके ।। गोपीजन युथ जूरे द्वार द्वार खड़ी निरख नंदलाल युवती जन जालके ।।२।।

★ राग हमीर ★ पूत महरको खिरक दोहावत गैया ।। संध्यासमे बांधे फेंटा गरे गुंजमाल पहेरे तनिया ठाडे हें अधपैया ।।१।। कोंधनी बनी हाथ हसंतातर रूप मोहनी मदन हरैया ।। रसिक प्रीतम की बानिक निरखत लीजे रीझ बलैया ।।२।।

## कुल्हे के पद

★ राग रामकली ★ कहांलोंवरनों सुंदरताई ।। खेलत कुंवरकनक आंगन में नयननिरख सुखदाई ।।१।। श्वेत कुलहि शिरस्यामसुंदर के बहुविधिरंग बनाई ।। मानोंनवघन ऊपरराजत मधुवा धनुषचढाई ।।२।। श्वेतपीत अरुअसितलालमणि लटकन भालरुराई ।। मानो असुरदेवगुरुसनिमिलि-भूमीसुतसमुदाई ।।३।। अतिसुदेश मनहरत कुटिलकच लोचनमुखसकुचाई ।। मानों मंजुलकंजकोशपर

अलिअवली फिर आई ॥४॥ दूधदंत अधरनछबि अद्भुत अलपतलपजलझाई ॥ किलकत हँसत दुरत प्रकटतमानों घनमेंविद्युललाई ॥५॥ खंडितवचनदेत पूरणसुख अद्भुत यह उपमाई ॥ घुटुरुवनचलत उठत प्रमुदितमन सूरदास बलजाई ॥६॥

★ राग बिलावल ★ खेलत लाल अपने रस मगना ॥ गिर गिर उठत घुटुरुवन टेकत किलक किलक जननी उर लगना ॥१॥ पाय पैंजनी अरु पनसूरा कटि किंकनी पहुंची जरी कंकना ॥ हार हमेल हँसुली अरु दुलरी कंठसरी लटकन छबि वघना ॥२॥ कुलही लाल अरु पीत झगुलिया रिंगनकरत नंदजुके अंगना ॥ निरखतदास जाय बलिहारी चिरजीयो यसोदाको ललना ॥३॥

★ राग धनाश्री ★ अपनो गोपाल की बलहारी ॥ नानाविधिरचिफूलबनाई भलीबानी हेधारी ॥१॥ सोंधेसहित सुदेशकेशबिच बांकीकुल्हे विधारी ॥ गोपीजन के अनुराग भाग्यसब बांधसुहस्तसंवारी ॥२॥ निरखनिरखफूलत नंदरानी सुखकी रास विचारी ॥ परमानंदस्वामी के ऊपर सर्वस्वदीजैवारी ॥३॥

★ राग धनाश्री ★ मोहन मोहनी सिरपाग ॥ मोहनभांतिविचित्रसंभारी श्रीदामाअनुराग ॥१॥ उज्ज्वलस्यामसुदेशविराजत कुल्हेफूलपराग ॥ देखतन अघात सुभगतासीमा कृष्णदासबडभाग ॥२॥

★ राग धनाश्री ★ आज अतिराजत नंदकिशोर ॥ सिर पर कुल्हेटिपारोशोभित धरेंपखौवामोर ॥१॥ मल्लकाछकटिबांधेफेंटा सरससुगंधदुछोर ॥ बलबलसुंदरबदन कमल पर रसिकप्रीतमचितचोर ॥२॥

★ राग धनाश्री★ क्रीडत मणिमय आंगनरंग ॥ पीततताफताकीझगुली बनीहै कुलही लालसुरंग ॥ कटिकिंकिणीघोषविस्मितसखी धायचलत-बलसंग ॥ गोसुत पूँछ भ्रमावत करगहिं पंकरागसोहेअंग ॥२॥ गजमोतिनलरलटकनशोभित सुंदरलहरतरंग ॥ गोविंद प्रभुकेजु अंगअंगपर वारों कोटिअनंग ॥३॥

★ राग धनाश्री ★ शोभितस्यामतन पीतझगुलिया ॥ कुलहीलाल लटकनछविबघना चलनसिखावत मैया ॥१॥ डगमगातपगधरतमनोहर

अतिराजतपैंजनियां ।। यशुमतिमनप्रफुल्लित अति आनंदसों लेतबलैयां पुनपुनियां ।।२।। किलककिलक करलेतखिलौना प्रेममगनहुलैसैया ।। अरबरायदेखत फिरपाछे चलत घुटुरुबन धैया ।।३।। गोपवधू मुखकमलनिहारत लालन सब सुखदैया ।। ब्रजलीलाब्रह्मादिक दुर्लभ गावतदाससदैया ।।४।।

★ राग धनाश्री ★ खेलतलाल अपने रसमगना ।। गिरिगिरउठत घुटुरुवनटेकत किलककिलकजननी उर लगना ।।१।। पायपैंजनी और पनसूरा कटि किंकिणी पहुँचीजरीकंकना ।। हारहमेलहँसली औरदुलरी कंठसिरीलटकन छबि बघना।।२।। कुलहीलाल और पीतझगुलिया रिंगनकरतनंदजूके अंगना ।।२।। निरखतदास जायबलहारी चिरजीयो यशोदाकोछगना ।।३।।

★ राग सारंग ★ आज अति सोभित है नंदलाल। नवचंदनको लेप कियो है ता पर मोतिन माल ।।१।। खासाको कटि बन्यो पिछोरा कुलह जु सुतरु सोहे भाल। कुन्द मालती कंठ विराजत बीच बीच फूल गुलाल ।।२।। सारंग राग अलापत गावत मधुर मधुर सुरताल। गोविन्द प्रभुकी या छबि निरखत मोहि रही ब्रजबाल ।।३।।

★ राग सारंग ★ बलबल आज की बानिकलाल ।। कसुंभीपागपीत कुल्हे भरतकुसुमगुलाल ।।१।। विश्वमोहन नवकेसर कोतिलकभाल ।। सुंदरमुखकमल लपटावतही मधुपजाल ।।२।। वरणीपीत बिथुरत बंद सुभग उरविशाल ।। गोविंदाप्रभुके पद नखपरसत तरुणतुलसीमाल ।।३।।

★ राग कल्याण ★ कनक कुसुम अतिशोभित श्रवणन ।। घूमत अरुण तरुण मदमाते मुसुकात आनन ।।१।। गोल पाग पर कुल्हे सुरंग तामें अलक रेख बनी ।। गोविंदप्रभु त्रैलोक विमोहत कौस्तुभमणी ।।२।।

★ राग कान्हरो ★ तेरीहौं बलबल जाऊं गिरिधरन छबीले ।। कुल्हे छबीली पागछबीली अलक छबीली तिलक छबीले नयनछबीलो प्यारीजू के रंगरंगीले।।१।। अधर छबीले वसन छबीले वैनछबीले हो अतिसरसुढीले ।। गोविंदाप्रभु नखसिख अंगोअंग लालन रसीले ।।२।।

★ राग कान्हरो ★ आजकी बानिक कही नजाय ।। रही धस पाग लाल आधे सिर कुल्हे चंपक तापर हीरा लटकाय ।।१।। वरुनी पीत पहरे छूटे बंद अरगजा मोजें तन बिंबित स्याम झांई ।। दरशनीय वनमाल तिलक देखिये बिथके कोटि मदन और गोविंद बलबल बलजाई ।।२।।

★ राग नट ★ बनेरी लाल गिरिधारी बानिक पर बल बल जांई ।। चंपक भरी कुलही सिर लटकत कसुंभी पाग छबि भारी ।।१।। बरन पीत श्याम अंग पर ओर अरगजा सोभे मन्मथ मनोहारी ।। गोविन्द प्रभु रीझे वृषभाननंदिनी कंचुकी खोलि भरत अंकवारी ।।२।।

★ राग ईमन ★ लाडले लालकी बंदस कही नपरेहो ।। कुल्हे चंपक भरीहो अति सुरंग और लटपटी पाग रही आधे सिरधस ।।१।। वरुणी पीत हरे छूटी बंद अरगजामोजैसो स्याम उरस ।। गोविंदप्रभु सुरत शिथिल दंपति प्रेम गलित बैठी कुंजमहलतें निकस ।।२।।

★ राग पूर्वी ★ सोहत कनक कुसुम करन ।। ओर सोहे मोतिन अवतंस लटकन मनमथ हरन ।।१।। लाल पाग आधी सिर कुल्हे चंपक भरन ।। गोविंद प्रभु सिंघद्वारो ठाडे चपल अरु भुज भरन ।।२।।

★ राग गोरी ★ मोहन तिलक गोरोचन मोहन मोहन ललाट अति राजै । मोहन सिर पर मोहन कुलही मोहन सुरंग अति भ्राजै ।।१।। मोहन स्रवन कुसुम जु मोहन कपोल अवतंस विराजै । मोहन अधरपुट पै मोहन मुरलि मोहन कल बाजै ।।२।। मोहन मुखारविंद पै झूमत मोहन अलक अलि मधु काजै । गोविन्द प्रभु नखसिख जु मोहन मोहन घोख सिरताजै ।।३।।

★ राग हमीर ★ पिछोरा खासाको कटि झीनो । केसर घोर चंदन अंग छिरकत बहोत अरगजा भीनो ।।१।। कुल्हे केसर भरी चन्द्रिका अति विचित्र मुखमंडन कीनो । कुंभनदास प्रभु गोवर्धनधर प्रीतम परम प्रवीनो ।।२।।

★ राग कान्हरो ★ राखी हो अलक बीच चंपक कली गनी गनी । जगमगात हीरा लाल कुलह पर पाग जु अति बनी ।।१।। सुभग तरुन मदमाते लोचन मुसिक्याते

अनी अनी। गोविन्द प्रभु व्रजराज कुंवर वर धनि धनि हो घनी घनी ॥२॥

★ राग केदारो ★ देख गिरिधरन तन वृषभान की लली ॥ लटपटी पाग पर कुलही चरन लोटत ऐ तो जीन गहरुकर बात नाहिन भली ॥१॥ पुन्य पूरव कूले नाथ त्रैलोकवर रसिकरस रास मय समझ मनमें अली ॥ गोविंद प्रभु अंग वर लई हीये संग कर गोपीजनके जुथमें मान तज के चली ॥२॥

★ राग बिहाग ★ मुसक उठावत सीस। हों दासी तुम रसिक सिरोमणि सकल लोकके ईश ॥१॥ कुल्हे सुरंग राजत हें सीस पर सखीजन देत असीस। सूरस्याम सुख सैया पोढे जगजीवन जगदीश ॥२॥

★ राग बिहाग ★ बनी मोहनसिर पाग सांकरे पेचन चोकरी ॥ कुल्है सुरंग कुसुम भरी और सेहरो चंपकभरी छबि लाग ॥१॥ सूथनलाल पीतवरुनी और अरगजा मौजें शोभित स्याम सुभाग ॥ गोविंदप्रभुकों ब्रजवासिन प्रति छिन छिन नव अनुराग ॥२॥

★ राग गोरी ★ बन ते बने आवत माई ब्रजनाथ ॥ गावत गोरी राग वल्लभ बालक साथ ॥१॥ कसुंभी पाग सिर कुलह चंपक भरी सेहरौ कहूँ कहूँ कुसुम सिथिलाथ॥ बजावत पत्र शृंग कोलाहल आवत घोष पथ ॥२॥ प्रिय सखा भुज अंस लीला धरें रतन खचित मुरली सोहै हथ ॥ गोविंद प्रभु के मुखारविंद पर वारों कोटिक मनमथ ॥३॥

★ राग सारंग ★ बैठे हरिकुंज नवरंगराधेसंग पहरे छूटेबंध अंग वागोलाल। लटपटीपाग शिरसुरंग मजलीन कुल्हे रतन शिरपेच कचढरकरही अर्धभाल ॥१॥ प्यारीतनकंचुकी छापेदार पहेरि सोंधेभरी महेकरही अंगबाल ॥ लालगिरिधरनछबि निरख गतिविवसभई सरस दइ रिझ ललिता ललितमाल ॥२॥

★ राग सारंग ★ चोताल ★ बानक बन ठन ठाडो री मोहन सुंदर जमुना तीर ॥ सीस कुल्हे चंदन खोर कीए कुटील अलक भ्रों पैं धनुष दृग खंजन स्याम बरन नासा कीर ॥१॥ अधर दसन अधर बिंब चुवक गाढे ग्रीवा मुक्त माल बिसाल बिराजत चिन्ह नव कट गंभीर ॥ पग नूपुर रुनक झुनक पीत बसन मदन मोहन

कर मुरली 'गोविंद' प्रभु गोप रूप गोपीनाथ बलबीर ।।२।।

## पाग चंद्रिका

★ राग बिलावल ★ लटपटी पाग बनी सिर आज। टेढी धरी चंद्रिका सुन्दर भई मन्मथ मन लाज ।।१।। नखसिख बानिक कहत न आवे लटपटे भूषन साज। परमानंददासको ठाकुर नवलकुंवर ब्रजराज ।।२।।

★ राग आसावरी ★ पूछत जननी कहां ते आये। आज गयो श्रीवल्लभ के घर बहोतक लाड लडाये ।।१।। विविध भांति पट भूषन ले ले सरस सिंगार बनाये। सीस पाग सिरपेच जु बांधे मोरचन्द्रिका लाये ।।२।। बहोत भाँति पकवान मिठाई विंजन सरस बनाये। पायस आदि समर्पे मोहि मेरी लीला गाये ।।३।। प्रेम सहित वल्लभमुख निरखत और न कछु सुहाये। रसिक प्रीतम जु कहत जननी सों आज अधिक सुख पाये ।।४।।

★ राग आसावरी ★ आज बने मोहन रंग भीने। केसरी पाग सिथिल अलकावलि सीस चन्द्रिका दीने ।।१।। केसरी वागो अति ही राजे हरी इजार चरनन में दीने। हार हमेल दरपन ले निरखत रसिक प्रीतम जु चरनन दीने ।।२।।

★ राग पूर्वी ★ धरे बांकी पाग बांकी चन्द्रिका बांक बिहारीलाल ।। बांकी चाल बांकी गति बांके वचना रसाल ।।१।। बांको तिलक बांकी भ्रूरेख बांकी पहिरे गुंजामाल ।। गोवरधन अपने कर धरके बांके भये गोपाल ।।२।। सांकरी जु खोर बांकी हम सूधी हैं गिरिधरलाल ।। नंददास सूधे किन बोलो बरसाने की तुम जो ग्वाल ।।३।।

★ राग गौरी ★ वे देखो आवत हैं गिरिधारी। कछुक गाय आगे अरु पाछे सोभित संग सखा री ।।१।। खस रही पाग लटपटी सुन्दर अपने हाथ सँवारी। मोतिनकी लर उरके ऊपर रुरकत वनमाला री ।।२।। अंग-अंग छबि उठत तरंगन का पै जात निहारी। श्रीविट्ठल गिरिधरन सबन में चाह तिहारी न्यारी ।।३।।

★ राग हमीर कल्याण ★ आज अति नीके बनेरी गोपाल। खासाको कटि बन्यो है पिछोरा उर मोतिनकी माल ।।१।। पाग चौकरी सीस बिराजत चंदन सोहत

भाल । कुंडल लोल कपोल विराजत कर पहोंची वनमाल ।।२।। धेनु चराय सखन संग आवत हाथ लकुटिया लाल । परमानंद प्रभुकी छबि निरखत मोहि रही व्रजबाल ।।३।।

★ राग अडानो ★ साँवरो जबतें दृष्टि पर्यो । भेख किसोर स्यामघन सुन्दर अंग-अंग प्रेम भर्यो ।।१।। टेढी पाग लटक रहि ता पर पेच जराय जर्यो । साजे वागे रस अनुरागे मनमथ मान हर्यो ।।२।। मो तन हेर हँसे मनमोहन सुधबुध सब विसर्यो । श्री विठ्ठल गिरिधरन छबीलो नयनन मांझ अर्यो ।।३।।

★ राग अडानो ★ छूटे बंद सोंधे सों लपटै टेढी टेढी पगिया मन मोहे । कंचन चोलना यह छबि निरखत काम बापुरो को है ।।१।। लाल इजार गरे वनमाल गुंजमाल श्रुति कुंडल सोहै । रसिक रसाल गुपाल लाल गढ्यो कीमत कीमत जो है ।।२।।

★ राग सारंग ★ अरीचल देखत लाल बिहारी लाल पाग पटकी रही भुवपर अलकबनी घुघरारी ।।१।। तापर मोरचंद्रिका राजत श्रवनकुंडल छबिभारी ।। परमानंदस्वामी के उपर सर्वस्व देहुं वारी ।।२।।

★ राग सारंग ★ सोभित लालन ललित त्रिभंगी । फूल गुलाबी धोती पहिरे टोपी धरे सुरंगी ।।१।। चंदनको तन लेप कियो है सोहत सीस कलंगी । परमानंद प्रभु बालरस क्रीडत हाथ फिरावत बंगी ।।२।।

★ राग हमीर कल्याण ★ आज सिर राजत टोपी लाल । रूपनिधान स्यामघन सुन्दर उर राजत वनमाल ।।१।। वनतें आवत कमल फिरावत गावत गीत रसाल । रामदास प्रभुकी छबि निरखत मोह रही व्रजबाल ।।२।।

★ राग सारंग ★ सोहत माई मोहन नंदको लाल । लरिका संग सकल गोकुल के गावतगीत रसाल ।।१।। सिर टोपी कटि आड बंध सोहे उर वैजयंतीमाल । विविध ख्याल करत अर्भक संग बलबल दास गोपाल ।।२।।

## टीपारो के पद

★ राग टोडी ★ विमल कदंबमूल अवलंबित ठाडेहैं पियभानु सुतातट ।। सीस टिपारो कटिलालकाछिनी उपरेना फरहरत पीतपट ।।१।। पारजात अवतंसरुरत सखी सीससेहरोबनी अलकलट ।। विमल कपोल कुंडलकी शोभा मंदहास जीतेकोटिमदनभट ।।२।। वाम कपोल वामभुजपरधर मुरली बजावत तानविकटछट ।। गोविंदप्रभुकेजू श्रीदामाप्रभृतिसखा करत प्रसंसा जयनागरनट ।।३।।

★ राग टोडी ★ निर्तत रस दोउ भाई रंग ।। सुलप संच गति लेत ग्रग्रत किट धिकि द्रिम-द्रम बाजत मृदंग ।।१।। कनक बरन टिपारो सिर कमल बरन काछिनी कटि बनजधातु अति विचित्र सोहे स्याम अंग ।। गोविन्द प्रभु त्रैलोक विमोहत देखत ठगेसे ठाडे रहे कोटि अनंग ।।२।।

★ राग सारंग ★ गोविंद लाडिलोलडबोरा ।। अपने रंग फिरत गोकुल में श्यामवरण जैसे भोंरा ।।१।। किंकिणी क्वणित चारु चल कुंडल तनचंदनकी खोरा ।। नृत्यतगावत वसन फिरावत हाथ फूलन के झोरा ।।२।। माथे कनकवरण को टिपारो ओढे पीत पिछोरा ।। परमानंददास को जीवन संगडिठो नागोरा ।।३।।

★ राग सारंग ★ छबीलो लाल दुहत्त धेनुधौरी ।। माथे कमल वरण को टिपारो ओढे पीतपिछोरी ।।१।। कहारी कहूं कछु कहत न आवे डारी कठिन ठगोरी ।। कुंभनदास प्रभु सुख गिरिधर को जब भेटूं भर कौरी ।।२।।

★ राग सारंग ★ नवल कदंब छाँह तर ठाडे शोभित हैं नंदलाल ।। सीस टिपारो कटिलाल काछिनी पीतांबर वनमाल ।।१।। नृत्यत गावत वेणुबजावत सुरभी समूहन जाल ।। परमानंददास को ठाकुर लीलाललित गोपाल ।।२।।

★ राग सारंग ★ उसीर महल में राजत दोऊ जन ।। शीश टिपारो सोहे लाल के श्वेत साड़ी फबि रहि प्यारीतन ।।१।। आस पास बृज युवती ठाडी करत बीजना वारत हैं तन ।। चतुरबिहारी दम्पत्ति अद्भुत छवि बरन सके ऐसौ को है कवि जन ।।२।।

★ राग सारंग ★ आज अति सोहत नंदकिशोर ।। सिर कुलही टिपारो राजत बनी चंद्रिका मोर ।।१।। मल्लकाछ कटि बांध पीत पर अंग अंग छबि बोर ।। सुंदर नैन बंक अबलोकित रसिक प्रान चितचोर ।।२।।

★ राग सारंग ★ लालन सिर सोहत हेजु टिपारो ।। मल्लकाछ काछे छबि आछे मुरली बजावत प्यारो ।।१।। बनबन ठाडे सखा अंसभुज जहां हे यमुना किनारो ।। सूरदासप्रभु बेनु बजावत उठत तरंग रंग भारो ।।२।।

★ राग सारंग ★ श्याम सुन्दर बन खेलत सखन संग बिबिध खेल ।। कालिंदनी तट बांधी फेंट पट करत जुध भुज जु परस्पर पेल ।।१।। काहुकी मुरली चोरत काहुकी संग षष्ठी काहुको छीको नाडो काहुकी चोरत सेली ।। गोविंद पिय रस भरे निर्तत सखाके ग्रीवा भुज मेली ।।२।।

★ राग हमीर कल्याण ★ वनतें आवत नटवरलाल ।। झूमत आवत मत्त गयन्द सम छबि निरखत व्रजबाल ।।१।। सीस टिपारो बन्यो अनुपम मल्लकाछ कटि राजे । पग नूपुर धुनि रुनझुन बाजे हँसत कमल कर साजे ।।२।। सुरभिवृन्द चहुं दिस रही ठाडी सिंघ पोर आनंदे ।। सूरनिरखी मुख अति प्रफुल्लित मात जसोदा नंदे ।।३।।

★ राग यमन ★ आज सखी मोहन अति बने । सीस टिपारो फरहरात बरुहाचंद अलक बीच चंपकली अति गने ।।१।। लाल काछ कटि छुद्रघंटिका नूपुर रुनझुनात गति लेत ग्रग्रता ग्रग्रता तत तरंग सने ।। गोविन्द प्रभु रसभरे नृत्य करत सकल कला गुन प्रवीन व्रजनृपति निपुने ।।२।।

## मुगट शृंगार के पद

★ राग भैरव ★ सुमिरि मन गोपाललाल सुंदर अति रूप-जाल । मिटि है जंजाल सकल निरखत सँग गोप - बाल ।।१।। मोर - मुकुट सीस धरैं बनमाला सुभग गरैं । सब कौ मन हरैं, देखि कुंडल की झलक गाल ।।२।। आभूषन अंग सोहैं, मोतिनि कौ हार पोहैं । कंठसिरी दृग मोहै गोपी निरखति निहाल ।।३।। 'छीत-स्वामी' गोवर्धन - धारी कुंवर नंद सुवन । गांइनि के पाछैं-पाछैं

पग धरत हैं लटकीली चाल ॥४॥

★ राग बिलावल ★ देखरी देख नवकुंज घन सघन तर ठाडे गिरिवरधरन रंग भीने। मुकुट सिर लाल कटि काछिनी बेनु कर राधिका संग भुज अंस दीने ॥१॥ मकरकुंडल स्रवन झलक अंग पर रही मानों चंदन जु तन खोर कीने ॥ निरखि गोविन्द छबि सघन नंदनंदकी बारि तनमन दोउ प्रेम भीने ॥२॥

★ राग बिलावल ★ मेरी अखियन देख्यो गिरिधरभावे ॥ कहा कहुं तोसों सुन सजनी उतहीं क्यों उठि धावे ॥१॥ मोर मुकुट काननकुंडल सखी तन गति सबें बिसरावे ॥ बाजूबंद कंठ मनि भूषण निरखि निरखि सचु पावे ॥२॥ छीतस्वामी कटि क्षुद्र घंटिका नूपुर पदहि सोहावे ॥ यह छबि बसत सदा विट्ठल उर मों मन मोद बढावे ॥३॥

★ राग भैरव ★ सखी नंदको नंदन सांवरो मेरो चित चोर जायरी ॥ रूप अनूप दिखायके सखी गयो है अचानक आयरी ॥१॥ टेढी चलनि मधुर चंचल गति टेढे नेन चलायरी ॥ टेढी हीं कछु व्हे रहे हे सखी मधुर बेंन बजायरी ॥२॥ कानन कुंडल मोर मुकुट छबि सोभा बरनी न जायरी ॥ चतुर्भुज प्रभु प्रानको प्यारो सब रसिकनको रायरी ॥३॥

★ राग बिलावल ★ स्यामतन प्रिया भूख न बिराजे। कनक मनिमुकुट कुंडल श्रवन वनमाल अधरमधुरी धरे नाहि छाजे ॥१॥ निरख अब परस्पर रीझे दोऊनार बर गयो तजी विरह रस प्रेम पागे। सूर प्रभु नागरी हसत मनमें रसत बसन मन स्याम के बडे भागे ॥२॥

★ राग बिलावल ★ धनहरि नेन धन रूपराधा। धन्य यह मुकुट धन धन्य प्रतिबिंब मुख धन्य दंपत्ति रहत भेख आधा ॥१॥ धन धन सिंगार धन धन्य निरख सुखनि स्याम धन्य छबि लूटलुटत मुरारी। सूरप्रभु चतुर चतुरानबल नागरी रहे प्रति बिंब पर नेन जोरी ॥२॥

★ राग बिलावल ★ मोर मुकुट कटकाछनी जननी पहरावे ॥ श्याम अंग भूषण सजे बिंदुका जो बनाबे ॥१॥ नूपुर कंकन किंकिनी कर बेन गहावे ॥ मुसकनमें

मन हरे वस ताप जनावे ॥२॥ व्रजरानी आई तहां दरपन दरसावे ॥ भोग अरप बीरा दियो सुख सूर बढावे ॥३॥

★ राग बिलावल ★ मोरको सिर मुकट बन्यो मोर हीकी माला ॥ दुलहनसि राधाजु दुल्हेहो नंद लाला ॥१॥ बचन रचन चार हासः गावत ब्रजबाला ॥ धोंधीके प्रभु राजतहें मंडल गोपाला ॥२॥

★ राग धनाश्री ★ सखीरी लोभी मेरे नैन। बिन देखे चटपटी सी लागत देखत उपजत चैन ॥१॥ मोरमुकुट काछे पीतांबर सुन्दर मुखके बैन। अंग-अंग छबि कहि न परत है निरखि थकित भयो मैन ॥२॥ मुरली सुन ऐसी लागत है चितवे खग मृग धैन। परमानंददासको ठाकुर वे देखो ठाडे जु ऐन ॥३॥

★ राग सारंग ★ नंदनंद कुंजचंद कमलनेन मदन मोहन कंबुकंठ मंदहास्य वदन चारु देख री। चलत कुंतल मधुपमाल भ्रुकुटि कुटिल अति रसाल लोल लोचन तिलक भाल मुकुट सरस बेस री ॥१॥ बिंबाधर मुरली राजे मधुरे सारंग बाजे खग मृग नग नाग सुन रीझत सुर शेष री। अवनि कंपे कृष्णो कहे जमुना थकित नाही बहे गिरिवरधर भेट वाम जनम सुफल लेख री ॥२॥

★ राग पूर्वी ★ आगे कृष्ण पाछे कृष्ण इत कृष्ण ऊत कृष्ण जित देखो तित तित कृष्णमई री। मोर मुकुट धरें कुंडल करन भरें मुरली मधुर ध्वनि तान नई री ॥१॥ काछिनी कांछे लाल उपरेना पीट पट तिहिंकाल शोभा देख थकित भई री। छीतस्वामी गिरिधर विट्ठलेश प्रभुवर निरखत छबि अंग अंग छई री ॥२॥

★ राग गौरी ★ हरिमारग जोवत भई सांझ। दिनमनि अस्त भयो गोधूरक आवत बने मंडली मांझ ॥१॥ बाजत बेनु रेनु तनमंडित वनमाला उर लोचन चारु। बरूहा मुगट स्रवन गुंजमनि वनज धातुको तिलक सिंगारु ॥२॥ गोपी नेन भृंग रसलंपट सादर करत कमल मधुपान। विरहताप मोचन परमानंद मुरली मनोहर रूपनिधान ॥३॥

★ राग गौरी ★ नवल लाल गोवर्धनधारी आवत बनत सोहे। मनीगन भूषन अंग बिराजत छबिली चाल मन मोहे। मोर मुगट काछिनी कटि राजत देखत मनमथ

कोहे ॥ नंददास प्रभु गायन पाछें आवत चहूंधा दृष्टि करजोहे ॥

★ राग अडानो ★ ऐ हो आज रीझी हों तिहारी बानिक पर रूप चटकतें अटकी । कही न जात सोभा पीत पटकी कुंडल चटक लटक मुगटकी ॥१॥ कहा री कहों कछु कहत न आवे सोभा नागर नटकी । सूरदास प्रभु तिहारे मिलनको सुध भूली घट पटकी ॥२॥

★ राग सारंग ★ आज ठाडे लाल मुकुट धरे । बदन लसत मकराकृत कुंडल रतिपति मन जु हरे ॥१॥ अरुन अधर ओर चिबुक चारु बन्यो दुलरी मोहनमाल गरे । अति सुगंध अंग चन्दन खोर किये पोहोंची मोतीनकी लरे ॥२॥ कर मुरली कटि लाल काछनी कींकनी नूपुर शब्द करे । गुन भरे कृष्णदास प्रभु राधा निरखि नेन उत न टरे ॥३॥

★ राग गौरी ★ आज नंदलाल प्यारो मुकुट धरे । स्रवन लसत मकराकृति कुंडल काछनी कटि वनमाल गरे ॥१॥ चंचलनैन विसाल सुभग भाल तिलक दिये सुंदर मुखचंद चारु रूप सुधा झरे । 'विचित्र विहारी' प्यारो वेनु बजावत बंसी वटतें व्रजजन मन जु हरे ॥२॥

★ राग सारंग ★ आज लाल ठाडे मुकट धरे ॥ बदन लसत मकराकृत कुंडल रतिपति मनजु हरे ॥१॥ अरुन अधर अरु चिबुक चारु बन्यो दुलरी मोहन माल गरे । अति सुगंध और चंदन खोर किये पहोची मोतीन की लरे ॥२॥ कर मुरली कटिलाल काछनी किंकणी नूपुर शब्दकरे गुन भरे कृष्णदास प्रभु राधा निरख नेन ईत उत न टरे ॥३॥

★ राग सारंग ★ सोहे सीस मुकट श्रवन कुंडल भाल तिलक गुंजमाल पीतांबर सोहे कटि काछनी बिराजे ॥१॥ शंख चक्र गदा पद्म कर मुरली अधर धरे वृंदावन चंद मानो गोपीनाथ बिराजे ॥२॥ गोपीनाथ मदन मोहन श्री नारायण दामोदर दयानिध दीन बंधो दरशन भय भाजे । बद्रिदास के प्रभु सप्त सुरन छबि रह्यो भन ग्राम सुरलेत माधुरी बिराजे ॥२॥

★ राग गौरी ★ लटकत चलत युवति सुखदानी ॥ संध्या समे सखामंडल में

सोभित तन गौरज लपटानी ।।१।। मोरमुकुट गुंजा पियरो पट मुख मुरली गुंजत मृदु बानी । चत्रभुज प्रभु गिरिधर आये वनतें ले आरती वारती नंदरानी ।।२।।

★ राग सारंग ★ देखरीदेख नव कुंजघन सघनतर ठाडे गिरिवरधरन रंगभीने ।। मुगट शिरलटकि कटिकाछनि बेनुकरराधिका संगभुजअंसदीने ।।१।। मकरकुंडडलश्रवनझलक अंगपर रहि ।। मानो चंदनसीतल अंगखोरकीने ।। निरख गोविंद छबी सघन नंदनंदन की वारत नतमनदोउ प्रेमरसभीने ।।२।।

★ राग गोरी ★ आवतहे गोकुलके लोचन ।। नंदकिशोर यशोदानंदन मदनगोपाल विहर दुखमोचन ।।१।। गोपवृंदमें ऐसे शोभित ज्यों नक्षत्र में पूरणचंद । वनजु धातु गुंजा मणि सेली भेष बन्यो हरि आनंदकंद ।।१।। वरहा मुकुट कंठ मणिमाला अद्‌भुत नटवरवेष हरि काछें ।। कुंडललोल कपोल विराजत मोहन वेणुबजावत आछें ।।३।। भक्तवृंद पावन यशगावत यहविध व्रजप्रवेश हरि कीनो ।। परमानंद प्रभु चलत ललित गति यशुमति धाय उछंगहि लीनो ।।४।।

★ राग गौरी ★ लाल व्रजभूषण मनभावते नेंक वनतेवेगे आवहो ।। यशुमतिसुत करुणाभरें नेंक हृदय सुखउपजावहो ।।१।। डोलन वर्हापीड की श्रुतियुगकुंडल झलकाव ।। नाचत तानन तोरकें नेंक अलकवदन अरुझाव ।।२।। देखत इतउत भावसों नेंक चपलनयनन चमकाव ।। उठन रेखमुखचंद की सीतलता हृदयसिराव ।।३।। चलन युगलमृदुगंडकी नेंक चुंबन चाउबढाव ।। अधर सुधारससो सबै मुरलीके रंध्रपुराव ।।४।। गावत गुणगोपिन के नेंक श्रवणन शब्दसुनाव ।। सुंदर ग्रीवाकी डोलन पलकन की परन भुलाव ।।५।। कंठसरी दरशायके नेंक तनकी दशाविसराव ।। गजमुक्ता विचलालही सों उरपर हारधराव।।६।। पोहोंची दोऊकरशोभती नेंक फुंदना स्याम लटकाव ।। बाजूबंद भुजमें बने मेरे मनके माझ गडाव ।।७।। कटि पीतांबरकाछिनी नेंक नीके अंगनचाव।। क्षुद्र घंटिका वाजनी ता ऊपर सरस धराव ।।८।। चाल न्यारीभांतिकी नेंक नूपुरशब्द मिलाव ।। नखभूषणकी जोतिसों सकलनकी जोति लजाव ।।९।।

आगें गोंधनहाकके नेंक पाछें खेल कराव ।। वेतहाथ फूलनगूथकें नेंक कांधे धरें दिखाव ।।१०।। गोपबालक मंडली मध्यनायक नेंक कहाव ।। नाचनमिष व्रजभूमिमें नेंक चरणचिन्ह उपटाव ।।११।। आवत बाएहाथले नेंक लीला कमलफिराव ।। वनमालाके अलियूथकों कमल फिराव उडाव ।।१२।। व्रजजुवतिनके वृंदमें घसि अपनों अंग परसांव ।। आलिंगन बहुभांतिदे जुवतिनके पूरोभाव ।।१३।। द्योसविरह व्याकुलसखी ले अपनें अंगलगाव ।। तुमविन सूनो सांझसमय यह व्रज फेर वसाव ।।१४।। घोषद्वार चलआयकें बलसंग आरती उतराव ।। दें सुख सगरे घोषको नेंक दिनको विरह वहाव ।।१५।। यह विधि व्रजयुवती कहें सुनि नंदमहर घर आव ।। रसिकन यह वर दीजिये तू श्रीवल्लभपद पाव ।।१६।।

★ राग पूर्वी ★ तरुन तमाल तरे त्रिभंगी तरुन कान कुंवर ठाडे हैं सांवरे वरन । मोर मुकुट पीतांबर वनमाला बिराजत गरे सोभा देत व्रजजन मन हरन ।।१।। सखा अंस पर भुज दिये कर लिये मुरली अधर मधुर तान सी तरन । 'कल्यान' के प्रभु गिरिधर बस किये आली बंक विलोकन श्रीगोवर्धनधरन ।।२।।

★ राग सारंग ★ लालन बेठेकुंज भवन ।। सा री ग म प ध नि उरप तिरपगति अंगअंगसुखभरन ।। सारंग राग अलापत गावत लेतलान सुखकरन ।। कल्याण के प्रभु गिरिधर मन आनंद भयो सुख अतिनेनन ।।२।।

## कीरीट मुगट

★ राग बिलावल ★ सुंदर वदन देख्यो आज क्रीट मुगट सुहावनो । मन भावनो ब्रजराज । लीयो मन आकर मुरली रही अधर पर साज ।।१।। कलक ओट न सही सके लछि महामनोहर तास । गोपीजन तन प्रान वारत रह्यो मन्मथ लाज ।।२।। सूर सुत यह नन्द को श्री वल्लभ कुल सरताज ।।

★ राग आसावरी ★ आज अति शोभित हैं नंदलाल । क्रीट मुकुट सिर सुभग विराजत गरे फुलनकी माल ।।१।। ठाडे कुंजद्वार राधा संग बेनु बजायो रसाल । कमल लिये कर परमानंद बल बल बल गई व्रजबाल ।।२।।

★ राग सारंग ★ देखो सखी राजत है नंदलाल। सीस किरीट स्रवन मनि कुंडल उर राजत वनमाल ॥१॥ वागो सरस जरकसी सोहे फेंटा जोर रसाल। सुरत केलिरस मुरती बजावत चंचल नैन विसाल ॥२॥ आसपास सब सखामंडली मधि नायक गोपाल। सूरदास प्रभु यह सुख बाढ्यो बडे गोपके लाल ॥३॥

## दुमाला शृंगार के पद

★ राग सारंग ★ आज अतिशोभित है नंदलाल ॥ कोर केसरी धोति पहेरे अरु उपरना लाल ॥१॥ चंदन अंग लगाय सांवरो उर राजत बनमाल ॥ अति अनुराग भरी व्रजवनिता बलि बलि दास गोपाल ॥२॥

★ राग सारंग ★ अति छबी देत दुमालो सीस ॥ मन्मथ मान हरत हसि चितवत बने गोकुलके ईस ॥१॥ ठाडे सिंघ पोर मध्यराजत संग सखा दसबीस ॥ हियो सिराहत चतुर्भुज प्रभु लख्र जीयो कोटि वरीस ॥२॥

★ राग सारंग ★ आई हो अबही देख सुघर सुंदर भेख ठाडोरी लरिका एक रूपको बावरो ॥ परदनी फबत पटुका कंठ फरहरतहे करत उनमान मैन बनत नहि रावरो ॥१॥ नीर जमुना के तीर भरत रही गागर देत जबहि उठाय देखत सब गामरो ॥ कृष्णदासनिनाथ नंदनंदन कुंवर हृदय में बसत वर मेरोई सांवरो ॥२॥

★ राग सारंग ★ देख सखी नव छेल छबिलो। लियो मेरो चित चोरी। अरविलो आनत एंडानो ओर आक्रत नैन ही की चोर। शोभा अंग प्रीत रूपमाधुरी शीशदुमालो अति छबि छोर। कुंदन लोल कपोलन झांई अरुन उदय मानो किरन चहुं ओर। कहेत न बने देखे वन आवे सदा बसो मन नंदकिशोर। चत्रभुज प्रभु गिरिधरनलाल पर रीझी डारत त्रणतोर ॥

★ राग गौरी ★ गिरधर गिरवरधर नंदलाल ॥ देखत गंग बुलाई धुमर कूजत बेनु रसाल ॥१॥ लाल इजार ताफताकी झगुली पीत दुमालो उर मनिमाल चहुंदिश धेनु कमलसुख निरखत कहत सखा सब ग्वाल ॥२॥ सांझ भई बगदावो गैयां धाय रहे तेहि काल ॥ उमंग रही देखन परमानंद गोपीजन व्रजबाल ॥३॥

★ राग गौरी ★ दुहुंदिश छोर दुमालो की अति नीकी परम सुहाई ॥ गोधन संग

बनते व्रज आवत नागर कुंवर कन्हाई ।।१।। मुरली अधर धरे नंदनंदन मधुरीसी तान बजाईरी माई ।। गोपीजन के जूथराधिका श्रवन सुनत उठ धाईरी माई ।।२।। गोकुल गलिन प्रवेश होत हे देखत अंगन समाईरी माई ।। कुसुमकली वरखत सुर पुर परमानंद बस जाईरी माई ।।३।।

★ राग गोरी ★ बनतें बने माई गिरिधर आवत ।। सीसदुमालो अति छबिपावत मनमथ कोटि लजावत ।।१।। गायनके पाछे चले आवत भ्रोंहन भैद जनावत नंददास प्रभु करख लियो चित ग्रह अंगना न सुहावत ।।२।।

★ राग सारंग ★ लाल के केसर भोर सुहाई ।। शीश बन्यो है पीत दुमालो छबि निरख सुख पाई ।।१।। धोती उपरना पीतरंग के उर मुक्तामणि माल ।। कर में मुरली मुखसो बजावत इकटक रही ब्रजबाल ।।२।। या विधि सब सिंगार किये अति पूरी मन की आस ।। शिव ब्रह्मादिक ध्यान न आवत गावत विष्णुदास ।।३।।

★ राग सारंग ★ तू चल नंद नंदनको देखन । सीस धर्यो है दुमालो लाल रंग सोहत मन अब लेखन ।।१।। रहे व्रज जन सब मिल गावत निरखि निरखि मन फूले ।। 'सूरदास' प्रभुकी यह शोभा ब्रह्मा सुर मुनि भूले ।।२।।

## दधि मंथन के पद

★ राग भैरव ★ देयशुमति नेंक अपनीरई योंहीपर्‌यो है बिनामथनकीये दई ।। अपनी हौढूँढआई उठ अंधियारेमाँझपाई न भवनमें कहांधोंगई ।।१।। याहीते आतुरधाई जियनकछुसुहाईलोनी लालचमोहिटचपटीभई ।। दिनाचार करूंकाज बढो नंदजूकेंराज जोंलोंहमारे आबेगई ।।२।। चतुर्भुजप्रभु रानीमेरी अतिचोंपजानी होय प्रसन्नमनआनदई ।। भोर भये देहूँ आसीस बारजिनखसोसीस तेरेगिरिधारीकी बलबलगई ।।३।।

★ राग आसावरी ★ आछेव्रजके खरिकरवाने वडडेवगर ।। नवतरुणी नवतरलितमंडित अगणितसुरभी हूंकडगर ।।१।। जहांतहांदधिमथन घमरके प्रमुदित माखनचोर लंगर ।। मागधसूतवदतबंदीजन लज्जितसुरपुर नगरीनगर ।।२।। दिनमंगल दिनवंदन माला भवन सुवासित धूप अगर ।। कौनगिनें

हरिदासगहवरगुण मसिसागर अरुअवनीकगर ।।३।।

★ राग बिलावल ★ प्रातसमेंदधिमथतयशोदा प्रमुदित कमलनयन गुणगावत ।। अतिहीमधुरगति कंठसुघर अतिनंद सुवनचित हितहिबढावत ।।१।। नीलवसनतन सलिलसजल मनदामिनिबीच भुजदंडचलावत ।। चंद्रवदनलटलटकछबीली मानों अमृतरस राहुचुरावत ।।२।। गोरसमथत नादएकउपजत किंकिणीध्वनिसुन श्रवणरमावत ।। सूरस्याम अचरागहिठाडे कामकसोटीकस दिखरावत ।।३।।

★ राग बिलावल ★ नेंकरहोमांखनदेऊंतुमको ठाडीमथतजननी दधिआतुरलोनी नंदसुवनकों ।।१।। मैबलजाऊं स्यामघनसुंदर भूखलगी तुम्हें भारी ।। बातकहूंकी बूझतस्यामहि फेरकहत महतारी ।।२।। कहतबात हरिकछूनसमझत झूँठेईभरत हुंकारी ।। सूरदासप्रभुकेगुण तुरतहिविसरिगई नंदनारी ।।३।।

★ राग बिलावल ★ बात नहीं सुतलायलियो ।। तबलोंदधिमथजननी यशोदामाखनकर हरिहाथदियो ।।१।। लैलैअधरपरसकर जेंवतदेखत फूल्योमातहियो ।। आपुहिखात प्रसंसत आपुहि मांखनरोटी बहुतप्रियो ।।२।। जोप्रभुशिवसनकादिक दुर्लभसुतहित वशभयेनंदत्रियो ।। यहसुखनिरखत सूरप्रभुको धन्य धन्य पलसुफलजियो ।।३।।

★ राग बिलावल ★ आजभोरही राधिकायशुमति गृहआई ।। महरिकह्योहँस दधिमथो-वृषभानदुहाई ।।१।। सुनआयुस ठाडीभई करनेतिसुहाई ।। रीतेमांट विलोवही चितजहांकन्हाई ।।२।। उनकीगतिहों कहा कहों जिनदृष्टिचुराई ।। वछरानोबेवृषभसो गैयाविसराई ।।३।। देखदुहुंनकी यह दशा यशुमतिमुसकाई सूरदास दंपतिकथा मोपेंवरणि न जाई ।।४।।

★ राग बिलावल ★ नंदगाम नीकोलागतरी ।। प्रातसमैदधिमथत ग्वालिनी सुनत मधुर ध्वनि गाजतरी ।।१।। धन्ययेगोपी धन्ययेग्वाल जिनकेमोहन उरलाग तरी ।। हलधरसंगग्वालसबराजत गिरिधरलेलेदधि भागतरी ।।२।। जहांवसत सुरदेवमहामुनि एकोपलनहीं त्यागतरी ।। नंददासकों यह कृपाफल

गिरिधर देखे मनजागतरी ।।३।।

★ राग बिलावल ★ दधिमथतग्वालगरवीलीरी ।। रुनकझुनक कटिकिंकिणी बाजत बाह झूलावतढीलीरी ।।१।। कमलनयन दधिमांखनमांगत नाहिनदेतहठीलीरी ।। भरीगुमान विलोवत ठाडी अपनेरंगरंगीलीरी ।।२।। हँस दीनों नंदलाललाडिलो मीठीसीबात कहीलीरी ।। सूरदास मनहरनमनोहर सर्वस्वदियो है छबीलीरी ।।३।।

★ राग बिलावल ★ याविलोवने ऊपर वारोंरीमाई कोटिनाँच ।। छबिसोंडूलत कटिपरवेनी दधिकी घुमड और क्वणितवलयक्षुद्रघंटिका ध्वनिसुन नूपरकरतसांच ।।१।। गौराकृति अतिशोभित मानोंश्रमकणवदनतामें कनकलागी आंच ।। धोंधीकेप्रभु रसवशकरलीनें येहीगतिभेदनपावे यानेतीकी खेंचखांच ।।२।।

★ राग बिलावल ★ मथतदधिमथनीटेकअरें ।। आरकरोजिन स्याममनोहर वासुकी शंभुडरे ।।१।। मंदरडरत सिंधुतनकांप्यो अबबलकहाकरें।। तीनलोकदेख विस्मयभयो फिरजिनमथनकरें।।२।। सुरअरुअसुरदेख पुनकांपत प्रभुमरयादटरें।। सूरदासप्रभुमुग्ध यशोदा ह्वैमुखबिंदुगरें।।३।।

★ राग बिलावल ★ यशुमतिदधिमंथनकरत बैठीवडधाम अजिरठाढेहरिहँसतनेन्ही दँतियानछबिछाजें ।। चितवतचित रह्योलुभाय शोभाकछुकहीनजाय मुनिनकेमनहरनको मोहनीदलसाजें ।।१।। यशुमतिकहेंनाचोलाल देहोंगी नवनीतलोंदा चलत नूपुररुनझुनांत किंकिणी कलबाजें ।। गावतगुण सूरदास सुखछायो भूअकाश नांचत त्रिलोकीनाथ माखनकेकाजें ।।२।।

★ राग बिलावल ★ नंदजूकेबारे कान्ह छांडदेमथनियां ।। बारंबारकहे मातयशोमति नंदरनियां ।।१।। नेंकरहो माखनदेहों मेरेप्राणधनियां ।। आरजिनकरो बल गईहौंरहोछनियां ।।२।। सहस्रआनन गुणगणत उतनवखनियां ।। सूरस्याममोहे सुरदेखत भूलीगोपधनियां ।।३।।

★ राग बिलावल ★ नंदरानी हो दधिमंथनकरें ।। बारे कन्हैयाआरनकीजे छांडअब देहु मथानी ।।१।। वारी मेरे मोहनकर पिरायेंगे कौनचितमें मतिठानी ।। हँसमुसकाय

जननीतनचितये सुधि सागरकी आनी ।।२।। जेगुण सरस्वति छंदनगाये नेतिनेतिमृदुबानी ।। परमानंदयशोदारानी सुत सनेह लपटानी ।।३।।

★ राग बिलावल ★ गोविंद दधि नविलोवनदेहो ।। बारबारपायपरतजू लालकलेऊलेहो ।।१।। कंकणचीरहारमणिगण वदत घोखमृदुबानी ।। बांधकटिपटक्षुद्रघंटिका मुदितनंदजूकीरानी ।।२।। एकत्रहोयदेवदैत्य सबकोमंदमंद चालजानी ।। देखतदेव लक्ष्मीकंपी जबगहीगोपालमथानी ।।३।। कृष्ण चंदव्रजराज रमापति भूतलभार उतारो ।। परमानंददासको जीवन व्रज वश जगत उधारो ।।४।।

★ राग बिलावल ★ भूलीरीदधिमंथन करवो ।। देखतरसिकनंदनंदनको डगमगातपगधरवो ।।२।। रहिगई चितैचित्रजैसे एकटक नयन निमेषनपरवो ।। चतुर्भुज प्रभुगिरिधरन जनायो काहेतेंमोमनमाणिकहरवो ।।२।।

★ राग बिलावल ★ महरिकहतरी लाडली किनमथनसिखायो ।। कहूंमथनीकहुँमाट हैचितकहांलगायो ।।१।। क्योंमेरेघर आयके तेंसबविसरायो ।। मथननहीं मोहिआवही तुमसोंहदिवायो ।।२।। तिहिकारन मैंआयकें तुवबोलरखायो ।। तबनंदघरनीमथिदधि यह भांतबतायो ।।३।। हँसिबोली तबराधिका कह्यो अबमोहि आयो ।। सूरनिरखमुखस्यामको तहांध्यानलगायो ।।४।।

★ राग बिलावल ★ प्रातसमें उठियशोमति दधिमंथनकीनों ।। प्रेमसहित नवनीतलै सुत के मुखदीनों ।।१।। ओटेदूधघैयाकियो हरिरुचिसोंलीनों ।। मधुमेवापकवानले हरिआगेकीनों ।।२।। यह विधिनित्यक्रीडाकरें जननी सुख पावे ।। गोविंद प्रभु आनंदसों आँगनमेंधावे ।।३।।

★ राग बिलावल ★ देखोरीमाई कैसीहैग्वालिन उलटीरईमथनियां विलोवे ।। बिननेती करचंचल पुनपुननवनीते टकटोवे ।।१।। निरखस्वरूप चोंट चितलाग्यो एकटक गिरिधरमुखजोवे ।। कुंभनदासचितेरही अकबकऔरें भाजनधोवे ।।२।।

★ राग बिलावल ★ आनंदसोंदधिमथति यशोदा कनकमथनियां घूमें ।।

नृत्यतकान्ह ललितलोचन पगधरतअटपटे भूमें ॥१॥ चारुचकोडामध्य कुटिलकचश्रम मुक्ताताहूमें ॥ मानोंमकरंदबिंदुलेमधुकर सुतहितप्यावत-झूमें ॥२॥ बोलतस्यामतोतरी बतियांहँसहँस दतियांदूमें ॥ सूरसर्वस्ववारोंछबिपर जननीकमल मुख चूमें ॥३॥

★ राग बिलावल ★ आजसखीरी प्रातसमेंदधिमथवे उठअकुलाई ॥ भरभाजन मणिखंभ निकटधरि नेतलियोकरजाई ॥१॥ सुनतशब्दहरितासमीप हँसउठआयेहरुवाई ॥ मोहीबालविनोदमोद अतिनयननृत्य दिखाई ॥२॥ भूली तन प्रतिबिंबविलोकत रीझीसहजसुभाई ॥ चितवनचित्तहरेंछबि चंचलचितेंरही चितचाई ॥३॥ माखनपिंडलयोदोऊकर तबग्वालिन रहीमुसकाई ॥ सूरदास प्रभुसर्वस्वको सुखसकेन हृदयसमाई ॥४॥

★ राग बिलावल ★ नेकचितेचलेरीलालन सखी लेजुगयेचितचोर ॥ कबकी ठाडी चितवत प्रीतमकोमुसकानी मुखमोर ॥१॥ होंदधिमथनकरत ही भवन में उझकचले व्रजराजकिशोर ॥ लटपटीपाग केशविलुलित सखी नाजानो कहांतेउठआये भोर ॥२॥ सब निशजागे डगमगत धरतपग खिसखिसपरत पीतपटछोर ॥ गोविंदप्रभुकी लखीनजातगति ऐसीवह चतुरनागरी कोर ॥३॥

★ राग बिलावल ★ रईकोघमरकोहोय त्योंत्योंगिरिधरनाचें ॥ तैसी यह किंकिणीध्वनि औरपगनूपुर रसहिमिलेस्वरदोय ॥१॥ कनककोकठुला द्वैलरमोती बघनाराख्यो पोय ॥ नंदनंदन मुखनिरखनकारण रहेसुरनरमुनि जोय ॥२॥ देखत बने कहतनहिंआवे उपमाकोयहां दीजेकोय ॥ सूरभवनको तिमिर नसायोसोसुखविलसत जननीयशोय ॥३॥

★ राग रामकली ★ अहोदधिमथत घोखकी रानी ॥ दिव्यचीर पहरे दक्षिण केकटिकिंकिणी रुनझुनबानी ॥१॥ सुतकेकर्मगावत आनंदभर बालचरित्र जियजानी ॥ श्रम जलबिंदु राजेवदन कमलपर मानोंशरद वरषानी ॥२॥ पुत्रसनेहचुचात पयोधर पुलकित अतिहरषानी ॥ गोविंदप्रभु घुटरुन चल आये पकीरीरही मथानी ॥३॥

★ राग रामकली ★ मोहिदधिमथनदे बलगई ।। जाऊं बलबलकमलमुखपर छांड मथानीरई ।।१।। देहुँगीनवनीतलोंदा आडकित तुमठई ।। अतिआनंदित होतयशोमति प्रेमपुलकित भई ।।२।। लिये उछंगलगायउरसों प्राणजीवन जई ।। बालकेलिगोपालहरिकी आसकरन नित्यनई ।।३।।

## माखन चोरी के पद

★ राग रामकली ★ प्रथमचलेहरि माखन चोरी ।। ग्वालिनिमन इच्छापूरणकर आपभजेहरिव्रजकी खोरी ।।१।। मनमन यहविचारकरत प्रभुव्रजघरघरसबगाऊं ।। गोकुलजन्मलियो सुखकारण सबकेंमाखन पाऊं ।।२।। बालरूपयशोमतियोंजानें गोपिन मिलसुखभोग ।। सूरदास प्रभुकहत प्रेमसों ये मेरे व्रजलोग ।।३।।

★ राग रामकली ★ चोरीकरत कान्हघरपाये ।। निशवासरमोहि बहुतसतायो अबहरि हाथहि आये ।।१।। माखनदधि मेरोसबखायो बहुत अचगरीकीन्हीं ।। अबतो हाथपरेहोलालन तुमहीभलेमैंचीन्हीं ।।२।। दोऊभुजपकरकेंकह्यों माखन लेहों मँगाय ।। तेरीसों मैनेंकनचाख्यो सखागयेसबखाय ।।३।। मुखतनचिते विहँसहँसदीनो रिसत बगईबुझाय ।। लियेस्याम उरलायग्वालिनी सूरदास बलजाय ।।४।।

★ राग रामकली ★ गोपाले माखनखानदे ।। बांहपकरकर उहां लै जैहों मोहियशोदा पैजानदे ।।१।। सुनरीसखी मौनह्वेरही सगरोवदन दह्योलपटानदे ।। उनपेंजाय चौगुनोलेहों नयनन तृषाबुझानदे ।।२।। ज्योंज्योंकहत हरिलरका है सुनतमनोहर कानदे ।। परमानंदप्रभु कबहुनछांड़ूं राखोंगी तनमनप्राणदे ।।३।।

★ राग रामकली ★ आजहरि पकरनपायेचोरी ।। लेगयोचोर चोरमनमाखनजो मेरेंधन होरी ।।१।। बांधे कंचनखंभ कलेवर उभयभुजा दृढडोरी ।। राखोंगी कठिन कठोर कुचनबिच सकेंन कोऊछोरी ।।२।। खंड्यो अधरदशन रसगोरस छियेन काहूकोरी ।। कामदंड दंड्यो परघरकों नामनलेहेंबहोरी ।।३।। तबकुलकान आनतिरछीभई क्षमाअपराधकिशोरी ।। शिवपर हाथ धराय

सूरप्रभु सोचमोच सबतोरी ।।४।।

★ राग रामकली ★ मोहन चोर्योरी मनमाखन उरजमथानी ।। दुहूँकर दृढकर लाग्यो अधररस चाखन ।।१।। नेतीलाज तोरसबसूत्योनेकुनरह्योरवाई आंखन ।। जाय कहूँगी व्रजपतिजूके आगे नाहिकोऊसाखन ।।२।।

★ राग रामकली ★ मथतग्वाल हरिदेखी जाय ।। गयेहते माखनकीचोरी देखतरहे नयनलजाय ।।१।। डोलततन सिरअचराउघर्यो बेनीपीठ डोलतमनभाय ।। वदनइंदु पयपान करनको मानोउरगउठ लागतपाय ।।२।। निरख स्याम अंगअंग प्रतिशोभा भुजभरके लीनी उरलाय ।। चितेरही युवतीहरिको मुखनयनसन देचितहिचुराय ।।३।। तनमनधन गतिमतिविसराई सुखदीनों अरुमाखनखाय ।। सूरदासप्रभु रसिकशिरोमणि तुम्हारीलीलाको कहे गाय ।।४।।

★ राग रामकली ★ जो तुम सुनों यशोदागौरी ।। नंदनंदन मेरे मंदिर में आज करतहैं चोरी ।।१।। होंभई आन अचानकठाडी रह्योभवनमें कोरी ।। रहे छिपाय सकुँचरंचक ह्वै मानोभई मतिथोरी ।।२।। मोहिभयो माखनकोपछितावो रीतीदेखकमोरी ।। जबगहिबांह कुलाहल कीनो तबगहि चरणनिहोरी ।।३।। लागे नयनजल भरभररोवन महरिकाननतोरी ।। सूरदासप्रभु देखत निशिदिन ऐसी अलकसलोरी ।।४।।

★ राग बिलावल ★ मैयामोको माखनमिश्रीभावे ।। जो मेवापकवानदेततू मोहिनहीं रुचिआवे ।।१।। व्रजयुवती एक पाछेठाढी सुनत स्यामकी बात ।। मनमनकहतकबहू मेरेघर देखोंमाखनखात ।।२।। बैठें जाय मथनि याकेढिंग मैंतबरहूंछिपाय ।। पाछेंआन अचानकहरिको गहूँओचकाधाय ।।३।। राखों कठिनउरोजनकेबिंच तजूँ वेदकुलकान ।। सूरदासप्रभु अंतरयामी ग्वालिनमनकी जान ।।४।।

★ राग बिलावल ★ फुलीफिरत ग्वालमनमेंरी ।। पूछतसखी परस्परबातें पायोपर्यो कछू कहूंतेंरी ।।१।। पुलकितरोमरोम गदगदमुख बानी कहतनआवै ।। ऐसो कहा याहिसोसखी मोकोंक्योनसुनावे ।।२।। तनन्यारो

जोएकहमारो हमतुमएकहीरूप ॥ सूरदासकहैं ग्वारिसखीसूं देख्योरूपअनूप ॥३॥

★ राग बिलावल ★ आजहरि मणिखंभनिकटह्वे जहां गोरसकीगोरी ॥ निजप्रतिबिंब सिखावत योशिशु प्रकटकरो जिनचोरी ॥१॥ अर्धविभागआजते हमतुम भलीबनीहै जोरी ॥ माखनखाओ कितहींडारतहो छांडहेहोमत भोरी ॥२॥ हिस्सासबै लिये चाहतहो यह बात है थोरी ॥ मीठो परमअधिक रुचिलागे देहूं काढकमोरी ॥३॥ प्रेमउमग धीरज नरह्योतब प्रकटहँसी मुखमोरी ॥ सूरदासप्रभु सकुंचनिरख भजगए कुंजकीखोरी ॥४॥

★ राग बिलावल ★ करतहरिग्वालन संगविचार ॥ चोरी माखनखाहु सबैमिल करोबालविहार ॥१॥ यहसुनत सबसखाहरखे भलीकहीकन्हाई ॥ हरिपरस्परदेततारी सौंहकरीनंदराई ॥२॥ कहांतुमयहबुद्धिपाई स्यामचतुरसुजान ॥ सूरप्रभु मिलग्वालबाल करतहैं अनुमान ॥३॥

★ राग बिलावल ★ चलीव्रज घरघर यह बात ॥ नंदसुत सबसखालीने चोरिमाखनखात ॥१॥ कोऊकहत मेरे भवनभीतर अबहीपैठेधाई ॥ कोऊकहत मोहिदेखछोरकें उतहीगये पराई ॥२॥ कोऊकहत किहिंभांतिहरिकों देखों अपने धाम ॥ हेरहेरमाखनदेहों आछो खायें जितनोस्याम ॥३॥ कोऊकहतमैं बांधराखों को सकेनिरबार ॥ कोऊकहत मैंदेखपाऊंभर धरूं अंकवार ॥४॥ सूरदास प्रभुकेमिलनकारन करतबुद्धिविचार ॥ जोरकर बिधिकूँमनावत पूरणनंदकुमार ॥५॥

★ राग बिलावल ★ अंधियारेघरस्यामरहेदूर ॥ अबहींमैंदेखे नंदनंदन चरित्र भयोमन ही मनजूर ॥१॥ पुनपुनचक्रित होत अपनेजियकैंसेहै यहबात ॥ मटुकी केढिंग बैठ रहे हरि करीआपनीघात ॥२॥ सकलजीव जलथलकेस्वामी चेंटीदईउपाय ॥ सूरस्यामतबदेखग्वालिनी भुजपकरेतबआय ॥३॥

★ राग बिलावल ★ देखतफिरेग्वालिनिद्वारे ॥ तबयहबुद्धि रचीअपनेमन भीतर डाक परोंपिछवारे ॥१॥ सूने भवनकहूंकोउनाहीं मानोयाहीकोराज ॥ भांडेधरत

उघारतमूंदत दधिमाखन के काज ।।२।। रैनजमाय धर्‌योहोगोरस पर्‌यो स्यामकेहाथ ।। लैलैखात अकेलेआपुन सखानहीं कोउसाथ ।।३।। आहट सुन युवतीघर आई देख्योनंदकुमार ।। सूरस्याममंदिर अंधियारो निरखेवारंवार ।।४।।

★ राग बिलावल ★ स्यामकहा चाहतसेडोलत ।। बूझे हुते वदनदुरावत सूधेबोल नबोलत ।।१।। सूनेनिपट अंध्यारेमंदिर दधिभाजन में हाथ ।। अबकाकोतुम उत्तर करहो कोऊसंगनसाथ ।।२।। मैंजान्यो यहमेरोघरहैं तिहिंधोखेमैं आयो ।। देखतहीगोरसमेंचेंटी काढनकोंकरनायो ।।३।। सुनसुनचतुर वचनमोहनके ग्वालिन मुरमुसकानी ।। सूरदास प्रभुहोरतिनागर सबैबातहमजानी ।।४।।

★ राग बिलावल ★ ग्वालिनजोदेखेघर आय ।। माखनखाँय चुरायस्यामतब आपुन रही छिपाय ।।१।। ठाडीभई मथानीकेढिंग रीतीपरीकमोरी ।। अबहीगई आईइनपायन लेगयोको करचोरी ।।२।। भीतरगई तहांहरिपाये स्यामपरेगहिपाय।। सूरदासप्रभुग्वालिन आगे अपनोनामसुनाय ।।३।।

★ राग बिलावल ★ सखासहित गयेमाखनचोरी ।। देखोस्याम वापंथहैगोपी एकमथत दधिभोरी ।।१।। हेरमथानी धरीमांटतें माखनहैउतरात ।। आपगई कमोरीमाँगन हरिपाईतहांघात ।। पैठसखनसहित घरसूनो माखनदधिसबखाये ।। छूंछीछांड मटुकियादधिकी हँससबबाहिर आये ।।३।। आयगई कर लियेकमोरी घरतेनिकसेग्वाल ।। माखनकरदधि मुखलपटानो देखरहेंनंदलाल ।।४।। कहां आये वृद्ध बालकसंगले माखन मुखलपटानो ।। खेलतते उठभाजोसखा यहीघर आय छिपानो ।।५।। भुजागहिलिये कान्ह एकग्वालिन निकसेब्रजकीखोरी ।। सूरदासठगिरही ग्वालिनी मनहरलियो करचोरी ।।६।।

## गोदोहन के पद

★ राग बिलावल ★ सांवरो गोविंद लोलामाई ।। ग्वालठाडी हँसेंप्राण हरिमेंबसे कामकीबावरी चारुबोला ।।१।। आवरी ग्वालिनी मेलदे बाछरा आनदे हो दोंहनी हाथ मेरे ।। धेनुदोरी दुहूं प्रेमबातें कहूं मेरे चित्तलग्योहै रूप तेरे ।।२।। बाललीला भली सैनदेके चली आन देहो दूधघर आय प्याऊं ।। दासपरमानंद नंदनंदन केलि

चोरचित्तचारु योमिलन पाऊं ॥३॥

★ राग बिलावल ★ तनक कनककी दोंहनी देरी मैया ॥ तातदोहन सिखवन कह्योमोहि धोरी गैया ॥१॥ हरि विषमासन बैठकें मुदुकर थनलीनो ॥ धार अटपटी देखके ब्रजपति हँसदीनो ॥२॥ गृहगृहते आंईसब देखत ब्रजनारी ॥ सकुँचतसब मनहरिलियो हंसि घोख विहारी ॥३॥ द्विज बुलाय दच्छिना दई विधि मंगलगावे ॥ परमानंदप्रभु सांवरो सुखसिंधु बढावे ॥४॥

★ राग बिलावल ★ बावाजूमोहि दुहनसिखावो ॥ गाय एक सूधीसीमिलवो होंहूं दुहूँ बलदाऊ दुहावो ॥१॥ लईनोई मेलचरण में लाडिलों कुंवरनोवत बछराऊ ॥ पाणिपयोधर धरें धेनुको भाजन बेगहीसो उपटाऊ ॥२॥ तब नंदरानी नयनसिराये द्विज बुलाय दई दक्षिणावाहू ॥ वारफेर पीतांबर हरिपर परमानंद ग्वालपहराऊ ॥३॥

★ राग बिलावल ★ धेनुदुहत देखत हरि ग्वाल ॥ आपुन बैठ गये तिनके ढिंगसिखवो मोहि कहत गोपाल ॥१॥ काल देहों तोय गोदोहन सुखवे आज दुहींसबगाय ॥ भोर दुहो जिननंद दुहाई उनसों कहत सुनायसुनाय ॥२॥ बडोभयो अब दुहतरहूंगो आप आपनी धेनुनिवेर ॥ सूरदासप्रभु कहतसीखदे मोहि लीजियेटेर ॥३॥

★ राग बिलावल ★ दे मैयारी दोंहिनी दुहिलाऊं गैया ॥ माखनखाय बलभयो तोहि नंददुहैया ॥१॥ सेंदुरकाजर धूंमरीधौरी मेरी गैया ॥ दुहिलाऊं तुरतहि तब मोहि करदेघैया ॥२॥ ग्वालनके संग दुहतहों बूझो बलभैया ॥ सूरनिरख जननी हँसी तबलेत बलैया ॥३॥

★ राग बिलावल ★ उठी प्रातही राधिका दोहनी करलाई ॥ महरि सुतासों तब कह्यो कहांचली अतुराई ॥१॥ खिरक दुहावन जातहों तुमरीसेवकाई ॥ तुम ठकुराईन घररहो मोहि चेरीपाई ॥२॥ रीतीदेख दोहनी कित खोजत धाई ॥ कालगई अबेरके ह्यां उठे रिसाई ॥३॥ गायगई सब प्यायकें प्रातही नहीं आई ॥ ताकारनमें जातहूं अतिकरत चढाई ॥४॥ यह कहि जननी

सोंचलीव्रजको समुहाई ।। सूररयाम गृहद्वारही गौ करत दुहाई ।।५।।

★ राग बिलावल ★ ढोटा मेरी दोहनी दुराई ।। मौपेंते लीनी देखनको यह धोंकों नवडाई ।।१।। निपट सवेरीहों उठ आतुर खिरक दुहावन आई ।। जान अकेली याढोटानें बहुत भांति खिजाई ।।२।। द्वार उघार खोलदीये बछराव खटगैया चुखाई ।। हों पचिहारी कहीनहीं मानत वर्जत नाकेंआई ।।३।। घर मेरी सास त्रासेगीहौं कहा उत्तर देहूं जाई ।। परमानंदप्रभु तव हँसदीनो भई बात मनभाई ।।४।।

★ राग बिलावल ★ अनोखे दुहैया मैंदेखे सोकहूंधार कहुंदोहनी कहुंदृष्टि ।। देहोताहि कहादुहिआवे ऐसीभईपयप्रष्टि ।।१।। ऐसीतोध्यान मान ताहींसो लंगर हिये जाके होतुमइष्टि ।। कृष्णजीवन प्रभुहरिकल्याण कछुतुम्हें नखोर यहसो नई भई कछुसृष्टि ।।२।।

★ राग बिलावल ★ एक दिन आपुने खिरक को जात री मिलगयो सांवरो हों अकेली ।। देखि मोहे मंद मुसकाय नेंनन हस्यो कें धोरी हे तु कनक बेलि ।।१।। अति ही जगमग रही चुंनरी रंग भरी कंचुकी कुचन पर अति विराजे ।। शरद से चंदसो वदन झगमगी रह्यो देख या रूप को कोन भ्राजे ।।२।। मासिक नथक विराजे झलमल रह्यो एसो बडो मुक्तातें कहां पायो ।। एसो न देख्यो सुन्यो या देश में लगत ही लपट मन लटक आयो ।।३।। चाल गज राज की बंक मृगराज की चिबुक की छबि देख चित्त चुरायो ।। बंक अवलोकनि बड़ी अँखियन मांग कौन के ठगन अंजन बनायो ।।४।। जानती नाहि में नाथ तुम कौन हो करत हो जान जाकी बड़ाई ।। या गाम की री रसरीत सब कहेंगे नेक बैठो चलो कुंज छांही ।।५।। जान गई बात मग चल्यो जा सांवरे कुंज तर हमें कछु काज नांही ।। मुसकि ठाड़ी भई धाय भुज गहि लई अधरन पान दे उर लगाई ।।६।। दई एक फूल की माल पहेराय कें कही में हाथ अपुने बनाई ।। ता दीनतें लाल उर मांझ जगमग रह्यो रेंन दिन कछु नांहिन सुहावे ।।७।। सूर किशोर यह प्रेम रस छांड कें अँब तज कौन को नींब भावे ।।८।।

## ग्वाल के पद

★ राग बिलावल ★ **कनककटोरा प्रातहिदधिघृतमिठाई ।। खेलतखात गिरायदेत झगरतदोउभाई ।।१।। अरसपरसचुटिया गहेदोउ वरजतहैंमाई ।। महाढीठमानतनहीं कछुलोहोरबडाई ।।२।। अल्प-स्वल्पदशनावलि सुंदरकिलकाई ।। देखतबोली रोहिणी यशुमति मुसकाई ।।३।। घरघरतेव्रजसुंदरी देखनकोआईं ।। महासिंधुआनंबढ्यो गृहसुधि बिसराईं ।।४।। गोविंदकेचरणारविंद तजअनतनजाई ।। धरणीधरश्रीजगन्नाथ माधोबलजाई ।।५।।**

★ राग बिलावल ★ **देमैयाभँवराचकडोरी ।। जायलेउ आरेपरराख्यो काल मोललेराखी कोरी ।।१।। लेआयेहंसस्यामतुरतही देखरहेरंगरंग बहुडोरी ।। मैयाबिनाऔरकोलावे बारबारहरिकरतनिहोरी ।।२।। बोल लिये सब सखासंग के खेलत कान्ह अपनी पौरी ।। तैसेई हरितैसेई व्रजबालककरभँवरा चकरिनकी जोरी ।।३।। देखतजननी यशोदा यहसुखविहँस विहँसमुखमोरी ।। सूरदासप्रभु देखेखेलत व्रजवनिता डारततृणतोरी ।।४।।**

★ राग बिलावल ★ **गोपालमाई खेलतहैचकडोरी ।। लरकापांचसातसंगलीने निपटसांकरी खोरी ।।१।। चढघर होंरी झरोखा चितयो सखी लियोमनचोरी ।। बांएहाथवलैयालीनी अपनोअंचरछोरी ।।२।। चारोंनयनमिले जबसन्मुख रसिकहँसे मुखमोर ।। परमानंददासरतिनागर चितेंलईरतिजोर ।।३।।**

★ राग बिलावल ★ **गोपालफिरावतहैंवंगी ।। भीतरभवन भरेसबबालक नानाबिधि बहुरंगी ।। सहजसुभाव डोरीखेचत हैं लेत उठाय करपैकरसंगी ।। कबहुं करले श्रवणसुनावत नानाभांतिअधिकसुरंगी ।।२।। कबहुंकडारदेतहैं भयमें मुखहिबजावतजंगी ।। परमानंदस्वामीमनमोहन खेलसर्योचले सबसंगी ।।३।।**

★ राग बिलावल ★ **गोपालमाई खेलत हैं चौगान ।। व्रजकुमार बालक संगलीने वृंदावनमयदान ।।१।। चंचलबाजीनचावत आवत होडलगाबतयान ।। सबहीहस्तलेगेंदचलावत करतवावाकी आन ।।२।। करतनशंक निशंकमहाबल**

हरत नृपतिकुलमान ।। परमानंददास को ठाकुर गुण आनंदनिधान ।।३।।

★ राग बिलावल ★ सखाकहतहैं स्यामखिस्याने ।। आपहीं आनलुकेभयेठाडे अबतुम कहारिसाने ।।१।। बीचहीबोलउठे हलधरतब इनकेंमायनबाप ।। हारजीतको नेकनसमझत लरकनलावतपाप ।।२।। आपनहार सखासों झगरतयह कहदियोपठाय ।। सूरस्यामउठचलेरोयकें जननीपूछतधाय ।।३।।

★ राग बिलावल ★ खेलनजाहु ग्वालसबटेरत ।। यहसुनकान्हभये अतिआतुर द्वारेतनफिरफिरजबहेरत ।।१।। बारबार हरिमातहिबूझत कहिचौगानकहाँहै ।। दधिमथनीकेपाछेदेखो लेमैंधर्यो तहांहै ।। लेचौगान आपनेकरप्रभु आयेघरतेंबाहर ।। सूरस्यामबूझतसबग्वालन खेलेंगेकिहिठाहर ।।३।।

★ राग बिलावल ★ खेलनस्याम दूरगयोरी ।। संगसंगधावत डोलतकैधोंबहुत अबेरभयोरी ।।१।। पलकओटछांडतनहिंमोकूं कहाकहूं तोहिबात ।। नंदहितात तातकर बोलत मोहिकहतहैमात ।।२।। इतनीकहत स्यामघनआये ग्वालसखासंगचीन्हों ।। दौरजाय उरलाय सूरप्रभु हरखयशोदा लीन्हों ।।३।।

★ राग बिलावल ★ खेलनकोंचले बालगोविंद ।। सखाप्रियबुलावत द्वारे घोषबालकवृंद ।।१।। तरसत हैं सबदर्शकारण चतुरचातकदास ।। वरख छबि नवबारिधरत न हरत लोचनप्यास ।।२।। बिनें बचनसुनत कृपानिधिचलो मनोहरबाल ।। ललितलघुलघु चरनकरउरबाहु नयनबिशाल ।।३।। अजरपद प्रतिबिबं राजत चलत उपमापुंज ।। प्रतिचरणमानों हेमवसुधादेत आसनकुंज ।।४।। सूरप्रभुकी निरख शोभा रहे सुर अवलोक ।। सरदचंद चकोर मानो रहे थकितवलोक ।।५।।

★ राग बिलावल ★ खेलतमें कौ काको गुसैयां ।। हरिहारे जीतेश्रीदामा वरवट ही कित करत हसैयां ।।१।। जातपाँत हमसों बडे नाहीं नाहम वसत तुम्हारी छैया ।। अतिअधिकार जनावत याते अधिक तुम्हारे हैं कछु गैया ।।२।। रूटकरे तासों को खेले रहो सखासब ठाके ठैया ।। सूरदासप्रभु खेल्योई चाहत दाव दियो कर नंददुहैया ।।३।।

★ राग सारंग ★ श्याम सुन्दर बन खेलत सखन संग बिबिध केल ।। कालिंदनी तट बांधी फेंट पट करत जुध भुज जु परस्पर पेल ।।१।। काहुकी मुरली चोरत काहुकी संग षष्टी काहुको छीको नाडो काहुकी चोरत सेली ।। गोविंद पिय रस भरे निर्तत सखाके ग्रीवा भुज मेली ।।२।।

## उराहने के पद

★ राग बिलावल ★ तेरेरीलालमेरोमाखनखायो ।। भरदुपहरीलखसूनोघर ढोरढंढोर अबही उठधायो ।।१।। खोलकिवार अकेले मंदिर दूधदह्योसबलरकन खायो ।। छीकेतेंकाढ खाटचढमोहन कछूखायो कछुभूढरकायो ।।२।। नित्यप्रतिहानि कहाँलोंसहिये यहढोटा ऐसे ढंग लायो ।। परमानंद रानीतुमबरजो पूत अनोखोतेंही जायो ।।३।।

★ राग बिलावल ★ अपनोगामलेहुनंदरानी ।। बडेबाप की बेटी याते पूतहिंभली पढावतबानी ।।१।। सखाभीरलेपेठत घर में आपखाय तोसहिये ।। जबमैंचली स्यामहिपकरन तबकेकहागुण कहिये ।।२।। भाजगयो दुरदेखत कितहू मैंपोढी जब आय ।। हरेहरेबेनीगुही पाछेंबांधीपाटीजाय ।।३।। सुनमैया याकेगुणमोसों इनमोहिलियो बुलायी ।। दधिमेंपरी सहतकीचेंटी मोपेंसबैकढायी ।।४।। टहलकरत याकेघरकीमैं यह पतिसंग मिलसोई ।। सूरवचनसुन हँसीयशोदा ग्वालरही मुखजोई ।।५।।

★ राग बिलावल ★ गारीमतिदीजो मोगरीबनीकोजायोहै ।। जिततोबिगारकियो आनकहोमोसोंतुम मैंतोकाहूबातनमें नाहीं तरसायोहै ।।१।। दधिकी मटकीभरी आंगनमें आनधरीं तोलतोललीजोभट्टू जेतोजाको खायोहै ।। सूरदासप्रभुप्यारे निमिष नहूंजे न्यारे कान्ह जैसोपूत मैंतोपूरेपुन्यनसोंपायोहै ।।२।।

★ राग बिलावल ★ महरि तोहिबडीकृपन मैंपाई ।। दूधदहीदियो जोविधाताताेहि सोतोधरतछिपाई ।।१।। बालकबहुत नहींरीतेरे एकहिकुंवरकन्हाई ।। सोहूतो घरहीघरडोलत माखनखातचुराई ।।२।। वृद्धबेषपूरवपुन्यनतें यह निधि भाग्यन पाई ।। ताहूके खैवेपीवेकों एती

कहाचतुराई ॥३॥ सुनतबचन चतुरनागरीके जशुमतिनंदसुनाई ॥ सूरस्यामको चोरीकेमिसदेखनको यह आई ॥४॥

★ राग बिलावल ★ दिनदिनदेन उराहनो आवें ॥ यह ग्वालिनी जोबनमदमाती झूठेदोषलगावें ॥१॥ यह कहि भाजनधरेपराये कहामेरोमोहन पावे ॥ लरकाअतिसुकुमार गृहततन हलधरसंग खिलावे ॥२॥ कबहुंकरईमथनीलेके आंगनहाथनचावे ॥ कबहुंक कहतकंचुकीफारी कबहुंक और बतावे ॥३॥ मन लाग्यो कान्हकमलदललोचन उत्तरबहुतबनावे ॥ चतुर्भुजप्रभु गिरिधरमुख यहमिस छिनछिन देखनआवे ॥४॥

★ राग बिलावल ★ काहेआय नदेखियेरानीजू अपनेसुतकेकरम ॥ भाजन भवनएको नरह्यो कह्योतोआगें हंसपरीहै ऐसे जानेंको काहूकोमरम ॥१॥ दिनदिनकीहानि दूजेंराखतन नेककान कहोजु बसबेकोकौन धरम ॥ नंददासप्रभु मैयाके आगें साधुह्वेबैठे चोरीको कहाभरम ॥२॥

★ राग बिलावल ★ मैया मैंनाहींमाखनखायो ॥ ख्यालपरे यहसखासबै लेमेरेमुखलपटायो ॥१॥ देखतही छीकेपरभाजन ऊंचेधरलटकायो ॥ तूहीदेख नयन कर अपने मैंकैसेंसोपायो ॥२॥ मुखदधिपोंछ बुद्धि एककीनी दोनापीठदुरायो ॥ डारसांट मुसकाय यशोदा स्यामहि कंठलगायो ॥३॥ बाल विनोदभावकरमोह्यो मातामनहिरिझायो ॥ सूरस्याम यह यशुमतिकोसुख देवनदुर्लभगायो ॥४॥

★ राग बिलावल ★ ग्वालिनी आपतनदेख मेरे लालतनदेखरी भीत ज्योंहोय तोचित्रअबरेखरी ॥ध्रु.॥ मेरोललनहै पांचहीबरसको रोयकेंअजहू पयपानमाँगें तूतोअतिढीठ जोवनमत्तग्वालिनी फिरतइतरात गोपालआगें ॥१॥ मेरे ललनकी तनकसीअंगुरि ये बडेनखनकेचिन्ह तेरें ॥ मष्टकर हँसेंगेलोग अगवारको यह भुजाकहांपाई स्याममेरे ॥२॥ झुकवलीग्वालिननयनन हँसी नागरी उराहनेकेमिस अधिकप्रीतिबाढी ॥ एकसुन सूरसर्वस्वहर्‌यो सांवरे अनउत्तर महरिकेद्वारठाढी ॥३॥

★ राग बिलावल ★ सुनोधों अपनेसुतकी बात ॥ देखयशोमति कान नराखत लेमाखन दधिखात ॥१॥ भाजनभान डारसबगोरस वाटत हैं करपात ॥ जोबरजोतो उलटडरावत चपलनयनकीघात ॥२॥ जोपावतसो गहत चपलकर कहत नकछु सकुँचात ॥ होंसकुंचत अंचलकरधरकें रहीढाँपमुखगात ॥३॥ गिरिधरलाल हालऐसेंकर चले धायमनहिंमुसकात ॥ दासचतुर्भुज प्रभु जानत हैं यहसोंहिंदेसात ॥४॥

★ राग बिलावल ★ महरितुम व्रजचाहत कछुओर ॥ बात एक मैंकहतनाहीं आपलगावत झोर ॥१॥ जहांबसे पतनहीआपनी तजनकह्योसोठौर ॥ सुतकेभयेंवधाईपाई लोगनखेदत होर ॥२॥ कान्हपठायदेत घरलूटन कहँतकर्योयहगोर व्रजघरसमुझलेहोमरेंठी हाहाकरतकरजोर ॥३॥

★ राग बिलावल ★ लोगनकितहूं झूझतबोरी ॥ दधिमाखन गठबंधनदेराखत करत-फिरतसुतचोरी ॥१॥ जाकेघरकीहानिहोतनित सोनहींआनकहेंरी ॥ जातपांतिके लोगनदेखत बहुनहिंबातबनेरी ॥२॥ घरघरकान्ह खाइबेडोलत अतिकृपनतूहेरी ॥ सूरस्यामको जबजोभावे सोईतबतूदेरी ॥३॥

★ राग बिलावल ★ भाजगयोमेरोभाजनफोर ॥ कहारीकहूं सुनमातयशोदा और माखन खायोसबचोर ॥१॥ लरका पांचसातसंगलीने रोकेरहत सांकरीखोर ॥ मारगमें कोऊचलननपावत लेत हाथतेदूध मरोर ॥२॥ समझनपरत याढोटाकी रातदिवसरहे गोरस ढंढोर ॥ आनंदेफिरतफागसों खेलततारीदेत हँसतमुखमोर ॥३॥ सुंदरस्यामरंगीलोढोटा सबव्रजबांध्यो प्रेमकीडोर ॥ परमानंदसयानीग्वालिनी लेतबलैया अंचरछोर ॥४॥

★ राग बिलावल ★ लियोमेरेहाथतेछिडाई ॥ तावनको लावतहीमाखन डार्योहै कुंवर-कन्हाई ॥१॥ बूझनलाग्योमोहीकों कौन है पाहुनीकहातेरोनाम ॥ देखियत कहूंभलीमानसरी कहिधोंतेरोगाम ॥२॥ देखतरूप ठगीसीठाडी मनमोहन रूपनिकाई ॥ परमानंद दासकोठाकुर प्रेमठगोरीलाई ॥३॥

★ राग बिलावल ★ मानों याकेबावाकीहैकोऊचेरी ॥ ढीठोदेतसंकनहिंमानत

मारगआवत घेरी ।।१।। कंचुकीगहत डरतनहींमनमें कही अपनपोंटेरी । यामेंसबसमुझरी यशोदा चितवदेख गतमेरी ।।२।। कबलग लाजवासकी कीजेकान्ह गुसाइन तेरी ।। परमानंदप्रीति अंतरगत दरशनमिस कर फेरी ।।३।।

★ राग बिलावल ★ तेरे भवनभावनगोरी कबरी करनगयो माखनचोरी ।। जानेकहा कटाक्षतिहारे कमलनयन मेरोतनकसौरी ।।१।। देदेदगा बुलायभवनमें भेटत भुजभरउरज कठोरी ।। उरनखदिखावत डोलतकान्ह चतुरभयो तू अतिभोरी ।।२।। नित्यउठआय उराहनेमिसचाह रहतनितचंद चकोरी ।। सूरसनेह स्याममनअटक्यो नयननप्रीति जातनहिंतोरी ।।३।।

★ राग बिलावल ★ तेरीसोंसुनसुनरीमैया ।। याकेचरित्र तूनहींजानत बोलबूझसंकरषण भैया ।।१।। ब्याईगाय बछरुवाचाटत होंपीवत होप्रातखनघैया ।। याहिदेख धोरीबिझुकानी मारनकोंदौरी मोहिगैया ।।२।। द्वैसींगनकेबीचपर्‍यो मैं तहांरखवारो कोऊनसहैया ।। तेरोपुण्यसहायभयोहै अब उबर्‍यो बावानंददुहैया ।।३।। यहजोउखटपरीहीमोपै भाजचली कहिदैयादैया ।। परमानंदस्वामी कीजननी उरलगाय हँसलेतबलैया ।।४।।

★ राग आसावरी ★ यशोदा वरजतकाहेन माई ।। भाजनभांन सब दधिखायो बातेंकहीनजाई ।।१।। होंजुगईहीखिरकआपने जैसे आंगन में आई ।। दूधदहीको कीचमच्योहै दूरतेदेख्योकन्हाई ।।२।। तब अपने कर सोंगहे तुमहीपे लेआई ।। परमानंद भाग्यगोपी को प्रकटप्रेमफलपाई ।।३।।

★ राग धनाश्री ★ भूलीउराहनेको दैवो ।। परिगएदृष्टि स्यामघनसुंदर चक्रतभईचितैवो ।।१।। चित्रलिखीसी ठाडीग्वालिनि कोसमझेसमुझैवो ।। चतुर्भुजप्रभुगिरिधर मुखनिरखत कठिनभयो घर जैवो ।।२।।

★ राग धनाश्री ★ भलीयहखेलवेकीबान ।। मदनगोपाल लाल काहूकी राखतनाहिंन कान ।।१।। सुनोहोयशोदा करतबसुतके यह ले मांटमथान ।। तोरफोरदधि डारअजरमें कौनसहेनितहान ।।२।। अपनेहाथ देतबनचरकूँ दूधभात घृतसान ।। ज्योबरजोतो आनदिखावें पर घरकूद निदान ।।३।। ठाड़ीहँसत

नंदजूकीरानी मूंदकमलमुखपानि ॥ परमानंददास यह जानें बोलबूझधोंआनि ॥४॥

★ राग धनाश्री ★ यशोदाकहाँलों कीजेकान ॥ दिनप्रतिकेंसेसही परतहै दूधदहीकी हान ॥१॥ अपनेया बालकीकरनी जोतुमदेखोआन ॥ गोरसखवाय जगायलरिकनकों भाजनभाजतभान ॥२॥ मैं अपने मंदिरकेकौरें राखो माखनछान ॥ सोईजायतुम्हारे ढोटा वहीलियोपहचान ॥३॥ बूझेंकहतबालनजोमहिया आयेसंकामान ॥ सूरदासप्रभुऔरनआवें चेटीकाढतपान ॥४॥

★ राग धनाश्री ★ यशोदाचंचलतेरोपूत ॥ आनंद्योव्रज वीथनडोलत करे अटपटेसूत ॥१॥ दह्योदुधलेघृत आगेंकर जहांतांहधर्‌योदुराय ॥ अंधियारेघरकों उन जानें तहांपहिलेहीजाय ॥२॥ गोरसके सब भाजनफोरे माखनखायचुराय ॥ लरकनके करकान मरोरत तहांतेचले रुवाय ॥३॥ बांटदेतवनचरनकौतुक करत विनोदविचार ॥ परमानंदप्रभुगोपीवल्लभ भावेंमदनमुरार ॥४॥

★ राग धनाश्री ★ ऐसेलरिकनको आदेशकीजे ॥ भयेदरशन देखियेपायलाग मांग - कछूलीजे ॥१॥ अबहीहरिढंढोरमांटसब याक्षणमौनधरबैठे ॥ होंपचिहारी कह्योनहींमानत बिनतीकरतजात हैं ऐंठे ॥२॥ सुनोंहोयशोदा करत बयासुतके चोरी करसाधकहाये ॥ यद्यपियहगुण कमलनयनके परमानंदजियेमें भाये ॥३॥

★ राग धनाश्री ★ काहेनबरजत होनंदरानी ॥ एकगामवसेवास कहांलों करेहे नंदजूकी कानी ॥१॥ बचनविचित्र कमलदललोचन कहतसरसबानी ॥ अचरज महरि तिहारे आगें अबहीजीभ तुतरानी ॥२॥ नाजानो कहांधों सीखे मोहन नमंत्रसयानी ॥ कोटिकामरूपधरतहै बालकलीलाठानी ॥३॥ कहां तूरी ग्वाल तेरो मोहन यह विपरीत नजानी ॥ ब्रह्मदास उरहाने मिस नागरी मोहन तन मुसकानी ॥४॥

★ राग सारंग ★ झूठेही दोष गोपाल लगावत जहींजहीं खेलें मेरो मोहन तहींतहीं

उठ धावत ।।१।। कब तेरो दधिमाखन खायों ऐसेंई आवत हाथ नचावत ।। परमानंद मदनमोहनकों व्रजकी लीलाभावत ।।२।।

★ राग सारंग ★ मेरो हरि गंगाको सोपान्यो ।। पांचबरसको सुद्धसांवरो तें क्यो विषई जान्यो ।।१।। नित्य उठ आवत हाथ नचावत कौन सहेकबान्यो ।। चूरी फोरत बांह मरोरत मांट दहीको भान्यो ।।२।। ठाडी हँसत नंदजूकी रानी ग्वालिन बचन न मान्यो ।। परमानंद मुसकायचली जबदेख्यो नंदघरान्यो ।।३।।

★ राग सारंग ★ सयाने कब लगि होइहौ लाल ! नाहिन समुझि परति तुम्हारी गति मोहन मदनगोपाल ।। दिन प्रति घरहि उराहनु आवै अंबुज नैन बिसाल । नवलछ गोधन नंदराइ कें अजहुँ न छाँडहु चाल ।। कहति जसोदा सुनु मेरे मोहन ! चूँबौं सुंदर गाल । 'परमानंद' प्रभु तजि न सकति छिनु बँधी प्रेम के जाल ।।

★ राग टोडी ★ कबहु अकेले पाय प्रीतम गोपी ले बेठी गोद 'उराहनो' सिखवत चोरी मिस मिस आवो गहे ।। सामग्री घर राखी छींकन पर, भावे सो लीजिये यह तुम्हारी देह ।।१।। जिन कोऊ ओर छीये यही बडो ताप हीये अकेलेही भोजन करो बरसावो मेह ।। रसिक प्रीतम हम आवेंगी उराहने के मिस जसुमति के आगें तुम मनमें मत दीजों छेह ।।२।।

## घैया के पद

★ राग बिलावल ★ यशोदामथमथप्यावत घैया ।। कर तबकडी धरतहैं आगें रुचिसोंलेत कन्हैया ।।१।। बहोर धरत हरि लेत है पुनिपुनिसुंदरस्याम सुहैया ।। ओट्र्योदूध धर्योबेलाभर पीवत कान्ह नन्हैया ।।२।। मनमोहनभोजनकों बैठे परोसतले कर मैया ।। खट रसके प्रकार धरे सब निरख रसिक बल जैया ।।३।।

★ राग बिलावल ★ तुमकों लालकर्योहैघैया ।। आवोबेग जातमुरझानो बोलतयशोदा मैया ।।१।। आनपतूकीपातनकीकर फिरलैहैंबलदाऊभैया ।। बावाकहत पहिलेजोपीवे सोगोकुलकोरैया ।।२।। यहसून दौरभवनमें आये गोदबैठे प्यारो कुंवरकन्हैया ।। श्रीविट्ठलगिरिधरनलालको प्यावनबावाबहुत सुखपैया ।।३।।

★ राग बिलावल ★ करत धैया भरत दोना ग्वालनको देतरी मनमोहन ।। हरखत निरखत निरख निरख फूल जब उपरत चलत सब दोना ।।१।। उफनत उपफेन हँसत कमलनैन सखामंडली सब जोहना ।। 'हरिनारायण स्यामदास' के प्रभु माई लाग्यो री मनमोहना ।।२।।

★ राग आसावरी ★ दुहि दुहि लावत धोरी गैया । कमल नैनको अति भावत है मथि मथि प्यावत घैया ।। मोहन भूख अधिक जबलागी छाक बांटि पियोरे मैया। ऐसो स्वाद हम कबहु न चाख्यो अपनीसोंह कनैया ।। हंसि हंसि ग्वाल कहेत हे मोहन सों सुनि गोकुल के रैया । परमानंद दास को ठाकुर पुनि पुनि लेत बलैया ।।

## बलदेवजी के पद

★ राग बिलावल ★ मैया दाऊ बहुत खिजायो ।। मोसों कहत मोलको लियो तोय यसोमति कब जायो ।।१।। कहा करों यह रसिके मारें खेलनहू नहीं जात ।। पुनपुन कहत कौन है माता कौन है तेरो तात ।।२।। गोरे नंद यशोदा गोरी तुम कित श्याम शरीर ।। चुटकी दैदै ग्वाल सब हँसतहैं हँसत सिखै देत बलवीर ।।३।। तू मोहीको मारन सीखी दाऊ एकबहु नखीजे ।। मोहनकों मुखरिसमेंत लखि जसुमति मनमन रीझे ।।४।। सुनहूं कान्ह बलभद्र चवाई जन्मतही को धूत ।। सूरस्याम मोहि गोधनकीसों मैं जननी तू पूत ।।५।।

★ राग बिलावल ★ मैया निपटबुरो बलदाऊ ।। कहत है वन बडोतमासो सब लरकाजुर-आऊ ।।१।। मोहूको चुचकारचलेलै जहां बहुतबनझाऊ ।। बाँहीते कहि छाँड चले सब काठिखाउरेहाऊ ।।२।। डरकांपकें उठ ठाडो भयो कोऊ न धीर धराऊ ।। परपर गयो चल्यो नहीं जाई वे भाजेजात अगाऊ ।।३।। मोसों कहत मोलको लीन्हों आप कहावत साऊ ।। परमानंद बलरामचवाई तैसेईमिले सखाऊ ।।४।।

★ राग सारंग ★ खेलन अब मेरी जाय बलैया ।। जबही मोहि देखत लरिकनसंग तबही खीजत है बलभैया ।।१।। मोसों कहे तात बसुदेवको देवकी तेरी मैया ।। मोललियो कछूदे बसुदेवहिं करकर यतन बढैया ।।२।। अब बाबा कहत नंदसों

यशुमतिसों कहि मैया ।। ऐसे कहि तब मोहि खिजाबत तब उठ चल्यो खिसैया ।।३।। पाछे नंदसुनत हैं ठाडे हँसत हँसत उरलैया ।। सूरनंद बलरामहि खीजत योंसुनहरखबढैया ।।४।।

★ राग सारंग ★ देखरी रोहणीमैया कैसेहैं बलदाऊभैया यमुनाकेतीर मोहि झुझुवावतायोरी ।। सुबल श्रीदामासाथ हँसहँस बूझतवात आप डरपे औरमोहि डरपायोरी ।।१।। जहींजहीं बोले मोर चिते रहत याही ओर भाजोरे भाजोरे भैया वह देखो आयो ।। आप गये तरुचढमोहि छाड्योवाही तर धरधर छातीकरे दोर्यो घरआयो ।।२।। उछंगसो लिये लगाय कंठसों रहे लपटाय बारीरेवारी मेरोहियो भर आयो ।। परमानंद रानी द्विजबुलाय वेदमंत्र पढाय बछियाकी पूँछगहि हाथहि दिवायो ।।३।।

## नित्य छाक के पद

★ राग सारंग ★ हरिकों टेरत फिरत गुवारी ।। आन लेहो तुम छाक आपनी बालक बल बनवारी ।।१।। आज कलेऊ कियो प्रातही वछरा लेवन धाये ।। मेवा मोदक मैया यशोमति मेरे हाथ पठाये ।।२।। जब यह वानी सुनी मनोहर चल आये तहां पास ।। कीनी भली भूख जब लागी बलपरमानंददास ।।३।।

★ राग सारंग ★ तुमकों टेरटेर मैं हारी ।। कहांजो रहे अबलो मनमोहन लेहोन छाक तुम्हारी ।।१।। भूल परी आवत मारगमें क्योंहुं न पेंडो पायो ।। बूझत बूझत यहां लों आई तब तुम वेणु बजायो ।।२।। देखो मेरे अंगके पसीना उरको अंचल भीनो ।। परमानंदप्रभु प्रीतिजानकें धाय आलिंगन कीन्हों ।।३।।

★ राग सारंग ★ हरिजूको ग्वालिन भोजन लाई ।। वृंदा विपिन विशद यमुनातट सुन ज्यों नार बनाई ।।१।। सानसान दधिभात लियोहै सुखद सखनके हेत ।। मध्यगोपालमंडली मोहन छाक विहंसिमुखदेत ।।२।। देवलोक देखत सब कौतुक बालकेलि अनुरागे ।। गावत सुनत सुखद अतिमानो सूरदुरत दुःखभागे ।।३।।

★ राग सारंग ★ वांट वांट सबहिन कों देत ।। ऐसे ग्वालहरिहैं जो भावत शेष रहत सोई आपन लेत ।।१।। आछोदूध सद्य धोरीको ओट जमायो अपने हाथ ।। हंडिया

मूँद यशोदामैया तुमको दें पठई व्रजनाथ ।।२।। आनंदमग्न फिरत अपने रंग वृंदावन कालिंदीतीर ।। परमानंददास झूठोले बांह पसार दियो बलवीर ।।३।।

★ राग सारंग ★ आगें आउरी छकहारी ।। जब तुम टेरे तबमैं बोली सुनी न टेर तिहारी ।।१।। मैया छाक सवारे पठई तूं कित रही अवारी ।। अहो गोपाल गैल हौं भूली मधुरे बोलन परवारी ।।२।। गोवर्धनउद्धरणधरीसों प्रीति बढी अतिभारी ।। जनभगवान मग्न भई ग्वालिनी तनकी दशाविसारी ।।३।।

★ राग सारंग ★ बिहारीलाल आई छाक सलोनी ।। अति अद्भुत पठई चंद्रावलि एक गांठ द्वै दोहनी ।।१।। टेरत स्याम भुजा ऊंची कर गई सुवास आग्योनी ।। कृष्णदास गिरिधरजूको मनहरच्यो विधिना रसिक रिझोनी ।।२।।

★ राग सारंग ★ बिहारीलाल आवहू आई छाक ।। गैया दूरगईहै मोहन बगदावो दे हांक ।।१।। अर्जुन भोज सुबल श्रीदामा मधुमंगल एक ताक ।। खटरसखीर खांड घृत भोजन बहुपकवान पराक ।।२।। अपनी अपनी पातर लेकें बैठे फैल फराक ।। सूरदासप्रभु जेंवत रुचिसों प्रेमप्रीतिके पाक ।।३।।

★ राग सारंग ★ तुमकों मैया छाक पठाई ।। टेरत फिरत ग्वालनंदलाल कित तुम दोऊ भाई ।।१।। नईनई भांत नये डवरनमें अपने सिर धर आई ।। नेक कहत सुनिहो श्रवणनसुख पावत ताही ठौर बुलाई ।।२।। बानी समझ हँस सुखपावत ताही ठौरहि धाई ।। श्रीविठ्ठलगिरिधरनलाल को अद्भुत रुचि उपजाई ।।३।।

★ राग सारंग ★ लालन केतिक दूइ बन आवत ।। यशोमति औसेर करतहैं ढिंगही क्यों न चरावत ।।१।। हार परीहों यहां लो आवत द्योस चढ्यो लखधावत व्रजजन त्यज क्यों दूर आयो सो तुमही कूं भावत ।।२।। चलहु न उठ क्यों ठोर लाडिलो जहींये छाक धरावत ।। कर गहि चलें कुंजभवनमें अद्भुत भाव जनावत ।।३।। छाक धराय यहालों आयो दोनों क्यों न बतावत ।। सीतल ठौर देख भोजनकी सवें होहुं समरावत ।।४।। गरेंबांह धर चले रसिक प्रीतम प्रिय परस प्रमोद बढावत ।। गूढचरण गोचरणको यह दासमुदितमनभावत ।।५।।

★ राग सारंग ★ लाडिले तुमको छाक ले आई ।। बहुत वारके भूखे जानके

यशुमति मोहि पठाई ।।१।। बीचमिले मृगनाद विमोही जिन यह ठौर बताई ।। चरणकमलके चिन्ह विलोकत श्रम सब गयो भुलाई ।। ढिंग आये सुन वचन मनोहर आरति अति उपजाई ।। वेणुनाद मध्य श्रवण सुधा धसि विरहे अग्नि बुझाई ।।३।। मुखनिरखत अपने मोहनको छाकजो तरे उतराई ।। मुखचुंबनदे रसिकशिरोमणि ग्वालिन गरे लगाई ।।४।।

★ राग सारंग ★ लेहो कन्हैया यशुमति मैया तुमको छाक पठाई ।। व्यंजन मीठे खाटे खारे दधि ओदन लेधाई ।।१।। गूँजा लडुवा उज्वलफेनी मेवा अमृत मिठाई ।। ओटचो दूध सद्य धोरीको तामें बहुत मलाई ।।२।। बेसनके व्यंजन बहुतेरे जो तिहारेचित भाई ।। जोर मंडली भोजन कीजे हृषीकेश बलजाई ।।३।।

★ राग सारंग ★ लीजे लालन अपनी छाक ।। जबतें तुम वन आये तबते रहत चढ्यो चितचाक ।।१।। देखलेहु नीकेकर सगरे कीने बहुविध पाक ।। भोजनको बैठे सीतल छायामें उनहीकी ढाक ।।२।। होहूं ढिंग बैठों ज्योऊँ तो मेरे चरणको उतरे थाक ।। ज्यों भावे त्यों खेलकरो तुम मेरे आगें निशांक ।।३।। पूरो सकल मनोरथ मेरे हो आई इह ताक ।। रसिकप्रीतम कबके बिछुरे तेंहों आई हो नाक ।।४।।

★ राग सारंग ★ घरही एक ग्वार बुलाई ।। छाक सामग्री सबही जोरकें करदे तुरत पठाई ।।१।। कह्यो जाय वृंदावन जैयो तू जानत सब प्रकृत कन्हाई ।। प्रेम सहितले चली छाक कहि ह्वै हैं वे भूखे दोऊभाई ।।२।। तुरत जाय वृंदावन पहुँची ग्वालबाल कहुं कोउ न बताई ।। सूरस्यामको टेरत डोलत कितहो लाल छाक मैंलाई ।।३।।

★ राग सारंग ★ बहुतफिरी तुमकाज कन्हाई ।। टेरटेरहों भई बावरी दोऊ भैया तुम रहे लुकाई ।।१।। जे सबग्वाल गये घरघरको तिनसों कहि तुम छाक मँगाई ।। लोनी दधि मिष्टान्न जोरकें यशुमति मेरे हाथ पठाई ।।२।। ऐसी भूख मांझ तूलाईतेरी किहि विधि करों बडाई ।। सूरस्याम सब सखन पुकारत आवत क्यों न छाकही आई ।।३।।

राग सारंग छाकलिये सिर स्याम बुलावत ।। ढूंढत फिरत ग्वालिनी हरिकों कोऊ भेद नहीं पावत ।।१।। टेर सुनत काहूकी श्रवणन नितही तुरत उठ धावत ।। पावत नहीं स्याम बलरामहि व्याकुल ह्वे पछितावत ।।२।। वृंदावन फिर फिर देखतहै बोल उठे तहां ग्वाल ।। सूरस्याम बलराम यहां हो छाक लेहो इन्हें मिलादे लाल ।।३।। राग सारंग बोलत कान्ह बुलावत गैया ।। गिरिगोवर्धन ऊपर ठाढे कर पीतांबर लैया ।।१।। लागीभूख पियो चाहत है याको पय मथघैया ।। धारकर देत सबही ग्वालनकूं तब ही छाक पठैया ।।२।। तिहिं अवसर ग्वालिन बन आईदधिओदन बिधिठैया ।। भोजन करत सुरत जबकीनी प्रियदयाल बल जैया ।।३।। राग सारंग जोरत छाक प्रेमसों मैया ।। ग्वालन बोल लिये अध जेंवत उठ दौरे दोऊ भैया ।।१।। तबहीतें नहिं भोजन कीयो चाहत दियो पठाय।। भूखे गये आज दोऊ भैया आपही बोल मँगाय।।२।। सदमाखन साज्यो दधिमीठो मधुमेवा पकवान ।। सूरस्यामको छाक पठावत कहत ग्वालिन सोजान ।।३।। राग सारंग आई छाक बुलाये स्याम ।। यह सुन सखा सबे जुर आये सुबल सुबाहु श्रीदाम ।।१।। कमलपत्र दोनापलासके सबके आगे धरे परोसत जात ।। ग्वालमंडलीमध्य स्यामघन सब मिल रुचिकर खात ।।२।। ऐसी भूख मांझ यह भोजन पठाय दिये कर यशोदामात ।। सूरस्याम अबलों नहीं जेंवत ग्वालिन करते लेले खात ।।३।। राग सारंग अरी छाकहारी चारपांच आवत मध्य व्रजराजललाकी।। बहुप्रकार व्यंजन परिपूरण पठवन बडे डलाकी ।।१।। ठठक ठठक टेरत श्रीगोपालें चहुंधा दृष्टिकरें ।। बाजत वेणु ध्वनि सुनचली चपलगत परासोलीके परें ।।२।। परमानंदप्रभु प्रेममुदितमन टेर लई कर ऊंची बांह ।। हँस हँस कस-कस फेंटा कटिनसों बाँटत छाक वन ढाकन मांह ।।३।। राग सारंग डलाभरहो लाल कैसेक उठावें पठावो ग्वाल छाकले आवें ।। गिन देखो गांठन जानो कौन कौन मेवा वसन सुरंग हाहाकर पायन परकें पठावें।।१।। आपव्रजरानी न विचारे मेरे डलापर थार ओदन बेला न समावें ।। नंददास प्रेमी स्याम परस पद कही बात काल्हतें जु कांवर भर किंकर बुलावें ।।२।। राग सारंग कुमुदवन भली

पहुंची आय ॥ सुफल भई है छाक तिहारी लाल कदमतर पाय ॥१॥ तहांते उठ चले मानसरोवर संग सखा सब लाय ॥ बैठत तहां ठौर गिरिऊपर चरत चहूं दिश गाय ॥२॥ खेलत खात हँसत परस्पर बातें कहत बनाय ॥ रामदास बलबल बूझनकी कहा कहा व्यंजनलाय ॥३॥ राग सारंग गिरिपर चढ गिरिवरधर टेरें ॥ अहो भैया सुबल श्रीदामा लाओ गाय खिरकके नेरें ॥१॥ भई अवारजो छाक खायें कछुक घैया पियें सबेरें ॥ परमानंदप्रभु बैठ सिलनपर भोजन करत ग्वाल रहे घेरें ॥२॥ राग सारंग कांवरद्वय भरकें छाक पठाई नंदरानी आपमोहि मिले मारगमें मधुबनके कूल ॥ सुबल तोक तरुण वेष आवत कछु भोजन लिये चंचलगति चलत दोऊ दरसन के फूल ॥१॥ कनकथार पीरे जगमगात बेलनकी भातकांति भरेहैं नंदरानी आपदोऊ समतूल ॥ पचरंग पाटकी डोरी चोसर चहुं ओर खचित पवन गवन बिकस जात रेसमके झूल ॥२॥ छोटी छोटी द्वय गांठ तामें पठवन सब व्रजजन की आसपास लटकरहे फोंदा मखतूल ॥ सकल पाक परमानंद आरोगत परमानंद परमानंद जानत सब बातनको मूल ॥३॥ राग सारंग दानघाटी छाकआई गोकुलते कावर भर रावलकी रावरेने राखी सबघेर ॥ जानतो जबही देहों नंदजूकी आनखेहों भोजनकी रहीकछु चाखो एकवेर ॥१॥ अतिप्रवीन जान राय कनकबेला करमेंलिये वाटतमेवा मन प्रसन्न हेर चहुंफेर ॥ सकलपाक परमानंद आरोगत परमानंद परमानंद टोक करत सुबल टेरटेर ॥२॥ राग सारंग भैयाहो अजहु छाक न आई ॥ भई अवेर भूखलगीहै कहां बेर लगाई ॥१॥ देखो तो मारगमें सब मिल आन कौन हों पठाई ॥ भूलपरी है कैधों विपिनमें पेंडो नाहि चलाई ॥२॥ किधों हमारे प्रेमविवशतन वापें चल्यो नजाई ॥ किधों गोपाल लेले हो बोलत है गदगदस्वरन सुहाई ॥३॥ रहे गोपाल अकेले जब तब ग्वालन निकट बुलाई ॥ आलिंगनदे महा अधररस सिरतें छाक उतराई ॥४॥ टेर दई ग्वालनको मोहन ढिंगही छाक ह्वेपाई ॥ रसिक प्रीतम को मधुरनाद सुन ग्वालमंडली धाई ॥५॥ राग सारंग सब व्रजगोपी रही तकिताक ॥ करकर गांठ लसत सबहिन के वनको चलत जब छाक ॥१॥ मधुमेवा पकवान

मिठाई घरघरा ले निकसीं थाक ॥ नंददासप्रभुको यह भावत प्रेमप्रीतिके पाक ॥२॥ राग सारंग बंसीवट बैठेहें नंदलाल ॥ भयोहैं मध्यान छाककी बिरियां अपनी अपनी गैया छैया लेआवो व्रजबाल ॥१॥ ग्वालमंडलीमध्यविराजत करत परस्पर भोजन नवल बने गोपाल ॥ आसकरणप्रभु मोहननागर सबसुखरसिक रसाल ॥२॥ राग सारंग छाक लेआई ग्वालिन गोरी ॥ यशुमति सब पकवान छाब भर पठई टेरत भोरी ॥१॥ जबही आन अरोगत प्यारो गोरस कनक कमोरी ॥ व्रजाधीशप्रभु स्यामढाकतर भली बनी यह जोरी ॥२॥ राग सारंग स्याम ढाकतर छाक अरोगत लेकर थारी ठाढीहै ललिता॥ भोजन व्यंजन केलके पातनमें चहुंधा चपलासी व्रजवनिता ॥१॥ निरखत अंबुज मोहनको मुखलोचन भये मानों मगृकेसे चकृता ॥ श्रीविट्ठलगिरिधरन अरोगत निकट वहत कालिंदी सरिता ॥२॥ राग सारंग बैठे श्रीगोवरधन गिरि गोद ॥ मंडली सखामध्य बलमोहन खेलत हँसत प्रमोद॥१॥ भई अवार भूख जब लागी चितये घर की कोद॥ गोविंद तहां छाक ले आये पठई मातयशोद ॥२॥ राग सारंग गोवरधन गिरिशृंग शिलनपर बैठे छाक खात दधिओदन॥ आसपास व्रजबालक मंडली मध्यवहीं बलिमोहन बैठे व खात खवावत प्रेम प्रमोदन ॥१॥ काहूको छीको नोय छोर गहि डारत वह वापर वह वाकी कोदन॥ बालकेलि क्रीडत गोविंदप्रभु हँस गिर जात सुबलकी गोदन ॥२॥ राग सारंग सुंदर सिला खेलकी ठौर ॥ मदनगोपाल जहां मध्यनायक चहुं दिश सखामंडली जोर ॥१॥ बांटत छांक गोवरधनऊपर बैठत नानाविधिकी ठौर ॥ हँसहँस भोजन करत परस्पर चाखचाखले रुचिसों कोर ॥२॥ कबहुँ सिखर चढ टेरत गायन लेले नाम धूमरी धौर॥ चतुर्भुजप्रभु लीलारसरीझे गिरिधरलाल रसिक सिरमौर ॥३॥ राग सारंग सिला पखारो भोजन कीजे ॥ नीके व्यंजन बने कौनके चाख चाख सबहिनकों दीजे॥१॥ अहो अहो सुबल अहो श्री श्रीदामार्जुन भोज विशाल ॥ अपने अपनेओदन लाओ आज्ञा दईहै गोपाल ॥२॥ फल अंगुरिन अंजलिनबिच राखे वांटवांट

सबहिन कों देत ।। परमानंदस्वामी रसरीझे प्रेमपुंजको बांध्योसेत ।।३।। राग सारंग विराजत ग्वालमंडली अहो बलमोहन छाकें खात ।। सिला ओदन जंघन रोटी अंगुरिन बिच फलधरे और गोरसके पात ।।१।। काहूको ले देत स्याम काहूको डहकावत कोऊ झटक खातहाथतें तब लालन मुसकात जात ।। रामदासप्रभुकी लीला लख कहत शिवब्रह्मादिक हम न भये अहीर व्रजमें योंकहि कहि पछितात ।।२।। राग सारंग भावत है वनवन की डोलन ।। मदनगोपाल मनोहरमूरति ही ही धोरी धेनुकी बोलन ।।१।। करपर पात भात ताऊपर बिचबिच व्यंजन धरराखे ।। बालकेलि सुंदर व्रजनायक ग्वालिन देत आपही चाखे ।।२।। कहा वैभव वैकुंठलोकको भवन चतुर्दशकी ठकुराई ।। शिवविरंचि नारदपदवंदित उपनिषद् कीरतिगाई ।।३।। यह पुरुष लीलाअवतारी आदि मध्य अवसान एकरस ।। परमानंदप्रभु बालविनोदी गोकुलमंडन भक्त प्रेमवश ।।४।। राग सारंग हंसत परस्पर करत कलोल ।। व्यंजन सबै सराए मोहन मीठे कमलवदन के बोल ।।१।। तोरे पलासपत्र बहुतेरे पनवोरा जोर्‌यो विस्तार ।। चहुंदिश बैठी ग्वालमंडली जेंवन लागे नंदकुमार ।।२।। सुर विमानसब कौतुकभूले यज्ञपुरुषहैं नीके रंग ।। शेष प्रसादरह्योसो पायो परमानंददासहो संग ।।३।। राग सारंग एग्वालमंडली मोहनसंग लीने बैठे वरकी छैया ठीक दुपहरीकी विरियां ।। एक दोहनी मथत दूध एक बाँटत फल चबीना एकन कर झगर लेत आप अपने कामर के आसन कीने ।।१।। आनंद वेणुबजावत गावत सारंगकी गतिभेदन छाकें खात करछीने ।। धोंधीके प्रभुपर कुसुमवरषत एकपहिरावत पहुपदलनवीने ।।२।। राग सारंग चित्रविचित्र व्रजकी बालमंडली रचना रची सोरची ।। दधि पायस नवनीत मध्यशर्करा पलासपत्रनके पुटनकी पंगति सची ।।१।। नानापकवाननके पनवारे लोनीवारे खाटेखारे व्यंजन अनगिन गणना नाहींबची ।। मुरारीदासप्रभु प्यारी भोजनकर बैठे शेष लेन सहचरी निकट आय ललची ।।२।। राग सारंग मोहन जेंवत छाक सलोनी ।। सखन सहित हुलसे दोऊभैया झपटत करते दोनी ।।१।। आछे आछे फलले चाखत चाहत हरिकी कोनी ।। परमानंदप्रभु

कहत सखनसों पहिलेकरलेहु पोनी ॥२॥ (राग सारंग) सखनसहित हरि जेंवत हैं छाक ॥ प्रेमसहितमैया देपठई हितसों बहुविधकीने पाक ॥१॥ सुबल सुदामा संग सखामिल भोजन रुचिकर खात ॥ ग्वालन करते छाक छुडावत मुखमें मेल सरावत जात ॥२॥ जे सुख कान्ह करत वृंदावन सो सुख तीन लोक विख्यात ॥ सूरस्याम भक्तन वश ऐते ब्रह्म कहावतहैं नंदतात ॥३॥ (राग सारंग) आज दधिमीठो मदनगोपाल ॥ भावत मोहि तिहारो जूंठो चंचल नयन विशाल ॥१॥ आने पात बनाये दोना दिये सबनको बाँट ॥ जिन नहींपायो सुनोरे भैया मेरी हथेरी चाट ॥२॥ बहुत दिनन हम बसे कुमुदवन कृष्ण तिहारे साथ॥ ऐसो स्वाद हम कबहू न चाख्यो सुन गोकुल के नाथ॥३॥ आपन हँसत हँसावत ग्वालन मानस लीलारूप ॥ परमानंदप्रभु हम सब जानत तुम त्रिभुवन के भूप ॥४॥ (राग सारंग) वनमें स्याम चरावत गैया ॥ वृंदावनमें बंसी बजाई बैठे कदंबकी छैया ॥१॥ भांति भांति के भोजन करके पठये यशोमति मैया ॥ सूरदास प्रभु तुम चिरजीयो मेरो कुंवरकन्हैया ॥२॥ (राग सारंग) लालगोपाल हैं आनंदकंद ॥ बैठे हैं कालिंदीके तट बाँटत छाक यशोदा नंद ॥१॥ हँस हँस भोजन करत परस्पर रस बाढ्यो रतिरंग ॥ श्री विट्ठलनाथ गोवर्धनधारी बैठे जेंवत एक हि संग ॥२॥ (राग सारंग) रतनजटित गिरिराज मनोहर ता मध्य रत्न सिंघासन भारी ॥ ता पर जुगलकिशोर बिराजत चहुं दिश फूल फलित फुलवारी ॥१॥ झरना सुभग सरोवर सुंदर ता मध्य कमल फूल रहे भारी ॥ हंस चकोर मोर चातक पीक कीर परेवा भंवर गुंजारी ॥२॥ विविध भांत मेवा रस खोवा साज धर्यो सखियन मिल कंचनथारी॥ हंसत परस्पर प्रेम मुदित मन लेत जात करके मनुहारी ॥३॥ भोग धर्यो प्रीतम प्यारीको श्री जमुनाजल भरी कंचन झारी ॥ पूछत जात आरोगत रुचिसे दास 'निजजन' बलिहारी ॥४॥ (राग सारंग) लीजे लाल छाक हों लाई । भर भर डला सीस पै धरके जसुमति मात पठाई ॥१॥ मूंग भात घृत कढी सलोनी रोटी लीटी अधिक सिकाई ॥ उरदके बडा दहीमें बोरे आदो नीबू सरस खटाई ॥२॥ शाक सुरन बेंगन बथुवा अरु मेथी सरस मृदु चौराई ॥ पूरी

पापडी रुचिर रुचिर कचोरी पापड बडी पकौडी भुजाई ॥३॥ लुचई मोदक मगद जलेबी गुंजा मठडी अधिक पठाई ॥ माखन खीर खांड बासोंदी दधि शिखरण ओट्यो दूध मलाई ॥४॥ भोजन बिंजन सब हि मनोहर बीरी सोंधे सरस बंधाई ॥ 'श्री विट्ठल गिरिधरन' आरोगत भक्तनके सुखदाई ॥५॥ राग सारंग मैया इह दे छाक पठाई ॥ बडे बडे माट बडे डबरान में अपने सिर धर ल्याई ॥१॥ गुंजा माट जलेबी लडुआ बहुर्यो बहुत मिठाई ॥ सद्य दूध दोहन कीनो हे ऊपर बहुत मलाई ॥२॥ बेसन के बिंजन बहुतेरे संधानो सुखदाई॥ जोर मंडली जेबन बैठे हृषीकेस बलि जाई ॥३॥ राग सारंग कवन बन जैबौ भैया ! आजु । कहत गोविंद सुनों रे गोपौ करहु गवन कौ साजु ॥ ऐसौ कौन चतुर नँद-नंदन ! जो जाने रस-रीति । तहां चलहु जहां हरखि खेलिये अरु उपजै मन-प्रीति ॥ पूरे बेनु विखान महुवरि छीके कंध चढाई । रोटी भात दह्यौ भरि भोजन अरू आगे दै गांइ ॥ ठौर-ठौर कूक देत हैं प्रहसित आए जमना-तीर। परमानंद प्रभु आनंद रूपी राम-कृष्ण दोउ बीर ॥ राग सारंग सीतल सदन परम रुचिकारी तहीं जेंमत श्रीगिरिवरधारी ॥ मधुमेवा दधि ओदन बिंजन सीतल परम मधुर सुखकारी ॥१॥ सीतल नीर सुगंध सुवासित अपने करले प्यावत प्यारी ॥ कृष्णदास प्रभु प्यारी की छबि पर तन मन धन कीनो बलिहारी॥२॥ राग सारंग भोजन करत नन्दलाल संग लिये ग्वालबाल करत हे ख्याल बैठे बंसीवट छैया ॥ पातनपें धर्यो भात दधि सान लिये हाथ मांगत मुसक्यात जात सांवरे कन्हैया ॥१॥ बिंजन सब भांति भांति अनुपम अति कही न जात रुचिसों करी खात मुदित पठइ मैया ॥ छीत-स्वामी गिरिधर पिया मधि मंडली बिच शोभित सबको मन मोहे निरखि निरखि लेत बलैया॥२॥ राग सारंग छाक लै जाहु री मेरी माई जहाँ री मिलै मेरौ कुंवर कन्हाई इह मोदक पकवान मिठाई खीर संजावलि अधिक बनाई आनिहु खिचरी बहुत संधाने पापर सेकि धर्यो गुन लाई । पूप सस्कुली पूरी दधि ओदन बहुत जु रुचि करि खाई ॥ दूरहि तें देखे बलदाऊ देखि कन्हैया छाक है आई । 'परमानंद' मन की सब जानी ऐसी मैया की हौं लेऊँ बलाई ॥

राग सारंग सुबल पठाई दियो सुधि लैन अजहुँ छाक किनि आई । स्रमित भई बिरमी नेकु छहियां ग्वारि कदम-तर पाई ।। क्यों री ! कबके मधु चाहत हैं जसुमति कुँवर कन्हाई ।। जीभ दाबि द्रिग भरि लीनेहैं उनिहीं पाँइनि धाई ।। सखा-वृंद अंचलु फेरत हैं आगे गई बधाई । 'परमानंद' बलि-बलि पूछनि पर कहि कहा व्यंजन लाई ।। राग सारंग स्यामलाल आऔ हो आई छाक सलौनी । डला लाल के घर तें आयो मारग में द्वै दौनी ।। सियरे भए स्वाद नहीं पैयतु रसके गएं रसाइनि नहीं हौनी 'परमानंद' छकहारी बाँकी टेरति टेर सलौनी ।। राग सारंग अकेली वन-वन डोलि रही । गाँइ चरावत कहां रहे हरि काहूने न कही ।। बडे सवारे निकसे घर तें पठ्यो माई दही। भूख लगी ह्वै है लालन कों दुपहर जाम सही ।। इतनौ वचन सुनत मनमोहन नागरि-बिथा लही। 'परमानंददास' कौ ठाकुर गोकुल रति निबही।। राग सारंग छाक खात गोवर्द्धन ऊपर । वह बापै वो वा ऊपर झपटत गिरनि न देत भू पर ।। आछे मीठे कहि-कहि नाचत लै-लै कर तें भाजत । सुबल सुबाहु तोक श्रीदामा ग्वाल-मंडली राजत ।। विविध केलि करत मनभाई 'परमानंद' हि दीनी । रहसि मन मीनी ।। राग सारंग दुहि-दुहि ल्यावति धौरी गैया । कमल-नयन कों अति भावतु है मथि-मथि प्यावति घैया ।। हँसि-हँसि ग्वाल कहत सब बातें सुनु गोकुल के रैया ! ऐसौ स्वाद कबहुं न चखायो अपनी सौंह कन्हैया ! मोहन! भूख अधिक जो लागी छाक बाँटि लेहु भैया ! 'परमानंददास' कौं दीजे फुनि - फुनि लेत बलैया ।। राग सारंग जेंवत मोहनवरकी छैयां दुपहरीकी बिरियां ।। मथत दोहनी दूध एक बांटत फल चबेना एक झगरि लेत अपनी अपनी कामरके आसनियां ।।१।। रससों बेनु बजावे गावे सारगं राग तान रंग लेत मोर मुकटु सीस दीने ।। 'रामदास' ग्वालबाल मंडल मधि बार बार वारत है सकल मिलि पहोपन दल बीने ।।२।। राग सारंग छाक ग्वालिनी लाल ढिंग लाई ।। बंसीवट बैठे दोऊ भाई उपमा कही न जाई ।।१।। मोर मुकुट मकराकृत कुंडल उर वनमाल सोहाई ।। संग सखा गायन पाछे तें बोल लिये दोऊ भाई ।।२।। ग्वाल मंडली कर मनमोहन

जेंवत सुखदाई ॥ कोऊ लूटत कोऊ खात परस्पर बात करत मनभाई ॥३॥ देखी ग्वालिनी हु सुख पावत रही ठगी मुरझाई ॥ बार बार बलराम स्याम पै रामदास बलि जाई ॥४॥ राग सारंग घरतें छाक ले आई ग्वालन ॥ दूरतें ग्वालिन मोहन देखी नेनन सेन बुलाई ॥१॥ सखा संग कोऊ नहीं स्यामके गये चरावन गाई ॥ जब एकान्त देख मोहनको ग्वालिनी मन मुसिकाई ॥२॥ दोऊ हिलमिल छाक अरोगत बैठ कदमकी छांही ॥ रहस्य निकुंज भवनकी लीला कापे बरनी न जाई ॥३॥ सिव सनकादिक नारद सारद उनहु न देत दिखाई ॥ 'हरिनारायण स्यामदास' के प्रभु माई गोपी महा निधि पाई ॥४॥ राग सारंग ग्वालिन घरतें कौन बुलाई ॥ जाय जिमावो अपने पतिको यहां क्योंरी तुम आई ॥१॥ यह मर्यादा वेदकी नाही करो अपनी मन भाई ॥ निज पति छांड औरनको चाहत यह तुम कौन बताई ॥२॥ दीन बचन ग्वालिन बोली हम सुत पति छांडके आई ॥ जान्यो मनमोहन भूखे हैं अखिल लोकके राई ॥३॥ वचन सुनत मोहन मुसकाने कर गहि हृदे लगाई ॥ दोऊ संग मिली छाक अरोगत 'दास' निरख बलि जाई ॥४॥ राग सारंग हरिको ग्वालिन भोजन लाई ॥ बैठे जहां गोवर्धन ऊपर कान्ह कुंवर सुखदाई ॥१॥ सखा मध्यतें निकसे मोहन ग्वालिन निकट बुलाई ॥ मिलि एकान्त जेंवत रसबससों 'कुंभनदास'बलि जाई ॥२॥ राग सारंग भोजन करत स्याम कुंजनमें ॥ ग्वालन छाक अवार भई तो हु सकुच न आई मनमें ॥१॥ जमुना जल भरते भई देरी चली थार ले दोऊ करनमें ॥ सुंदर पाक सिद्ध कर लाई लेहो लाल भुजनमें ॥२॥ भली भांति भोजन करवायो जल भर दियो घटनमें ॥ ओक मांड जल पीवत 'रसिकराय' दई सेनन नेननमें ॥३॥ राग सारंग हरिको जिवावत विट्ठलनाथ ॥ मध्य बैठे मनमोहन राजत सखा मंडली साथ ॥१॥ खट रस विंजन आदि सलोने कोर देत है हाथ ॥ 'रामदास' यह लीला निरखत नेनन किये सनाथ ॥२॥ राग सारंग अब के फेर लीजो सुंदर पाक सलोने ॥ मीठो भात मधुर दधि मीठे मीठो सिखरन आदि अलोने ॥१॥ मिश्री रोटी माखन ताजो कीनो आज बिलोने ॥ 'रामदास' प्रभु आज छाकमें केतेक

कोतिक होने ।।२।। राग सारंग कहो तो कदम तर अब ही छाक ले आऊं ।। बहुत अवार भई मनमोहन सांझ होत अब विनति कर घर जाऊं ।।१।। जसोमति पूछत लाल कहां है उनको कहा बताऊं ।। कहियो जाय हम बसे कुमुदवन बहुत भांत तृण जल सुख पायो यांही गाय चराऊं ।।२।। ग्वालिन जाय कही जसुमति सों लावो छाक लालको पहोंचाऊं ।। पूछत जननी लाल कहां है तब कही लाल जाय बसे कुमुदवन उर आनंद न समाऊं ।।३।। ले गई छाक स्याम आगे धर हरि मुसकाय कहत बलदाऊ ।। आवो भैया सब छाक खाय अब सब गायन बछरन वन छोडो चरेंगी जाय बनलोऊ ।।४।। बैठे लाल परोसी पातर खात खवावत हँसत सखाऊं ।। जूठो कौर मुख देत स्याम के 'रामदास' या वदन कमल पर निरख निरख बलि जाऊं ।।५।। राग सारंग मंडल मधि छैयां कदमकी छाक अरोगत रुचि उपजाई ।। विंजन बांट सबनको दीने अद्भुत स्वाद मुख बरन्यो न जाई ।।१।। जानत वार जेबनकी मैया ताही बेर दई छाक पठाई ।। तेसीय भूख लागी तेसी ले दीनी हाथ छाक ले आई ।।२।। अधिक अघाने कहत सखा सब एसो स्वाद हम कब हु न पायो ।। 'चत्रभुज' प्रभु गिरिधरके जेंवत आनंद मन हिये हरख बढायो।।३।। राग सारंग श्रीवृंदावन नवनिकुंज भ्रमर भ्रमत करत गुंज कुसुम पुंज ललित लता गहवर वन नीको ।। जमुनातीर अंजन खर हरे गाय चरवेको प्यारीको धाम लाल भावतोहे जीको ।।१।। रूचि उपजत छाक खात सखन सहित अति अघात परम मुदित फिर खात पठई मैया नीको ।। कृष्णदास गिरिधरको कौतुक देख सुरपुर विमान कुसुमवृष्टि करत और या सुखतें फीको ।।२।। राग सारंग कौन बन जैहो भैया आज ।। कहत गोपाल सुनोहो बालक करो गमन को साज ।।१।। ऐसो चतुर कौन नन्दनन्दन जो जाने रस रीति ।। तहां चलो जहां हरखि खेलिये अरु उपजे मन प्रीति ।।२।। पूरे बेनु बखान महुवरी छींक कंध चढाये ।। रोटी भात दही भरि भोजन और आगे दे ग्वाल गाये ।।३।। ठौर ठौर कूकैं दे प्रहसत आये जमुना तीर ।। 'परमानन्द' प्रभु आनन्द रूप राम कृष्ण दोऊ बीर ।।४।। राग सारंग मंडल जोर जोर

बेठोरे भैया सब मिल भोजन कीजे ।। वीजन मन रंजन ले आई रंगीली ग्वालन बदननिरख जीजे ।।१।। आपुन खात खवावत ग्वालन फिर चाखत रसिकराय बदन निरखनअघैजे ।। हरिनारायण स्यामदासके प्रभुकी लीला परमत बाड़ी जाय जमुना जल पीजे ।।३।। राग सारंग छाककों भई अवेर आई नांहे छक हारी मोहें लागी भुक भारी केसके रहोंगो ।। ऐगैयां मेरे मनकी छैयां दोहेगे बलदाऊ भैया दुध पीय रहुंगो।।१।। बावा सों कहा कहों मैया सुधभुल गई मथत हे दूध मधुर माखन होहु चहुंगो ।। श्रीविट्ठल गिरधरन लाल कहे दाव मेरो पर्‍योहे तब सोही सोही करुंगो ।।२।। राग सारंग ऐ ग्वाल मंडली में भोजन करत गुपाल ।। पठई छाक जसोधामैया बिजन बोहत रसाल ।।१।। मधुमेवा पकवान मिठाई लाई सुन्दर बाल ।। खात खवावत हसत परसपर तारी दे नंदलाल।।२।। रूच ऊपजत तब बतियां मीठी करत सबे बिध ख्याल ।। रसिक सिरोमणी गिरि की छैयां राजत ऊरबनमाल।।३।। राग सारंग भोजन करत नंदलाल संगलियेग्वाल बाल करतहें ख्याल बेठे सीतल छैया ।। पातन पर धरत भात दधि सीखरन लिये हाथ मांगत मुसक्यात जात सांवरोकन्हैया।।१।। बिजन बहो भांत भांत अनुपम छबिकहीनजात रूचसो लेत फिर खात हीर्देसोपठई मैया ।। छीतस्वामीगिरवर धर मंडल मध्य बिच सोहत सबन को मन मोहत मोहन निरख लेत बलैया ।।२।। राग सारंग वृन्दावन नवन कुंज भमर भ्रमत करत गुंज कुसम पुंज ललित लता गहेबर बन नीको ।। जमुनातीर आजन खरीःहरी गाय चखेकोः प्यारी को धाम लाल भांवतो हे जीको ।।१।। रूच ऊपजत छाक खात सखन सहेत अत अघात प्रमुदित मन होत आनंद क्योंन परत हीयको ।। कृष्णदास गिरधरको कोटिक सुरपुर विमान कुसम वृष्टि करें ओर या सुखते फीको ।।२।। राग सारंग अहो घर घर तें आई छाक ।। खाटे मीठे ओर सलोने बिविध भांतके पाक ।।१।। मंडल रचना कर जमुना तट सघन कंदब की छांह ।। गोपीग्वाल सकल मिल जेवत मुख ही सराहत जात ।।२।। बांटली मोहन दोऊ भैया करः दोना अत ही सीहात ।।३।। टेंटी साक संधानो रोटी गोरस सरस महेरी ।। कुमनदास गिरधर

लिपटत नाचत देदे फेरी ॥४॥ राग सारंग मोहन छाक बांटत जहां॥ सुबल सुबाहो श्रीदामा टेरत कर कर ऊंची बाह ॥१॥ गोवर्धनकी सिखर पर बेठे तरु कदंब की छाह ॥ हंस हंस भोजन करत परसपर ले लेकरतल मांह॥२॥ सिवसनकादीक से निज सेवक या सुख कों ललचाय ॥ सूरदास गिरधरकी जूठन मांगे हंस हंस खाय ॥३॥ राग सारंग चलतमें लागत छाक सुहाई ॥ संजो वटमें केसो लागत सुख बिजनसकल मिठाई ॥१॥ अति आनंद नंदजुकी घरनि धरत बनाय बनाई ॥ बालकेहेत चलो अति आतुर बेगहो पोचो जाई ॥२॥ निकसे ग्वाल कंधन पर कावर सुख लागतहें माई ॥ श्रीविठ्ठल गिरधर दाऊपे बेग पोहोचो जाई ॥३॥ राग सारंग अकेली बन बन डोल रही ॥ गाय चरावत कहां रहे हरि काहु ने न कही ॥१॥ बड़े सवारे निकसे घरतें पठयहे माय दई ॥ मुख लागी हेहे लालनकों दुपहरी घाम सई ॥२॥ इतनो बचनसुनत मनमोहन नागर वृथा लई॥ परमानंद दासको ठाकुर गोकुल रतनबई ॥३॥ राग सारंग सुबल गिरधारी चढत टेरत ॥ आवो बेग चतुर छक हारी गिरधर पेंडो हेरत ॥१॥ भई अवार भुख लागी जब तबही ऊपरना फेरत ॥ कुम्भनदास ओसर पोची रस में दान निवेरत ॥२॥ राग सारंग जुगल रस भरे भोजन करत कुंज में तरन तनया तीर अत सुहायो॥ लेत झुक झुक कोर झपट दोऊ हाथतें हसत बहु भांत मन करत भायो॥१॥ करत मनुहार बहो भात मिलः सुन्दरीः लिजीये लाल बहो बिध बनायो ॥ दिजीये कृपा कर रसिक के दासको सेस ये परम फल मुनिन गायो॥२॥ राग सारंग प्राणप्यारी प्राणनाथ दोऊ संग मिल करत भोजन सघन कुंजमें रस भरे ॥ कनक पात्रन मध्य बिविध बिजन सजेः सरस पकवान ओदन आद घृत बरें ॥१॥ खीरनवनीत दधि दुध सिखरन आदः दार ओदन कडी बड़ी पापरधरे ॥ रसिक को दास तहां करत मनुहार बहोः लेत दोऊ कोर छबि निरखत मनमथ टरें ॥२॥ देख चल सखी दोऊ ऊसीर के मेहेलमें करत भोजन अंस भुजन दीये ॥ परसपर देत दोऊ कोर मुख मधुर अति हसत ऊरलसत रति रसन किये ॥१॥ फेलरह्यो मधुर सौरभ सघन कुंजमेंः फुल रहे फुल बहो रंग

किये ।। रसिक को दास कहां कहे देखे बने रसिक दोऊ रस भरे बसो हीये ।।२।।
राग सारंग आज वृन्दाविपिन कुंज अद्भुत नई ।। परम सितल सुख स्यामसों भीत तहां माधुरी मधुर ओर पीत फुलन छई ।।१।। बिविध कदली खंभ झुमका झुक रहे: मधुप गुजांरसुन कोकीला धुन ठई ।। तहाँ राजत वृषभान की लाड़ली मनो घनस्यामढीग ऊलही सोभाजई ।।२।। तरन तनया तीरधीर समीर जहां सुनत ब्रजब्रधु अतहीं हीये हरखत भई ।। नंददासनिनाथ ओर छबि को कहे निरख सोभा नैनपंगुगत व्हे गई ।।३।। राग सारंग छाकलेंन घर ग्वाल पठाये ।। कहीयो भूखलागी है भैया अति आतुर हम आये ।।१।। बोल लिये जसुमति रोहिणी पनवारो सब साज। सावधान जैयो मारग में दृष्टी न लागे आज ।।२।। पहोचेजाय पारोसोली में देखे ग्वाल गोपाल भैया सुनो छाक आई आनंद सब ग्वाल ।।३।। नवल प्रीया प्रीतम दोऊ विलसत नवमंगल गावत ब्रजबाला ।। परमानंददास तीहे ओसर निरखत ओर धुरि त्रिय जाला ।।४।।
राग सारंग भोजन के भातिन की क्रान्ति कछु कही न जात ।। भांति भांति राखे पनवारे परोसिके मंजुल मृदुल मधु मोदक सलोने साद सरस रस राखे रस के ।।१।। अरस परस कछु जेमत रसिकवर सब रह्यो वृंदाविपिन बरसिकें।। कोर के उठायवेते कर ना कह्यो करत विवस है जात मुख माधुरी दरसिकें।।२।। राग सारंग वृज ब्यौहार निरखि नैनन विधि को अभिमान गयो । गोपी ग्वाल गोसुत परचारग हू हों क्यों न भयो ।। फल अंगुरिन अंगुरिन बीच राखे ओदन माज दयो । आपुन खात खवावत ग्वालन वाल विनोद ठयो ।। अहो भाग्य महोभाग्य नन्दजू तप को फल जू लीयो ।। ललिता ललित सूर के प्रभू की व्रजजन गाय जीयो ।।२।।

## फल-फलारी के पद

राग सारंग पक्वखजूरजंबूबदरीफल लेहो काछन टेरीद्वार ।। लरका यूथसंग बलमोहन चोके करत विहार।।१।। सुंदर कर जननीकेनोंदीनों ले धाये तब नंदकुमार।। हीरारत्ननपूरीत भाजन ऐसे परमउदार ।।२।। उरसों लगाय खातखातचले मीठे परम रसाल ।। जूठी गुठली मारत गोविंद के हँसत हँसावत

ग्वाल ॥३॥ राग सारंग व्रजमें काछनी बेचन आई ॥ आनउतारी नंदगृह आंगन ओढी फलन सुहाई ॥१॥ ले दौरे हरिपेट अंजुली शुभकर कुंवरकन्हाई ॥ डारतही मुक्ता फल ह्वे गये यशुमति मनमुसकाई ॥२॥ जे हरि पदारथ दाता फल वांछित न अघाई ॥ परमानंद याको भागबडोहै विधिसोंकहा वस्याई ॥३॥ राग सारंग कोऊ माई आंबबेचनआई ॥ टेर सुनत मोहन उठधाये भीतरभवन बुलाई॥१॥ मैयामोहि आंब लेदेरी संगसखा बलभाई॥ परमानंद यशोमति आनदिये खाये कुंवरकन्हाई ॥२॥ राग सारंग कोऊ माई बेर बेचन आई ॥ सुनी टेर नंदरावर में भीतर भवन बुलाई॥१॥ सूखत धान पर्यो आंगनमें कर अंजुली बनाई ॥ ठमकठमक चलत अपने रंग यशोमति लेतबलाई ॥२॥ लये उठाय चुचकारहियो भर मुख चुंबत मुसकाई ॥ परमानंद यशोमति आनदिये खाये कुंवरकन्हाई ॥३॥ राग सारंग खरबूजा मिश्री आरोगत रविजा तट कुंजनमें गिरिधर ॥ ललिताचन्द्रभगा चन्द्रावली लावत डला डलैया भर भर ॥१॥ कोउ गोवत कोउ बेनु बजावत कोउ ढोरत विजना ले ले कर ॥ कोउ करत मनुहार जोर कर कोउ खवावत हसि वल्लभवर ॥२॥ कोउ लावत कर तोर कुसुमकली कोउ गुहत वनदाम बैठकर ॥ कोउ पहेरावत कोउ मुख निरखत कोउ देखावत ले दर्पण कर ॥३॥ कोउ आवत कोउ फिरत कुंजनमें कोउ बातें करत परस्पर ॥ 'कृष्णदास' ठाडो अवलोकत लेत बलैया वार फेर कर ॥४॥ राग सारंग जमुना तट कुंजनमें गिरिधर आरोगत खरबूजा बुरा ॥ ललितादिक गावत और बजावत लेकर बीन पखावज तंबुरा ॥१॥ भामिनी मेवा भर डलियनमें लाई पहरे चटकीलो चुरा ॥ 'कृष्णदास' प्रभु बनठन सुंदरि आई गुंथि कुसुम सिर जुरा ॥२॥ राग मल्हार ल्याय किन देरी मैया मोको एक गठया आंबकी ॥ नंद हँसत मन मुदित जसोदा सुन सुन बतियां श्याम की ॥१॥ तज खोवा बांसोदी मेवा बलिहारी या नाम की ॥ अटकत मांगत मिसी रोटी भुरकि हें सो मेरे काम की॥२॥ धन धन ब्रज धन धन गोपीजन ब्रज समीप नंद गाम की ॥ सुख विलसत हुलसत मुख निरखत सब संपत सूर स्याम की ॥३॥ राग सारंग भावे मोहे गुड़ गांडें (शेरडी)

अरु बेर ॥ और भावे मोहे सेंद कचरीया लाये नंदजु हेर ॥१॥ मधु मेवा पकवान मिठाई और बिंजन की ढेर॥ परमानन्ददास को ठाकुर पील्ला लायो घेर ॥२॥ राग सारंग चिकसोली में चना चुराये ॥ गारी दे दौड़ी रखवारन ग्वाल सहित गोपाल भजाये ॥१॥ हरे बुट दाबे बगल में स्वास भरे गहवर बन आये॥ नागरिया बैठी छक हारिन छील छील नंद लाल खवाये॥२॥

## कुंज भोजन के पद

राग सारंग मिल जेंवत लाडिलीलाल दुहुंकर व्यंजन चारु सबै सरसें ॥ करकंपत हाथते छूट परे कबहुं ग्रास मुखसों परसें ॥१॥ हठके मनमोहन हार परे सखी हाथ जिमावन कों तरसें ॥ सखी माधुरी कुंजनमें बरसें ॥२॥ सखीसोंझलियेचहुंओरखरी निरखेहरखे दरसेपरसें ॥ वहसुखसिंधुकही न परे सब सखियन तहांहरिवंशलसें ॥३॥ राग सारंग बैठे लाल कुंजनमें जो पाऊं ॥ स्यामास्याम भावती जोरी अपने हाथ जिमाऊं ॥१॥ चंदन चर्चूं पहोपकी माला हरख हरख पहराऊं ॥ श्रीभट देत पानकी बीरी चरणकमल चितलाऊं ॥२॥ राग सारंग भोजन कुंजभवनमें भांवते करत भले नानाभायनसों ॥ अरसपरस कौर मधुररस देत समीर चलें चायनसों ॥१॥ तब हट करत हठीली हठसों पिय पसरत दृग पायनसों ॥ करत पानरस रूपमाधुरी हिलमिल चलत सुभायनसों ॥२॥ राग सारंग भोजन करत भांवते जियके नवलनिकुंज महल में ॥ अरसपरस दोऊ खात खवावत जोसुख उपजत लोचन हियमें ॥१॥ कीनो कछुक मनोरथ मोहन हेत सवार ग्रास मुख तियके ॥ हँस चितयौ जब रूपमाधुरी रहि गयो कोर हाथही पियके॥२॥ राग सारंग जुगल रस भरे भोजन करत कुंज में तरनि तनया तीर अति सुहायो ॥ लेत झुक झुक कौर झपटी दोऊ हाथ ते बहु भांति मन करत लायौ॥१॥ करत मनुहार बहु भांति मिलि सुन्दरी लीजिये लाल बहुविध बनायो॥ दीजिये कृपाकरि रसिक के दास को सेस यह परम फल मुनिन गायो॥२॥ राग सारंग श्रीवृन्दावन नवनिकुंज भ्रमर भ्रमत करत गुंज कुसुम पुंज

ललित लता गहवर वन नीको ॥ जमुनातीर आंजनखर हरे गाय चरवेको प्यारीको धाम लाल भावतहे जीको ॥१॥ रुचि उपजत छाक खात सखन सहित अति अघात परम मुदित फेर खात पठई मैया नीको ॥ कृष्णदास गिरिधरको कौतुक सुरपुर विमान कुसुम वृष्टि करत ओर या सुखतें फीको ॥२॥ राग सारंग अहो सुबल अहो श्रीदामा परिवृत अर्जुन भोज मधुमंगल तोकबहु ओर कछु लीजे ॥ चल भैया भावत सो लेहो देहो सबहिन को सोंज रही ब्होत बांटि ग्वाल को दीजे ॥१॥ अबहि ओद करत पान अति अघान रुचि न रही अचवन करी पान लेहो यह आज्ञा कीजे॥ कृष्णदास प्रभु गिरिधर अब बैठे श्रम होत पान खाय कुंजन में नेक लोटि लीजे ॥२॥ राग सारंग कुंज में बैठे जुगल-किशोर । अरस-परस दोउ खात खवावत रूचि सों दै-दै कौर ॥ ललितादिक सब सखी परोसतिं लोचन कियें चकोर । मधु मेवा पकवान मिठाई लावति हैं चहुँओर ॥ हास बिलास बिविध रस पीवत मधुर बचन चितचोर । तन मन धन बारति 'परमानंद' करि अंचल की छोर ॥ राग देवगंधार कुंज में जेंवत स्यामास्याम । आस-पास मालती माधवी बिबिध कुसुम बन्यो धाम॥ पय पकवान मिठाई मेवा भरि-भरि थाल जु पाए। रुचि सों परस्पर खात खवावत जुगल रूप मन भाए ॥ सखी एक सनमुख भई अचवति जमुनाजल झारी लै हाथ । बीरी देति सम्हारि दुहुँनि मुख उर आनंद न समात ॥ बैठे जाइ कुसुम-सिज्जा पर दंपति सब सुख-रास । बिविध बिहार किये मन भाए बलि 'परमानंददास' ॥ राग सारंग जुगल रस भरे भोजन करत कुंज में तरनि तनया तीर अति सुहायो । लेत झुक झुक कोर झपटि दोऊ हाथ तें बोहों भांति मन करत लायो॥२॥ करत मनुहार बहु भांति मिलि सुंदरी लीजिये लाल बहुविध बनायो। दीजिये कृपा करि रसिक के दास को शेष यह परम फल मुनिन गायो ॥२॥ राग सारंग श्रीगोवरधनगिरि कंदरा में भोजन करत है पिय प्यारी । आसपास जुवति सब राजत देत परस्पर कर मनुहारी॥१॥ सखिन के भावकी सामग्री लेत श्रीललिता निहार निहारी । कुंभनदास प्रभु लाल गिरिधर को देत श्रीराधा प्यारी ॥२॥ राग सारंग धोयों

सतुआके संग जेवत बेजरकी रोटी नंदलाल ॥ टेंटी साक संधानो मोदक लाई डलियन भर व्रजबाल ॥१॥ मेवा अमरस गोरस बूरा दधि ओदन पकवान रसाल । 'कृष्णदास' प्रभु कुंज भवनमें निरख अखियां भई निहाल ॥२॥

राग सारंग व्रजनारी घर घरतें आईं सतुवा भोग धरनको गिरिधर । बहोत सुगंध डार ता भीतर कर कर मोदक लाई थार भर ॥१॥ बैठे जहां निकुंजभवनमें श्री व्रजराज कुंवर वर कुंवरी ॥ 'कृष्णदास' प्रभु प्रेममुदित दोऊ आरोगत पिय प्यारी ॥२॥

राग सारंग जानि मेष संक्राति श्री विठ्ठल धरत भोग सतुवाको गिरिधर । धूप दीप तुलसी संखोदक कर संकल्प दान दे द्विजवर ॥१॥ मेवा मोदक ले कर अपने अरोगत हैं स्याम सुन्दर वर । 'कृष्णदास' प्रभु कुंज भवनमें अति आनंद भरे धरनिधर ॥२॥

राग सारंग धौर्यो सतुवा रोटी संग अरोगत व्रजराजकुमार । मधुर मिष्ट सुंदर अति गाढो लाई परम चतुर व्रजनार ॥१॥ सखी सहचरी ले कर अपने ढोरत विजन वदन निहार । 'कृष्णदास' प्रभु कुंज भवनमें जेवत उपजी रुचि अपार ॥२॥

राग सारंग कुंजन कुंजन माधो डोलन । ग्वाल बाल संग खेलत मोहन बोलत मधुरे बोलन ॥१॥ लेले नाम बुलावत गायन धोरी धुमर मदन गोपाल दूरि ग्वाल जान जीन । देहुं धरो सबमिल ग्वाल ॥२॥ बहोत बेर भई है बहोरि भुखे हे नंदलाल । जन गोविन्द छाक ले आयो बाट देहो वृजलाल ॥३॥

राग सारंग भोजन करत नवल पिय प्यारी । नवल नेह नवकुंज सिंघासन नवरंग बैठे रसिक बिहारी ॥१॥ नवलथार नवलखटरस बिंजन परोसत नवल सखि ललितारी ॥ भ्रकुटी अरस परस चितवन पर परमानंद दास बलिहारी ॥२॥

राग सारंग चलि देखि सखि विधि आजभली नवकुंजन में मिली जें मतरी ॥ पिय हाथ हठीली कीजे मनको पंगु शीश धरे नहीं चितवत ही ॥१॥ ललितादि सखी करजोरी रही अरु करे विनति नहीं हितवतरी ॥ यह सुख माधुरी जो न लहे व्रथादिन योही वितवतरी ॥२॥

राग सारंग भोजन करत नंदलाल संग लीये ग्वालबाल करत हें ख्याल बैठे बंसीवट छैया । पातनपें धर्यो भात दधि सानलीये हाथ मांगत मुसक्यात जात सांवरे कन्हैया ॥१॥

बिंजन सब भांति भांति अनुपम अति कही न जात रुचसो करी खात मुदित पठई मैया । छीतस्वामी गिरिधर पीना मधि मंडली बिच शोभित सबको मन मोहे निरखी निरखी लेत बलैया ॥२॥

## उसीर छाक के पद

राग सारंग स्यामढाकतर मंडल जोर जोर बेठे अबछाकखात दधीओदन ॥ सघन कुंजमध्य चंदनके महेल रचिउसीर रावटी चहुंओर छीरकत गुलाब जलसोदन ॥१॥ आसपास मिल बेठेसखासब रुचिरडला भरे प्रेम प्रमोदन । परमानंद प्रभुगोपाल अद्भुतगुन रूपरसाल आरोगत मंडल मध्य सुबल सुगोधन ॥२॥ राग सारंग श्यामढाकतर छाक आरोगत मंडलीरुची प्रेम सुखकारी ॥ उसीर महेल मध्य कुसुमरावटी बनी सघनकुंजलतामें राजत पियाप्यारीकेलि मनुहारी ॥१॥ जाई जुई चमेली बेलि रायबेलि कदम सिखंडी मध्य गुलाब फूलरी॥ व्रजाधीश सुख विलास जेंवत हरि मंडल मध्यतामें समीप ठाडी ढोरत बींजनारी ॥२॥ राग सारंग ए ग्वाल मंडली जोर राजे कदंबखंडी मधि दुपहरीकी बिरियां बटतररावटी रची बनाय उसीरकी ॥ खटरस व्यंजन अद्भुत मनरंजन पठये नंदरानी आपडलाधरे सीस आवतकल किंकनी मंजीरकी ॥१॥ सींचेप्यासे खसखानेत्रिविध समीर बहत अतर गुलाबसींचे चंदन के पंक रपटी करकी ॥ छुटतफुहारेफूंही कुसुमन बनमाल गुंही जेंवत घनस्याम सुंदर धोंधी करत बींजनाकरके समीर की ॥२॥ राग सारंग उसीर महल में बिराजे मंडल मध्य मोहनछाकखात ॥ ओदनरोटी जंघाधरेलाल शाकपाक फल रसाल सीलापर गोरसकेपात ॥१॥ चहुंओर मेंघज्यों छूटत फुहारे फुंहीकबहु सुबलगोद हसिढरजात ॥ नंददासप्रभु स्यामढाकतर आपुन हँसत हँसावत ग्वालन सरस बनावत बात ॥२॥ राग सारंग सीतल सदनमें जेंवत मोहनग्वाल मंडली लेसंग जोर ॥ सीतल छांहसीतल बिंजनभाव सीतलतन मुदीतहोतलेतकोर ॥१॥ सीतल सुगंधमंद बहत वायुसीतल अंग अरगजा लेप चंदन खोर ॥ सीतल होत नयन सीत अंग अंग चेन गिरिधर पर कुंभनदास डारत तृनतोर ॥२॥ राग सारंग लाडीलोछाकखात

बनमांह ॥ अपने संग के सखन बुलावत करकर ऊंचीबांह ॥१॥ मेरेरी सनमुखनंदनंदन बेठ कदंबकीछांह ॥ अति कोमल लटकत उरऊपर सघन पांतकीलोंह ॥२॥ आइरी देखतुं उनको, मोहे अचंभो आवे ॥ श्रीविठ्ठल गिरिधरनलालकी मनसगरी सुधि लावे ॥३॥ राग सारंग पीत उपरना वारे ढोटा कबहुकी टेरत ग्वालनी ॥ छाक बनायलेआई विविध विध कालिंदीनी तीर उपहारनी ॥१॥ कहा लेओगे एसीगाय चरावेमें जाय समालोकयोंन एसी छकहारनी ॥ रसिक प्रीतम तुमरूप बिमोही कुंजनकुंज बिहारनी ॥२॥ राग सारंग यमुना तट भोजन करत गोपाल ॥ विविध भांतदे पठयो यशोमति व्यंजन बहोत रसाल ॥१॥ ग्वालमंडली मध्य बिराजत हँसत हँसावत ग्वाल ॥ कमल नयन मुसकाय मंदहँस करत परस्पर ख्याल ॥२॥ कोउ ब्यार दुरावत ठाडी कोउ गावतगीत रसाल ॥ नंददास तहां यह सुख निरखत अखियां होत निहाल ॥३॥ राग सारंग बडो मेवा एक व्रजमें टेंटी ॥ जाको होतहे साग संधानो ओर बेझरकी रोटी ॥१॥ भरिभरिडला जब पीवनलागी बडेगोपकी बेटी ॥ कुंभनदास प्रभु गोवर्धनधर भुजओढनीलपेटी ॥२॥ राग सारंग छाक खाय बंसीबट फिर चले यमुना तट तहां जाय धोवत मुख धीर समीरन ॥ फैंटा खोल पोंछत हाथ सखा सब लिये साथ चले जात दावानल खात मुख बीरन ॥१॥ गाय बच्छ चरत जहाँ कुसुमनकी लता तहाँ बैठे जाय द्रुमनबीच बोलत पीक कीरन ॥ चत्रभुज प्रभु सखनसंग गावत सारंग राग धुनसुन मृग आये घेर सुधन रही शरीरन ॥२॥ राग सारंग तपन लाग्यो धाम परत अति धूप भैया कहु छैया शीतल देखो॥ भोजन को भइ वार लागीहे भूख भारी मेरी और तुम पेखो ॥१॥ वरकी छैयां दुपहरीकी विरियां गेया सिमिट सबही जहां आवे ॥ नंददास प्रभु कहत सखनसो सोइ ठोर मोहि भावे ॥२॥ राग सारंग आज मेरे मिल बैठे महेमान ॥ चंदन भवन मांझ सीतल व्यंजन धरे गोपीजन आन ॥१॥ धन्य भाग्य हे आज हमारे चंदन धर्यो है सान॥ परम हुल्लास भई गोपीजन गावत जन कल्यान ॥२॥ राग सारंग शोभीत हैं अंग अंग चंदन ॥ बिंजन साज धरे पनवारे बहु विध सीरे खंडन ॥१॥ पीत पिछोर रंगी केसर रंग जोजो

भावे सोई सोई लेहुन।। सुरदास निरख निरख छबि करों चरन रज वंदन ।।२।। राग सारंग लाई जसोमति मैया भोजन कीजे लाल ।। विंजन धरे चटपटे मीठे लीजे हो सुंदरलाल ।।१।। चंदन भवन बनाय स्वच्छ कर कर दिठोंना भाल ।। परमानंद प्रभु ललित त्रिभंगी बहत चहूंदिस ख्याल ।।२।। राग सारंग बन बन टेरत फिरत ग्वालनी लीजे हो सुंदर व्रज नायक ।। आज अवार भुली हों मारग पावत नहि सुखदायक ।।१।। चंदन कुंजमें मिलि बैठे व्रज बालक संग लिये व्रज नायक ।। चतुर बिहारी गिरधारीजु लेहो किन पाछे जेंहों घर सास रीसायक ।।२।। राग सारंग देख चलि सखी दोऊ उसीर के महल में करत भोजन अंसर भुजन दीये ।। परस्पर देत दोऊ कोर मुख मधुर अति हँसत उर लसत रति रसन पीये ।।१।। फेल रह्यो मधुर सौरभ सघन कुंज में फूल रहे फूल बोहोरंग कीये ।। रसिक को दास कहा कहे देखे बने रसिक दोऊ रस भरे बसो हीये ।।२।। राग सारंग तपन लाग्यो घाम परत अति धूप भैया कहं छांह सीतल किन देखो ।। भोजनकुं भई अवार लागी हे भूख भारी मेरी ओर तुम पेखो ।।१।। बरकी छैयां दुपेर की बिरियां गैयां सिमिट सबही जहां आवे।। नंददास प्रभु कहत सखनसों यह ठोर मेरे जीय भावे ।।२।।

## नाव के छाक के पद

राग सारंग गोपी कोन की छकहारी कहा तुमारो नाम ।। आज बोहनी तुम पें करी है भयो तुमारो काम ।।१।। प्रथम नाव तुम ही पें लायो गई बीत जुग जाम ।। कछुक लेहो मिलहे फिर देहें सब सुख सुंदर स्याम ।।२।। नाम चंद्रावली गोप गोधन घर रीठोडा मेरो गाम ।। 'छीत स्वामी' गिरिधरन श्री विट्ठल कहा कोन सो धाम ।।३।। राग सारंग गोपी निपट सयानी लाइ छाक भली बीरियां ।। भूख लागी अब ही देखत री चढि कदम की डरीयाँ ।।१।। बैठी पार आइ हों कब की आई नाव यह घरीयां ।। दीजे बांट छाक घर घर की जब झारी भर धरीयां ।।२।। ग्वाल सखा सब कहत स्याम सों जेवो पायन परीयां ।। छीत स्वामी गिरिधरन श्री विट्ठल बहुत निहोर करीयां ।।३।। राग सारंग ठाढी

गोपी पार पुकारत मल्हा नाव किन लावो ।। कान्ह कुँवर छाक आइ ले बेगि कृपा कर आवो ।।१।। जेष्ठ मास मध्यान भयो हैं लागी भुख बुझावो ।। बडी वार टेरत भई तुम कों काहे को अबेर लगावो ।।२।। कहा देहो उतराई हम कों व्है अति सतर बुलावो ।। 'छीतस्वामी' गिरिधरन श्रीविट्ठल प्रभु पें सब कछु पावो ।।३।। राग सारंग श्री जमुना पुलीन की लोनन बाढी जेमन कों लाइ हरि छाक।। आइ आज सीदोसी धर तें बैठन कों पायो इक ढाक।।१।। ताकी छांय गाम में बैठी तब कोऊ ग्वालन मारी हांक।। बोलो मल्हा नाब किन लावो स्रवन सुन्यों जब एसो बाक।।२।। अतुर व्है जमुना तट आई देखत तुम इक टक रहे ताक।। कुंभनदास प्रभु गोवरधनधर लेहो सँवार अपनो पाक।।३।।

## अथ उष्णकालभोगसरायवे के पद (अचवन साधे)

राग सारंग छाकें खाय खाय धाय धाय जाय द्रुमन चढत फेंटामुख पोंछत अंगोछत हैं करकर।। आवरू दंडान डार दुरावत जाकी आर रोवनी रुवाय छांड हँसे सब हरहर।।१।। सखा सब देत कूक एक तो विरामे दूक खिजोरा खीज गारी देत कांपन हैं थरथर।। जगजीवन गिरिधारी तुम पर वारी लाल याही पर राखो दाव कूदे सब धरधर।।२।। राग सारंग छाक खाय बंसीवट फिर चले यमुना तट तहां जाय धोवत मुख धीर समीरन।। फेंटा खोल पोंछत हाथ सखा सब लिये साथ चले जात दावानल खात मुख बीरन।।१।। गाय बच्छ चरत जहां कुसुमनकी लता तहां बैठे जाय द्रुमनबीच बोलत पीक कीरन।। चत्रभुज प्रभु सखनसंग गावत सारंग राग धुनसुन मृग आये घेर सुधन रही शरीरन।।२।। राग सारंग भोजन करजो ऊठे पीय प्यारी।। कंचन नगन जराय कि झारी जमोदीक लाई ललतारी।।१।। मुख परवार बिरीले ब्रजपत हीतसो कुंज बिहारी।। छीत स्वामी नवकुंज सदन में विहेरत लाल बिहारी।।२।। राग सारंग भोजन कीनो री गिरिवर धर।। कहा वरनो मंडलकी शोभा मधुवन तालकदंब तर।।१।। पहिले लिये मनोरथ व्यंजन

जेपठये व्रजघरघर।। पाछे डला दियो श्रीदामा मोहनलाल सुघरवर।।२।। हँसत सयानो सुवलसेन दे लाल लियो दोनाकर।। परमानंदप्रभु मुख अवलोकत सुरभी भीर पार पर।।३।। राग सारंग करत केलि कीयो सब भोजन।। उठत भगे सब लरिका व्रजके अचवन कीजें हो सुख सोधन।।१।। बहु बिंजन खाए ब्रजवासिन ओर खाए दधि ओदन।। आसकरन जूठन मग जोवत बल बल चंदन खोरन।।२।। राग सारंग सीतल सदनमें सीतल भोजनभयो सीतल करन को आइसब सखियां।। छीरक्यो गुलाबजल नीले पीरे पाननमें बीरी अरोगत नाथ सीतल होत अखियां।।१।। जल गुलाबघोर लाई अरगजा चंदन में नेक लगावो कंठ लपटाई।। कुंभनदास प्रभु गोवरधनधर कीजे सुख सनेह हाथ पंख ढुराई।।२।।

## उसीर बीरी के पद

राग सारंग लटक लालरहे श्रीराधाके भर।। सुंदरबीरी बनाय सुंदरी हँस हँस जातदेत मोहनकर।।१।। गोपीसब सन्मुखभाई ठाढीतिनसों केलि करत सुंदरवर।। ज्यों चकोर चंदा तन चितवत त्यों आली निरखत गिरिवरधर।।२।। कुंजकुटी और बाग वृंदावन बोलत मोर कोकिला तरतर।। परमानंदस्वामी मोहन की हों वारी या लीलाछबिपर।।३।। राग सारंग बैठे लाल कालिंदीके तीरा।। ले राधे गिरिवर दे पठयो यह प्रसादी बीरा।।१।। समाचार सुनि ये श्रीमुखके जे कही स्याम शरीरा।। तेरे कारण चुनचुन राखे जे निरमोलक हीरा।।२।। सुंदरस्याम कमलदललोचन पहिरेहै पटपीरा।। परमानंददासको ठाकुर लोचन भरत अधीरा।।३।। राग सारंग हरिकों बीरी खवावत बाला।। अतिसुगंध बहुविधिसों सँवारी लीजे हो नंदलाला।।१।। खासाको कटिधर्यो पिछोरा उरराजतवनमाला।। मुरारीदास प्रभुकी छबिनिरखत मग्नहोत व्रजबाला।।२।। राग सारंग कृष्णको बीरी देत व्रजनारी।। पानसुपारी काथो गुलाबी लोंगन कील संवारी।।१।। व्रजनारीजो कुंजल ठाढी कंचनकीसीवारी।। लेले बीरी करन कमलमें ठाढी करत मनुहारी।।२।। कहेत

लाडले बीरी लीजे मोहन नंदकुमार।। परमानंदप्रभु बीरी आरोगत व्रजकें प्राण आधार।।३।। राग सारंग लीजे बीरी परम उदार।। लाई स्वच्छ समार मनोहर अति सुगंध सीतलता डार।।१।। निरख निरख छबि मन आनंदे लीनी सुहस्त पसार ।। सूर निरख नंद तन मन धन वारत मुक्ताहार ।।२।। राग सारंग तुम जावौ जावौ बीरी कौन पै मैया। कब के करि अँचवन मांगत हैं हलधर कुँवर कन्हैया।। इतनौ बोल सुनत उठि धायौ श्रीदामा भरि झोरी।। ग्वालन के मंडल मधि नायक हरि-हलधर की जोरी।। दीनौ बाँटि सबनि अपने कर हँसि हँसि पान चबावै।। अब सब चले दानघाटी 'परमानंद' दान चुकावै।।

## राजभोग आरती के पद

राग सारंग आरती गोपिकारमण गिरिधरनकी निरख व्रजयुवति आनंदभीनी।। मणि खचित थार घनसार वाती बरें ललित ललितादि सखी हाथलीनी।।१।। बिहरत श्रीकुंज सुखपुंज पियसंग मिल विविध भोजन किये रुचि नवीनी।। प्रकट परमानंद नवल विठ्ठलनाथदास गोपाल लघु कृपाकीनी।।२।। राग सारंग आरती वारत राधिका नागरी।। तन कनकथार भूषणरत्नदीपक कियें कमलमुक्तावली मंगल उजागरी।।१।। रुणित कटिमेखला सुभग घंटावली झालर शंख जेकरत उच्चागरी।। अनुराग छत्र अंचल चमर नयन चलभाव कुसुमांजली चतुरगुण आगरी।।२।। सखी यूथन लिये विविध भोजन किये सुखद गिरिवरधरन रिझबत सुहागरी।। विष्णुस्वामीपथ श्रीवल्लभपदपद्म नमत कृष्णदास बड भागरी।।३।। राग सारंग आरती करत यसोदा प्रमुदित फूली अंग न समात।। बलबल कहि दुलरावत आनंदमग्न भई पुलकात।।१।। कनक थार रत्नदीपावली चित्रत घृत भीनी बात।। कलि सिंदूर दूब दधि अक्षत तिलक करत बहु भांत।।२।। अन्न चतुर्विध विविध भोग दुंदुभी वाजत बहुजात।। नाचत गोप कुंकुमा छिरकत देत अखिल नगदात।।३।। वरखत कुसम निकर सुर नर मुनि व्रजयुवती मुसकात।। कृष्णदास प्रभु गिरिधरको श्रीमुख निरख लजत शशिकांत।।४।। राग सारंग रानीजू करत सिंगार

आरती।। नखसिख अंग अंग छबि अनुपम निरख नैन पलक नहीं पारती।।१।। कनक कुसुम अरु मनिगन मुक्ता ले वार कुंवरपर डारती।। विचित्र जसोदा दृग चकोर हरिमुखविधु वारवार निहारती।।२।। राग सारंग मोहन मदन गोपाल की आरती। आरती और न जाऊं लाल हों तुम पर सर्वस्व वारती।।१।। घंटा ताल मृदंग झालरी, बेनु रवाव बजावति।। कृष्णदास रस भरी राधिका रहे इकटक कबहु आपुनयो संभारती।।२।।

## राग माला के पद

राग सारंग ए मन मान मेरे कह्यो काहे कों रिसानी प्यारी तू। प्रथम री भैरो गुन जन गाइये याही ते सुघराई होतु।।१।। मालकोस की तानन ले-ले राजत रूप बिहाग।। 'द्वारकेस' प्रभु वसंत खिलावत याही तैं बढत सुहाग।।२।। राग सारंग भोर भयो जागे जाम लाल हो अब रामकली उदे भयोभान।। गुन की कली गुन पूरनप्यारी कहा अब होत देव गान ।।१।। भयो बिभास आभास सब देखियत बलि-बलि जाउं तू सुनि लेरी कान ।। आसा न करि तू अपुने प्रीतम की सोरठ समजि ले मन ही मन आन ।।२।। सारंग नाम जाको ताके पास जाय आली सो नट भयो कहा करे अभिमान ।। चितवति चित पूरव मुख बेठी मधुमाध मद भयो तोकूं आन ।।३।। ये क्रोध भयो गोरी कोन गुनन ते ए मन कहा करों कहा कहूं आन ।। केदारुन दुःख मिट गयो कान्हर तेरो जीवन प्रान ।।४।। रेन बिहाय गई प्यारी पिय पास गई मदनमोहन पिय अति ही सुजान।। चलत हिंडोल अंकमाल सोभा बन ठन 'हरिदास' के स्वामी स्यामा कुंज बिहारी ललित चरन चित धरुं ध्यान ।।५।। राग भैरव संग त्रियन वन में खेलत रविजा-तट मुरलीधर मध्य रास नृत्यकला गुननिधान ।। सप्त सुरन तीन ग्राम बजाय लिये आरोही-अवरोही धरन मुरन सम प्रमान ।।१।। प्रथम राग भेरव गाइये मन मोह लिये चलतें अचल भये अचल तें चल भये ।। मालकोस की तान ले ले बान बेधत प्रान राग हिंडोल मन कलोल मीठे बोल लेत मन मोल।।२।। मेघ ज्यों बरखत रस बुंदनि घुमडि बिरहिनि के मन हरे उमड ।। श्रीराग गावत नेन नचावत सोरठ गाइए हो सुंदर स्याम धुनि सुनि जागत तन मन काम ।।३।।

नवल केदारो गावत राग लेत सुलप गति सुघर सुजान ।। व्रजाधीस प्रभु सरद रेन सुख विलास मदनमोहन पर वारों तन मन प्रान ।।४।। राग सारंग सारंगनयनीरी काहेको कियो एतो मान ।। गोरी गहरु छांड मिल लालहिं मनक्रमवचन यातें होत कल्यान ।।१।। जिन हठ कररी तू नटनागरसों भेरोंही देनगान ।। मुरली तान कान्हरो गावत सुनलेरी कान ।।२।। रंगरंगीली सुघरनायकी तू जियमें अडान ।। नंददास केदारो करिकें योही विहाय गयो मान ।।३।। राग सारंग ललित व्रजदेश गिरिराज राजे ।। घोष सीमंतिनी संग गिरिवर धरन करत नित फले तहां काम लाजे ।।१।। त्रिविध पवन संचरे सुखद झरणा झरे, ललित सोरभ सरस मधुप भ्राजे ।। ललित तरु फूल फूल फूलित खट ऋतु सदा, चत्रभुजदास गिरिधर समाजे ।।२।।

## पलकन भावना के पद

राग काफी मेरे पलकनसो मग झारुं ।। या मग में प्यारो मेरो आवत हे तन मन जोबन वारुं ।।१।। सेज सँवारुं चमर ढुरावुं मधुर स्वर गाउं ।। रसिक प्रीतम पिय जो मिले मोहे हंस हंस कंठ लगाउं ।।२।। राग सारंग माइरी लाल आज आयेरी मेरे महल तन मन धन सब बारुं।।२।। हों बल गई सखी आजकी आवनको पलकनसों मग झारुं ।।१।। अति सुकुमार पद करन कंकर गुन सब टारुं ।। नंददास प्रभु नंदनंदनसों एसी प्रीत नित धारुं ।।२।।

## राजभोग दर्शन के पद

राग सारंग सुंदरमुखकी हों बलबल जाऊं ।। लावण्यनिधि गुणनिधि शोभानिधि देखदेख जीवत सब गाऊं ।।१।। अंगअंगप्रति अमितमाधुरी प्रकट रुचिर ठांई ठाऊं ।। तामे मृदु मुसकाय हरत मन न्यायकहत कवि मोहन नाऊं ।।२।। सखा अंसपर वाम बाहुदिये या छबिपैं बिनमोल बिकाऊं ।। परमानंद नंदनंदनकों निरख निरख उर नयन सिराऊं ।।३।। राग सारंग सिरधरे पखौवा मोरके।। गुंजाफल फूलनके लटकन शोभित नंदकिशोरके ।।१।। ग्वाल-मंडलीमध्यविराजत कौतुक माखनचोरके ।। नाचत गावत वेणु बजावत अंस

भुजा सखा औरके ॥२॥ तैंसेई फरहरात रंग भीने छबि पीतांबर छोरके ॥ परमानंददासको ठाकुर मन हरत नयनकी कोरके ॥३॥ राग सारंग नयनन लागीहो चटपटी ॥ मदनमोहनपिय निकसे द्रवारह्वे शोभित पाग लटपटी॥१॥ दूरजाय फिर चितयेरी मो तन नयन कमल मनोहर भृकुटी ॥ गोविंदप्रभुपिय चलत ललित गति कछुक सखा अपनी गटी ॥२॥ राग सारंग गिरिधर देखेहींसुखहोय ॥ नयनवंतको यही परम फल येही विधि मोहे त्रैलोय ॥१॥ महामरकतमणि नीलअंबुजको रूपलियो है निचोय ॥ कृष्णदासनि नाथ नवरंग मिलेहैं विरह दुखखोय ॥२॥ राग सारंग तादिनते मोहि अधिक चटपटी ॥ जादिनते देखे इन नयनन गिरिधर बांधे माई पाग लटपटी ॥१॥ चलेरी जात मुसकात मनोहर हँसजो कही एक बात अटपटी ॥ होंसुन श्रवणन भई अतिव्याकुल परीजो हृदय में मदन सटपटी ॥२॥ कहारी करुं गुरुजन भये वैरी वैर परे मोसों करत खटपटी॥ परमानंदप्रभु रूप विमोही नंदनंदनसो प्रीति अतिजटी ॥३॥ राग सारंग ऐसी प्रीति कहूं नहीं देखी ॥ यशुमति सुत श्रीवल्लभसुत जैसी शेष सहस्रमुख जात नलेखी ॥१॥ आज्ञामांग चले श्रीगोकुल फिरफिर झांक झरोखन पेखी ॥ सुनियत कथा जलदचातककी कुमुदिनि चंद्रचकोर विषेखी ॥२॥ इनको कियो सबैं जिय भावत करत शृंगार विचित्र विषेखी ॥ गोविंदगोवर्धनपें मांगत बिछुरो पलछिन अर्द्धनमेखी ॥३॥ राग सारंग आनंदसिंधु बढ्यो हरि तनमें ॥ राधामुख पूरणशशि निरखत उमग चल्यो व्रज वृंदावन में ॥१॥ इत रोक्यो यमुना उत गोपिन कछु एक फैल पर्‍यो त्रिभुवनमें ॥ नापरस्यो करमठ अरुग्यानी अटक रहो रसिकन के मनमें ॥२॥ मंदमंद अवगाहत बुद्धि बलभक्त हेत लीला छिनछिनमें ॥ कछु एक लह्यो नंदसूनू कृपातें सो देखियत परमानंदजनमें ॥३॥ राग सारंग नंदनंदन नवलकुंवर व्रजवर सौभाग्यसीम वदनरूप निरखत सखा नयनन मन हरतरी ॥ स्यामश्वेत अतिप्रवीण वंक चपल चितवनी मानों शरदकमल ऊपरखंजन द्वै लरतरी ॥१॥ अलकावलि मधुप पात अंगअंग छबि कहिन जात निरख सुंदरवदन मदन कोटि पांय परतरी ॥ कुंभनदासप्रभु गिरिधरस्याम रूपमोहनी दिव भू पाताल युवती

सहजें वश करतरी ॥२॥ राग सारंग देखो ढरकन नव रंग पागकी ॥ वामभाग वृषभान लाडिली चितवन अति अनुराग की ॥१॥ सुखसागर गिरिधरन छबीलो मूरति परम सुहागकी ॥ मदनमोहन राधेजूकी जोरी गोपालदासके भागकी ॥२॥ राग सारंग अबहीतें यह ढोटा चित चोरत आगें आगें कहा करोगे ॥ नेक बडे बलहोउ बलजाऊं त्रिभुवन युवतिन के मनजु हरोगे ॥१॥ देखनके न्हेनेसे उरमें सप्तद्वीप नवखंड रानी यशुमतिको दिखायोहै सोई सांची अनसरोगे ॥ गोविंदप्रभुके जु नयनबैन रस सींचत मेरे जाने मनमथसें लरोगे ॥२॥ राग सारंग हों नीके जानतरी आलीतेरे हृदयकी सब बात ॥ सकल घोषयुवतिनको सर्वस्व तेही हर्‌योरी आली सांवरेगात ॥१॥ जाको कार्य सिद्ध करत विधाता ताहि नकाहूकी परवा है री माईकहीरहो कोऊ पांच सात ॥ गोविंदप्रभु निधिनीको धन पायो तेही छिपायो मोसो कित दुरत हैरी जोतू डार डार तोहों पातपात ॥२॥ राग सारंग तें कछु घालीरी ठगोरी पियपर प्यारी ॥ निशदिन तुही तुही जपत प्राणपति तेरी एरीसों लालन गिरिवरधारी ॥१॥ समर बेग आवे स्वरूप तब सुधि न कछू तनकी बिहारी ॥ रसना रटत तुवनाम राधे राधे गोविंद प्रभु पिय ध्यानसो भरत अंकवारी ॥२॥ राग सारंग कहाजो भयो मुखमोरे कछु काहूजू कह्यो ॥ रसिक सुजान लाडिलो ललन मेरी आँखियनमांझ रह्यो ॥१॥ अब कछू बात फैलपरी दिये प्रेम जामन भयोहै दूधते दह्यो ॥ त्रैलोक अतिही सुजान सुंदर सर्वस्व हर्‌यो गोविंदप्रभु जु लह्यो ॥२॥ राग सारंग चितवत रहत सदा गोकुल तन ॥ बारबार खिरकी ह्वे झांकत अति आतुर पुलकित तन ॥१॥ नम्र सखा सुख संगही चाहत भरत कमलदल लोचन ॥ ताही समय मिलेरी गोविंदप्रभु कुंवर विरह दुःखमोचन ॥२॥ राग सारंग सुवा पढावत सारंग नयनी ॥ वदन संकेत लालगिरिधरसों गरजत गुप्त निकट मत केनी ॥१॥ अहो कीर तुम नीलवरण तन नेक चितें मन बुद्धि हरलेनी ॥ होत अबेर जात दिन वन गृह हम तुम भेट होयगी गेनी ॥२॥ जब लग तुम जो सिधारो सघनबनहों जुगई यमुनाजल लेनी ॥ परमानंद लालगिरिधरसो मृदु मृदुवचन कहत पिकबैनी ॥३॥

राग सारंग भलेई मेरे आयेहो पिय टीक दुपहरीकी बिरियां ॥ शुभदिन शुभ नक्षत्र शुभमहूरत शुभपलछिन शुभघरियां ॥१॥ भयोहै आनंदकंद मिट्यो बिरहदु:खद्वंद चंदनघस अंगलेपन् और पायन परियां ॥ तानसेन के प्रभु मया कीनी मोपर सूखीवेल करी हरियां ॥२॥ राग सारंग तुम संग खेलत लर गई टूट ॥ रहो ढोटा तुम खरेई अचगरे मेरो लियो कर सूट ॥१॥ योंरिसाय कहतहों तुमसों वचन रहितही घूट ॥ अबही नई पहरहों आई चुरियां गई सब फूट ॥२॥ यह विनोद नीको करपायो मानों पसरी लूट ॥ परमानंदप्रभु जब बीनूंगी तबही करूंगी कूट ॥३॥ राग सारंग तुम मेरी मोतिन लर क्यों तोरी ॥ रहो ढोटा तू नंदमहरको करन कहत कहा जोरी ॥१॥ मैं जान्यो मेरी गेंद चुराई ले कंचुकीविच होरी ॥ परमानंद मुसकायचली तब पूरणचंद चकोरी ॥२॥ राग सारंग कहा कहों लाल सुघर रंग राख्यों मुरली में॥ तान बंधान स्वर भेदलेत अतिजत विचविचमिलवत विकट अवघर ॥१॥ चोख माखनीकी रेख तामें गायन मिलवत लांबेलांबे स्वर ॥ बिचबिच लेत तिहारो नाम सुनरी सयानी गोविंदप्रभु व्रजरानी के कुंवर ॥२॥ राग सारंग अबकें फेरि लीजे हो सुघरराय वही तान ॥ सरस मधुर नीकि चोखपरी है तामें तानबंधान ॥१॥ अवघर सरस बिकट गिरिधरपिय तुमहीपें बनि आवे मोहि तिहारी आन ॥ गोविंदप्रभु प्रियरसिकशिरोमणि मदनमोहन पिय अतिहि सुजान ॥२॥ राग सारंग पूछत जननी कहां ते आये । आज गयो श्रीवल्लभके घर बहोतक लाड लडाये ॥१॥ विविध भांति पट भूषन ले ले सरस सिंगार बनाये॥ शीश पाग सिरपेच जु बांधे मोरचन्द्रिका लाये ॥२॥ बहोत भांति पकवान मिठाई विंजन सरस बनाये । पायस आदि समर्पे मोहि मेरी लीला गाये ॥३॥ प्रेम सहित वल्लभमुख निरखत और न कछु सुहाए । रसिक प्रीतम जु कहत जननी सों आज अधिक सुख पाये॥४॥ राग आसावरी बलबल हों कुंवरी राधिका नंदसुवन जासों रति मानी ॥ वे अति चतुर तुम चतुर सिरोमनि प्रीत करी केसे रही छानी ॥१॥ वेनु धरत हे कनक पीतपट सो तेरे अंतरगत ठानी ॥ पुन श्याम सहज तुम

श्यामा अम्बर मिस अपने उर आनी ॥२॥ पुलकित अंग अबही व्हे आयो निरख सखी निज देह सयानी ॥ सूर सुजान सखी को बूझे प्रेम प्रकास भयो बिकसानी ॥३॥ राग आसावरी वदन सरोज उपर मधुपावल मानो फिर आइ हो ॥ कुंचित कच बिच बिच चंपकली उरझाई हो ॥१॥ लाल के नेन कृपा रंगभरे सुन्दर भ्रू भाई हो ॥ मकर कुंडल प्रति बिंबत श्याम कपोलन झांई ॥२॥ लाल के मनि कौस्तुभ कंठ लसे हिरदे बनमाल रुराई हो ॥ सुन्दर सब अंग अंग गोविन्द बलबल जाई हो ॥३॥ राग सारंग बनी राधा गिरिधर की जोरी ॥ मनहु परस्पर कोटि मदन रति की सुन्दरता चोरी ॥१॥ नूतन श्याम नंद नंदन वृखभानसुता नव गोरी ॥ मनहू परिमल बदन चंद को पीवत चकोर चकोरी ॥२॥ कुम्भनदास प्रभु रसिकलाल बहु विधि रसिकनी निहोरी ॥ मनहु परस्पर रंग बढ्यो अतिकि उपजी प्रीत न थोरी ॥३॥ राग सारंग यातें भावत मदनगोपाले ॥ सारंग राग सरस अलापन सुघर मिलन ताले ॥१॥ अतीत अनागत ओघर आनत सप्तक कंठ मराले ॥ गावत अलापत सुलप संचु मिलवतें किंकिनी कुंजित जाले ॥ कुम्भनदास प्रभु रसिक सिरोमन सोहत रति पति वाले ॥ गावत हसतक भेद दिखावति गोवर्द्धन धर लाले ॥२॥

## राजभोग कुंज के पद

राग सारंग चलो किन देखन कुंज कुटी ॥ मदन गोपाल जहां मध्यनायक मन्मथ फौजलुटी ॥१॥ सुरत समर में लरत सखीकी मुक्तामाल टुटी ॥ उरजतेंजु कंचुकी चुरकुट भई कटीपट ग्रंथिछुटी ॥२॥ रसिकशिरोमणि सूरनंदसुत दीनी अधर घुटी ॥ परमानंद गोविंदग्वालिन की नीकी जोट जुटी ॥३॥ राग सारंग आज लाल रसभरे निकुंज मंदिर में बैठे प्यारीसंग ॥ करत मदन केलि सुखसिंधु रह्यो झेल कंठ भुजनभुज मेल गावत सुघर दोऊ तान तरंग ॥१॥ कहारी करोंगे भांवर कुसुमन गूँथी बेनी सीस फूल गजमोती खसितमंग ॥ गोविंदप्रभु चित्रकरत प्यारी के उरपर स्वेद अति वेपथ सकल अंग ॥२॥ राग सारंग चलो सखी कुंज गोपाल जहां ॥ तेरीसों

मदनमोहनपें चल लेजाऊं तहां ॥१॥ आछे कुसुम मंदमलयानिल तरु कदंबकी छांह ॥ तहां निवास कियों नंदनंदन चित तेरे मन मांह ॥२॥ ऐसीरी बात सुनत व्रजसुंदर तोहि रह्यो क्यों भावे ॥ परमानंदस्वामी मनमोहन भाग्य बडेते पावे ॥३॥ राग सारंग नेक कुंज कृपा कर आइये ॥ अतिही मान कर रही किशोरी कर मनुहार मनाइये ॥१॥ कर कपोलते छूटत नहीं क्यों हूं अतिउसास तन पाइये ॥ मेचक वलित ललितमुख जहां तहां सुहस्त संवार बनाइये ॥२॥ यामें कहा गाँठको लागे जो बातन सचु पाइये ॥ झूठेई आदर करत किशोरी सूर यह यश गाइये ॥३॥ राग सारंग कुंवर बैठे प्यारीके संग अंगअंग भरे रंग बलबल बल त्रिभंगी युवतिन सुखदाई ॥ ललित गति विलास हास दंपति अतिमन हुलास विगलित कच सुखदाई ॥ सुमनवास स्फटित कुसुम निकर तैसीई शरद रैन जुन्हाई ॥१॥ नव निकुंज भ्रमरगुंज कोकिला कलकूजत पुंज सीतलसुगंध मंद बहत पवन सुखदाई ॥ गोविंदप्रभु सरस जोरी नवकिशोर और नवकिशोरी निरख मदनफौज मारी छैलछबीले नवलकुंवर व्रजकुल मणिराई ॥२॥ राग सारंग बैठे हरि राधा संग कुंजभवन अपने रंग कर मुरली अधर धरे सारंग मुख गाई ॥ मोहन अतिही सुजान परम चतुर गुणनिधान जानबूझ एक तान चूककें बजाई ॥१॥ प्यारी जब गह्यो बीन सकल कला गुणप्रवीण अतिनवीन रूपसहित वही तान सुनाई ॥ वल्लभ गिरिधरनलाल रिझ दई अंकमाल कहत भलें भलें लाल सुंदर सुखदाई ॥२॥ राग सारंग आजकी बानिक कही नजाय बैठे निकस कुंजद्वार ॥ लटपटी पाग सिर सिथिल चिहुर चारु खसित वरुहाचंदरस भरे व्रजराजकुमार ॥१॥ श्रमजल बिंदुकपोल विराजत मानों ओस कण नीलकमलपर ॥ गोविंद प्रभु लाडिलो ललन वर कहा कहो अंग अंग सुंदरवर ॥२॥ राग सारंग कुंजमें विहरत युगल किशोर ॥ यह अचंभों देख सखीरी उग्यों चंद विनभोर ॥१॥ तहां घनस्याम दामिनी राजत द्वैशशि चार चकोर ॥ अंबुज खंजन मीन मधुपमिल क्रीडत एकहि ठोर ॥२॥ तहां द्वै कीर बिंब फल चाखत विद्रुम मुक्ता जोर ॥ वार मुकर आनन पर झलकत नाचत सीस न मोर॥३॥ तामें अधिक अधिकतामहिया

वीस कमल इक ठौर ॥ हेमणिलालताही द्वैफल मान देत अकोर ॥४॥ कनक लता पर नीलमणि राजत उपमा कहा कहूं कछू छोर ॥ सूरदासप्रभु यह विधि क्रीडत ब्रजजुवतिनके चितचोर ॥५॥ राग सारंग नीकी बानिक नवल निकुंजकी ॥ वरण वरण प्रफुल्लित द्रुम वेली मधुमाते अलिगुंजकी॥१॥ करत विहार तहां पिय प्यारी संपति आनंद पुंजकी ॥ परमानंदप्रभुकी छबि निरखत मनमथ मनसालुंजकी ॥२॥ राग सारंग आज नव कुंजनकी अतिशोभा॥ करत विहार तहां पियप्यारी निरख नयन मन लोभा ॥१॥ रूपवरि सींचत निजजनकों उठत प्रेमकी गोभा॥ परमानंदप्रभुजी चितवनी लागत चितको चोभा॥२॥ राग सारंग शोभित नव कुंजनकी छबि भारी॥ अद्‌भुतरूप तमालसो लपटी कनकवेली सुकुमारी॥१॥ वदन सरोज डहडहे लोचन निरख छबि सुखकारी॥ परमानंदप्रभु मत्तमधुपहैं श्रीवृषभानसुता फुलवारी॥२॥ राग सारंग आछे बने देखो मदनगोपाल॥ बहुत फूलफूले नंदनंदन तुमको गूथोंगी माल॥१॥ आये बैठे तरुवर की छैयां अंबुजनयन विशाल॥ नेक वियार करूं अंचलसों पाय पलोटोंगी बाल॥२॥ आछे तब राधा माधोंसों बोलत वचन रसाल॥ परमानंदप्रभु यहां रहो ब्रजते और न चाल॥३॥ राग सारंग कुंजन मांझ बिराजत मोहन, राधिका सुंदर स्याम की जोरी॥ तेसे ये सुन्दर स्याम अनुपम तेसीहे सुन्दर राधेजु गोरी॥१॥ गोपी ग्वाल सखा संग लीने मधुर मुरली स्वर बाजत थोरी॥ सूरदास प्रभु मदनमोहन पिय चिरजीयो नवल किशोर नवलकिशोरी॥२॥ राग सारंग आज बृन्दाविपिन कुंज अद्‌भुत नई॥ परम शीतल सुखद स्याम सोभित तहां माधुरी मधुर और पीत फूलन छई॥१॥ विविध कंदली खंभ झूमका झुक रहे मधुप गुंजार सुर कोकिला धुनि ठई॥ तहां राजत श्रीवृषभान की लाडिली मनो हो घनश्याम ढिंग उलही सोभा नई॥२॥ तरनी तनया तीर धीर समीर जहां सुनत ब्रजबधू अति होय हरखित भई॥ नंददासनी नाथ और छबि को कहे सोभा नैन पंगुगति व्है गई॥३॥ राग सारंग बिराजत नीकी कुंज कुटी॥ मदनमोहन राधा सों मिल तहां रस बरजोर जुटी॥१॥ मगन भये मन मगन मानों भवलीला सुरती ठटी॥

कृष्णदास प्रभु की छबि निरखत गिरधर रस लपटी ।।२।। राग सारंग जो तू अबकी बेर बन जाय ।। नंदनंदन को नीके देखे तन मन नैन सिराय ।।१।। बैठे कुंज महल में मोहन सुन्दर रूप सुहाय ।। परमानन्ददास को ठाकुर हँसि भेटेंगें धाय ।।२।। राग सारंग कुंजन मांझ बिराजत मोहन, राधिका सुन्दर श्याम की जोरी ।। तेसे ये सुंदर श्याम अनुपम तेसीहे सुंदरराधेजु गोरी ।।१।। गोपी ग्वाल सखा संग लीने मधुर मुरली स्वर बाजत थोरी ।। सूरदास प्रभु मदनमोहन पिय चिरजीयो नवल किशोर नवल किशोरी ।।२।।

## मानकुंज के पद

राग सारंग आली कुंजभवन बैठे व्रजराज सुवन बोलत मुखरसिक कुंवर तू चल प्राणपियारी ।। तेरेहित लोभीलाल उठ चल भर अंक माल विरह रसाल छांड प्यारी तोऊपरहों वारी ।।१।। छांड मान करशृंगार दर्पणले मुखनिहार कोटि काम डारो वार पहिरें नीलसारी ।। गोविंदप्रभु रसरंगरेल कंठ भुजा अंस मेल वश करी गिरिधारी ।।२।। राग सारंग लालन बैठे कुंजस्थली कुसुमित वनपरिमल आमोद तहां कूजत कोकिला रहे रसमत्त अली ।।१।। कुवलयदल कोमल शय्या रची मृदुल सुहस्त वेणीग्रथित चंपकली ।। गोविंदप्रभु दंपति जु परस्पर रहे रसमत्त रली।।२।। राग सारंग चिते मसकानी हो वृषभान दुलारी ।। खसत मुरलीकर नंदनंदनके लियौहै लालमनुहारी ।।१।। गजगति चाल चलत व्रजसुंदर लटकत स्यामरस मत्तपियारी ।। कटि किंकिणी उर हार तरलताटंक अलक घुंघरारी ।।२।। देख विवश भये मदनमोहन पिय चंपकतन बनी नीलसारी ।। आकोभर मिलीरी नवल नागरसूं गोविंदजन बलहारी।।३।। राग सारंग पिय जो करत मनुहारी समझ देखरी पियप्यारी ।। कुंजके द्वार कबके ठाढेहैं मनमोहन ललनए तू खरी निठुर वृषभानदुलारी ।।१।। अलक सवारनके मिस भामिनि हेरत पियतन नयनविहारी ।। गोविंदप्रभु रूपदेख पियाको सुखभयो तन दृष्टिसो भरत अंकवारी ।।२।। राग सारंग जाहि तन मन धन दीजे आली तासों रूसनो कैसे बनि आवे ।। घोष नृपति सुत एते पर बहु

नायक ताते कहतहों समुझ चितें अनखन कैसे पिय पावे ।। नवलनिकुंज नवलबैठे ताते हों पठई ऐसो समयो तोहिसी बडभागिन पावे ।। सोईतो विचित्रगुण रूप त्रियाजो गोविंदप्रभुको रिझावे ।।२।। राग सारंग सारंग नयनीरी काहेको कियो एतो मान ।। गौरी गहरू छाँड मिल लालहिं मनक्रमवचन यातें होत कल्यान।।१।। जिन हठ कररी तू नटनागरसों भैरोंही देवगान ।। मुरली तान कान्हारो गावत सुनलेरी कान ।।२।। रंगरंगीली सुघरनायकी तू जियमें अडान ।। नंददास केदारो करिकें याही विहाय गयो मान ।।३।। राग सारंग जपत स्याम तेरे गुण बैठे कदम्ब की छैयां ।। उन तो विनती बहुत कर पठई तू जो करत है नैयां ।।१।। नेंक जो दृष्टि परत नकरखी वह छबि तेरे नैनन महियां ।। सूरदास प्रभु गिरिधर बौली चली है टेक परी बहियां ।।२।। राग सारंग स्यामाजुको स्याम मनावत आये । सनमुख व्हेके छुवावत मुकुटकी परछांये ।।१।। इन दर्पन ले वे नाना करत हें छबिसों धसिके आये। सुरस्याम वृन्दावन जीवन छलसों हां हां खाये ।।२।। राग सारंग चलि सखि ! स्याम सुंदर तोंहि बोलत । कुंज-महल में बैठे मोहन तेरौ रूप उर तोलत।। तो-विनु कछु न सुहात है लालहिं तू कत गहरू लगावै ।। मेरे कहें वेग चलि भामिनि ! जो तेरे जिय भावै ।। नंद-नंदन सों प्रीति निरंतर सुनत वचन उठि धाई।। 'छीत-स्वामी' गिरिधर पै नागरी, हेत जानिके आई।।

## अक्षय तृतीया के पद

राग सारंग प्रात उठत उर आनंद भरकें पीजे जमुना जल निर्मल ।। पान परसत अंग अंग मिटे आरत सनमुख होत रसना रस निश्चल ।।१।। गोपीजन व्रजवास धर्मकुल दैवीजन सब आवत हें चल ।। रहत नहीं दोष सुमरे लक्ष्मण सुत सब सुख वास चरण दृढके बल ।।२।। त्रिविध ताप मेटनके साधन ए लपटनों चंदन कर सीतल ।। परमानंद तमाल वल्लभकी हम पर रहो छाया अति सीतल।।३।। राग भैरव सीतल खरन बाहु भुज बलमें जमुनातीर गोकुल ब्रज महीयां ।। सीतल पान खरी सुध चरनन नित्य दुध जटी अति जतन कहीयां ।।१।। गोवर्धन अरु वृंदावन तरुवर सीतल छैंयां ।। जन घूमत

दध मथना सीतल पीवत गोरसको घैयां ॥२॥ सोवत तें जागत मनमोहन अखीयां सीतल करत कन्हैया ॥ गोपीजन नेंनके भागन सीत बसो ब्रज हलधर भैया ॥३॥ निरख सीतल ब्रजवास निरख मुख मंगल मूरत जसोदा मैया ॥ परमारंद सीतल सरसाने वदन कमलकी लेत बलैया ॥४॥

## कलेऊ के पद

राग बिभास लेहु ललन कछु करहु कलेउ अपुने हाथ जीमाउंगी ॥ सीतल माखन मेलश्री कर कर कोर खवाऊंगी ॥१॥ ओट्यो दुध सद्य धोरीको सीयरो कर कर प्याऊंगी ॥ तातो जान जो न सुत पीवत पंखा पवन ढुराऊंगी ॥२॥ अमित सुगंध सुवास सकल अंग करि उबटनो गुन गाउंगी ॥ उष्ण सीतल हु न्हवाय खोरजल चंदन अंग लगाऊंगी ॥३॥ त्रिविध ताप नस जात देखि छबि निरखत हीयो सीराउंगी ॥ परमानंद सीतल करि अखीयां बानिक पर बल जाउंगी ॥४॥ राग बिभास मंगला में आज प्रभात जात मारगमें सुगन भयो फल फलित जसोदाके ॥ मंगल निध जाके भवन बिराजत इत आनंद अंग अंग प्रमदाके॥१॥ सीतल सुवास अवासन महियां मंगल गीत गावत मिल सखीयां ॥ परमानंद नीरखि मोहन मुख हरख हीये सीतल भई अखीयां ॥२॥ राग बिभास शृंगार में सुगन मनाय रही ब्रजबाला मन भावन घर आवनकों ॥ चंदन भवन लिपाय सोंज सज अरगजा अंग लगावनकों॥१॥ भोग राग रंग संपूरन आनंद अपनी रुचि उपजावनकों ॥ कृष्णदास गिरिधरन संग मिली बिरह व्यथा बिसरावनकों ॥२॥ राग बिलावल येही सुभाव सदा ब्रज वासिन रति रस केलि मोहन संग हंसवो पाया करत केलि यमुना के तीरा ॥ गोपीजन धन पूरव सुकृत कीनो कुच भुज बीच बसाये ले आये नांहिन मोलिक निरमोलक नग हीरा ॥१॥ घन तनश्याम तेसेइ मन अति नीको लागत मेरे दुखायवेते नील पीत लपटाये परपीरा॥ छीतस्वामी गिरिधरन श्रीविट्ठल सुबस बसो जहां हमही भेटत भवन विराजो घसी अरगजा वासी बीरा ॥२॥ राग बिलावल पीत पीछोरी कहां तें पाई सगवगी

केसर रंग भीनी ओढी साज सुभग घन सुंदर तनसुखकी मानो पाई अत झीनी ।।१।। रतीसुख चेन प्रकट सुगंध अगर अरगजा तांई कहत कहां कीनी ।। प्रीतकी रीत कीतही जानेकी हम चारी काहुकी नहिं लीनी ।।२।। तन मन देख सीस अपुनेको रीझे प्रीतम नवल सखी दीनी ।।२।। वरन सदा चरचा जाकी सदा कलमत हीनी।।३।। चहूं अरगजा चंदन कुल ले जाउं मरजादासनी ।। नाच नचैये घुघंट केसो सुरश्याम ये मूरत चीनीं ।।४।। राग सारंग अक्षयतृतीया अक्षयलीला नवरंग गिरिधर पहेरत चन्दन ।। वामभाग वृषभान नंदिनी बिचबिच चित्रकिये नववंदन ।।१।। तन सुख छींट इजार बनींहे पीत उपरना विरह निकंदन ।। उर उदार वनमाल मल्लिका सुभग पाग युवतिन मन फंदन।।२।। नखशिख रत्न अलंकृत भूषण श्रीवल्लभमारग जनरंजन ।। कृष्णदास प्रभु गिरिधर नागर लोचन चपल लजावत खंजन ।।३।। राग सारंग अक्षय तृतीया शुभदिन नीको चंदन पेहेरत नवलकिशोर ।। उज्वल वसन नवीन सो राजत फेंटाके नीके छटछोर ।।१।। केसर तिलक माल फुलनकी पेहेरें ठाडे रंगभरे।। आसपास युवतीजन शोभित गावत मंगल गीतखरे।।२।। मुसकतहें थोरे थोरे से बोलत रसाल लखीरी ।। अति अनुराग भरे मोहनकों कृष्णदास तहांदेतहे बीरी।।३।। राग सारंग अक्षयतृतीया गिरिधर बैठे चंदनको तन लेपकियें ।। प्रफुल्लित वदन सुधाकर निरखत गोपी नयन चकोर पियें।।१।। कनक वरण शिरबन्यो टिपारो ठाडेहें कर कमल लियें ।। गोविंदप्रभुकी बांनिक निरखत वारफेर तनमनजु दियें ।।२।। राग सारंग अक्षय तृतीया महामहोच्छव चंदन लेपकियें नंदलाल ।। बीचबीच केसरके बुंदका रुचिर बनावत ब्रजकी बाल ।।१।। करन फूलचंदनके शोभित ओर गुंजा वैजंयतीमाल ।। कृष्णदासप्रभुकी यह लीला निरखत हृदे वसे नंदलाल ।।२।। राग सारंग अक्षय तृतीया अक्षय सुखनिधि पियकों प्रिया चढावे चन्दन।। तबही प्रिया सिंगारी नारी अरगजा घोरि सुघर नंदनंदन ।।१।। ले दरपन निरखेंजु परस्पर रीझ रीझ चर्चित नव वंदन ।। नंदनदास प्रभुपिय रसभीजे जुवतिन सुखद विरह दुखकंदन ।।२।।

## चंदन के पद

राग सारंग चन्दन पहेरत गिरिधरलाल ।। कंचनवेलि प्यारी राधा के भुजवाम भागगोपाल ।।१।। प्रथमही चित्रत अक्षतृतीया वंदन भ्रुकुटी भाल ।। श्वेत पाग लटपटी बांधें पीतांबर गलमाल ।।२।। कुंकुम कुचयुगहेम कलशपे चरचत हें नंदलाल ।। कुंभनदास प्रभु रसिकशिरोमणि बिलसत व्रजकीबाल ।।३।। राग सारंग परव ग्रीषम आदि मानि निदान ऋतराज वैशाख सुद अक्षय तृतीया ।। कुंजके द्वार ठाडे लसत गिरिधरन राधिका अंस पर बाहु धरिया ।।१।। पीत परिधान राजत सामल अंग कियें चन्दन लेप चित्र अवरेखीया ।। हंस गमनी द्वारकेशकी स्वामिनी ठुमकि चलत तब बजत बिछीया ।।२।। राग हमीर चंदन पहेर नाव हरि बैठे संग वृषभान दुलारी हो ।। यमुना पुलिन फूल शोभित तहां खेलत लाल बिहारीहो ।।१।। त्रिविध पवन बहत सुखदायक सीतल मंद सुगंधा हो ।। कमल प्रकाश कुसुम बहु फूले जहां राजत नंदनंदाहो।।२।। अक्षय तृतीया अक्षय लीला संग राधाका प्यारी हो ।। करत बिहार सबे सखीसों नंददास बलिहारी हो ।।३।। राग हमीर चंदन पहेरत आवत हे नवरंग रंगीलो ।। चंदनकों तन पाग पिछोरा चंदन छबिही छबिलो ।।१।। चन्दन की तन खोर कीए हें चन्दन लागत अरबीलो ।। कृष्णदास प्रभु परम मनोहर लागत परम रसीलो ।।२।। राग नाईकी पांयन चंदन लगाउगीं।। बहो भाँतन बिजना ढुराऊं छिरक गुलाब जलसों नैन सिराऊंगी ।।१।। अगर कपूर धसि अंग लगाऊं मृदमद आड बनाऊंगी ।। कल्यान के प्रभु गिरिधरन छबीले लैले लाड लड्याऊंगी ।।२।। राग अडानो आजको दिन धनी धनरी मई नैन भर देखे नंदनंदन ।। परम उदार मनोहर मूरति तापहरन नख पूजित चंदन ।।१।। रसिक राय श्री गोवर्धन धारी रूप रासि युवतिन मन फंदन ।। ध्वजा वज्र जव अंकुश बिराजत कृष्णदास कीये पद बंदन ।।२।। राग अडानो अक्षय भाग्य सुहाग राधेको अक्षय प्रीतमको दिन रतियां ।। चन्दन पूज प्रीतम सुख दीजे रीझ रीझ यह कहुं बतियां ।।१।। अक्षय सुजस

कहां लों भाखों पार न पावत सेसमुख जतियां ॥ छुट्यो मान सहज परमानंद सुभ दन नीको अक्षय तृतीयां ॥२॥ राग अडानो लाल पोढीये जु बाल रुचिर सेज बनाई॥ सोंधे सुवास छिरक कुमकुमा चन्दन अति सुंदर सुखदाई॥१॥ बिरा पोहोपमाल भोग राग अति रसाल रसई रस केलि करत ब्रजजन मन भाई ॥ वृन्दावन प्रभु चन्द चांदनी किसोरी कुंवर रहस रहस हंस कंठ लगाई ॥२॥ राग अडानो चन्दन महेल में पोढे पिय प्यारी बात करत मिल हसत परस्पर ॥ चन्दन सेज संवारी चरच कर चन्दन पंक चहुं दिस छिरकत निरखतनेंन अति आनंद भर ॥१॥ चन्दन पंखा सखी ढुरावत रूप निहारत अतिही चोंप करि ॥ सुरदास मदन मोहन चन्दनके महल पोढे बारबार तृन तोरत सहचरि ॥२॥ राग सारंग चन्दनपहेरत गिरिधरलाल ॥ पहरावत वल्लभ श्री विठ्ठल चंचल नयन विशाल ॥१॥ चन्दन आभूषण अंगअंग राजत चन्दनकी उरमाल॥ श्वेतपागकुंडल कपोलछबि निरख रहीं ब्रजबाल ॥२॥ अति आनंद नेह विलसत देखत हियो सिरात ॥ श्री विठ्ठलगिरिधरहित चितकी कही न जात कछुबात॥३॥ राग सारंग आज बने नंदनंदरी नवचंदनको तन लेपकियें ॥ तामें चित्रबने केसरके राजतहें सखी सुभगहियें ॥१॥ तन सुखको कटि बन्यो हे पिछोरा ठाडेहें कर कमललियें ॥ रुचि वनमाल पीतउपरेना नयन मेंनसरसे देखिये॥२॥ करन फूल प्रतिबिंब कपोलन मृगमद तिलक लिलाटदियें॥ चतुर्भुज प्रभु गिरिधरनलाल छबि टेढी पाग रही भृकुटिछियें ॥३॥ राग सारंग पहेरें तन चन्दनको बागो बैठे शीतल कुंज ॥ देखतही मन मोहिरहेत सखी मानो मदनके पुंज ॥१॥ लटपटी पाग बनी गिरिधरकें कियें सुधो शृंगार ॥ नेन्हीनेन्ही कली बीन अपनेकर गूंथों तुमको हार ॥२॥ यहसुन श्रवणन चली आतुरव्है कितिक दूर वह पौर ॥ श्रीविठ्ठल गिरिधर नुपुरसुन बेगमिले उठदौर ॥३॥ राग सारंग चन्दनहीकी कुंजबनाई ॥ चन्दन छिरके गादीतकीया चन्दन सेज विछाई ॥१॥ चन्दनछिरके पाग पिछोरा चन्दन छिरकी सारी ॥ चन्दनहीको लेप कींये तन श्रीविठ्ठल गिरिधारी ॥२॥

राग सारंग चन्दनपहेर आय हरिबैठे कालिंदीके कूल ।। सघनकुंज द्रुम चहुंदिश फूल ललित लताके मूल ।।१।। कुंदमाल श्रीकंठ बनी और विचविच विविधभांतके फूल ।। रुचिर प्रवाह वहेत यमुनामध्य तरु तमालके झूल ।।२।। नाचत गावत वेणु बजावत सकल सखा लियें संग ।। गोविंदप्रभु पियकी छबि निरखत होत नयन गतिपंग ।।३।। राग सारंग आज धरें गिरिधर पियधोती ।। अतिझीनी अरगजा भीनी पीतांबर घनदामिनि जोती ।।१।। टेढी पाग भृकुटी छबिराजत श्याम अंग अद्‌भुत छबि छाई ।। मुक्तामाल फूली वनजाई परमानंद प्रभु सब सुखदाई ।।२।। राग सारंग देखिसखी गोविंदकें चन्दन शोभित सांमल अंग ।। नानाभांति विचित्र चित्रकीये तामें केसर विविध सुरंग ।।१।। कंठमाल पीयरो उपरेना बनी इजार पचरंग ।। कानन करणफूल भृकुटी गति मोहत कोटिअनंग ।।२।। मृगमदतिलक कमल दल लोचन शीसपाग अर्धंग ।। चतुर्भुजप्रभु गिरिधर तन छिनछिन छबिके उठित तरंग ।।३।। राग सारंग देखरी देख रसिक नंदनंदन ।। लटपटी पाग सुभग आधेसिर रहीढरक कछुवंदन ।।१।। मृगमद तिलक रुचिर वनमाला तनचरचित नवचन्दन।। चितवनि चारु कमलदल लोचन युवती जन मन फंदन ।।२।। कबहुंक सहज बजावत सारंग कल मूरली स्वरमंदन ।। चतुर्भुजप्रभु सुखरास सकल अंग गिरिधर विरह निकंदन ।।३।। राग सारंग बन्यो बागो बामना चंदनको ।। चंपकलीकी पागबनाई भालतिलक नवबंदनको ।।१।। चोलीकी छबि कहत न आवे काछोटा मनफंदनको ।। परमानंद आनंद तहांनित मुख निरखत नंदनंदनको ।।२।। राग सारंग आज बने गिरिधर दूल्हे चंदनके वागे ।। टूटत तृण रोमरोम मन्मथ रस पागे ।।१।। भामिनी करत तहां मंडप अति शोभा ।। फिर फिर झंकार करत मधुप वास लोभा ।।२।। यह विध मिल मिथुन वपु विविध रंग बाढे ।। नागरी निजभाव रवन ऊपर लखकाढे ।।३।। उपमाकों कोंन कहे कोटि मन्मथ मन लाजे ।। लघुगोपाल नयनन लख सहचरी सुखकाजे ।।४।। राग सारंग आज बने गिरिधारी दूलहे चंदनकी तन खोर करें ।। सकल सिंगार बने मोतिनके बिविध

कुसुमकी माल गरें ॥१॥ खासा को कटि बन्यो पिछोरा मोतिन सेहरो शीस धरें ॥ राते नयन बंक अनियारे चंचल खंजन मान हरें ॥२॥ ठाडे कमल फिरावत गावत कुंडल श्रमकण बिंदु परें ॥ सूरदास मदन मोहन मिल राधासों रति केलि करें ॥३॥ राग सारंग अति उदार मोहन मेरे निरख नयन फूले ॥ बीचबीच बरुहा चंद फूलनको सेहरोरी माई कुंडल किरन ऊपर निगम अगम भूले ॥१॥ चंदनके चित्रकीयें बनी कुंदमाल हीयें पीतांबर कटि बांधें अंग अनुकूले ॥ छीतस्वामी गिरिवरधर गायनकों नाम धूमर टेरत आय ठाडीं भई कदंबतरु के मूले ॥२॥ राग सारंग नीकीबांनिक गिरिधरनलालकी ॥ सहजई मांझ हरत सर्वस्व हसि चितबनि नयन विशालकी ॥१॥ लटपटी पाग तिलक मृगमद रुचि अनुपम भृकुटी भालकी ॥ कुंडल किरण प्रतिबिंब बिराजत छबिराजत वनमालकी ॥२॥ कोटि काम विथकित छबिराजत सुंदर श्याम तमालकी॥ चतुर्भुज प्रभु गढी मनमेरे छबि मोहन मदनगोपाल की ॥३॥ राग सारंग आजबने नंदनंदरी नवचन्दन अंग अरगजा लायें ॥ रुरकत हार सुढार जलज मणि गुंजत अलि अलकन समुदायें॥१॥ पीत वसन तन बन्यो पिछोरा टेढी पाग टोरालटकायें॥ अक्षयतृतीया अक्षयलीला अक्षयगंगादास सुखपायें॥२॥ राग सारंग चंदनको वागो बन्यो चंदनकी खोर कीयें चंदन के रूखतर ठाडे प्यारी॥ चंदनकी पाग शिर चन्दन को फेंटा बन्यो चंदनकी गोली तन चंदनकी सारी॥१॥ चन्दनकी आरसी निहारतहें दोऊजन हंसहंस जात भरत अंकवारी॥ सूरदास मदनमोहन चन्दनके महल बेठे गावत सारंग राग रंग रह्यों भारी॥२॥ राग सारंग चन्दन पहेरें गोवर्धनराय॥ संगबनी वृषभाननंदनी शोभा वरनी न जाय॥१॥ विविध भांतके हार मनोहर चन्दन तिलक बनाय॥ ब्रजनारीं मिल मंगल गावें जो जाके मनभाय॥२॥ सब सामग्री भोग धरावें मेवा बहोत मंगाये॥ चतुर्भुजप्रभु गिरिधर मुख निरखत कोटि अनंग लजाये॥३॥ राग सारंग सखी सुगंध जल घोरिकें चंदन घस अंग लगावें॥ निरख निरख लालन मुख हंस हंस मन ललचावें॥१॥ चंदन अंग चित्रीत कीये बहुविध हुलरावें॥ कृष्णदास लेपन

करे मन्मथही लजावें ।।२।। राग सारंग मेरे गृह चंदन अति कोमल लीजे हो सुंदर व्रजनायक ।। परमउदार चतुर चिंतामनि लाई स्वच्छ तुमलायक ।।१ ।। अंगलेपन करत परस्पर निरख अनंग लजावत ।। चंदन पहेरे आय हरि बैठे सूर रसिक जस गावत ।।२ ।। राग सारंग नंदनंदन चंदन पहरें नवघन सुंदर केसर रंजित प्रीतम प्रीत गहेरी ।। जमुना तट निकुंज मंदिर में संग व्रजजन ठहरेंरी ।।१ ।। कुसुमनके बिजना ढुराय वदन हरिहीयते बिरहकी खेद हरेंरी ।। मीठे कंठ रसिकजन गावत कोकिलाको गरव हरेंरी ।।२ ।। राग सारंग आज सखी राजत श्रीनंदनंदन ।। खासाको कटि लसत पिछोरा अंग लगायें चन्दन ।।१ ।। तामधि चित्र बनावत बनिता करत मदनको कंदन ।। द्वारकेश बिजनाजु ढुरावत चरन कमल करि वंदन ।।२ ।। राग सारंग चन्दनको बंगला अति शोभित बेठे तहां गोवरधनधारी ।। शोभित सबे साज चहुं ओरन संगराजत वृषभान दुलारी ।।१ ।। अति सुंदर जारी झरोखा अतिही विचित्र बनी चित्रसारी ।। रत्नजटित सारोटा बिराजत श्रीनवनीत प्रीया सुखकारी ।।२ ।। चहूं ओर व्रजबनिता निरखत रतनजटित नोछावर वारी ।। परमानंद प्रभुके हित कारन सभग सेज रच रुचिर सवारी ।।३ ।। राग सारंग चंदन अरगजा ले आई बाल लालके अंग लगावन ।। सुगंध गुलाबजल तामध्य कपूरडारि अंजुली भरभर लेपत गात लागत पवन चढावन ।।१ ।। नाना बहु भांतनके कुसुमनसों शय्यारची मची सुवास बसी प्रीतम मनभावन ।। मुरारीदास प्रभु ग्रीष्मरितु दाह तपत तेसेंई लागी सारंग राग गावत ।।२ ।। राग सारंग सखी सुगंधजल घोरके चंदन हरि अंग लगावत ।। बदनकमल अलकें मधुपनसी टेढी पाग मन भावत ।।१ ।। कोउ बिंजना कुसुमनके ढोरत कुसुमभूखन लेले पहरावत ।। मृदुबेलि सीयरीतर क्रीडत व्रजाधीश गुन गावत ।।२ ।। राग सारंग चंदन कींवारद्वार तामें बैठे पियप्यारी करत बिहार दोउ अति सुखकारी ।। चंदनकी पाग शिर चंदनको पिछोरा कटि चंदनकी चोली बनी चंदनकी सारी ।।१ ।। कुसुमन बन मालगरें सीतल सुगंध खरें चंदनके बिंजना ढूरत व्रजनारी ।। चतुर बिहारी गिरिधारी छबि निरखत रीझरीझ रहसि रहसि भरत अंकवारी ।।२ ।।

राग सारंग　चंदनमहलमें केसर लगाये गात फूलनके हार चारु और उरधारे।। सीतल अरगजा लेले लेपत गात रंगभरी अखीयन सब सखी निहारे।।१।। मोहनपें पीतपट श्यामतन नील सारी रूपकी सीमारी सूर मुनिमन धारें।। सूरश्याम ग्रीष्मरितु तपत तेसेई गावत सारंगराग छूटत फूहारे संग छबिकी फूंआरें।।२।।　राग सारंग　आज गोपाल पाहुने आये आनंद मंगल गाऊंगी ।। जल गुलाबसों घोर अरगजा आंगनभवन लीपाऊंगी ।।१।। सीतल सदन सुखदके साधन कुचभुज बीच बसाऊंगी ।। कुंभनदास लाल गिरिधरको जो एकांत कर पाऊंगी ।।२।।　राग सारंग　कहां मेट आये हो पिया लालन अरगजा अंगको ।। अबही लगाय गये मेरे ग्रहतें ।।ध्रु.।। शिथिल किये नैन बेन सिथिल कियोहीयो कौन रंग भयो सब अंगको ।।१।। एसी कौन त्रिय जिन तुम्हे रिझायवेको मेट्यो ताप तनको।। सुघररायके प्रभु अजहु पाय परतहो बचन स्थिर स्वास भयो भ्रंगको।।२।।　राग सारंग　सुनरी आली दुपहरकी बिरियां बैठी झरोंखन पोवतहार ।। ओचक आय गए नंदनंदन मोतन चिते कांकरीडार ।।१।। हों सकुची लज्जीत भई ठाडी गुरुजन मनमें कियो बिचार ।। गोविंदप्रभु पिय रसिक शिरोमनी सैन बताई भुजापसार ।।२।।
राग सारंग　रुखरी मधुवनकी मोहनसंग निसदिन रहत खरी ।। जबतें परसभयो मोहनको तबतें रहेत हरी ।।१।। सीतल जल जमुनाको सींचत प्रफुलित द्रुमलता सगरी ।। नंददासप्रभुके शरन जाए तें जीवन मुक्ति करी ।।२।।
राग सारंग　चंदनकी खोर किये चंदन घस अंग लगावे सोंधेकी लपट झपट पवन फहरनमें। प्यारी के पिया को नेम पियके प्यारी सो प्रेम अरसपरस रीझ रीझावे जेठकी दुपेहरीमें ।।१।। चहुं ओर खस सँवार जल गुलाब डारडार सीतल भवन कीयो कुंज महलमें । सोभा कछु कही न जाय निरख नैन सचुपाय पवन ढुरावे परमानंददास टहलमें ।।२।।　राग सारंग　तपत धूप दुपेहरीकी ता मध तुम कोन कारन आये ।। सुनीहो गँवार नारी आदर करि मोहनकों आलिंगन करन देई मन भाये ।।१।। दसनको अग्रधूप मोहे व्रज सूर अनूप केसे नीके लागत मानो गृह बन आये ।। गोविन्दप्रभु जान सिरोमनि

लाडिले परेई रहो इन चरननतर जानत गेल भुलाये ॥२॥ राग सारंग केसें के केसें आये हो जु मेरे यह टीक दुपहेरीकी झकनमें । भवन बिराजो तो बिंजना ढुराउं श्रम जलकन संग देह ॥१॥ श्रम निवारीयें जू अरगजा धारीयें ओर टारीयें जू जियकों संदेह । चतुरसिरोमणि याही ते कहावत हो जू सूर सफल करो नेह ॥२॥ राग सारंग देखोरी यह चंदन पहेरे ठाडे कदम की छाई । कदम की डारतर सुन्दर खसखानो रच्यो कुसुमनसे सेज बनाई ॥१॥ बिंजना ब्यार करत ललितादिक छूटत फुहारे फुही । झरनाझर लाई सीतल मंद सुगन्ध ब्यार चलत तहां बैठे अधिक छबि छाई । श्याम सुन्दर ओर कुंवरी राधिका बैठे डार दोउ गल वांही ॥ हरिनारायन श्यामदास के चेरे इने नवनिधि दूजे अष्ट महा सिद्धि पाई ॥२॥ राग सारंग चंदन अरगजा लेपन आइ बाल लालके अंग लगावन । सीतल गुलाब जल ता मधि कपूर डारि अंजुली भरी भरी लेपत गात लागत पवन जु डार बन ॥१॥ नाना विधके कुसुमनसों सेज मनभावन । मुरारिदासके प्रभु ग्रीष्मऋतु दाह तपत तेसी लागी सारंगी गावन॥२॥ राग सारंग श्याम अंग सखी हमे चंदनकों नीको सोहे बागो । चंदन इजार चंदन को पटुका बन्यो सीस चंदनको पागो ॥१॥ अति छबि देत चंदन उपरना बीच बन्यो चंदनको तागो । सब अंग छींट बनी चंदन की निरखत सूर सुभागो ॥२॥ राग सारंग चंदन सुगंध अंग लगाय आये मेरे गृह हमही मग जोवत लाल तिहारोहे ॥ ढीले ढीले पग धरत घामके सताये लाल बोलहु न आवे बैन कोनके बचन पारेहो ॥१॥ बैठो लाल सीतल छांह श्रमहुको निवारन होय सीतल जल यमुनाको अनेक भांति पीजिये । नंददास प्रभु प्रिय हमतो दरसकी प्यासी ऐसी नीकी करो कृपा मोहि दरस दीजिये ॥२॥ राग सारंग आज मोही आगम अगम जनायो ॥ सोंधों छानी अरगजा चंदन आंगन भवन लीपायों ॥१॥ आगम आवन जान प्रीतम कों गोपीजन मंगल मायो ॥ आनंद उर न समाय सखी नव साजि सिंगार बनायों ॥२॥ तन सुख पाग पिछोरा झीनो केसर रंग रंगायो ॥ मुक्ता के आभूषन

गुही मनी पहिरावत हुलसायो ॥३॥ पंखा बहु सिर प्रीतम कों, नित राखुंगी छिरकायों॥ ग्रीषमऋतु सुख देति नाइक यह औसर चलि आयों ॥ आवेंगे महेमान आज हरि भाग्य बडे दिन पायों ॥ 'कुंभनदास' नव नेह नई ऋतु आगम सुजस सुनायों ॥४॥ राग सारंग चंदन पहिरि चली सुकुमारि लालन कौ मन मोहे ॥ सारी सरस बनी अति झीनी कर नौलासी सोहें ॥१॥ कर नोती झांई गंडनि पर देखत ही मन लोभा ॥ मृगमद तिलक विराजे भाल पर अखिल भुवन की सोभा॥२॥ पंकज लोचन अति अनियारे अंजन रेखा राजें ॥ नासा वेसरि की छबि निरखत कोटि काम छबि लाजे ॥३॥ अरुन अधर दसनावलि की दुति चिबुक चिन्ह सुखकारी ॥ मुख अवलोकति सखी ललितादिक अपनों तन मन वारी ॥४॥ स्याम संग कुंजन में ठाढी करत विनोद विसेके ॥ 'गदाधरदास' कहांलो वरनों जा मुख रसना इके ॥५॥ राग सारंग चंदन खौर ठौर ठौर अंग लेपन करत अरस परस बिलास ग्रीषम तपति ॥ गुलाबन की पंखुरिन सौं सेज रचि पचि सुगंध सुवास बस पुहुपन के बींजना ढुरत ढुरावत प्यारी प्यारे प्रानपति ॥१॥ पुहुपन सौं गूंथे बार पुहुपन के सब सिंगार गुलाब जल छूटति फुहारे भर भर अंक माल त्यों त्यों त्यों प्यारी अति कंपत ॥ 'हरिवल्लभ' प्रभु गुंसाई यह विधि ऋतु मनाई रीझि रीझि भींजि भींजि हँसि हँसि रसिक रस में दोऊ अति झंपत ॥२॥ राग सारंग चंदन चित्र सम्हारे री बागे चंदन कुंज बैठे पियप्यारी ॥ चंदन तलप रची मन भाई चंदन की भीजी ओढे पीत सारी ॥१॥ चंदन सौं मानौं पवन लागत मंद मंद आवत सुखकारी ॥ दास 'कल्यान' चंदन लिए ठाढी सखी कुंज तरे अवलोकत भारी ॥२॥ राग सारंग हरि के अंग कौं चंदन लपटानौं तन तेरे दिखियतु जैसें पीत चोली ॥ आभूषन मरगजे चंदन लपटावत छिपै न छिपाई मानौं कृष्ण बोली॥१॥ कहुं चंदन कहुं अलक ही खसि सुरत रंग की पोट खोली ॥ 'हरिदास' के स्वामी स्यामा कुंज बिहारी अरुन कंठ बिच रहत न ओली ॥२॥ राग सारंग ए दोऊ सघन कुंज के द्वार ठाढे करत सिंगार परसपर ॥ सेत कुलहे सिर स्वेत पिछोरा मोतिन माल बिराजति उर

पर ॥१॥ नील जलद तन राजत तिहारो चंपक बरन तिहारी सोहत सुंदर वर ॥ 'रसिक' प्रीतम की बानिक निरखति लेति बलैयां दोऊ कर कर ॥ राग सारंग चंदन महल बन्यो अति सुंदर ॥ ता मधे बैठें बनी मदन गुपाल ॥१॥ अति रमनीय पुनित किसोरी अंग नवल बनी राधे बाल ॥ कटि धोती उपरना केसरी (सीस) किरीट कुंडल बन माल ॥ 'कृष्णदास' रसरास रसिक दान निरतत गावत परम रसाल ॥२॥ राग सारंग दंपति सुख करति अति ही रस भीजे चंदन अरगजा अंग लेपन कीए ॥ अति सीतल सुगंध खसखानो छिरक्यों गुलाब जल बरखत पवन पानी पुरवा देखीयत ग्रीषम ऋतु मानन लागे हरख हिये ॥१॥ अग्र धूम अग्र धूम महेक आवत सौरभ लेत सुख पावत जीए ॥ जानन मनि जान 'तानसेन' के प्रभु अचवत नित अमीए ॥२॥ राग नायकी आड चोताल ॥ पायन चंदन लगाऊं ॥ बहो भांतिन बिजना ढुराऊं छिरकि गुलाब जल तों तन नैन सिराऊं ॥१॥ अगर कपूर घसि अंग लगाऊं मृगमद आड बनाऊं ॥ 'कल्यान' के प्रभु गिरिधरन छबिले लै लै लाड लड़ियाऊं ॥२॥ राग सारंग सीतल समीर तन चंदन कौं लेप किये बैठे लाल कदम की छांही ॥ फूलन कौ हार हिए प्रेम भरे अति जीऐ लेत प्यारी अंक लाई मेलि ग्रीवा बांही ॥१॥ करत अधर मान परसि करत कुच कंचुकी के बंद खोलि मन न अघाही ॥ श्रीविठ्ठल 'गिरिधरनलाल' सकति बरनि कोंन सुख कौं समूह बाढ्यौं कुंज वन मांही ॥२॥ राग बिलावल हों वार डारो जगत ब्रज ईस सीस अध टेढी पगीयन उपर ॥ तन टूटत बलि जाय जुवति जन जहां तहां देखियत चटक कर ॥१॥ तन चंदन ओर स्वेत पीछोरी अरगजा भीजी रह्यो सुन्दर बर ॥ कल्याण के प्रभु गिरिधरजु की माधुरी निरखि मदन मनहर ॥२॥ राग सारंग आज अति सोभित है नंदलाल । नवचंदनको लेप कियो है ता पर मोतिन माल ॥१॥ खासाको कटि बन्यो पिछोरा कुलह जु सुतरु सोहे भाल । कुन्द मालती कंठ विराजत बीच बीच फूल गुलाल ॥२॥ सारंग राग अलापत गावत मधुर मधुर सुरताल ॥ गोविन्द प्रभुकी या छबि निरखत

मोहि रही व्रजबाल ॥३॥ राग सारंग चोताल ॥ अति सुवास सीतल उसीर सार छिरकत वार वार अतिसुकुमारी ॥ भरि गुलाब जल अपार फुहारेन की झर झरात चंदन छिरकत छैल पहिर स्वेत सारी ॥१॥ बार बार तृन तोरे गोकुल चंद पर स्यामा सलोनी संग चितवत चित चोरे ॥ 'छीत स्वामी' गिरिवरधर विट्ठलेश पद प्रताप निरखि नैंन रस बस भई सब ही तृन तोरे ॥२॥ राग सारंग अति उदार मोहन मेरे निरखि नैंन फुले री ॥ बीच बीच वरुहा चंद फूलन को सेहरो माई, कुंडल, किरन पर, अगम निगम झुलैरी ॥१॥ कुंदन की माल गरे चंदन के चित्र करे पीतांबर फेंटा बांधे अंग अनुकुले री ॥ 'छीत स्वामी' गिरिवरधर गायन को नाम धूमरि टेरत, आय ठाढी भई कदम तरु के मुले री ॥२॥ राग सारंग आज बने गिरिधरनलाल सखी उसीर महल मधि कुसुम सिज्या रची ॥ जंत्रन फुहारे छुटे सीत मंद अति सुगंध त्रिविध ब्यार सिरी सोभा सची॥१॥ अरगजा अनुप अंग विविध कुसुम भरत रंग निरतत रस भरे त त थेई नची ॥ 'नंददास' प्रभु पिय लेत गति में गति गिड गिडता थिलांग थिलांग मृदंग बजी॥२॥ राग सारंग ग्रीष्म ऋतु माधो जू के महल में आवन कों अति तरसत हैं ॥ जेठ मास में तन जुडात ज्यों माघ मास सरसत हैं ॥१॥ भवन बूंद यों छूटत फुहारे मानौं पावस ऋतु बरसत है ॥ घोरि अरगजा अंग लगावति बैठें अति हुलसत हैं ॥२॥ ना वैभव वैकुंठ जो ब्रज में श्रीवल्लभ गृह दरसत हैं ॥ 'नंददास' तहां ताप रहे क्यों रमा आदि पग परसत हैं ॥३॥ राग सारंग बैठे व्रजराज कुंवर उसीर सदन कुंज भवन सीतल मंद त्रिविध पवन लागत सुखदाई ॥ सहचरी समीप आय ठाढी मुख निरखत हें पहिरावत पहोंप माल अरगजा लगाई ॥१॥ इक सखी पान खवावे अधर कमल परस करत इक सखी दरपन ले पिये को दिखाई ॥ प्रभु 'कल्यान' गिरिधर पीय यह बिध ऋतु मनाय निरखि निरखि उर आनंद हृदय में समाई ॥२॥ राग सारंग ओढें लाल उपरेनी अतिझीनी ॥ तनसुख श्वेत सुदेश अंस पर बहुत अरगजा भीनी ॥१॥ अतिसुगंध सीतल अरु चंदन सादी रचना

कीनी ।। रहीधसि भुव पर पाग दुपेची कोटिमदन छबि छीनी ।।२।। सूथन बनी हिरमिची शोभित गति गयंदकी कीनी ।। परमानंदप्रभु चतुरशिरोमणि व्रजवनिता प्रेम रतिदीनी ।।३।। राग सारंग सखी सुगंध जल घोरके चंदन हरि लगावत । वदनकमल अलकें मधुपनसी टेढी पाग मन भावत।।१।। कर बिंजना कुसुमन के ढोरत कुसुम भूखन ले ले पहिरावत।। मृदुवेली सी वृच्छतर क्रीडत व्रजाधीश गुन गावत ।।२।। राग सारंग अति उदार मोहन मेरे निरखि नैंन फुले री ।। बिच बिच बरुहाचंदः फूलनको सेहरो बन्यो कनक कुंडल सो सोभादेत निगम नेत मुलेरी।।१।। चंदन को लेपकीये गुलाब की बन मालही । येः पीतांबर कट बाधें अंगन पट दकुलें ।। छीत-स्वामी गिरिवर धर गायन को नाम धोरी टेरत सब ठाड़ी भई तरु कदंम मुलें ।।२।। (सेहेरा)

## खसखाने के पद

राग सारंग सीतल उसीर गृह छिरक्यो गुलाब नीर परिमल पाटीर घनसार वरखतहैं ।। सेज सजी पत्रनकी अतरसों तरकी अरगजा अनूप अंग मोद दरसत हैं।।१।। वीजना बियार सीरी छूटत फुहारे नीके मानोघनमें न्हैंनी न्हैंनी फुही बरसतहैं।। चतुरविहारी प्यारी रससो विलास करत जेठमास हेमंतऋतु सरस दरसत है ।।२।। राग सारंग यमुना तट नवनिकुंज द्रुम नवदल पहुप पुंज तहां रची नागरवर रावटी उसीरकी ।। कुंकुम घनसार घोर पंकज दल बोरबोर चरचत चहूं ओर अवनि पंकज पाटीरकी ।।१।। शोभित तन गौर स्याम सुखद सहज कुंजधाम परसत सीतल सुगंध मंदगति समीरकी ।। नंददास पियप्यारी निरख सखी ललिता ओट श्रवणान धुनि सुन आज किंकिणी मंजीर की ।।२।। राग सारंग वृंदावन कुंजनमें मध्य खसखानो रच्यो सीतल्ल वियार झुक गोखन बहत है ।। सुगंधी गुलाबी जल नाना बहुभांतिनके लै लाय धाय सखी सब छिरकत हैं ।।१।। धार धुरवा छूटत तहां नीके दादुर मोर पिक शुकजु फिरत हैं।। कृष्णादास फुहारे छूटे मानो मनमथ लूटें झुक झुक झुक धारे हौदन भरत हैं।।

राग सारंग अनत न जैये पिय रहिये मेरे ही महल ॥ जोई जोई कहोगे सोई सोई करोंगी टहल ॥१॥ शय्या सामग्री वसन आभूषण सब बिध कर राखोंगी पहल ॥ चतुर विहारी गिरिधारी पियाकी रावरी यही सहल ॥२॥ राग सारंग सुंदर तिबारो खसखाने को बनायो है बैठे व्रजराजकुंवर मनको हरतहैं ॥ अतिसुगंध जल बहुभांतिन के बेलाभर लाय लाय सखी सब छिरक्यो करतहैं ॥१॥ सीतलसुगंध त्रिविध समीर बहे कोकिला चकोर मोर डोलत फिरत हैं ॥ जीवन फुहारे छूटें मानो मन्मथ लूटें झुक झुक झुक धार हौदन भरतहैं ॥२॥ राग सारंग सीतल कुंज पहोप पुंज महा उसीरकी रावटी टाटी छिरकत कुंकुम मलयज देखत आवत कांपी ॥ बहुत कर कपूर चूरसों सरस प्रेम पूर यमुनाकी लोल लहर बहुत वृक्ष चांपी ॥१॥ केसर मृगमद गुलाल लैलै दल कोमल जाल कोतों रची सहज रसाल पीतांबर ढांपी ॥ तेरोई ध्यान धरत तेरोई नाम रटत जगतको प्रभु आरति लेन पठइ दिनमापी ॥२॥ राग सारंग बिराजत दोऊ उसीरमहल छूटत फुहारे आगें नीके ॥ ललितादिक सखी गावें बजावें रसकी चहलपहल ॥१॥ जबप्यारी फल ले धरत धारपर थिरह्वे रहत मानी चहल ॥ चतुर बिहारी गिरिधारी प्यारीकी सखी भूली विजनाकी टहल ॥२॥ राग सारंग सूर आयो सिरपर छाया आई पायन तर पंथी सब झुक रहे देख छांह गहरी ॥ धंधीजन धंधौ छांड रहेरी धूपन के लिये पशुपंछी जीव जंतु चिरिया चुप रहरी ॥१॥ व्रजके सुकुमारलोग देदे कमार सोवें उपवनकी ब्यार तामें पोढे पियप्यारी ॥ सूर अलबेली चल काहेकूं डरत हैं महाकी मध्य रात जैसें जेठकी दुपहरी ॥२॥ राग सारंग वृंदावन सघनकुंज माधुरी लतान तर यमुनापुलिन में मधुर बाजी बांसुरी ॥ जबतें ध्वनि सुनी कान मानो लागे मदनबाण प्राणनहू की कहा कहूं पीर होत पांसुरी ॥१॥ व्याप्यो जो अनंग ताते अंग सुधि भूल गई कोऊ निंदो कोऊ वंदो करो उपहासरी ॥ ऐसे व्रजाधीशजीसूं प्रीति नई रीतवाढी जाके हृदय गड रही प्रेमपुंज गांसरी ॥२॥ राग सारंग उसीर भवन छायो सुमन तामें बैठे राधा रमन एरी अंस भुज मेली ॥ मृगमद घसि अंग लगाय कपूरजलसों चुचाय सीतल लागे दोऊरी

करत सुखद केली ॥१॥ गावे सारंगराग सरस स्वर कोकिला सुरत रस चलेतें न चलाय रससों पुलकित द्रुमवेली ॥ जगन्नाथहित विलास ग्रीष्म ऋतु सुखनिवास ललितादिक निरख निरख पावे रसझेली ॥२॥

राग सारंग शीतल पटीर गुलाब नीर सुख की सीर उसीर भवन सिज्या रची स्वेत अत्तरसों तरकर विविध कुसुम ढोरन आवत बिजना पवन ॥१॥ छूटत फुहारनसों नेन्ही सी फुहारी घनसार घोर अंगराग दहन ॥ तहां बैठे चित्र विचित्र चक्र चूडामणि राजत राधिका रवन ॥२॥

राग सारंग शीतल खसखानो सुहानो मन मान्यो अमृत रूप अधर आन्यो ता मध्य बैठे बालकृष्ण सुनत राग वास बरसानो ॥ छूटत हें फुहारे नाना बिध होद भरे बादर की छबि कारे जामें वर्षा निर्तत मोर अखारे कोकिला सोर करत सुख बरखानो ॥१॥ अतर ओर गुलाब अरगजा लग्यो सुगन्ध समीर बहत मंद मंद बिजना करत सखी सब साज लिये नेनन सरसानो ॥ कबहुक जल ले ले छिरकत शीत लगत मानों केल करत फिरत गावत दोउ तान तरंग ब्रजाधीश प्रभु तन मन धन हरखानो ॥२॥

राग सारंग शीतल सुवास अतिही छिरक्यो गुलाब रस खसखानो ॥ मध्य निर्मल जंत्र जल कृत पवन जाडो लागत हेमन्त ऋतु याही ठोर अब आय रही हे मानो ॥१॥ अत्तर अरगजा सोहे पान फूल तेसोई राग रंग सुन्दरि त्रियन संग एसेंइ मन आनन्द आनों ॥ प्रभु विचित्र गिरिधर पिय तुम योंही ग्रीष्म ऋतु जुग बर बानों ॥२॥

राग सारंग सोहत रंग भरे दोउ उसीर महल में छूटत फुहारन गुलाब नीर ॥ वरनीय अली भुव बूंदन फबीहे मानोअलक शरद कमल ऊपर ओसकन जैसें दोऊ जन अंग लपेटहें चीर ॥१॥ गावत जहां दम्पती बजावत विशाखा बीन ठाडी हे प्रवीन सखी सभा सुरत हीर ॥ कृष्णदास प्रभु गिरिधर छबि निरखत सावनसों झर लायो रसकुंज पुंज धीर समीर ॥२॥

राग सारंग अत्तर गुलाब नीर परदा लपटे उसीर त्रिविध समीर की झकोर लहवो करें ॥ छूटत फुहारे होद भरे अति भारे सारे नानाविध चादर की धार बहवो करे ॥१॥ रंग जमे रागिन रहत सारंग की ग्रीष्म निवास गुनी गान कहवो करे ॥ एसे निज मंदिर में बिराजें

दोउ बालकृष्ण प्रभु व्रजाधीश आठो प्रहर दरस लहवो करे ॥२॥

राग सारंग महेल उसीर दोउ बैठे मोज में होद में पाम झुलावें ॥ गरें बैयां झुक लेत फुहारन मुख ढिंग मुखहि डुलावें ॥१॥ स्वेत महीन उपरनान में छबि शोभित बार खुलावें ॥ नागरिया नागरि छबि चितवत एक टक पलक भुलावे ॥२॥

राग कान्हरो आज अटारी पर उसीर महल में रचे दम्पति ब्यारु करत ॥ खोवा मलाई बासोंधी ओर पय हँस हँस घूंट भरत ॥१॥ चहुं ओर खसखानो छुटत फुहारे फुही बिंजना बयार सिरी मन कों हरत ॥ नंददास प्रभु प्रिया प्रितम परस्पर हँस हँस कोर लेत सहचरी कनक डबा बीरासों भरत ॥२॥

राग सारंग देखियत माधोजुके मेहेल । जेठमास अति जड़ात माघमास कहेल । दूरिहीते देखियत है बादर केसे पहेल । बीच बीच हरत स्याम जमुनाकेसे देहेल । श्रीपति को कहा काज यही बात की सेहेल ॥ परमानंददास तहां करत फिरत टहेल ॥

राग सारंग शीतल सुवास अतिही छिरक्यो गुलाब रस खसखानो । मध्य निर्मल जंत्र जल कृत पवन जाडो लागत हेमन्त ऋतु याही ठोर अब आय रही हे मानो ॥१॥ अत्तर अरगजा सोहे पान फूल तेसोई राग रंग सुंदरि त्रियन संग एसेंई मन आनंद आनो । प्रभु विचित्र गिरिधर पिय तुम योंही ग्रीष्म ऋतु जुग वर बानों ॥२॥

राग सारंग शीतल उसीर गृह कुंज में ता मध्य श्याम श्यामा सखीजन । जारी झरोखा संवार कोउ ठाडी फूल्यो हे सुवास सुधावन ॥१॥ कमल वरन दोउ अरगजा अंग सोहे झीनी पाग सारी श्याम छबि पाई अलकन । व्रजाधीश प्रभु केलि जल यंत्र फूही जल बरखत मानों सुर कुसुमन ॥२॥

राग सारंग शीतल खसखानो सुहावनो मन मान्यो अमृत रूप अधर आन्यो ता मध्य बैठे बालकृष्ण सुनत राग वास बरसानो । छूटत हें फुहारे नाना विध होद भरे बादर की छबि कारे कारे जामें वर्षा निर्तत मोर अखारे कोकिला सोर करत सुख बरखानों ॥१॥ अतर और गुलाब अरगजा लाग्यो सुगंध समीर वहत मंद्र मंद विजना करत सखी सब साज लिये नेनन सरसानो । कबहुक जल ले ले छिरकत शीत लगत मानों केलि करत फिरत गावत दोउ तान तरंग व्रजाधीश प्रभु तन मन धन

हरखानो ॥२॥ राग सारंग छूटत फुहारे चारु चढे चंदूवा सो लागे बूंदन की बरखा बरखा झरे लागी मानों सावन की । चलत सुगंध डोरे अरगजा अरु चंदन की अत्तर गुलाब नीर उसीर छिरकावन की ॥१॥ बने जल भोन मे बिछोना रचे बंगला में मच्छ कच्छ मेंडक अरु मुरग नचावन की । राजभोग आरती उतारत श्रीविठ्ठल प्रभु सूर बलिहारी जाय नट वर मन भावन की ॥२॥ राग सारंग सीतल खसखानौ अति ही सुहानौं मानों ॥ मानौं हेमंत ऋतु गेह रूप धरे आय ता मधि बैठें बालकृष्ण सारंग मधुरे धुनि बीन सरस राग रंग बरसानों ॥१॥ छूटत फुहारे नाना बिधि हौद भरे भारे चादरन की धुनि चहूं औरनों ॥ निरतत मोर कोकिला सोर दामिनि सी प्यारी घनस्याम संग रंग भरी सावन सौं सुख सरसानों ॥२॥ राग सारंग एसी धूपनमें पियजाने न देऊंगी ॥ विनती करजोर प्रियाके हांहां खात तेरे पैयां परुंगी ॥१॥ तुमतो कहावत फूल गुलाबके संगके सखा ग्वालन गारी दऊंगी ॥ परमानंददास को ठाकुर करतें मुरलीयां अचक हरुंगी॥२॥ राग सारंग टीक दुपहरीकी तपन में भलेई आये मेरे गेह ॥ भवनबिराजो बिजना ढुराऊं श्रम झलकत सब देह ॥१॥ श्रमको निवारीये अरगजा धारीये॥ जीयतें टारीये ओर संदेह ॥२॥ चतुर शिरोमनि याहीतें कहीयत सूर सुफल करो नेह ॥३॥ राग सारंग कहांतें आये हु जा मध्यान्ह समे एसी घाममें बेठोजु में ढोरूं बीजना ॥ निश कहां बसेलाल जिय बस्यो वाको ख्याल हारि गये हो जुलाल पलका पर पोढना ॥१॥ सीतल सुगंध चारु अरगजा घोर धर्यो रावटीमें चलो लाल चंदन अंग परसना ॥ हरिनारायन श्यामदास के प्रभु प्यारे मया कीनी मोपर नैनन निरखुं बिसारुं न पलना ॥२॥ राग सारंग सूनरीआल्ली दूपेरीकी बिरीयां बैठे झरोखन पोवत हार ॥ ओंचक आय गये नंदनंदन मोतन चितये कांकरीडार ॥१॥ हों सकुची लज्जीत भई ठाडी गुरुजन मनमें कियो बिचार ॥ गोविंद प्रभु पिय रसिक शिरोमनी सेन बताई भुजा पसार ॥२॥ राग सारंग दुपेरी झनक भई तामें आये पास मेरे में उठ कीनो आदर ॥ आंको भरले गई तनकी तपत सब ठोर ठोर बूंदन चमक ॥१॥ रोम रोम सुख

संतोष भयो गयो अनंग तनतें न रह्यो ननक ।। मोहि मील्यो अब चतुर धोंधीके प्रभु मिट गई विरहकी जनक ।।२।। राग सारंग ज्येष्ठ मास तपत घाम कहांकुं सिधारो लाल ऐसी कोन चतुर नार वाको बीरा लीनों ।। नेंकतो कृपा कीजे हमहुंको दरश दीजे जाईये फीर वाके धाम जासुं नेह नवीनों ।।१।। बांह पकर भवन लाई शय्यापर दीये बेठाई अरगजा लगाय अंग हियो सीतलकीनो ।। रसिक प्रितम कंठलाय लीनों रससों मिलाय अरस परस केलि करत प्रीतम बसकीनों ।।२।। राग सारंग अपने अपने घरके किंवार देकें सोय रहे ऐसेमें तू क्यों न रहीरी।। सूर आयो सिर पर छाया आई पायन तर बाटके बटाउ धूप देखके झूकेरी ।।१।। पहेरे तन श्वेत सारी मोतिनकी मालगरे सोल्हे सिंगार अंग क्यों न सजेरी ।। सूरदास मदन मोहन तलफत जेसे चात्रक मीन माघकी मध्यरात्र जेसें ज्येष्ठ की दुपहरी ।।२।। राग सारंग केसे केसे आये मेरे गेह ठीक दुपहरिकी झकनिमें ।। चंबर ढुराउं सेज बिछाउं श्रमकनि झलकत देह ।।१।। श्रमनिरवारीये अरगजा लेपन करो काहेको करत संदेह ।। रसीक प्रीतम याहीतें कहावत सूर सुफल करो नेह।।२।। राग सारंग उसीरमहल बेठे पियप्यारी गावत तान तरंग ।। सा री ग म प ध नि अलाप करत सुर तीनग्राम इकबीस मूरछना संग ।।१।। कंठबांह जोरि नवलघूंघट खोल नैनन सैनन बहुरंग ।। तानसेनके पिया हे बहुनायक रीझरीझ वार देत मानिनी मानभंग ।।२।। राग सारंग सीयरे तहखाने तामें खासे खसखाने सींचे अत्तर गुलाबकी ब्यारहु लसतहे ।। भुधर भुहारे भारे छूटत फुहारे सारे तामें बैठे दंपति डुब दपटतहे।।१।। एसेमें गवन कैसे कीजेहो मेहवासि कान्ह सोंधेकी तरंग प्यारी अंग लपटत हे ।। चंदन किंवार घनसारकी गार मानों ताउ आंन ग्रीष्मकी झार झपटतहे ।।२।। राग सारंग रच्यो खसखानों आज अति तामें राजे रावटी उसीर नीर छीरक छबीली ।। छुटत फुहारे चार जल गुलाब भरि अपार निरख थकित छबि जोबन खीली ।।१।। अरगजा चर्चति चंदमुखी चहुं ओर ठाडी चतुर चमेली बेला राय बेली मालती कर सोहे ।। श्वेत बसन अति सुवास बरनत छबि नंददास निपट निकट कोटि मनमथ मोहे ।।२।।

राग सारंग अति सुवास सीतल मेहेल उसीरसार छिरकत बारबार अति सुकुमारि ॥ भर गुलाब जल फुआरे छूटत दरदरीन चंदन छिरक छेल पहर श्वेत सारी ॥१॥ बारबार त्रन तोरे गोकुलचंदपर स्याम सलोने संग चितवत चोरे ॥ छीतस्वामी गिरिवरधर विट्ठलेश पद प्रताप निरखत नेंन रस बस सब सिरमोरे॥२॥ राग सारंग सौरभ सरस सनी सीतल नव बना रावटी सुभग उसीर ॥ बारबार छिरकत चंद्रावलि निरख नेंन सुंदर बलवीर ॥१॥ पंखा करत नार रसभीनी पहर अरगजा स्वेत सुचीर ॥ निरख निरख बलजाय गदाधर छूटत धार फुआरन नीर ॥२॥ राग सारंग बनी रावटी आज अनुपम नवल उसीर सीतल अतिसार ॥ बेठेहें पियप्यारी दोउ पहर अरगजा सरस सुधार ॥१॥ करत ब्यार नार नव ललिता निरखत रूप सुधा न अघाय ॥ रसिक प्रीतम जुग केलि करत जल जुगजुग दसदीस रह्यो जस छाय ॥२॥ राग सारंग अति बने दोउ मदनरूप से बिराजत उसीर महल छूटत फूहारे नीके प्रेम रस पुंज ॥ कुसुमन की शय्यारची बिबिध सुगंधखची सहचरी चहुं और सखी सघन बन कुंज ॥१॥ खासे खसखाने तामें गुलाब नीर बरखत मानों पियप्यारी हरखत जहां भंवर गुंज ॥ बिबिध फूलवारी फूली मदन मत्त पंग मुलि व्रजाधीश मधुपावलि गुंजत गुंज ॥२॥ राग कान्हरो बनी आज श्वेत पाग लालसिर चलो सखी देखन जाय ॥ उसीर महल में कुसुम रावटी छिरक्यो गुलाबनीर नैननको फल पाय ॥१॥ मंजुल चोटा तामधि बांध्यो बने हे मदनरूप कदमकी छांय ॥ नंददासप्रभु प्रिया प्रीतम परस्पर कबहुक करत केलि कबहुत हसि ढर जाय ॥२॥ राग सारंग करत जलकेलि पियप्यारी भुजमेलि ॥ छुटत फुहारे भारे उजल हो दसवारे अतही सुगंधकी रेलि ॥१॥ निरखत व्रजनारी कहाकहों छबिवारी ठाडी सखी सबसहेल ॥ राधागोविंदलाल जल मध्य करत ख्याल वृंदावन सुखझेल ॥२॥ राग सारंग सुर सुता के कुल दोऊ मिल बेहेरत ॥ गुलाब कुसम कुसमनजो सवारी सेज हींडोरा करत ॥१॥ धर्यो अरगजा सुगंध मिलाप ॥ त्रिविध पवन मन हरत ॥ कुसम माल ताहाः गुहें गुहें राखी कुसम बिजना हलत ॥२॥ सखी सबे छीरकाव करतहे मानो पावस

बरखत ।। होद फुहारे ऊड़त हजारे घनसावन सोझरत ।।३।। सुरमंडल ओर बिन मिलावतः वामसारंग सुर भरत।। मधुर मधुर तहां मृदंग बजावतः तानन तालन परत ।।४।। सखी सबे सिंगार बनावतः ऊपमा को मनधरत ।। परमानंदको भाव कुंज मधः पग घुंघरु बजत।।५।। राग सारंग बन बन में बनमाली बीहरत।। ललितादीक बनमाल लियें कर पेहेरावत मनुहारी ।।१।। अंबकदंब झुकेचहुदीसतें फूल रही फूलवारी ।। हंस चकोर मोर चात्रक पीक मधुप करत झंकारी ।।२।। नाना बिधके द्विजबर बोलत त्रिविध पवन सुखकारी ।। सुरदास प्रभु किये हे लीला प्राण करत बलहारी ।।३।। राग सारंग उसीर महलमें राजत दोऊ जन । सीस टिपारो सोहे लालके श्वेत सारी फबी रही प्यारी तन ।।१।। आसपास व्रजयुवति ठाडी करत विंजना बारत तन मन । 'चतुर बिहारी' दंपति अद्‌भुत छबि बरन सके एसो को है कविजन ।।२।। राग सारंग कुंज भवन के आंगन डोलत लै कर फूल छरी नंदलाला ।। करि चंदन की खोर मनोहर पहिरे विविध कुसुम की माला ।।१।। छूटत है चहुं और फुहारे ढोरत बींजना सब वृजबाला लै कर गेंद खिलावत प्यारी 'कृष्ण दास' प्रभु नैंन बिसाला ।।२।। राग सारंग रच्यो खसखानो आज ब्रजपति तामे राजे रावटी उसीर नीर छिरकि छबिली ।। छूटत फुहारे चारु जल गुलाब भर अपार निरखि थकित छबि जोबन गरविली ।।१।। अरगजा चरचित चंद्रमुखी चहूं ओर ठाढी चतुर चमेली बेली माल कर सोहें ।। स्वेत बसन अति सुवास बरनत छबि 'नंददास' निपट निकट कोटि मन्मथ मन मोहे ।।२।।

## नाव के पद

राग सारंग बैठे घनश्याम सुंदर खेवत हें नाव ।। आज सखी मोहन संग खेलवे को दाव ।।१।। यमुना गंभीर नीर अति तरंग लोलें ।। गोपिन प्रति कहन लागे मीठे मृदु बोलें ।।२।। पथिक तुम खेवट हम दीजियें उतराई ।। बीच धार मांझ रोकी मिषही मिष डुलाई ।।३।। डरपतहों श्याम सुंदर राखीयें पद पास ।। याही मिष मिल्यो चाहे परमानंददास ।।४।। राग सारंग चंदन पहेर

नाव हरि बैठे संग वृषभान दुलारीहो ।। यमुना पुलिन फूल शोभित तहां खेलत लाल बिहारीहो ।।१।। त्रिविध पवन बहत सुखदायक सीतल मंद सुगंधाहो ।। कमल प्रकाश कुसुम बहु फूले जहां राजत नंदनंदाहो ।।२।। अक्षय तृतीया अक्षय लीला संग राधिका प्यारी हो ।। करत बिहार सबे सखीसों नंददास बलहारी हो ।।३।। राग सारंग यमुना जल क्रीडत श्याम चहुं ओर बनी वाम नावमधि लाल रावटी रचि ।। फूलनको बंगला मनोहर राजत झुकि रही लता हंस ओर चकोरकी पंगति सचि ।।१।। कोकिला अलापत तान लेत सुखकारी गावत प्रवीन प्यारी सारंग राग खचि ।। छुटत जल जंत्रन फुंहीं मानों सुमन माल गुहीं व्रजाधीश मेंघ श्याम मूरत देखी ललचि ।।२।। राग सारंग श्याम जमुनां बीच खेवत नाव ।। एक सखी आई घरतें कहे मोहुकों बेठाव ।।१।। बेठों केसे घाट ओघट हे रपट परत हें पाय ।। हाथ पकर बेठाय आप ढिंग रसिकन रच्यो उपाय ।।२।। राग सारंग जमुनातीर अहीरन भीरन मोहन नाव चलावत जाई ।। सुंदर मुख अवलोकित सब त्रिय अंतरंग मानों नवनिधि पाई ।।१।। सुंदर सुखद स्रवत अंगअंग पीय अति मृदुबेन सुनत न अघाई ।। श्रीविट्ठल गिरिधर बिन देखें केसें धीर रहे मेरी माई ।।२।। राग सारंग वृन्दावन यमुना के जल खेवत नाव ललितादिक जहां कुंज कुसम रचित बैठे हरि राधा ।। प्रफुल्लित मुख दोऊ बने अरगजा रंग सारी पाग मोती भूषन सुभग अंग तेसी है रूप अगाधा ।।१।। वारवार तट हरे द्रुम गजवर कमनीय केलि मृदु सुगंध फेलि रह्यो तरनि तेज न बाधा ।। जंत्रन जल फूंही परत सुख दायक सखी जहां ब्रजाधीश मधुरी तान गावत सुर साधा ।।२।। राग सारंग नदीयां नदीयां तीर हरि नाव चलाई रे राधा नार गोकुलते कान्हाने सुध पाई रे ।। एक तो ब्याकुल बाल किनारें एक तो फिरत बनतें उपवन देत दिखाई रे ।।१।। एक बन ढूंढ सकल बन ढूंढ्यो कहां गये जादोंराई अरे ।। एक तानसेनको प्रभु अतिही अचगरो तोहि नंद दुहाई अरे ।।२।। राग सारंग जमुना जल क्रीडत दोऊ नाव मध्य पिय प्यारी डारत तनसार अति रस भरे री । कबहुंक जितत वृषभान नंदिनी मदनमोहन प्रियके मन जु हरे

री ॥१॥ कुसुमकी रावटी उसीर मध्य राजत अरगजा लेप तन किये मदनकेलि अनुहेरी ॥ 'व्रजाधीश' प्रभुकी पिछोरी और मुरली छिनाय लई सप्तसिंधु जुवति पायन परे री ॥२॥ राग सारंग कालिन्दीके घाट मानो ठाडोई रहत सदा मेरी माई ॥ एकन नाव चढावत माई एकनको ललचावत माई ॥१॥ सुंदर कर परसत जब मोहन कछु रस सींच सुधा बरखाई ॥ 'श्रीविट्ठल गिरिधर' निहार हरि हँसि हँसि कंठ लगाई ॥२॥ राग काफी एरी जमुना जल पान करेरी॥ निरख सखी वीजना ढुरावे तन चंदन सबतन लेप करेरी॥१॥ नाव बनी बंगला छबि राजत ग्रही राधा नवल वरेरी॥ दास गदाधर जमुना जल क्रीडत ग्रीष्म रितु दूर करेरी॥२॥

## उष्णकाल परदनी

राग सारंग सोहत लालपरदनी अतिझीनी॥ तापर एक अधिक छबि उपजत जलसुत पांति बनी कटी छीनी॥१॥ उज्ज्वलपाग स्याम सिर शोभित अलकावली मधुप मधुपीनी॥ कुंभनदास प्रभु गोवरधनधर चपल नयन युवतीन बस कीनी॥२॥ राग सारंग श्वेतपरदनी॥ आजअति शोभित हे व्रजनाथ॥ श्वेतपरदनी अरु उपरना चंदन लाग्यो गात॥१॥ मोतीन माल बिराजत उरपर लिये कमलदल हाथ॥ सूरदास उपमा कहा बरनों गिरि गोवरधननाथ॥२॥ राग सारंग स्याममाई श्वेत परदनी पहेरे॥ टेढी पाग शिर मोर पखौवा बांधे हेरे॥१॥ नवल निकुंज पुष्प शय्या रची छीरक्यो गुलाबजल गहेरे॥ मुरारीदास प्रभु चंदनको लेप कीयो पवन चलत जब हेरे॥२॥ राग सारंग ग्वाल पगा के पद॥ ★ छेल छबीले रंगरंगीले ग्वालपगा आज धर्यो मस्तकपर॥ छोर छबीलो पीतरंगको सूंथन कटि तेसो ओढे पीताम्बर॥१॥ मोतीयन कुसुममाल उरस्थल कुंज महल बेठे राधावर॥ सीतल सरस सुवास लेत तहां कुंभनदास प्रभु गोवरधनधर॥२॥ राग सारंग सहेरो ओर पिछोरा॥ बना सिर सहेरो बन्यो अतिनीको॥ पीत पिछोरा उर चंदनकी खोर दुल्हेजान ललीको ॥१॥ मंगलजस गावत युवतिजन

आरती करत मनहीको ॥ परमानंद यशोदामैया देत बधैया सबहीको ॥२॥ राग सारंग पहेरे लाल श्वेतपरदनी झीनी ॥ मृगमद छाप कीनी केसरकी सीतल अरगजा भीनी ॥१॥ गोरोचनको तिलक बिराजत अतिसुगंध कपूर मिलानी ॥ कमल लीये कर परमानंद शोभा निरख प्यारी रूप लुभानी ॥२॥ राग सारंग सोहत लाल परदनी झीनी तापर एक अधिक छबि देखियत जलसुत पांत बनी कटि छीनी ॥१॥ उज्ज्वल पाग बनी सिर राजत अलकावली मधुप मधुपीनी। चतुर्भुजदास लाल गिरिधर पिय चपल नैन चितवन बस कीनी ॥२॥ राग सारंग सोभित आडबंद अति नीको ॥ खासाको सोहे सिर फेंटा लाल बन्यो नंदजीको ॥१॥ मोतिन माल बिराजत उर पर लिये कमलदल ही को ॥ कुंभनदास प्रभु गोवर्धनधर लाल भामतो जीको ॥२॥ राग सारंग आज अति सोभित है नंदलाल। कोर केसरी धोती पहरे ओर उपरना लाल ॥१॥ चंदन अंग लगाय सांवरो अरु राजत बन माल ॥ अति अनुराग भरी ब्रजबनिता बल बल दास गोपाल ॥२॥ राग सारंग सुन्दर अति नंदजुको छगन मगनीयां। कटिपर आडबंद अतिनीको भीतर झलकत तनियां ॥१॥ लाल गोपाल लाडले मेरे सोहत चरन पैजनियां ॥ परमानंद दास के प्रभु यह छबि कहेत न बनियां ॥२॥ राग सारंग आई हो अबही देख सुघर सुंदर भेख ठाडोरी लरिका एक रूपको बावरो ॥ परदनी फबत पटुका कंठ फरहरतहे करत उनमान मैन बनत नहि रावरो ॥१॥ नीर जमुना के तीर भरत रही गागर देत जबहि उठाय देखत सब गामरो ॥ कृष्णदासनिनाथ नंदनंदन कुंवर हृदय मे बसत वर मेरोई सांवरो ॥२॥

## फूल मंडली के पद

राग ललित आजु प्रभात लता मंदिर में सुख वरखत अति हरख युगलवर ॥ गौर श्याम अभिराम रंगभरे लटक लटक पग धरत अवनीपर ॥१॥ कुच कुमकुम रंजित माला बनी सुरतनाथ श्रीश्याम रसिकवर ॥ पिया प्रेमके अंक अलंकृत चित्रित चतुर शिरोमणि निजकर ॥२॥ दंपति अति अनुराग मुदित

कलगान करत मन हरत परस्पर।। हितहरिवंश प्रशंस परायन गावत अलि सुरदेत मधुरतर।।३।। राग सारंग फूलनकी मंडली मनोहर बैठे जहां रसिक पिय प्यारी।। फूलनके बागे ओर भूषन फूलन के फूलनहीकी पाग संवारी।।१।। ढिंग फूली वृषभाननंदिनी तैसीये फूल रही उजियारी।। फूलनके झूमका झरोखा बहु फूलनकी रची अटारी।।२।। फूलेसखा चकोर निहारत बीच चंद मिल किरण संवारी।। चतुर्भुजदास मुदित सहचारी फूले लाल गोवर्धनधारी।।३।। राग ललित बैठ लाल फूलनकी चौखंडी।। चंपक बकुल गुलाब निवारो रायवेलि श्रीखंडी।।१।। जाई जुई केवरो कुंजो कनक कणेर सुरंगी ।। चतुर्भुजप्रभु गिरिधरजु को बानिक दिन दिन नवनवरंगी ।।२।। राग ललित बैठे लाल फूलनके चोबारे।। कुर्बक बकुल मालती चंपो केतकी नवल निवारे।।१।। जाई जुई केवरो कुंज रायवेलि म्हेकारे।। मंद समीर कीर पिक कूजत मधुप करत झंकारे ।।२।। राधा रमण रंगभर क्रीडत नाचत मोर अखारे।। कुंभनदास गिरिधरकी छबि पर कोटिक मन्मथवारे।।३।। राग ललित अति विचित्र फूलनकी चौखंडी बैठ जहां रसिक गिरिधारी।। रायवेलि मालती माधवी चंपक बकुल गुलाब निवारी।।१।। जाई जुई केवरो केतकी सौरभ सरस परम रुचिकारी ।। पाटल जुई सेवती मल्ली बोरसरी रचि रुचिर संवारी।।२।। नवरसरंग परस्पर उपजत बनी संग राधासुकुमारी। चतुर्भुजदास कुसुम शैयापर करत विलास दोऊ पियप्यारी ।।३।। राग सारंग फूलनकी मंडली मनोहर बैठे जहां रसिक पिय प्यारी। शोभित सर्वे साज नानाविधि फूलनको भवन परम रुचिकारी।।१।। फूलनके खंभ फूलनकी चोखंडी फूलनबनी सुदेश तिबारी।। फूलनके झूमका झरोखा फूलनके छाजे छबिभारी।।२।। सघन फूल चहुंओर कंगूरा फूलन बंदन वार संवारी।। फूलनके कलशा अति शोभित फूलन रची विचित्र चित्रसारी।।३।। फूलनकी सेज गेंदुवा तकीया फूलनकी माला मनहारी।। चतुर्भुजदास प्रफुल्लित राधा संग फूले गोवर्धनधारी।।४।। राग सारंग फूलनके महेल फूलनकी शय्या फूले कुंज बिहारी फूली श्रीराधाप्यारी।। फूले दंपति आनंद मग्न फूले

फूले गावत तानन न्यारी ।।१।। फूलेफूले कमललिये कर फूले आनंद है सुखकारी ।। हरिनारायण श्यामदासके प्रभु पिय तिनपर वारों फूल चंपकवेलिनिवारी ।।२।। राग सारंग फूलनके अठखंभा राजत संग वृषभान दुलारी ।। मोर चंदशिर मुकुट बिराजत पीतांबर छबि भारी ।।१।। फूलनके हार शृंगार फूलनके संग सखी सुकुमारी ।। परमानंददासको ठाकुर व्रज जीवन मनहारी ।।२।। राग सारंग मुकुट की छांह मनोहर कीये ।। सघन कुंजते निकस साँमरो संग राधिका लिये ।। फूलन के हार सिंगार फूलन के खोर चंदन की किये ।। परमानंददास को ठाकुर ग्वाल बाल सब संग लीयें ।।२।। राग सारंग बैठे फूल महल में दोउ राधा और गिरिधारी ।। फूलनके हार सिंगार फूलनके फूलटिपारो धारी ।।१।। फूलनकी सेज गेंदुवा तकीया फूलनकी पिछवारी ।। फूले गावत वेणु बजावत राग रंग भयो भारी ।।२।। फूले मधुप कोकिला कूजत वहेत पवन सुखकारी ।। श्रीविठ्ठलगिरिधरनलाल पर तन मन धन सब वारी ।।३।। राग सारंग आछेबने देखो मदनगोपाल ।। बहुत फूलफूले नंद नंदन तुमकों गूथोंगी माल ।।१।। आय बैठे तरुवरकी छैंया अंबुज नयन विशाल ।। नैंक वियारकरों अंचलकी पाय पलोटोंगी लाल ।।२।। आछे तब राधामाधव सों बोलत वचन रसाल ।। परमानंदप्रभु यहां आयहो व्रज तज ओर न चाल ।।३।। राग सारंग देखसखी फूलन अठखंभा बैठेहें गिरिधर पियप्यारी ।। सेवतीसुमन यूथका गूंथी मालती माधवी बेलि निवारी ।।१।। फूलनके छाजे फूलनकी छत्री फूलनके कलशा झूमकारी ।। फूलनकी गादी तकिया चौखट फूलनकी रची विचित्रि पिछवारी ।।२।। फूल सिंहासन फूले बिहरत दंपति फूली सखी फूलवारी ।। गूढभाव अंतर आनंदनिधि फूलत कृष्णदास बलिहारी ।।३।। राग सारंग बैठे कुसुम बंगला लाल ।। जाई जुई गुलाब माधुरी बिचबिच कमल रसाल ।।१।। फूलनहीको गहनो पहरें हरि ओर ढिंग व्रजबाल ।। फूलनहींकी रचीजु शय्या सुंदर मदनगोपाल ।। छाजत पोहोप भवन नंदनंदन शोभा बढी रसाल ।। कृष्णदास तहां बीरी खवावत हितकर दियेहें उगार ।।३।। राग सारंग फूलनकी

मंडली वरमंडित फूल हियें पिय अंग लसेंहें ।। फूलनकी सेज फूलनके आभूषण फूले फूले कोटिकाम एसेंहें ।।१।। फूलन बनी अति दासचतुर्भुज सखी सब फूल हियें हुलसेहें ।। फूल निशा शशि फूल रहे हें गिरिधर भामते कुंज बसेंहें ।।२।।

राग सारंग वात कहेत रसरंग उच्छलिता ।। फूलन के महेल विराजत दोऊ मंद सुगंध निकट वहे सलिता ।।१।। मुखमिलाय हँस देखत दर्पण में सुरत श्रमित उर माल विगलिता ।। परमानंदप्रभु प्रेम विवश भये कहि हम में सुंदरको ललिता ।।२।।

राग सारंग लालन बैठे कुसुम भवन ।। लटपटी विघूर्णित लोचन मकरकुंडल सोहे श्रवनन ।।१।। शीतलताई सुंदरताई सौरभ छाय रही शोभातन ।। कहुं कहा रसरूप माधुरी रसिक पीवत रस प्रमुदित मन मन ।।२।।

राग सारंग फूलनकी मंडली मनोहर बैठे जहां रसिक गिरिधारी ।। जाई जुई ओर कुन्द केतकि रायवेलि सो सरस संवारी ।।१।। चंपक बकुल गुलाब निवारी विविध भांत कीनी चित्रसारी ।। बैठी तहां रसिकनी राधा फूलनकी पहेरें तन सारी ।।२।। वरणवरण फूलनके आभूषण फूलनपाग बनी अतिभारी ।। गोविंदप्रभु फूले अति शोभित निरख फूली वृषभान दुलारी ।।३।।

राग सारंग देखरी देख हरिको महल ।। चहूं ओर फूली द्रुम वेली तरुमाल सोहें हरल ।।१।। कुंदमालकी बनी तिबाही बीच सुमन युथिका सहल ।। भीतर भवन गुलाब निवारो करण केतकी पहल ।।२।। बहुत भांत फूलनके झरोखा तापर कलशा रहल ।। वंदनवार संवारी छाजे छबिसों छहल ।।३।। बोलत मोर कोकिला अलिगण ओर खगनकी चहल ।। गोविंदप्रभु प्यारीसों मिलकें मधुर बचन हसकहल ।।४।।

राग सारंग सौरभ माधवी सरस सुहाई ।। फूलनके फोंदा रचि गूंथें फूलनकी मालाजु बनाई ।।१।। फूलनके कंकण बाजूबंध फूलनकी चोकी ढरकाई ।। फूले रहत सदा मंडल में फूली सखा राधा ढिंग आई ।।२।। हँस हँस कहत लाल गिरिधरसों फूलनकी मंडलीजु बनाई ।। चतुर्भुज प्रभु गिरिधरनलालकी अंगअंग छबि वरणी न जाई ।।३।।

राग सारंग श्री गिरिधरनलाल मिल बैठे फूल मंडली राजें ।। विचविच कुंद गुलाब बीच बीच बोरसरी छबिछाजें ।।१।। अतिविचित्र फूलनकी तिबारी करण केतकी

कुंजो भ्राजें ॥ रायवेलिके खंभ मनोहर मधुकर मधुरें गाजें ॥२॥ वरण वरण फूलनकें फोंदना वंदनबार ओर सबसाजें ॥ अति प्रवीण ललितादिक गावत मदन गोपाल रीझवे काजें ॥३॥ गावत राग सारंग सप्त स्वर मधुर मधुर मुरली ध्वनि बाजें ॥ गोविंदप्रभुकी या बानिकपर निरख निरख रतिपति जीय लाजें ॥४॥ राग सारंग देखरी देख पिय भवन सुखकारी ॥ फूलनसों रचिपचि कीनेहें श्रीवृषभान दुलारी ॥१॥ लालगुलाब के खंभ मनोहर छाजेनकी छबिभारी ॥ चंपक बकुल गुलाब निवारो कीनीहे चित्रसारी ॥२॥ कुंदमालकी बनी तिबारी विविध पोहोपकी जारी ॥ सुमन यूथके कलशा शोभित ता पर बंदनवारी ॥३॥ झूमरहे चहूंदिशा झूंमकी गेंदनकी छबिन्यारी ॥ खेलत तामें लाललाडिली मुदित भरत अंकवारी ॥४॥ फूलनकी पाग फूलनके चोलना फूलन पटुकाधारी ॥ फूलनके लेहेंगा सारी मध्य फूलन अंगिया कारी ॥५॥ फूलनकी सेज फूलनके बंधना फूलनकी चौकी मनहारी ॥ फूलन बने गेंदुवा तकिया चहूंदिश फूलरही फूलवारी ॥६॥ फूलन पंखा करलियें ठाडी फूल रही व्रजनारी ॥ गोविंदप्रभु फूले अति शोभित रसफूले श्रीगोवर्द्धनधारी ॥७॥ राग सारंग नंदनंदन वृषभान नंदिनी बैठे फूलमंडली राजें ॥ फूलनके खंभ फूलन की तिबारी फूलनके परदा अति छबि छाजें ॥१॥ फूलनके चौक फूलनकी अटारी फूल बंगला छबिभ्राजें ॥ ताऊपर कलशा फूलनके फूलन के फोंदना बिराजें ॥२॥ फूल शृंगार प्यारी तन शोभित मदनगोपाल रीझवें काजें ॥ छीतस्वामी गिरिधर छबि राजत रमा सहित रतिपति जिय लाजें ॥३॥ राग सारंग फूलनके मेहेल गिरिधर बने भामिनी ॥ कनककी वेलि लपटी तरु तमालसों स्यामघन में ज्यों लसत सौदामिनी ॥१॥ नव कुसुम सेज पल्लव रचित हरखसों कंठ आरोप भुज चलत गज गामिनी ॥ नंदनंदन मधुर हास मृदुबोलनी रीझाय लीने कृष्णदासकी स्वामिनी ॥२॥ राग सारंग फूलनके भवन गिरिधरन नवनागरी फूल शृंगारकर अतिही राजें ॥ फूलनकीपाग सिर श्यामके राजहीं फूलनकी माल हीयमें बिराजें ॥१॥ फूल सारी बनी फूल कंचुकी तनी फूल लहेंगा निरख काम लाजें ॥ छीतस्वामी फूले सदन प्यारी

सदां विलसत मिलत अंग कामसाजें ॥२॥ राग सारंग वृषभाननंदिनी मिल गिरिधरनलाल संग कुंज के मेहेलमें केलि ठानी ॥ परमशीतल सुखद तरणि तनया निकट सघन समसर वहेत स्वच्छपानी ॥१॥ कुंद केतकी जाई कुसुम परिमल मलय परम रमणीक तहां सघनबानी ॥ हंस सारस मोर और खग कीर रोर मंद मारुत चलत मधुप गानी ॥२॥ कोक कोटिककला प्रकट विलसत बाला वार तनमनहित प्राण पति रानी ॥ कहत गोविंदप्रभु रीझ रसवश भई मदनमोहन नवल युवती सुखदानी ॥३॥ राग सारंग फूलनके महेल बने फूलन वितान तने फूलनके छाजे झरोखा फूलनकी किंवारहें ॥ फूलनकी गादी गूंथी तकिया फूलनके बैठे श्यामश्यामा शोभित अपारहें ॥१॥ फूलनके बसन आभूषण बिराजें फूलनके फोंदा फूल उरहारहें ॥ नंददास प्रभु फूले निरखत सुधिबुधि भूले शुकदेव नारद शारद रटत वारंवारहें ॥२॥ राग सारंग बैठे कुसुम बंगला लाल ॥ जुई करेण गुलाब माधुरी बिचबिच कमल रसाल ॥१॥ फूलनहीकी रचीहे शय्या फूलनही माल ॥ फूलनही को गेहेंनों पहेरें सुंदरवर गोपाल ॥२॥ क्रीडत पोहोप भवन नंदनंदन शोभाबढी अपार ॥ दास रसिक तहां बीरी खवावत प्यारो देत उगार ॥३॥ राग सारंग फूलनकी चोली फूलनके चोलना फूलमाथें फूल हाथ कानन में फूल ॥ फूलनकी सेज नीकी फूलनकें चंदुवा फूलनके वींजना फूलन फोंदा फूल ॥१॥ फूलनके तकीया फूलनकी गालमसूरी फूलनके झबा शय्या आगें पाछें फूल ॥ फूलनके मेहेल फूलनकी चित्रसारी परदा परमानंद प्रभु राधामाधव फूल ॥२॥ राग सारंग फूलनसों बेनी गुही फूलन की अंगिया फूलनकी सारीमानों फूली फूलबारी ॥ फूलनकी दुलरी हमेल हार फूलन के फूलनकी चोली चारु ओर गजरारी ॥१॥ फूलनके तरोंना कुंडल फूलन के फूलनकी किंकिणी सरस संवारी ॥ फूलमहेलमें फूली श्रीराधा प्यारी ॥२॥ राग सारंग बने माधौजू के महल ॥ जेठ मास अति जड़ात माघ मास कहल ॥१॥ दूर ही तें देखियत हें बादर केसे पहल ॥ बिच बिच हरित स्याम यमुना केसे दहल ॥२॥ श्रीपति को कहा काज यह बात

सहल ॥ परमानंददास तहाँ करत फिरत टहल ॥३॥ राग सारंग बैठेलाल फूलनकी तिबारी ॥ जाई जुई गुलाब दियें बिच रायवेली ओर निवारी ॥१॥ उठ बेठी जबही कहियो दूती चलिए राधा प्यारी ॥ जाय मिली ब्रजपतिसों तबही रंग बढ्यो अतिभारी ॥२॥ राग सारंग बैठे लाल फूलनकी पिछवारी ॥ सुंदरश्याम सुभगता सीमा कंठमाल मनहारी ॥१॥ नवलकिशोर रसिक नंदनंदन संग राधिका प्यारी ॥ रसिकराय प्रभु सब गुण पूरण सुखनिधि श्रीगिरिधारी ॥२॥ राग सारंग फूलन की कुंजन में फूले फूले फिरत ॥ वीनत फूल लाल ललनामिल फूलन फेंटाभरत ॥१॥ पियप्यारीकी बेनीबनावत फूलनके हार शृंगार करत ॥ गोविंदप्रभु पिय प्यारी परस्पर फूले फूले विहरत ॥२॥ राग सारंग फूलन के बंगला बने अति छाजे बैठे लाल गोवर्धनधारी ॥ चंपक बकुल गुलाब निवारो लाल अनारसुधारी ॥१॥ पीत चंमेली चितकों चोरत रायवेली महकारी ॥ परमानंददासको ठाकुर तन मन धन बलिहारी ॥२॥ राग सारंग बेठे कुसुम मंदिर में दोउ पिय प्यारी मनहरत परस्पर पोहोपमाल पहिरावत मिसकरि परत जाय पीय उपर ॥१॥ गावत विकट राग सारंग ले उपजत तान नीकी ता उपर ॥ रसिक प्रीतमकी बानिक निरखत वारत प्राण शोभा ऊपर ॥२॥ राग सारंग देख सखी फूलन अष्टखंभा बेठेहें गिरिधर पीय प्यारी ॥ सेवती सुवन जुथीका गूंथी मालती माधवी वेलीनिवारी ॥१॥ फूलन छाजे फूलनकी छत्री फूलनके कलसा झूमिकारी ॥ फूलनके गादी तकीया चौखंडी फूलन रची विचित्र पीछवारी ॥२॥ फूले सिंघासन फूले विहरत दंपति फूल सखी फूलवारी ॥ गूढ भाव अंतर आनंदनिधि फूलत कृष्णदास बलिहारी ॥३॥ राग सारंग फूलन के अठखंभा राजत संग वृषभान दुलारी ॥ मोरचंद शिर मुकुट बिराजत पीतांबर छबि भारी ॥१॥ फूलन के हार सिंगार फूलनके संग सखी सुकुमारी ॥ परमानंददासको ठाकुर व्रजजीवन मनुहारी ॥२॥ राग सारंग सौरभरति माधवी सुहाई ॥ फूलनके फोंदा रचि गूंथे फूलनकी

माला जु बनाई ॥१॥ फूलन के कंकण बाजूबंद फूलन की चौकी ढरकाई ॥ फूल रहत सदा मंडल में फूली सखी राधा ढिंगआई ॥२॥ हसिहसि कहत लालगिरिधरसों फूलनकी मंडली बनाई ॥ चत्रभुज प्रभु गिरिधरन लालकी अंग अंग शोभा बरनी न जाई ॥३॥ राग सारंग नवल नागरि नवल नागर किशोरमिलि कुंजकोमल कमल दलन सज्या रची ॥ गौर सांवल अंग रुचिरता पर मिले सरस मानों नीलमणी मृदुल कंचन खची ॥१॥ सुरति निवीबंध हेतु पीयमाननी कुच भुजन में श्रम जल कलह मोहनमची ॥ सुभग श्रीफल उरज पान परसत रोस हुंकरगर्वजुत भृंगभामिनी लची ॥२॥ कोककोटिक कला हरत मन पियको विविध कलमाधुरी रतिकाम नाहिन बची ॥ प्रणय में रसिक ललितादिक सखी सब पीवत मकरंद सुखरास अन्तर बची ॥३॥ राग सारंग फूलमहेल में फूले दोऊ नील कमल अरु पीत चमेली ॥ स्यामाजु अति सुखद सरोवर तिन करि सींचत मन मधुकर रसनिपुण नवेली ॥१॥ फूली ललित लतनद्रग ललिता चंद्रभगा चंपो शीर मूली ॥ इन्दविंदु विपुल कलीसी भामावेली विलोक सहेली ॥२॥ यह सुख सखी कहत नही आवे ग्रीष्मऋतु प्रीतम संग खेली ॥ एसेई फूल फूलो ब्रज निशदिन गोकुलनाथ करो नित केली ॥३॥ राग सारंग कुसुम गुलाब महेल में बेठे श्रीगिरिधारी स्यामा प्यारी ॥ जारी भांत विचित्रता छबि कुमक बनी निवारी ॥१॥ बोहोरंग कुसुम भूषण दंपति पहेरावत चहुंदिश ब्रजनारी ॥ वृन्दावन खग मृग अति सोहे ब्रजाधीश प्रभुकी बलिहारी ॥२॥ राग कान्हरो देखोरी मोहन पिय ठाडे नवनिकुंज के द्वार तेसीइ शरद सुहाई रात ॥ फूलन को टिपारो फूलन के चोलना फूलन के हार अरू फूलन को उपेरना फूलन पंचरंग आन भांत ॥१॥ फूलनके कुंडल फूलनके बाजूबंध फूलन की कटि किंकिनी शोभा कही न जाति ॥ कृष्णदास प्रभु गोवरधन फूले गोवरधनधारी लाल देखत यह छबि फूल रही उरलाय लई छाति ॥२॥ राग सारंग नंद नंदन वृषभानु-नंदिनी बैठे फूल-मंडनी राजे । फूलनि के खंभ फूलनि की तिवारी फूलनि के परदा अति छबि छाजें ॥ फूलनि के चौक, फूलनि की

अटारी, फूलनि के बंगला सुख साजें । ता पर कलसा फूलनि के फूलनि के फोंदना विराजें ।। फूल सिंगार प्यारी तन सोहत मदनगोपाल रीझिवे काजें । 'छीत-स्वामी' गिरिधर छबि निरखत, रमा-सहित, रतिपति जिय लाजें ।।

राग कान्हरो पाग सोहे लटपटी गुलाब के फूलन कुलह भरें ।। भ्रकुटी विलास हास कुंडल कपोल झाई कोटिक मनमथ मनहरे ।।१।। कुंचित केश सुदेश तिलक रुचिर भाल माल मोतिनकी विचित्र भेख करें ।। चतुर्भुजदास प्रभु गिरिधर ऐसी विधि ठाड़े मुरली अधरधरें ।।२।।

राग केदार रसभरे पीय प्यारी बैठे कुसुमभवन ।। कुसुमनकी शेज ओर कुसुमवितान तने तेसो ही सीतल मंद सुगंध पवन ।।१।। कुसुमन के परदा कुसुमन के बाजना कूजत अली पीक कीर शुक श्रवन गोविन्द बलिजोरी सदाइ बिराजे सुककरत राधा रमन ।।२।।

## फूल के शृंगार

राग खमाज चंपकली सो पाग बनाऊं, पिय के सीस बंधावन कों ।। सेहेरो कुन्द कली को तापर दुलहिन ब्याह सधावनकों ।।१।। कमल पुष्प कों ललित टिपारो, मल्लकाछ डहकावन कों ।। मुकुट चमेली की कलियन को काछनी कटि महकावन कों ।।२।। कुलह वंधूक कुसुमन की सुरंग रंग शिशु गति तन छबि पावन कों ।। टोपी पीत सोनजाकी धरि लाल गोद खिलावन कों ।।३।। चंपा के कुसुमन को फेंटा, अमेठ उमेठ बतावन कों ।। पीत दुमालो बसंत पंखुरिन भोजन भाव जतावन कों ।।४।। अष्ट सखी कों भेख सखा धर सब विध हित चित दीनो ।। बनविहार यों एक समे कर, सूर मनोरथ सबको कीनो ।।५।।

## मान सागर के पद

राग खमाज मान मनायो राधा प्यारी ।। कहियत मदन दहन को नायकपीर प्रीतिकी न्यारी ।।१।।ध्रु.।। तुजू कहत ही कबहु न रूसों अवधों कैसें रूसी ।। विनहीं शिशिर तनक तामसतें तुवमुख कमल विदूसी तेरे ।।२।। विरहरूप

रसनागरि लीने पलट कछूसी ।। तैंरें हुती प्रेमकी संपति सो संपति किन मूसी ।।३।।
राग सारंग फूलन को मुकट बन्यो फूलनको पिछोरा तन शोभित अति प्यारी वर फूलन को शृंगार । कंठफूल वागो फेंटा फूलगादी गेंदुवा फूल हँस बेठे हें स्यामा स्याम शोभा को नहीं पार ।। फूलन के आभूषण वसन विराजत फूलन के फोंदा फूल उरहार । नंददास प्रभु फूले निरखत सुधि भूले शुकदेव नारद शारद रटत बार बार ।। राग सारंग फूलनसों बेनी गुही फूलन की अंगीया फूलन की सारी मानों फूली फुलवारी ।। फूलनकी दुलरी हमेल हार फूलन के फूलन की चोको चारों ओर गजरारी ।।१।। फूलन के तरोना कुंडल फूलन के फूलन की किंकिली सरस संवारी ।। फूलन के मेहेल बने फूली श्रीराधा प्यारी फूले नंददास जाय बलिहारी ।।२।।

## अष्ट सखीन के भावसों फूलन के आठ शृंगार को पद

राग सारंग चंपकलीसो पाग बनाउं, पियके सीस बंधावन कों । सहेरो कुंद कलीको तापर दुलहिन ब्याह सधावनकों ।।१।। कमल पुष्प को ललित टिपारो, मल्लकाछ डहकावन कों । मुकुट चमेली की कलियन को, काछनी कटि महकावन कों ।।२।। कुलह बंधूक कुसुमन की सुरंग रंग सिसुगति तन छबि पावन कों । टोपी पीत सोनजाकी धरि लाल गोद खिलावन कों ।।३।। चंपाके कुसुमनको फेंटा, अमेठ उमेठ बतावन कों । पीत दुमालो बसंत पंखुरिन भोजन भाव जतावनकों ।।४।। अष्ट सखीकों भेख सखा धर सब बिध हित चित दीनो । बनबिहार यों एक समे कर, सूर मनोरथ सबको कीनो ।।५।।
राग सारंग मुकुटकी छांह मनोहर किये । सघन कुंजतें निकसी सांवरो संग राधिका लिये ।।१।। फूलन के हार सिंगार फूलन खौर चंदन किये । परमानन्ददासको ठाकुर ग्वाल बाल संग लिये ।।२।। राग कान्हरो फूलको मुकुट कटि काछनी जु फूलनकी फूलन इजार पर फूल पटका जु साज । फूल स्रवन कुंडल हार फूलनके फूली अधर मुरली सप्तसुरसों गाज ।।१।। बाजूबंद फूलनके कर कंकन फूलन के फूलनकी पहोंची पाय पेंजनी रही बाज।

दास कुंभननाथ गोवर्धनधर निरख फूलीं फूलीं अंखियां अद्भुत बने आज ॥२॥ राग सारंग फूल मेहेलमें बेठे माधो संग वृषभान दुलारी ॥ फूलन के हार सिंगार सब फूलन के: फूलमुकट सिर धारी ॥१॥ फूलसिंगासन फूल गेंदुवा: फूलन बनि हे तिबारी ॥ फूलेगावत बेनु बजावत: राग रंग रसभारी ॥२॥ फूले मधुप कोकिला कुजत फूले पवन सुखकारी ॥ श्रीविट्ठल गिरिधरको निरखत: अखियां टरत न टारी ॥३॥ राग कान्हरो फूलके भवन गिरिधरन नवनागरी फूल सिंगार करि अति हि राजे । फूलनकी पाग सिर स्याम के राज ही फूल की माल हियपें विराजे ॥१॥ फूल सारी बनी कंचुकी फूल की फूल लहेंगा निरख काम लाजे । छीतस्वामी फूल-सदन प्यारी संग विलसि मिलवत अंग काम दाजे ॥२॥ राग कान्हरो बेनी गुंथि कहा कोउ जाने मेरी सी तेरी सौं राधे ॥ बिच बिच फूल सेत पित राते और कहा सिखई सौं राधे ॥१॥ बैठे कुंवर सँवारत वारत कोमल कर कक ही सौं राधे ॥ 'हरिदास' के स्वामि नख सिख तैं सँवारी कोमल कर नख ही सौं राधे ॥२॥ राग कान्हरो फूलन की चोली फूलन के चोलना फूल माथें फूल हाथ कानन में फूल ॥ फूलन की सेज नीकी फूलन के चंदुवा फूलन के बीजना फूलन फोदा फूल ॥१॥ फूलन के गेंदुवा तकीया फूलन के फूलन की गाल मसूरी फूलन के झबा सय्या आगें पाछें फूल ॥ फूलन के महल फूलन के चित्रसारी परदा 'परमानंद' प्रभु राधा माधव फूल ॥२॥ राग कान्हरो पाग सोहे लटपटी गुलाब के फूलन कुलह भरें ॥ भ्रुकुटी विलास हास कुंडल कपोल झाई कोटिक मनमथ मनहरे ॥१॥ कुंचित केश सुदेश तिलक रुचिर भाल माल मोतिनकी विचित्र भेख करें ॥ चतुर्भुजदास प्रभु गिरिधर ऐसी विधि ठाड़े मुरली अधरधरें ॥२॥ राग सारंग वृन्दावन रहस्य धाम विरहत वर श्यामा श्याम अंगअंग कोटिकाम श्रीराधा पटरानी ॥ हसन लसन गृह विलास अधर सधर माधुरी विलोक रहेसि भूलि मंद गति बानी ॥१॥ फूलन की शेज फूलन की हीये हार फूलन के वर शृंगार ॥ फूली अंग न समानी फूलन के तने वितान फूल बनी है बात कूलेहे सघन वन मीन काल जानी ॥२॥

प्यारी जस गह्यो बीन उमड्यो जानो मनशेन कमल नैन चैन पायो रहे शिरहे लखानी ।। दुलेहेनी दुलहलाल प्रेम प्रीती रुची रसाल अति विचित्र दुती रसाल निरखत राजधानी ।।३।।

## फूल की पाग के पद

राग कान्हरो फूल महल बैठे नंदनंदन फूलन तन शोभित सिंगार ।। फूलनकीं पाग फूलनको बागो फूलन पटका सरस संवार ।।१।। फूलनको नखशिखलों गहेनो पहेरे लालन मदन मुरार ।। फूलनको शिरपेच बन्यो शिर फूलन कटि बन्यो ईजार ।।२।। तेसीय बनी राधिका प्यारी फूलनकी झलकत तन सारी ।। तेसेई बने नंदकेनंदन छबि पर सूरदास बलहारी ।।३।।

## फूल का शृंगार धरे जब के पद

राग कान्हरो फूल महल बैठी राधाजु सखी सहेली संग ।। नानाभांतके भूखन पहरे फूलन सारी रही फबि अंग ।।१।। फूलनकी चोली अंग फूलन बाजूबंध बनाये ।। फूलनकी बेंनी सिर राजत फूलनकी रचिमांग भराये ।।२।। सीस फूल सिर धर प्यारी के फूले फूलन अलक संवारि ।। हार बन्यो फूलनको उर पर तेसीय बनी छबि अति सुकुमारी ।।३।। नवरंग लाल गोवर्धनधारी नवरंग बनी कुंज सुखकारी ।। यह छबि निरख निरख निरख दोउनकी सूरदास तन मन धन वारि ।।४।। राग कान्हरो जमुना तट स्याम सुंदर उसीर रावटी रची राजत युवति मंडल मध्य गोपाल लाल प्यारो ।। फूलन के आभूखन अंगअंग फबि रहे कुंजन के छाजे बेंठे देखत अखारो ।।१।। कबहुक टोक करत सुबल संग श्रीदामा बाहु मधुमंगल कहत व्रज रखवारो ।। कृष्णदास सोई विठ्ठलेश गृह राजत ईन वल्लभीयनके नेंनन तारो ।।२।।

## पिछोरा (फूल के शृंगार)

राग कान्हरो फूल भवनमें गिरिधर बैठे फूलन को शोभित सिंगार ।। फूलनको कटि बन्यो पिछोरा फूलन बांधे पेच संवार ।।१।। फूलनकी बेंनीजु

बनी शिर फूलनके जु बने सब हार ॥ फूलनके मुक्ता छबि छाजत फूलन लटकन सरस संवार ॥२॥ करन फूल फूलन कर पहोंची गेंदफूल जल करत बिहार ॥ राधा माधौ हसत परस्पर दास निरखत डारत तनवार ॥३॥

## फूल के सेहरा के पद

राग कान्हरो कुंज महल बन बैठे दुल्हैया नव दुलहनि व्रखभान किशोरी ॥ पीत पागपर फूल सहेरो फूल वागो छुटे बंद सोरी ॥१॥ फूलन हार बन्यो अति शोभित फूलन गजरा फूल बन्योरी ॥ पुरवत गावत गिरिधर की रति कृष्णदास प्रभु संग ठग्योरी ॥२॥ राग कान्हरो अबगुंथ लावरे मालनिया सहेरो ॥ शुभघरी शुभदिन शुभपल महुरत बागो बन्यो सुनेरो ॥१॥ हार चमेली गुलाब निवारो महेकत आवत केवरो ॥ बना बन्यो श्री वल्लभवर पिय श्री गोकुलमें गेहरो ॥२॥ राग कान्हरो बनाबनकें ब्याहन आयो किरति सुता बदन देख हरखैया ॥ पीतांबर मुक्तामाल सुभग उर सोहे लाल फूलको सहेरो शिर ढरकैया ॥१॥ मकर कुंडल कान मानों उदयो भान नखशिख बने सुजान सरस सुहैया ॥ रसिक रसीले मेरे मन में ठसीले दास कुंभन छबि पर बलजैया ॥२॥ राग कान्हरो बना तेरी चाल अटपटी सोहे ॥ शीश फूलनको सहेरो बन्योहै अलक तिलक मनमोहे ॥१॥ कर सिंगार चढे घोरीपर ले दरपन मुख जोहे ॥ हरिनारायन स्यामदासके प्रभु की उपमाकों नहीं कोहे ॥२॥ राग सारंग अति उदार मोहनमेरे निरखनेंन फूलेरी बिचबिच बरुहाचंद फूलनको सेहरो सोहे कुंडलकल श्रवननपर निगम-निगम झूलेरी ॥१॥ फूलनकी मालगरे चंदन के चित्रकरें पीतांबर फेंट बांधे अंगन अनुकुलेंरी ॥ छीतस्वामी गिरिवरधर गायनको नामलेत टेरत सबठाडी भई कदम तरु भुलेरी ॥२॥ राग सारंग फूलन को मुकुट बन्यो फूलन को पिछोरा तन शोभित अति प्यारी वर फूलन को शृंगार । कंठफूल वागो फेंटा फूलगादी गेंदुवा फूल हँस बेठे हें स्यामा स्याम शोभा को नहीं पार ॥ फूलन के आभूषण वसन विराजत फूलन के फोंदा फूल उरहार । नंददास प्रभु फूले निरखत सुधि

भूलें शुकदेव नारद शारद रटत वार वार ॥ राग कान्हरो फूल महल में बैठे माधो संग वृखभान दुलारी ॥ फूलनहार सिंगार फूलन को फूल मुकुट शिर धारी ॥२॥ फूल सिंघासन फूलगेंदुवा फूलन बनी है तिबारी ॥ फूले गावत बेनु बजावत राग रंग रस भारी ॥२॥ फूले मधुप कोकिला कूजत फूले पवन सुखकारी ॥ श्रीविट्ठल गिरिधरकों निरखत अखियां टरत न टारी ॥२॥

## टीपारो

राग कान्हरो देखो री मोहन पनघट पर ठाडो है नव निकुंज तैसीये सरद सुहाई रात । फूलको टिपारो बन्यो फूलनको मल्ककाछ फूलनके हार उर फूले फूले करत बात ॥१॥ फूलनको उपरैना फूलन पचरंग आन-आन भांति फूलके कुंडल छबि अति सुहात । फूलनकी बेनी सिर फूलन के बाजूबंद फूले फूले 'कृष्णदास' यह छबि कही न जात ॥२॥

## पनघट के पद

राग बिलावल गोकुलकी पनिहारी पनियां भरन चाली बडेबडे नयना तामे शोभरह्यो कजरा ॥ पहिरें कसुंभी सारी अंग अंग छबिभारी गोरीगोरी बहियनमें मोतिन के गजरा ॥१॥ सखी संगलिये जात हँसहँस बूझत बात तनहूंकी सुधि भूली सीस धरें गगरा ॥ नंददास बलहारी बिच मिले गिरिधारी नयनकी सैनन में भूल गई डगरा ॥२॥ राग बिलावल पनघट रोकेंहीं रहत कन्हाई ॥ यमुनाजल कोऊ भरन पावत देखतही फिर आई ॥१॥ तबही स्यामएक बुद्धिउपाई आपन रहे छिपाई ॥ तट ठाढे जेसखा संग केतिनकों लियोबुलाई ॥२॥ बैठारे ग्वालिन को द्रुमतर आपन फिरफिर देखत ॥ बडीबार भई कोई न आई सूरस्याम मनलेखत ॥३॥ राग बिलावल युवती आवत देखे स्याम ॥ द्रुमकी ओट रहे हरिआपन यमुनातट गई बाम ॥१॥ जलहिलोरे गागरभर नागर जबहीं सीसउठायो ॥ घरकोचली जाय तापाछें सिरते घट ढरकायो ॥२॥ चतुरग्वार करगह्यो स्यामको कन कलकुटिया पाई॥

औरन सों कररहे अचगरी मोसों लगत कन्हाई ॥३॥ गागर ले हरिदेत ग्वारिनकर रीतो घट नहीं लैहों ॥ सूरस्याम यहां आनदेहोभर तबही लकुट करदैहों ॥४॥

राग बिलावल घटभर दैहो लकुटी तबदेहूं ॥ हमहुं बडेमहरकीबेटी हमतुमसों नाहिं डरेहूं ॥१॥ मेरी कनकलकुटी देरी मैं भरदैहो नीर ॥ बिसरगई सुध तादिनकी तुम हरे सबनके चीर ॥२॥ यहबानी सुन विवशभई तनकी सुध बिसराई ॥ सूर लकुटकरगिरतन जानी स्याम ठगोरी लाई ॥३॥

राग बिलावल अरीहौं स्याम मोहिनी घाली ॥ अबही गई जलभरन अकेली नंदनंदन चितवन उरसाली ॥१॥ कहारी कहों कछु कहत न आवे लगी मरमकी भाली ॥ सूरदासप्रभु मनहरलीनो विवशभई हौंआली ॥२॥

राग बिलावल नीकेदे हौं मेरीं ईडुरी ॥ लेजैहैं यशुमतिघर आगें बहुरीमिलएके गुलरी ॥१॥ काहू नहीं डरात कन्हाई वाट घाट तुम करत अचगरी॥ यमुनादईईंडुरी फटकारी और फोरी सब गगरी ॥२॥ भलीकरी यहकुंवर कन्हाई आज मेटिहौं तुम्हारी लगरी ॥ चली सूर यशोमतिकेआगें उराहनो ले तरुणी ब्रजसगरी ॥३॥

राग बिलावल मोहि जलभरन देरे कन्हैया ॥ और नागर सब गागर लेगंई मोहि रोकतहै घरमग जोवे मेरीमैया ॥१॥ मेरोकह्यो तूमानलेहो मोहनसुनहो कुंवर बलदाऊजूकेभैया ॥ कुंवरसेन के प्रभु आनहीं कीजे हौं तोतेरी लेहों बलैया ॥२॥

राग टोडी देखो जू मोहन काहू अबै मेरी ईंडुरी दुराई ॥ सूधेसूधे बेगि किनमानों यह कौन कीनी चतुराई ॥१॥ कछूजो परस्पर करत सेनावेनी ताहि मोहि किनदेहो बताई ॥ सबै समिट यहां कहत कौनसों ताकी फेंट पकर किनधाई ॥२॥ जापे होय वेगकिन आनों ताहिहै ब्रजराजदुहाई ॥ गोविंदप्रभु कछु हँसत बहुत से मेरे जान तुमहिं चुराई ॥३॥

राग बिलावल अबही डारदेरे ईंडुरिया मेरी पचरंग पाटकी ॥ हाहाखात तेरेपैयापरतहों इतनोंलालचमोहि मथुरानगर के हाटकी ॥१॥ जो न पत्याउ जाय किनदेखो मनमोहन हैंजु डाटकी ॥ मदनमोहनपिय झगरो कौन बढ्यो सोदेखेंगी लुगाईं वाटकी ॥२॥

राग बिलावल किये चटकमटक ठाडोई रहत पनघटपर पनिहारनसो

करतटोक ।। काहूको तकतअंग काहूको तकतरंग काहूकी ईंडुरी लेत काहूसों कहत पानी प्याओरी ओक ।।१।। काहूकी आंखसिरानी काहूकी कंचुकीकुच काहूको चलत देत भुजकीझोक ।। चतुरबिहारीगिरिधारीतुम बहुत भये हो नातर अबहीगिनिदेहो रोक ।।२।। राग बिलावल होंपनिया न जैहों मेरी मटुकी झटककर पटकी ।। अचानकआन गहीहों सांवरे मेरेसंग की सबसब सटकी ।।१।। कािल्ह दुपहरगईहूं कुंजमें कोजाने याघटकी ।। प्रभुकल्याण गिरिधरकी माधुरी सो मेरेनयन अटकी ।।२।। राग बिलावल हों कित जाऊंरी कौन घाट कौन बाट कित कहुंपाऊं अरी नंदनंदन ।। ले गयोरी मन मानिक मेरो दे गयोरी धीरनिकंदन ।।१।। मुरलीबजायकें कसकस मोहन बस कीनी व्रजचंदरी ।। रसिकप्रीतम कोऊ कैसें बसिहैं या छैलके छैलफंदरी ।।२।। राग कान्हरो तू राधे ! नट नवल नागरी । गज-गति गवन करति मधु व्यासनि चली जमुना-जल भरन गागरी ।। उर पर हार सिंगार बन्यो है कटि मेखला चरन झांझरी । अंबु लैन कहँ चली अकेली संग लाडिलौ करत लागरी ।। देखि बदन मोहे गन गंधर्व गयो निसापति गगन भागरी ।। परमानंद प्रभु सब सुखदाइक लालन जूके कंठ लागरी ।। राग टोडी ए बाल आवत डगर डगरी ।। रतनजटित पटकीये री ओट शीश बिराजत तापर कनक गगरी ।।१।। भोंहरुर वीदीये छबीसो दसन बसन साजे शोभा राजत सगरी ।। नंददास नंदलाल रीझे पाछें चल आवत बोलत बचन अचगरी ।।२।। राग टोडी जब ही में देख्यों नागर नंद को मन भई प्रीति करिवेकी कहु अचरा इंडुरी डारी दई कहुं गागरि सुधि विसरी गई भरिवेकी । चित चुभि रही छबीलेकी छबि सैनेन से दे मन हरिवेकी ।। व्रजपति देह दितापित कित भई रहें तन मग पग धरवेकी ।। राग आसावरी ग्वालिनि कृष्णदरससों अटकी ।। बारबार पनघट परआवत सिर यमुनाजल मटकी ।।१।। मनमोहन को रूप सुधानिधि पीवत प्रेमरस गटकी ।। कृष्णदास धन्यधन्य राधिका लोकलाज सब पटकी ।।२।। राग सारंग आई हुं अबहीं देख सुभग सुन्दर भेख ठाडो लरका एक

रूपको भी बरो ॥ परदनी फबत पटुका कंठ पर करुरत करउ नमात माई बदन नांई भांवरो ॥१॥ नीर यमुना तीर भर धरि गागर जबहीं उठाय देत देखत सब गांवरो ॥ टोकत आवत जात नरनारी कहत युं कियो कारज भलो भरत नहिं भामरो ॥२॥ टरत कैसें अंक लिख्यो मम भाग्य में कहेवो करो कोऊ धरत केरो नांवरो ॥ दास परमानंद नंदनंदन कुंवर हृदय में बसत माई मेरे री सांवरो ॥३॥ राग सारंग मूंदरिया मेरी जो गई नींद पर परी रैन सगरी ॥ याही ते झटपटात उठी आई चटपटी जिय में बहुत भईरी ॥१॥ तुम्हारो कान्ह पनघट खेलत हौ बूझो हों महरी हँसी होय लई ॥ बिसरत नहीं नगीना चोखौ हृदय ते टरत न झलक नई ॥२॥ चतुर्भुज प्रभु गिरिधर चलौ मेरे संग देहों दही चाहौ जितई ॥ मेरी वह जीवन मोहि कोऊ दोऊ तुव चरनन की चेरी व्है जु बिपतई ॥३॥ राग सारंग सोने की गागर लैके पनियां भरन चली यमुना के नीर तीर धुन सुन अटकी ॥ नंद को दुलारौ प्यारौ मुरली बजावें ठाड़ौ दृगन की चोट मेरे हिये मांझ खटकी ॥१॥ एक घरी व्है जु भई तन की सुध न रही ठगोरी सी ठाड़ी भई देखन रूप चटकी ॥ धोंधी के प्रभु प्रेम कौ प्रवाह चाल्यौ लोक कुल लाज काज सब दियौ पटकी ॥२॥ राग सारंग हों पनघट जाऊं सुनरी आली पनघट जात ही पन घट जैये ॥ ठाड़ौ रसिक नंद कौ नंदन नेक चिते सब मन हर लैहें ॥१॥ रसिक गोपाल रसीली मुरली यह दोऊ मिल के पराधीन कर दैहें ॥ धोंधी के प्रभु एक से भये दोऊ मेरी सीख सुन तू भूले जिन जैहें ॥२॥ राग सारंग पनियां न जाऊं री आली नंदनंदन मेरी मटरी पटक के झटकी ॥ चक्क दुपहरी में अटकी कुंजन लों कोऊ न जाने घट घटकी ॥१॥ कहा करों कछु बस नहीं मेरौ नागर नट सों अटकी ॥ नंददास प्रभु की छबि निरखत सुध न रही पनघट की ॥२॥ राग अडानो जलकों गई सुघट नेह भर लाई परीहै चटपटी दरशकी इत मोहनगास उत गुरुजनत्रास चित्रलिखी ठाड़ी नामधरत सखी परसकी ॥१॥ टूटे हार फाटेचीर नयनन बहत नीर पनघट भई भीर सुधि न कलशकी ॥ नंददास प्रभुसों ऐसी प्रीति गाढी बाढी फैलपरी चायन सरस की ॥२॥ राग सारंग जमुनां नदिया

के तट । पान्यो भरति अकेली औघट गहिजु स्याम मेरी लट ॥१॥ सिर धरि गगरी मारग डगरी पहरि लिए पीरे पट । देखत देह अधिक छबि लागी कछुक बने कंचुकी-कट ॥२॥ फूल जु एक ग्वालिनिके जिय जनु रन जीते कोऊ भट। 'परमानंद' गोपाल आलिंगी सफल किए कंचन घट ॥३॥ राग सारंग देखौरी मोहन पनघट पर ठाडो है नव निकुंज तैसीये सरद सुहाई रात । फूल कौ टिपारो बन्यो फूलन कौ मल्लकाछ फूलन के हार उर फूले-फूले करत बात ॥१॥ फूलन को उपरैना फूलन पचरंग आन-आन भांति फूल के कुंडल छबि अति सुहात । फूलन की बेंनी सिर फूलन के बाजूबंद फूले फूले 'कृष्णदास' यह छबि कही न जात ॥२॥ राग सारंग घाट पर ठाडे श्रीमदनगोपाल ॥ कौन युक्तिकर भरोंरी यमुनाजल पर्‌योहै हमारे ख्याल ॥१॥ द्योसबढ्यो घर सासरिसैहै चलन सकत एक चाल ॥ कहाकरूं अब यों नहीं मानत सुंदर नंदकोलाल ॥२॥ कछुक संकोच कछु चोंप मिलनकी परी प्रेमकी जाल ॥ परमानंदस्वामी चितचोर्‌यो वेणु बजाय रसाल ॥३॥ राग सारंग नेक लाल टेको मेरी बहियां ॥ ओघट घाट चढ्यो नहिं जाई रपटतहों कालिंदी महियां ॥१॥ सुंदरस्याम कमलदललोचन देख स्वरूप ग्वाल उरुझानी ॥ उपजी प्रीति काम उरअंतर तव नागर नागरी पहिचानी ॥२॥ हँस व्रजनाथ गह्यो करपल्लव जैसें गगरी गिरन न पावें ॥ परमानंद ग्वालिनी सियानी कमलनयन कर परस्यो भावे ॥३॥ राग सारंग ललन उठाय देहो मेरी गगरी ॥ बलबल जाऊं छबीले ढोटा ठाढे देत अचगरी ॥१॥ यमुनातीर अकेली ठाढी दुसरो नाहिन कोऊ ॥ जासों अब कहों स्यामघन सुंदर संगबनाहि नसोऊ ॥२॥ नंदकुमार कहें नेक ठाढी रहि कछुक बात कर लीजे ॥ परमानंदप्रभु संग मिले चल बातनके रसभीजे ॥३॥ राग सारंग ठाडोई देखो यमुनाघाट ॥ कहा भयो घर गोरस बाढ्यो और गोधनके ठाट ॥१॥ जातपांत कुलको न बडोहै चले जाहु किन वाट ॥ परमानंदप्रभु रूपठगोरी लागत नपलक कपाट ॥२॥ राग सारंग आवतही यमुना भर पानी ॥ स्यामरूप काहूको ढोटा वाकी चितवन मेरी गैल भुलानी ॥१॥ मोहन कह्यो तुमको या

व्रज हमें नाहि पहिचानी ॥ ठगीसी रही चेटकसो लाग्यो तब व्याकुल मुख फुरत न बानी ॥२॥ जादिनते चितयेरी मोतन तादिनते हरिहाथ बिकानी ॥ नंददासप्रभु यों मनमिलियो जों सागर में पानी ॥३॥ राग सारंग आवत री यमुना भर पानी ॥ सांवरे वरण ढोटा कौनकोरी माई वाकी चितवन मेरी गैल भुलानी ॥१॥ हौं सकुंची मेरे नयनहु सकुचे इन नयनन के हाथ बिकानी ॥ परमानंदप्रभु प्रेमसमुद्र में ज्यों जलधरकी बूंद समानी ॥२॥ राग सारंग पनियां न जाऊं री आली नंदनंदन मेरी मटकी पटक के झटकी ॥ चक्क दुपहरी में अटकी कुंजन लों कोऊ न जाने घट घटकी ॥१॥ कहा करों कछु बस नहीं मेरो नागर नट सों अटकी ॥ नंददास प्रभु की छबि निरखत सुध न रही पनघट की ॥२॥ राग सारंग अकेली मत जैयो राधे यमुना के तीर ॥ बंशीवट में ठग लागत है सुन्दर श्याम शरीर ॥१॥ बिन फांसी बिन भुजबल मारत बिन गाँसी बिन तीर ॥ वाके रूप जाल में फंसि के को बचि है ऐसो बीर ॥२॥ घर बैठो भर देऊं गगरिया मन में राखो धीर ॥ बीरन पान करन हम त्याग्यो कालिन्दो को नीर ॥३॥ धन सुत धाम गये नहिं चिंता प्राण गये नहिं पीर ॥ सूरदास कुल कान गये ते धिक धिक जन्म शरीर ॥४॥ राग सारंग जमुना जल भरन गई, देखत जीये सकुच रही पनघट पर देख्यों नंद दुलारो ॥ सुंदर स्याम तन सुदेस नटवर वपु तरन वेस मल्ल काछ पीत बसन कनक बरन टिपारो ॥१॥ चंदन की खोरु अरगजा अंग अंग फव्यो लकुट लीए करन कमल लागति अति प्यारो ॥ 'कृष्णदास' सुख की रासि गोपीजन बसत हीये त्रिविध ताप दुर होत बानिक जो निहारो ॥२॥ राग कल्याण यह कौन टेव तेरी कन्हैया जबतब मार्ग रोके ॥ कैसेके पनिया जाय युवतीजन आडोई ठाडोहै कुलट लिये दृग झोके ॥१॥ कबहुंक पाछेतें गागर डार देत ऐसें बजावे तारी जैसें कोऊ चोंके ॥ रसिक प्रीतमकी अटपटी बातें सुनरी सखी समझ न पर वाकी नोंकें ॥२॥ राग हमीर आई हुं अबहीं देख सुभग सुन्दर भेख ठाडो ॥ लरका एक रूपको भी वरो ॥१॥

परदनी फवत पटुका कंठपर रुरत कर वनमाल माई वदन नांई भांवरो ।।२।। नीर यमुनातीर भर धरी गागरी जबहीं उठाय देत देखत सब गांवरो । टोकत आवत जात नरनारी कहत युं कियो कारज भलो भरत नहिं भामरो ।।२।। टरत केसें अंक लीख्यो मम भाग्यमें कहेवो करो कोउ धरत मेरो नांवरो । दास परमानंद नंदनंदन कुंवर हृदय में बसत माई मेरे री सांवरो ।।५।। राग सौरठ भरि-भरि धरि-धरि आवत गागर तू कौन के रस भरी ! और दिनन तुम एकहि बिरियां जात ही पनियां आज केऊ बेर गई ऐसे कहा भयो बिनु देखे हरी ।।१।। जो तू सास ननद की कान करेगी तो तू अपने कुल डरेगी री ।। 'हरिदास' ठाकुर को प्रभु है रूप विमोहन नैन प्रान गये सब ढरेगी री ।।२।। राग हमीर साँवरो देखत रूप लुभानी । चले री जात चितयोरी मोतन तब ते संग लगानी ।।१।। वे वहि घाट पिवावत गैया हों इतते गई पानी । कमलनैन उपरेंना फेर्‌यो 'परमानन्द' हि जानी ।।२।। राग हमीर आवत सिर गागर धरे भरे जमुना जल मारग मिले मोहि नंदजू को नंदना । सुधि न रही री ता छिन ते सुनिरी सखी देख्यो नैनन आनंद को कन्दना ।।१।। चित तें कछु न सुहाय गेह हू रह्यो न जाय मेरी दिसि चितवत डार्‌यो मोपै फंदना ।। 'नन्ददास' प्रभु कों जो तू मिलावै तो हौं तोकों सरबस अरपि के पूजों तौ चंदना ।।२।। राग कान्हरो कबतें चली यह रीति रहत पनघट पर ठाडो ।। जाति पांति कुल कौन बडो है दसेक गैया बाढो ।।१।। नंदबाबा जिन ऐसे सिखये जो करि अँखि मोहुकों काढो ।। 'नन्ददास' प्रभु जैसे मृगी लों रूप गढो प्रेम फंदा गाढो ।।२।। राग नट अरे ढोटा भर देरे यमुना जल मेरी सों तूं मोतन चिते चोरे ।। मेरे संगकी दूर निकस गई मोहि एक ठाडी कीनी भरि ये गागर जिन रित बोरे ।।१।। वाटघाट में रोकत झगरत रही रेनवितवोरे ।। कृष्ण जीवन लछीराम के प्रभु माई अकेली जान जिन भिटवोरे ।।२।। राग अडानो जलकों गई सुघट नेह भर लाई परीहै चटपटी दरशकी ।। इत मोहनगास उत गुरुजनत्रास चित्रलिखी ठाढी नांमधरत सखी परस की ।।१।। टूटे हार फाटेचीर नयनन वहेत नीर पनघट भई भीर सुध न कलशकी ।। नंददासप्रभुसों ऐसी प्रीत

गाढी बाढी फेलपरी चायन सरस की ॥२॥

## उत्थापन के पद

राग नट सुबल श्रीदामा कह्यो सखनसो अर्जुन शंख बजैये ॥ घर जैवेकी भई है बिरियां श्रीगिरिधरलाल जगैये ॥१॥ ठौर ठौरते मधुरी धुनिबाजे मधुरमधुर स्वरगैये ॥ कुंजसदन जागे नंद नंदन मुदित बीरा फल लैये ॥२॥ हरिदासवर्यके पूरे मनोरथ गोकुल तापन शैये ॥ लटकत आवत कमल फिरावत परमानंद बढैये ॥३॥ राग नट लाडिले यह जल जिनहिं पियो ॥ जब आरोगत तब भरलाऊं तातो डार दियो ॥१॥ उठो मनमोहन वदन पखारो सुंदर लोट लियो ॥ तुम जानत हम अबही पोढे पहरहि द्योस रह्यो ॥२॥ सुन मृदुवचन स्याम उठ बैठे मान्यो मात कह्यो ॥ परमानंद प्रभु भयेहैं भूखे मैया मेवा दीयो ॥३॥ राग पूर्वी छबीले लालकी यह बानिक वरनत वरनी नजाई ॥ देखत तनमनधन कर न्योछावर आनंद उर न समाई ॥१॥ कंदमूल फल आगें धरकें रही हैं सकल सिरनाई ॥ गोविंदप्रभु पियसों रतिमानीपठई रसिक रिझाई ॥२॥ राग पूर्वी ग्वाल कहत सुनोहों कन्हैया ॥ घर जेवेकी भई बिरीयां दिन रह्यो घडी छैयां ॥१॥ शंखधुन सुन उठे हें मोहन लावो हो मुरली कहां धरैया ॥ गैयां सगरी बगदावो रे घरको टेर कहत बलदाऊ भैया ॥२॥ कंदमूल फल तरमेवा धरी ओटि किये मुरकैया ॥ अरोगत ब्रजराज लाडिलो झूंटन देत लरकैया ॥३॥ उत्थापन भयो पहोर पाछलो वृजजन दरस दिखैया ॥ परमानंद प्रभु आये भवनमें शोभा देख बल जैया ॥४॥

## भोग दर्शन के पद (शाम के)

राग नट राधे तेरे गावत कोकिला गण रहेरी मौनधर ॥ पियके गावत मेंनारहे मुखमोर कोटिमदनमोहनको लियो मनहर ॥१॥ कुंजमहल में मोहन मधुरता नराखी वितानतर ॥ गोविंदप्रभु रीझ हृदयसों लगाई वृषभान कुंवर ॥२॥ राग नट संदेश न अबकें सहो प्यारे ललना मानिनी मान त्यजत॥

केतीवार तुमहों पठाईजू अनेक यतन करहौं समुझाई उन अपने जियजु कोटिक बात सचत ॥१॥ कितनी दूर कुंजकुटीकी ओट आपन चलियेजू जीत्यो चाहो रतिपति ॥ गोविंदप्रभु आये दूतीके पाछें पाछें प्यारीके निकटह्वे कछु नयनन मुसकति ॥२॥ राग नट लालन नाहिंने री काहूके बसके ॥ बावरी भईरी त्रिया उनसों मन अरुझायो वेतो सदाई अपने रसके ॥१॥ निरखपरख देख जियको भरम गयो कामिनीवृंदन के मनन कसके ॥ तदपि कछु मोहनी गोविंदप्रभुपै युवतीसभामें वदत यशके ॥२॥ राग नट जो तू अछन अछन पग धरणीधरे ॥ निशअंधियारी कोऊ नहीं जानत नूपुरध्वनि जिन प्रकट करें ॥१॥ किसलयदल कुसुमन की शय्या रची चल निहार नवकुंजघरें ॥ चतुर्भुजदासस्वामिनी वेग चल रसिकराय गिरिधरन वरें ॥२॥ राग नट रसहीमें वश कीने कुंवरकन्हाई ॥ रसिक गोपाल रसही रीझत रसमिल रस त्यज माई ॥१॥ पियको प्रेम रस सुन्योहै रसीली बाल रसमें वचन श्रवणन सुखदाई ॥ चतुर्भुजप्रभु गिरिधर सब रसनिधि रसता मिलहै रहसि हृदय लपटाई ॥२॥ राग पूर्वी सोहत गिरिधर मुख मृदुहास ॥ कोटि मदन करजोर उपासित विगलित भ्रूविलास ॥१॥ कुंडललोल कपोलनकी छबि नासामुक्ता प्रकाश ॥ शोभासिंधु कहांलों वरनों वारने गोविंददास ॥२॥ राग पूर्वी पाछें ललिता आगेंस्यामाप्यारी ताआगें पिय मारगमें फूल बिछावत जात ॥ कठिन कली बीन करत न्यारीन्यारी प्यारी के चरण कोमल जान सकुंचत गढवेहू डरात ॥१॥ अरुझी लता अपनेकर निरवारत ऊँचे ले डारत द्रुम पल्लव पात ॥ सूरदासमदनमोहन पियकी आधीनताई देखत मेरे नयन सिरात ॥२॥ राग नट प्रीतम प्यारे नेहौं मोही ॥ नेंकु चितै इत चपल नैन सों कहा कहों ? हौं तोही ॥१॥ कहा री ? कहों मोहिं रह्यौ न भावै जब देखों चित गोही ॥ 'छीत-स्वामी' गिरिधरन निरखिके अपुनी सुधि हों खोही ॥२॥ राग सारंग या व्रजते कबहु न टरोंरी ॥ बंसी वट मंडप वेदी रच कुंवर लाडीलो लाल वरोंरी ॥१॥ इत जमुना उत मान सरोवर भावर दोउ वीच भरोरी ॥ श्री वृषभान प्योसार हमारो जस अपजसतें हों न डरोरी ॥२॥

कुंज कुटी निज धाम हमारो उमग-उमग रस रंग भरोरी ।। परमानंद स्वामी रति नायक नंद नंदन सों मिल केल करोंरी ।।३।। राग सारंग सुन्दरता गोणले सोहे ।। कहत न बने नेनन मन आनंद जाहि देखत रति नायक मोहे।।१।। सुंदर चरन कमल गति सुन्दर गुंजा फुल अवतंस। सुंदर बनमाला उर मंडित सुंदर गिरा मनहु कलहंस ।।२।। सुंदर बेनु मुकट गुन सुंदर सब अंग स्याम सरीर।। सुंदर बदन बिलोकनि सुंदर सुंदर ते सुंदर बलबीर ।।३।। वेद पुरान निरुपित बहु विध परि ब्रह्म रूप नराक्रति वास ।। बलबल जाउं मनोहर मूरत रहे बसो परमानंददास ।।३।। राग सारंग चारु कुंडल की झलक ।। कुमकुम को तिलक बन्यो कुटिल न बड अलक ।।१।। हरि को मुख कमल देखे लागत नाहि पलक ।। मोर मुकट सीस मनसिज की मलक ।।२।। श्याम सुंदर देखन को आवत जीय ललक ।। परमानंद स्वामी गोपाल नेन की सलक।।३।।

## उसीर भोग दर्शन के पद

राग हमीर अबही लगाय गये मेरे गेह कहां मेट आये लाल अरगजा अंगको । नैन सिथिल अरु बैन सिथिल भये रंग लग्यो परसंगको ।।१।। सुन पिया वचन अंक भर लीनी मेट्यो ताप उर विरह अनंगको । परमानन्द स्वामी की जीवन चित चोर्यो अरधंगको ।।२।। राग सारंग चंदन की खोर किये चंदन घस अंग लगावे सोंधेकी लपट झपट पवन फहरनमें ।। प्यारी के पिया को नेम पियके प्यारी सो प्रेम अरसपरस रीझ रीझावे जेठकी दुपेहरीमें ।।१।। चहुं ओर खस सँवार जल गुलाब डारडार सीतल भवन कियो कुंज महलमें ।। सोभा कछु कही न जाय निरख नैन सचुपाय पवन ढुरावे परमानंददास टहलमें ।।२।। राग सारंग चंदन सुगंध अंग लगाय आये मेरे गृह हमही मग जोवत लाल तिहारोहे ।। ढीले ढीले पग धरत घामके सताये लाल बोलहु न आवे बैन कोनके बचन पारेहो ।।१।। बैठो लाल सीतल छांह श्रमहुको निवारन होय सीतल जल यमुनाको अनेक भांति पीजिये ।। नंददास प्रभु प्रिय

हमतो दरसकी प्यासी ऐसी नीकी करो कृपा-मोहि दरस दीजिये ॥२॥ राग सारंग मदन गुपाल हमारे आवत आनंद मंगल गाऊंगी ॥ जल गुलाब के ढोरी अरगजा पायन चंदन लगाऊंगी ॥१॥ सीतल चंदन सुखद के साजति कुच भुज बीच बसाऊंगी ॥ 'कुंभनदास' लालगिरिधर को जो एकांत कर पाऊंगी ॥२॥ राग सारंग झनक वार मोहन आवनि भई ॥ राधे बिलोकत द्वार ॥ इक दृग अंजन मंजन कीयें इक उमंग चोंप लिये नई ॥१॥ बसनन कों अग्र धूप आभूषन अति अनूप चंदन खौर लिलाट दई ॥ 'मैंन' के प्रभु दरस हित कारन वृषभानु नन्दिनी रति लई ॥२॥ राग सारंग तेरी यह हँसन पिय कों प्यारी अति भावन ॥ चोंप झलक छुटी विधु वदन अलक जातें नीकी लागत कंचुकी कसन ॥१॥ अंग अंग भूषन अति हि बिराजत ठौर ठौर अरगजा भींज रहे बसन ॥ 'चतुर बिहारी' गिरिधारी हिलि मिलि बैंठें रीझि रीझि रस रसन ॥२॥ राग अडानो कुंज महल के अंगन बैठे श्रीराधा अरु गिरिवर धारी ॥ जल बीरा चंदन वनमाला सखी कर लै ढोरत बीजना री ॥१॥ छूटत हैं चहुँ और फुहारे सीतल पवन बहुत सुखकारी ॥ छाई घटा छटा कहा बरनू मंद मंद चमकत चपला री ॥२॥ हंस चकोर परेवा बोलत नाचत मोर गावत कोकिला री ॥ 'कृष्णदास' प्रभु लै कर बीना बजवत रिझवत प्रान पियारी ॥३॥ राग सारंग तनक प्याय देरी पानी यह मिस गयो वाके गेह ॥ समज सोच भर लाई जल अचवावन को ओक ढीली करि फेर वाईको मुख चितयो तब ग्वालन मुसकानी ॥१॥ वे जल वेसेंहू डार्यो फेर जल भरि लाई हों अचवाय न जानो बोली मधुरी सी बानी । चतुर बिहारी तुम प्यासे हो तो पानी पियो नातर पांओ धारीये रावरी प्यास मैं जानी ॥२॥ राग सारंग जल क्यों न पियो लालन जो हो पिया तुम प्यासे । भरि लाई जमनोदक सीतल पीवत क्यों अलसाते ॥१॥ जल के मिस तुम डोलत घर घर नवल त्रियन रस माते । चतुरबिहारी पिय प्यासे हो तो पानी पियो हो जोबन के माते ॥२॥ राग सारंग उपरना श्याम तमालको ॥ तेधो

कांहां लीयो व्रज सुंदरी ललित त्रिभंगी लालको ॥१॥ सुभग कलेवर प्रगट देखीयत हाथन कंगना जालको ॥ तु रस मगन नहीं मन समझत बालकेली व्रजख्यालको ॥२॥ निशदिन रहत गोपाल ग्वाल संग चंचल नयन विशाल को ॥ परमानंदप्रभु गोधन चारत मत्त गयंद कर चालको ॥३॥
राग हमीर टेडी अलक लसत पगीयां ॥ टेढी चाल चलत सुरभीन संग टेडी भ्रकुटी अंग मटक ॥१॥ टेढे तान मुरली बजावत टेडी लकुटीन गायन हटकत ॥ परमानंद दास को ठाकुर टेडी युवती लेत बलैया कर चटकत ॥२॥
राग सारंग पीत पीछोरी कहांजो बिसारी ये तो लाल ढिंगनकी ओढेहे काहुकी सारी ॥१॥ हों वाहि घाट पिवावत गैया जहां भरत पनिहारी ॥ भीरभई गैया सब बिडरी मुरली भली जो संवारी ॥२॥ हों ले भज्यो और काहुकी वे ले गई जो हमारी ॥ परमानंद बलबल बतियनपर तन तोरत महतारी ॥३॥

## संध्या आरती के पद

राग गोरी लटकत चलत युवती सुखदानी संध्यासमें सखामंडल में शोभित तनगोरज लपटानी ॥१॥ मोरमुकुट गुंजा पीरोपट मुखमुरली गुंजत मृदुबानी ॥ चतुर्भुजप्रभु गिरिधारी आयेबनतें ले आरती वारत नंदरानी ॥२॥
राग गोरी आरती युगल किशोरकी कीजे ॥ तन मन धन न्योछावर दीजे ॥१॥ गौरस्याम मुख निरखत जीजे ॥ प्रेमस्वरूप नयनभर पीजे ॥२॥ रवि शशि कोटि वदनकी शोभा ॥ ताहि देखत मेरो मनलोभा ॥३॥ नंदनंदन वृषभान किशोरी ॥ परमानंदप्रभु अविचल जोरी ॥४॥ राग गोरी यशोदा काहे न मंगलगावे ॥ पूरण ब्रह्म सकल अविनाशी ताकों गोद खिलावे ॥१॥ कोटि कीट ब्रह्मांडको करता मुनिजन जाकों ध्यावे ॥ ना जानूं ये कौन पुण्यते सो तेरी धेनु चरावे ॥२॥ ब्रह्मादिक सनकादिक नारद जपतप ध्यान न आवे ॥ शेषसहस्रमुख जपत निरंतर हरिको पार न पावे ॥३॥ सुंदरवदन कमलदललोचन गोधन के संग आवे ॥ करत आरती मात यशोदा सूरदास बलजावे ॥४॥ राग गोरी आरती करति जसुमति मुदित लाल कों ।

दीप अद्‌भुत जोति, प्रगट जगमग होति वारि वारति फेरि अपनें गोपाल कों ॥ बजत घंटा ताल, झालरी संख-धुनि निरखि व्रज-सुंदरी गिरिधरनलाल कों ॥ भई मन में फूलि गई सुधि-बुधि भूलि 'छीत-स्वामी' देखि जुवति-जन-जाल कों ॥ राग गौरी आरती करति जसुमति निरखि ललन-मुख अति ही आनंद भरि प्रेम भारी ॥ कनक थारी जटित रत्न, मुक्ता खचित, दीप धरि हुलसि मन वारि-वारि ॥ बजत घंटा ताल, बीन झालरी संख मृदंग मुरली विविध नाद सुखकारी । 'छीत-स्वामी' गिरिधरनलाल कों हेरि सकल व्रजजन मुदित देत तारी ॥

## आवनी के पद

राग कान्हरो धेनन को ध्यान निसदिन मेरे प्रीतम को स्वप्ने कहत गोरी गायन आई ॥ आनन उजारी बनवारीजु सम्हारि लाउ वा बिन न रहुंगो तो बाबा की दुहाई ॥१॥ कजरारी कंठवारी मखतुल फोंदावारी झांझर झनकारी प्यारी मो मन भाई ॥ जगन्नाथ कविराय के प्रभु हो तो झुकी चिरजीवो कन्हाई ॥२॥ राग पूर्वी आगे गाय पाछे गाय इत गाय उत गाय गोविंद को गायन में बसबोई भावे ॥ गायन के संग धावे गायनसों सचु पावे गायन की खुर रेणु अंग लपटावें ॥१॥ गायनसों व्रज छायो वैकुंठ विसरायो गायन के हेत कर गिरिले उठावे ॥ छीतस्वामी गिरिधारी विट्ठलेश वपुधारी ग्वारिया को भेखधरें गायन में आवे ॥२॥ राग पूर्वी आगें कृष्ण पाछें कृष्ण इत कृष्ण उत कृष्ण जित देखो तित कृष्ण मईरी ॥ मोरमुकट धरें कुंडल किरण धरें मुरली मधुरध्वनि तान नईरी ॥१॥ काछिनी काछें लाल उपरैना पीतपट तिहिं काल शोभा देख थकित भईरी ॥ छीतस्वामी गिरिधरन श्रीविठ्ठल निरखत छबि अंग अंग छईरी ॥२॥ राग पूर्वी देखो गोपालकी आवन ॥ कमलनयन स्यामसुंदर मूरति मन भावन ॥१॥ वही सुंदर सीसमुकुट गुंजामणिलावन ॥ परमानंदस्वामी गोपाल अंग अंग नचावन ॥२॥ राग पूर्वी हाकें हटकि हटकि गाय ठठकि ठठकि रही

गोकुलकी गली सब सांकरी ॥ जारी अटारी झरोखन मोखन झांकत दुरदुर ठौरठौरते परत कांकरी ॥१॥ चंपकली कुंदकली वरषत रसभरी तामेंपुन देखियत लिखेसे आंकरी ॥ नंददासप्रभु जहींजहीं द्वारें ठाढे होत तहीं तहीं वचन मांगत लटक लटक जात काहूसों हां करी काहूसों ना करी ॥३॥ राग पूर्वी मुरली अधर धरे आवत हरि हरेहरे गावत रसिक तान सुरभी संगलीने ॥ मोरपच्छ सीसमुकुट मकराकृतकुंडल छबि वैजयंतीमाल अंगचंद नहीं दीने ॥१॥ काछिनी कटि नूपुरपद निपट वचन अटपटे नटवरवपु ग्वालसंग शोभित रसभीने ॥ गोविंदप्रभु गिरिवरधर ग्वालिन विथकित रही धावत मुखवारिज ऊपर मधुकर दृग कीने ॥२॥ राग गौरी बनते बने आवत मदनगोपाल ॥ नृत्यत हँसत हँसावत किलकत संग मुदित ब्रजबाल ॥१॥ वेणु चंग मुरज उपंग चलत विविध स्वर ताल ॥ बजत अनेक वेणु रव सो मिलक्वणित किंकिणी जाल ॥२॥ यमुनातट वट निकट नवल रस मंद समीर सुढाल ॥ राका रेणु विमल शशि क्रीडत नंदरायके लाल ॥३॥ स्याम सुभग तन कनक कपिश पट उरलंबित वनमाल परमानंदप्रभु चतुर शिरोमणि चंचल नयनविशाल ॥४॥ राग गौरी आवत बने कान्ह गोपबालक संग नेचुकी खुर रेणु छुरत अलकावली ॥ भ्रूह मनमथचाप वक्र लोचन बाण सीस शोभित मत्त मयूर चंद्रावली ॥१॥ उदित उडुराज सुंदर शिरोमणि वदन निरख फूली नवल युवति कुमुदावली ॥ अरुण सकुचत अधरबिंबफल उपहसत कछुक प्रकटित होत कुंद दशनावली ॥२॥ श्रवण कुंडल तिलक भाल वेसरनाक कंठ कौस्तुभ मणि सुभग त्रिवलावली ॥ रत्नहाटक जटित उरसि पदकनपांत बीच राजत सुभग झलक मुक्तावलि ॥३॥ वलय कंकण बाजूबंद आजानु भुज मुद्रिका करतल विराजत नखावली ॥ क्वणितकर मुरलिका मोहित अखिल विश्व गोपिका जनमनसि ग्रथित प्रेमावली ॥४॥ कटिक्षुद्रघंटिका जटित हीरामणि नाभि अंबुजवलित भृंग रोमावली ॥ धाय कबहुंक चलत भक्तहित जान पियगंडमंडित रुचिर श्रमजल कणावली ॥५॥ पीत कौशेय परिधान सुंदर अंगचलत नूपुर बजत गीत शब्दावली ॥ हृदय कृष्णदास गिरिवरधरनलालकी

चरण नखचंद्रिका हरत तिमिरावली ॥६॥ राग गोरी झुक रही सुन मुरलीकी टेर ॥ उतते आंई पनियांके मिष गौआवनकी बेर ॥१॥ मोरचंद्रिका मुकुटविराजत चपलनयनकी फेर ॥ परमानंदप्रभु मिले खिरकमें याते भई अबेर ॥२॥ राग गोरी ग्वालिन अजहूं वनमें गाय ॥ होन न देत वारदोहन की चलत सवारे ही धाय ॥२॥ ले दोहनी खिरक मिषदोहन उत्तर कहत बनाय ॥ नंदद्वारपे फिर फिर उझकत बात न समझीजाय ॥२॥ समुझतहूं तुम लाल मिलनको करतहो जो उपाय ॥ चतुर्भुजप्रभु गिरिधरनागर मनमाणिक लियोहै चुराय ॥३॥ राग गोरी आवत मोहन धेनु लिये ॥ वाजत वेणु रेणुतनमंडित बाहु श्रीदामा अंसदिये ॥२॥ कटिपटपीत लालउपरैना और नौतन वनमाल हिये ॥ कुंडल लोल कपोल विराजत मोरपच्छ सिरमुकुट दिये ॥२॥ व्रजजन कुसुद निरख प्रफुल्लित भई रूपदसुधा नयनन जुपिये ॥ परमानंददासको ठाकुर वासर तापको नाशकिये ॥३॥ राग गोरी आवत हैं आगेदे गैयां ॥१॥ सुबल सुबाहु श्रीदामा संगी क्वणितवेणु नितहीकी नैयां ॥१॥ एकवेपेज करतहै ठाढे धाय छुवत वे स्यामकी छैयां ॥ हम आगें तुम पाछें परसें ग्वाल परस्पर करत बडैयां ॥२॥ घेर रहे सब करत कुलाहल देत गोपालहि नंद दुहैयां ॥ औरहु ग्वाल करत बहुक्रीडा रामदासप्रभुके मन भैयां ॥३॥ राग गोरी देखोरी आवतहैं गोपाल गोप गायन पाछें गोपीजन मन हरत हेरत ॥ फूलन की पागबनी फूलनकी माल उर फूली फूलीनवलासीकर फूलनकी फेरत ॥१॥ व्रजकी वीथनमें प्रवेश होत जाके हेत जाके द्वारे ठाडे होत बचन सुनायवेको सखान टेरत ॥ कल्याणके प्रभु गिरिधारी को मुखारविंद देखवेकूं दोरी आयी जियमें झेरत ॥२॥ राग गोरी देखन देत न बैरिन पलकें ॥ निरखतवदन लालगिरिधरको बीच परत मानों व्रजकीसलके ॥१॥ बनतेजु आवत वेणु बजावत गोरज मंडित राजत अलकें ॥ माथें मुकुट श्रवण मणिकुंडल ललित कपोलन झांई झलकें ॥२॥ ऐसे मुखदेखनकों सजनी कहा कियो यह पूत कमलकें ॥ नंददास सब जडनकी यह गति मीन मरत भायें नहिं जलकें ॥३॥ राग पूर्वी मेरे तू जिय में बसत नवल पिया

प्रानप्यारी ।। तेरेई दरस परस राग रंग उपजत मान न कीजे हो हो री ।।१।। तू ही जीवन तू ही प्राण तू ही सकल गुन निधान तो समान ओर नाहिन मोकों हितकारी ।। ब्यास की स्वामिनी तेरी मायातें पायो हे नाम बिहारी ।।२।।

राग पूर्वी आवत चारे अब धेनु ।। सखन संग श्रुति देत मधुगन मुदित बजावत बेनु ।।१।। अमृत मधुर धुनि पूरित श्रवननि उठ धाई सकल तज एनु ।। हृदय लगाय व्रजेश्वर अंचर पट पोंछति मखरेनु ।।२।। उन्मर्दन मज्जन करवावति भूखन पीत बसन ।। गोविन्द प्रभु खटरस भोजन कर पोढे बिमल सेज सुख सेन ।।३।।

राग गोरी हरि की मधुरी गावनि । सुनहु सखी ! मन मोहत मेरौ मधुरी बेनु बजावनि ।। गोप-भेष-नट-लीला-बिग्रह बृंदावन ते आवनि। धातु प्रबाल कुसुम गुंजामनि देह-सिंगार बनावनि ।। गावत ग्वाल गोविंद की कीरति तीरथ ते अति पावनि । 'परमानंददास' अंतरगत अबिरल प्रीती बढावनि।।

राग गोरी हरि की आवनी बनी । गोप-मंडली-मध्य बिराजत है त्रैलोक-धनी ।। भेष विचित्र कियो है मोहन अंग राग बन-धातु । बरुहापीड दाम गुंजामनि सीस कमल कौ पातु ।। नाचत गावत बेनु बजावत गोधन-संग गोविंद । वासरगत सुंदर ब्रज आवत हैं प्रभु 'परमानंद' ।।

राग हमीर वे देखीयत हमारे गोकुलके दुःखजु ।। प्राचीदीसते नकुदछ न मेरी अंगुरी के अग्र तन नेकुं करो मखजु ।।१।। चढगीर सृंग कहेत मोहनजु चलो बल दाऊ हम देखवेकी भुकजु ।। जन्मभूमि चल आये गोबिन्द प्रभु तन पुलकत मन भयोअत सुखजु ।।२।।

राग गोरी आवत हैं आगेदे गैयां ।। सुबल सुबाहु श्रीदामा संगी क्वणितवेणु नितहीकी नैयां ।।१।। एकवेपेज करत है ठादे धाय छुवत वे स्यामकी छैयां ।। हम आगें तुम पाछें परसें ग्वाल परस्पर करत बडैयां ।।२।। घेर रहे सब करत कुलाहल देत गोपाल हि नंद दुहैयां ।। औरहु ग्वाल करत बहुक्रीडा रामदासप्रभुके मन भैयां ।।३।।

राग गोरी वे देखो आवतहैं गिरिधारी ।। कछुक गाय आगें अरु पाछें शोभित संग सखारी ।।१।। खसरही पाग लटपटी सुंदर अपने हाथ संवारी ।। मोतिनकी लरउरऊपर रुरकत वनमालारी ।।२।। अंगअंग छबि उठत तरंग नकापें

जात निहारी ।। श्रीविठ्ठलगिरिधरन सबनमें चाह तिहारी न्यारी ।।३।।
राग गोरी देखन देत न वैरिन पलकें ।। निरखतवदन लालगिरिधरको बीच परत मानों व्रजकीसलके ।।१।। बनतेजु आवत वेणु बजावत गोरज मंडित राजत अलकें ।। माथे मुकुट श्रवण मणिकुंडल ललित कपोलन झांई झलकें ।।२।। ऐसे मुखदेखनकों सजनी कहा कियो यह पूत कमलकें ।। नंददास सब जडनकी यह गति मीन मरत भायें नहिं जलकें ।।३।। राग गोरी
आवै माई ! नंद-नंदन सुख-दैनु । संध्या समै गोप-बालक-संग आगें राजत धैनु ।। गोरज-मंडित अलक मनोहर, मधुर बजावत बैनु । इहि विध घोष मांझ हरि आवत सब कौ मन हरि लैनु ।। कियौ प्रवेश जसोदा-मंदिर जननी मथि प्यावति पय-फैनु ।। 'छीत-स्वामी' गिरिधरन-वदन-छवि निरखि लजानौ मैनु ।। राग गोरी बन तें आवत स्याम गांइनि के पाछैं मुकुट माथे धरें, खौरि चंदन करें, वनमाल गरें, भेषु नटवर काछैं ।। करत मुरली-नाद मोहत अखिल विश्व, धरत धरनी चरन मंद-मंद पाछैं । 'छीत स्वामी' नवल लाल गिरिवरधर-रूप देखि मोहित सब व्रज की बाल, गोप - वधू बाछैं ।।
राग गोरी बन तें गोपाल आवै गांइनि के पाछैं पाछैं, गोरज मंडित कपोल सोहत हैं माई ! मोर-मुकुट सीस धरे, मुरली अधर करें, बनमाल सोहै गरें, काननि कुंडल झलकाई ।। ठुमुकि-ठुमुकि चरन धरत । नूपुर झनकार करत, रतिपति - मन हरत, बाढी सोभा अधिकाई । 'छीत-स्वामी' गिरिधारि जुवजन मोहे निहारि, कियौ प्रवेश सिंहद्वारि, जननी बलि जाई।।
राग गोरी मेरे री ! मन मोहन माई । संझा समै धेनु के पाछैं आवत हैं सुखदाई ।। सखा-मंडली मध्य मनोहर मुरली मधुर बजाई । सुनत स्रवन तन की सुधि भूली, नैन की सैन जताई ।। कियौ प्रवेश नंद-गृह-भीतर जननी निरखि हरषाई । 'छीत-स्वामी' गिरिधर के ऊपर सरवसु देत लुटाई ।।
राग गोरी मोहन नटवर-बपु काछैं आवत गो-धन संग लिऐं लटकत । देखन कों जुरि आईं सबै त्रिय मुरली-नादस्वाद-रस गटकत ।। करत प्रवेस

रजनी-मुख व्रज में देखत रूप हृदै मैं अटकत । 'छीत-स्वामी' गिरिधरन लाल-छबि देखत ही मन कहुं अनत न भटकत ॥ राग गोरी हरिजु राग अलापत गोरी । होंय बाट घाट घर तजिके सुनत बेनु धुन दौरी ॥१॥ गई हो तहाँ जहाँ निकुंजवन अरु बैठे किसलय की चोरी । देखी मैं पीठ दीठ द्रुम फरकत पीत पिछोरी ॥२। लीनी हों बोलि हो मेरी सखी री देखि बदन भई बौरी । 'परमानंद' नंद के नंदन मोहि मिले भरि कौरी ॥३॥ राग गोरी आज नंदलाल प्यारो मुकुट धरे । स्रवन लसत मकराकृति कुंडल रतिपति मन जु हरे ॥१॥ अधर अरुन अरु चिबुक चारु बने दुलरी मोतिन माल पीतांबर धरे। अति सुगंध चंदन की खौर किये पहोंचनि पहुँची मोतिन की लरे ॥२॥ कर मुरली कटि लाल काछनी किंकिनी नूपुर शब्द हरे । गुन निधान 'कृष्ण' प्रभु रूप-निधि राधे प्यारी निरखि-निरखि नैनन ते न टरे ॥३॥ राग गोरी आज नंदलाल प्यारो मुकट धरे । स्रवन लसत मकराकृति कुंडल काछनी कटि वरन बनमाल गरे ॥१॥ चंचल नैन विशाल सुभग भाल तिलक दिये सुंदर मुखचंद चारु रूप सुधा झरे॥ 'विचित्र बिहारी' प्यारो बेनु बजावत बंसीवट ते व्रजजन मन जु हरे ॥२॥ राग गोरी नवललाल गोवर्धनधारी आवत बनतें सोहे ॥ मणिगण भुवन अंग बिराजत छबिली चाल मन मोहे ॥१॥ मोर मुकुट काछनी कट राजत देखत मन मथ कोहे ॥ नंददास प्रभु गायन पाछे आवत चहुंधा दृष्टि करी जोहे ॥२॥ राग गोरी बनतें व्रज आवें सांवरो वाके नासा लटकत मोतीरी ॥ वरूहा मुकट घुघरारी अलके कुंडल जगमग जोतीरी ॥१॥ पीतांबर कसी रह्योरी महर महर को तामें मुरली ओपीरी ॥ परमानंद कछु कहत न बन आवे जो सुख पावे गोपीरी ॥२॥ राग गोरी गिरिधर आवतरी व्रज लटकत ॥ देखत दृगन अघातमानों ज्यों ज्यों नोंपूर कींकनी बाजत त्यों त्यों चरन अवनी पर पटकत ॥१॥ लालके ललित कपोलनके ढिंग कुंडल दिनमनिकी दूति अटकत ॥ नटवर भेख कीये नवरंगी मुकट सीस पर मटकत ॥२॥ लालके वैजयंती परसत चरनन पर निरख मदन मन अटकत ॥ राधावर बंसीधर प्रभुपर रीझ वार कर चटकत ॥३॥

राग गोरी गोपालकी आवनि तुम देखो व्रजनारी ।। मंदमंद मटकनि पर छिनु छिनु बलहारी ।।१।। मोर मुकट बनमाल पीतांबर सोहे ।। कुंडल मुख जगमगात कोटि काम मोहे ।।२।। बेनु बजावत नेन नचावत सुरभी संग आवे ।। जुवती चकोर चंद परमानंद गावे ।।३।। राग गोरी सांवरो मन मोहन माई ।। देख सखी वनतें ब्रजआवत सुंदर नंदकुमार कन्हाई ।।१।। मोर चंद सिर मुकट बिराजत मुख मुरली सुर सहज सुहाई ।। कुंडल लोल कपोलन की छबि मधुरी सी बोलनि बरनी न जाई ।।२।। कुंचित केश सुदेश वदन पर मधुपनकी माला फिर आई ।। मंदमंद मुसकात मनोहर दामिनि दुर दुर देत दिखाई ।।३।। लोचन ललित लिलाट भृकुटी पर ताकि तिलककी रेख बनाई ।। जनु मरजाद उलंघ अधिक बल उमगी चली अति सुंदर ताई ।।४।। शोभित सुर निकट नासापुर अनुपम अधरनकी अरूनाई ।। जानुं शुक सुगंध विलोक बिंबफल चाखन चारन चोंच चलाई ।।५।। राग गोरी बनते नवरंग गिरधर आवत ।। आगे गोधन पाछे आपुन धाय धाय ओह टावत ।।१।। वरूहा मुकट दाम गरे गुंजा वेनु रसाल बजावत ।। सप्त सुरन मिल राग रागनि मेघ गिरा मृदु गावत ।।२।। गोप सखन के संग बिराजत अरू कर कमल फिरावत ।। परमानंद दास को ठाकुर सुरनर मुनि मन भावत ।।३।। राग गोरी अरीये गायन चराय आवत बनीहें बरनी धुररी ।। जब तें देखी तबतें यह छबि चिततें होत न दूररी ।।१।। श्रमझलकत भरेरंगप्रेम पराग रहे पुररी ।। उततें आवत धोंधीकोप्रभु स्याम सु जीवन मूलरी ।।२।।

## उसीर आवनी के पद

राग अडानो ए तेरी चाल की चलन टेढी बात की बोलन टेढी मृदु मुसकान टेढी टेढोई वदन ।। ग्रीवा की झुकन टेढीकटि की लचन टेढी चरन धरन टेढी बंसी की बजन ।।१।। पाग की बंधन टेढी कुटिल अलक टेढी भृकुटी कमान टेढी टेढे स्याम घन ।। कलंगी हलन टेढी उर बनमाल टेढी अलक झलक जलकन ।।२।। चंदन की खोर टेढी चंद्रिका चटक टेढी टेढो

आड बंद दिये मदन मोहन ॥ टेढे हैं त्रिभंगी लाल टेढी टेढी सब चाल टेढे को भरोसो मोंहि 'सूर' हों सरन ॥३॥ राग हमीर कल्याण आज अति नीके बनेरी गोपाल ॥ खासाको कटि बन्यो है पिछोरा उर मोतिनकी माल ॥१॥ पाग चौकरी सीस बिराजत चंदन सोहत भाल । कुंडल लोल कपोल बिराजत कर पहोंची वनमाल ॥२॥ धेनु चराय सखन संग आवत हाथ लकुटिया लाल ॥ परमानंद प्रभुकी छबि निरखत मोहि रही व्रजबाल ॥३॥ राग हमीर चंदन पहेरत आवत है नवरंग रंगीलो । चंदन को तन पाग पिछोरी चंदन छबिही छबीलो ॥१॥ चंदन की तन खोर किये है चन्द लागत अरवीलो । कृष्णदास प्रभु परममनोहर लागत परम रसीलो ॥२॥ राग हमीर आप देखो आवतहे निपट लाल बनेरी ॥ चन्दन की खोर किये गुलाब कि बनमाल हीयें मोर चन्दा माथे दीये ऐन मेन ननेरी ॥१॥ कटाव कि कटकाछनि ओर प्रीत बसन पातरे जरायके आभूषन तनः भेदको न गनेरी ॥ स्याम सुन्दर मेघ बरन जुवतिन के मनके हरनः जगतको प्रभु लटक चलत जोबन रूप सनेरी ॥२॥ राग हमीर हे आज कोन बन चराई गैया कंहा लगाई ऐती बेर ॥ बेठे कहा बेग सुध लेहो नेनन कर ओसेर ॥१॥ ऐकबन ढूंढ सकल बन ढूंढे कहुंवन पाई गायन कि नेर ॥ तानसेन के प्रभु तुम बहो नायक देहो कदम चढ टेर ॥२॥ राग हमीर पीछोरा खांसाको कटि जीनो ॥ केसर धोरि चंदन अंग छिरकत बहोतन अरगजा भींनो ॥१॥ कुल्हे केसरी भरी चंद्रिका अति बिचित्र मुख मंडन कीनो ॥ 'कुंभनदास' प्रभु गोवरधनधर प्रीतम परम प्रवीनो ॥२॥ राग हमीर गिरिधर सबही अंग को बांको ॥ बांकी चाल चलत गोकुलमें छैल छबीलो काको ॥१॥ बांकी भ्रोंह चरण गति बांकी बांको हृदय ताको । परमानंददास को ठाकुर कियो खोर व्रज सांको ॥२॥ राग हमीर मोहन देख सिराने नयना ॥ रजनी मुख आवत सुरभिनसंग मधुर बजावत वेना ॥२॥ ग्वालमंडली मध्यविराजत सुंदरताको ऐना ॥ आसकरणप्रभु

मोहननागर वारुं कोटि छबिमैना ॥२॥ राग हमीर पिछोरा खासाको कटिबांधें ॥ वे देखो आवत नंदनंदन नयन कुसुमशर सांधें ॥१॥ स्याम सुभग तन गोरज मंडित बांह सखाके कांधें ॥ चलत मंदगति चालमनोहर मानों नटवा गुणगांधें ॥२॥ यह पद कमल अवही प्राप्त भये बहुत दिनन आराधें ॥ परमानंदस्वामी के कारण सुरमुनि धरत समाधें ॥३॥ राग हमीर अहो कान्ह गैया कहां बिसरानी ॥ कहां चराई चलाई कौन वन कहां पिवायो पानी ॥१॥ भई सांझ वन माझ फिरत हो बोलत पंछी कोऊ न वानी ॥ रसिकप्रीतम तुम भूलेसे फिरत कहा बात तिहारी जानी ॥२॥ राग हमीर हरिमारग जोवत भई सांझ । दिनमनि अस्त भयो गोधूरक आवत बने मंडली मांझ ॥१॥ बाजत बेनु रेनु तनमंडित वनमाला उर लोचन चारु ॥ बरुहा मुगट स्रवन गुंजामनि वनज धातुको तिलक सिंगारु ॥२॥ गोपी नेन भृंग रसलंपट सादर करत कमल मधुपान ॥ विरहतापमोचन परमानंद मुरली मनोहर रूपनिधान ॥३॥ राग हमीर कल्याण आज सिर राजत टोपी लाल ॥ रूपनिधान स्यामघन सुन्दर उर राजत वनमाल ॥१॥ वनतें आवत कमल फिरावत गावत गीत रसाल ॥ रामदास प्रभुकी छबि निरखत मोह रही व्रजबाल ॥२॥ राग हमीर आज अति नीके बनेरी गोपाल । खासाको कटि बन्यो है पिछोरा उर मोतिनकी माल ॥१॥ पाग चौकरी सीस बिराजत चंदन सोहत भाल ॥ कुंडल लोल कपोल विराजत कर पहोंची वनमाल ॥२॥ धेनु चराय सखन संग आवत हाथ लकुटिया लाल ॥ परमानंद प्रभुकी छबि निरखत मोहि रही व्रजबाल ॥३॥ राग हमीर ब्रज की बीथी निपट सांकरी । इह भली रीति गांऊ गोकुल की जितही चलिए तितही बांकरी ॥ जहिं जहिं बाट घाट बन उपबन तहिं तहिं गिरिधर रहत ताकरी । तहां ब्रज-बधू निकसि न पावत । इत उत डोलत रारत कांकरी ॥ छिरकत पीक, पट मुख दिए मुसकत । छाजें बैठि झरोखें झांकरी । 'परमानंद' डगमगत सीस घट कैसे कें जैये बदन ढांक री ॥ राग पूर्वी देखो वे हरि आवत धेनु

लिये ॥ जनु प्राची दिस पूरन ससी रजनी मुख उदित किये ॥१॥ मंडल बिमल सुभग वृन्दावन राजत ब्योम विमान हिये ॥ बालकवृन्दन छत्र सोभा मन चोरत दरस दिये ॥२॥ गोपी नैन चकोर सीतल भये रूप सुधा ही पिये ॥ कुम्भनदास प्रभु गिरिधर ब्रजजन आनन्द किये ॥३॥ राग हमीर पिछोरा केसर रंग रंगायो ॥ मेघ गंभीर स्याम तन सुंदर लागत परम सुहायो ॥१॥ रोके आय घाट जमुनाको गोपीजन मन भायो ॥ भर गागरि नागरी के सिर धर कुच कर कमल फिरायो ॥२॥ चलत आगे व्हे करके मिस बातन रस बरखायो ॥ नंददास ब्रजबास सदा बस नेह नयो दरसायो ॥३॥ राग हमीर पिछोरा खासाको कटि झीनो । कटिपट पहेरे अति राजतहे बहुरि अरगजा भीनो ॥१॥ केसरखोर चंदन अंग लेपन चित्र बिचित्र मुखमंडन कीनो ॥ कुम्भनदास प्रभु गोवर्धनधर प्रीत करन प्रवीनो ॥२॥ राग हमीर पिछोरा खासाको कटिबांधे ॥ वे देखो आवत नंदनंदन नयन कुसुमशर सांधें ॥१॥ स्याम सुभग तन गोरज मंडित बांह सखाके कांधें ॥ चलत मंदगति चालमनोहर मानों नटवा गुणगांधें ॥२॥ यह पद कमल अवही प्राप्त भये बहुत दिनन आराधें ॥ परमानंदस्वामी के कारण सुरमुनि धरत समाधें ॥३॥ राग हमीर गिरिधर सबही अंगको बांको ॥ बांकी चाल चलत गोकुल में छैल छबीलो काको ॥१॥ बांकी भ्रोंह चरण गति बांकी बांको हृदय ताको ॥ परमानंददास को ठाकुर कियो खोर ब्रज सांको ॥२॥ राग हमीर मोहन देख सिराने नयना ॥ रजनी मुख आवत सुरभिनसंग मधुर बजावत वेना ॥३॥ ग्वालमंडली मध्यविराजत सुंदरताको ऐना ॥ आसकरण प्रभु मोहननागर वारूं कोटि छबिमैना ॥२॥ राग हमीर आवत मोहन मन हर्यो । हों अपने गृह सचुसों बेठी निरख बदन अचरा विसर्यो ॥१॥ रूप निधान रसिक नंदनंदन निरख बदन धीर न धर्यों । कुंभनदास प्रभु गोवर्धनधर अंग अंग प्रेम पीयूष भर्यो ॥२॥ राग हमीर सीस टिपारो सोहे लालके । ता पर तीन चन्द्रिका राजत व्रजजनको मन मोहे ॥१॥ धोती उपरना केसरीरंगके उर राजत वनमाल ॥ कमल फिरावत नेन नचावत कुंजत वेणु रसाल ॥२॥ आगे गोधन

पाछे आपुन वन प्रवेश सब कीनो ॥ 'सूरदास' प्रभु सबके स्वामी भक्तनको सुख दीनो ॥३॥ राग हमीर टेढी टेढी पगिया मन मोहे छूटे बंद सोंधे सों लपटे । कंचन चोलना यह छबि निरखत काम बापुरो को है ॥१॥ लाल इजार गरे वनमाल गुंजमाल दुति कुंडल सोहै । 'रसिक' रसाल गुपाल लाल गढो कीमत कीमत जो है ॥२॥ राग हमीर चंदन पहेरत आवत हे नवरंग रंगीलो ॥ चंदनकों तन पाग पिछोरा चंदन छबिही छबिलो ॥१॥ चन्दनकी तन खोर कीए हें चन्द लागत अरवीलो ॥ कृष्णदास प्रभु परम मनोहर लागत परम रसीलो ॥२॥ राग हमीर ए आज कौन बन चराई येती गैयां कहां धों लगाई एती बेर ॥ बैठे व कहा सुध लेहो नेनन कर ओसेर ॥१॥ एक बन ढूंढ सकल बन ढूंढी तोउ न पाई गायनकी नेर ॥ तानसेनके प्रभु तुम बहोनायक देहो कदम चढ टेर ॥२॥ राग हमीर देखे कुंज भवन ते आवत । स्वेत परदनी चंदन चरचित राग हमीर ही गावत ॥१॥ नंद रोहिनी देखत ठाडे बाल गोविंद बुलावत ॥ आय मिले तब स्याम मनोहर देखत उनको धावत ॥२॥ ठाडे खिरकमें गाय दुहावत सेननहीं में नेह जनावत । सूरदास प्रभु वेग चलो किन उर आनंद न समावत ॥३॥ राग हमीर आज सिर सोहत टोपी लाल ॥ रूप निधान स्याम घन सुंदर उर राजत बनमाल ॥१॥ बनतें आवत कमल फिरावत गावत गीत रसाल ॥ रामदास प्रभुकी छबि निरखत मोही रही ब्रजबाल ॥२॥ राग हमीर मोहन तिलक गोरोचन मोहन मोहन ललाट अति राजै । मोहन सिर पर मोहन कुलही मोहन सुरंग अति भ्राजै ॥१॥ मोहन स्रवन कुसुम जु मोहन कपोल अवतंस विराजै । मोहन अधरपुटपै मोहन मुरलि मोहन कल बाजै ॥२॥ मोहन मुखारविंदपै झूमत मोहन अलकअलि मधुकाजै । गोविन्द प्रभु नखसिख जु मोहन मोहन घोख सिरताजै ॥३॥ राग हमीर आवत आये देखौ निपट लाल बनेरी ॥ चंदन की खौर किये

गुलाब की बनमाल हिये मोरचंदा मांथे दिये ऐन मैन बनेरी ॥१॥ गुलाब की कटि काछनी जराय के आभूषण पीत बसन पातरे तन भेद कौन गिनैरी ॥ मेघ बरन श्यामसुन्दर युवतीन के मन को हरण नंददास प्रभु लटक चलत जोवन रूप सहेरी ॥२॥ राग हमीर मदनगोपाल हमारे आवत आनन्द मंगल गाऊंगी ॥ जल गुलाब के घोरि अरगजा पायन चंदन लगाऊंगी ॥१॥ शीतल चंदन सुखद के साजत कुच भुज बीच बसाऊंगी ॥ कुम्भनदास लाल गिरिधर को जो एकान्त कर पाऊंगी ॥२॥ राग हमीर आय देखो आवतहे निपटलाल बनेरी। चंदनकी खोर किये गुलाबकी बनमाल हिये मोरचंदा सिस दिये अेंनमेंन बनेरी ॥१॥ कटावकी कटि काछिनी उरपीत बसन पातरे जरावके आभुखन तिने कौन गिनेरी ॥ स्यामसुंदर मेघबरन जुवतिनके मन हरन जगतको प्रभु लटकचलत जोबनरूप सनेरी ॥२॥

## शृंगार बडे करवे के पद

राग गोरी खेलत आय धाय बैठे ब्रजराजकी गोद ॥ मुख चुंबनकर आन लेतहैं मनमें मानत मोद ॥१॥ सुंदर कर उगार मांगत है चितये तातकी कोद ॥ गोविंद कहें चलो भोजन भयो बोलत मातयशोद ॥२॥ राग गोरी अंग आभूषण जननी उतारत ॥ दुलरी ग्रीवमाल मोतिनकी केयुरले भुजा स्याम निहारत ॥१॥ क्षुद्रावली उतारत कटीसेंत धरत महीपर मन वारत ॥ रोहिणी भोजन करहु चढाई वारवार कहि कर कर आरत ॥२॥ भूखे भए स्याम हलधरपें यह प्रेम विचारत ॥ सूरदासप्रभु मात यशोदा पटलै दुहन अंतर रज झारत ॥३॥ राग गोरी ये दोऊ मेरे गाय चरैया ॥ मोल बिहंस लये मैं तुमको तब दोऊ रहे नन्हैया ॥१॥ तुमसो टहल करावत निशदिन औरन टहल करैया ॥ यह सुन स्याम हंसे कहि दोऊ झूठेई कहत है मैया ॥२॥ जान परतहै सांच जुठाई धेनु चरावत रहे झुरैया ॥ सूरदासप्रभु हंसत यशोदा मैं चेरी कहि लेत बलैया ॥३॥ राग गोरी एकहि जननी दोउन उर लगावत ॥ सुमन सुत अंग परसत रोहिणी बलगई कहिकहि जल न्हावावत ॥१॥ सरस वसन तन पोंछ गई ले

खटरसके जिनवार जिमावत ।। सीतलजल कपूर रस अचयो झारी कनक लिये अचवावत ।।२।। भर्‌यो चरु मुखधोय तुरत पीरे पान बीरी मुख नावत ।। सूरस्याम सुखजान मुदित मन शय्यापर संगले पोढावत ।।३।। राग गोरी कहो कहां खेलेहो लालन बात कहो मोसों बनकी ।। आवो उछंग सांवरे मोहन गोरज पोछूं वदनकी ।।१।। सुंदर वदन कमल कुम्हलानो और दशा भई या तनकी ।। रसिकप्रीतमसों कहत नंदरानी बलबल छगन मगनकी ।।२।।

## अथ मिस के पद

राग गोरी घर घर नंदमहर के मिषही मिष आवे गोकुलकी नार ।। सुंदर वदन बिनु देखे कल न परत भूल्यो धामकाम आछो वदन निहार ।।१।। दीपक लेचली बहिर वाटमे बड़ो कर डार फिर आय छबिसों बयारको देत गार ।। नंददास नंदलालसों लागे हें नयनपलककी ओट मानों बीते युगचार ।।२।। राग गोरी रोहिणी दीपक देहो संजोई ।। मंदमंदगति चल लेंहो अंचल मांझ अगोई ।।१।। जबहीं सजाय जात द्वारेलों डारत व्यार बुझाई ।। नेक नाहिं अनखात इते पर या घर यह बड़ाई ।।२।। केईवार संजोवन आई तब तुम नाहिन कीनी ।। औरनको याचन नहीं जेहों यह अकर में लीनी ।।३।। बारबार आगम गति मनप्रति पवन करीनकवानी ।। व्रजपति कह्यो ओट मेरी चल अंतर गतिकी जानी ।।४।। राग गोरी माईरी स्यामा स्याम स्याम रटत स्यामा स्याम भई ।। अपनी सखिनसों यों पूछतहै स्यामा कहां गई ।।१।। व्रजवीथिनमें ढूंढत डोलत बोलत राधे राधे ।। रही विचार निहार सोच कर सखी सकल मौन साधे ।।२।। प्रेम लगन जाके जो लागत ताहि कहो सुध कैसी ।। कहें भगवान हितरामराय प्रभु लगन लगे जब ऐसी ।।३।। राग गोरी सांझ भई घर आवहु प्यारे ।। दौरत कहा चोटकहुं लागे पुनि खेलोगे होइ सकारे ।।१।। आपही जाई बांह गहि लाई कंठ रहे लपटाई ।। धूर झार तातो जललाई तेल परसजु न्हवाई ।।२।। सरस वसन तन पोंछ स्यामकों भीतर गई लिवाई ।। सूरस्याम कछु करो बियारू पुनिराखों पौढाई ।।३।।

## चंद्रप्रकाश के पद

राग ईमन ठाढीहो अजिर यशोदा अपने हरिहि लिये चंदा दिखरावत ॥ रोवत कित बल जाऊं तुमारी देखो धोंभर नयन जुडावत ॥१॥ चितें रहत आप शशि तन तब अपने करलैलैजु बतावत ॥ मीठो लगत कै यह खाटो देखत अतिसुंदर मनभावत ॥२॥ मनही मन यह बुद्धि करत हरि मातासो कहि ताहि मँगावत ॥ लागी भूख चंद मैं खेहों देहु देहु तब कर बिरझावत ॥३॥ यशोमति कहत कहा मैं कीनो रोवत मोहन अति दुखपावत ॥ सूरस्यामको यशुमति टेरत गगन चिरैया उडत दिखावत ॥४॥ राग ईमन मेरोमाई अर्‌टयोहै बालगोविंदा ॥ गहि अचरा मोहि गगन बतावत खेलनको मांगे चंदा ॥१॥ भाजनमें जल मेल यशोदा लेकर चंद दिखावे ॥ रुदन करत पानी में ढूंढत चंद धरनी कैसें आवे ॥२॥ दूधदही पकवान मिठाई जो कछु मांगेंसो देहों खिलोना ॥ लहटु चकई पाटके लटकन मांगलेहु मेरे छोना ॥३॥ दैत्यदलन गजदंत उखारे केसी कंस निकंद ॥ सूरस्याम बलजाय यशोदा सुखसागर के कंद ॥४॥ राग ईमन लैहोंरी मा चंदा लेहुंगो ॥ कहा करों जलपुट भीतरको बाहिर चोंक गहूंगो ॥१॥ यह तो दलमलात झकझोरत कैसेके जु लहुंगो ॥ वहतो निपट निकटही दीपत बरज्यो हूं न रहूंगो ॥२॥ तुम्हारो प्रकट प्रेम में जान्यो बहुरायो न बहूंगो ॥ सूरस्याम जब कर गहि लाऊं तब तन ताप दहूंगो ॥३॥ राग ईमन लाल यह चंदा लेहो ॥ कमल नयन बलजाय यशोदा नीको नेक चितेहो ॥१॥ जा प्रकार तुम सुन सुंदर वर कीनी इतनी अनेहो ॥ सोई सुधाकर देख दामोदर या भाजनमें लेहो ॥२॥ नभतें निकट आन राख्योहै जलपुट यतनजु गहेहो ॥ ले अपने कर काढ चंदको जोभावें सो केहो ॥३॥ गगन मंडलतें गहि आन्योहै पंछी एक पठेहो ॥ सूरस्याम प्रभुइतनी बातको कित मेरो लाल हठेहो ॥४॥ राग ईमन किहि विधि कर कान्हहीं समझेहुं ॥ मैंही भूली चंद दिखरायो ताहि कहत मोहि दे मैं खेहुं ॥१॥ अनहोंती कहूं भई कन्हैया देखी सुनी न बात । यहतो आय खिलोना सबको खान कहत है तात ॥२॥ यह देत

लोनी नित मोकों छिनछिन सांझसंवारे ।। बारबार तुम माखन मांगत देहुं कहातें प्यारे ।।३।। देखत रहो खिलोना चंदा ओर न करहु कन्हाई ।। सूरस्याम लिये हँसत यशोदानंदहूं कहत बुझाई ।।४।। राग कान्हरो मांगेरी मोपें चंद खिलोना ।। बरज रही बरजो नहीं मानत ऐसो हठीलो जसुमतिजुको छोंना ।।१।। लें प्रतिबिंब दिखावत जननी रें रें रें मेरे चपल दिठोना ।। सूरदासमोहन हठ ठान्यो गिरिवरधर्यो जेसें करपर दोंना ।।२।।

## सांझ समय घैया के पद

राग गोरी निरख मुख ठाढी ह्वेजु हँसै ।। धोरी धेनु दुहत नंदनंदन लाडिली हियमें वसै ।।१।। सेली हाथ वछरुवा मिलवत कौनकौन छबि लागें ।। मोचत धार दोहनी चांपत मानों उपजत अनुरागें ।।२।। यह लीला ब्रह्मा शिव गाई नारदादि मुनि ग्यानी ।। परमानंद बहुत सुख पायो अरु शुक व्यास बखानी ।।३।। राग गोरी घैया पीवत सुंदर स्याम ।। मथ मथ देत मात यशोदा रुचिसों लेत घनस्याम ।।१।। जल अचवाय वदन फिर पोंछ्यो आभूषण सब धरे उतार ।। सूक्षम भूषण रहे अंग प्रति सो छबि निरख जननी बलहार ।।२।। दूध भात फिर दियो रोहिणी रुचिसों खात मनोहर बाल ।। जल अचवाय बीरी दई जननी यह छबि निरखत रसिकनिहाल ।।३।। राग गोरी हूं दुहि हों मोहि दुहन सिखावो ।। कैसे गहत दोहनी घुटुरुवन कैसे ले वछरा हाथनलावो ।।१।। कैसे लें नोंई पग बांधत कैंसे वाय चरण अटकावो ।। कैसे धार दूधकी वाजत सोसोबिधि तुम मोहि बतावो ।।२।। निपट भई अब सांझ कन्हैया गायनकी कहुं चोट लगावो ।। सूरस्यामसों कहत ग्वाल यों धेनु दुहन भोरहीं उठ आवो ।।३।। राग गोरी कान्ह तिहारी सोंहों आऊंगी ।। सांझ संझोखन खिरक वछरु वन स्याम समो जो पाऊंगी ।।१।। जो मेरे भुवन भीर नहीं ह्वै है तो हों तुमहि बुलाऊंगी ।। बाल गोपाल बुलावन के मिष ऊंचे स्वरसों गाऊंगी ।।२।। होत अवार दूर मोहि जेवो उत्तर कहा बनाऊंगी ।। कुंभनदासप्रभु गोवरधनधर अधर सुधा रसप्याऊंगी ।।३।। राग गोरी जा दिनते गैया दुहि दीनी ।। ता दिनते आपको आपही मानहुंचिते

ठगोरी लीनी ॥१॥ सहज स्याम करधरी दोहनी दूध लोभ मिष विनती कीनी ॥ मृदु मुसकाय चितेंकछु बोले ग्वाल निरख प्रेम रस भीनी ॥२॥ नित प्रति खिरक सवारे आवत लोकलाज मानों घृतसोपीनी ॥ चतुर्भुज प्रभु गिरिधर मनमोहन दरसन छलबल सुधि बुधि छीनी ॥३॥ राग गोरी जब तू गाय दुहावन जाय ॥ तब तहां तूंरी कहा नंदद्वारेपें भूल रही उतचाय ॥१॥ मटुकी सीस फिरत व्रजवीथन वारवार मुसकाय ॥ फिरफिर वार करतहै ठाडी सूधेधरत न पाय ॥२॥ तजी लोककी लाज कार्यकरकहिव काज धुका हि ॥ चतुर्भुजप्रभु जानतहूं तुव मन हरिसों अटक्यों आहि ॥३॥ राग गोरी कान्ह हमारी दुहि दीजे गैया ॥ तुमही जान सतभाय लडैंते नित उठ पठबत मैया ॥१॥ सब कोऊ कहत परम उपकारी संकरषणको भैया ॥ लेहु कमलकर दोहनी नंदनंदन होंहु लेहुं बलैया ॥२॥ तुम्हारे दुहेते हमारो पूजत बहुते दूध बहोते घृतघैया ॥ चतुर्भुजप्रभु कृपा करो हो नित गिरि गोवरधन रैया ॥३॥ राग गोरी लटकत चलत दोहनी लेरी ॥ अनोखी तू गाय दुहावनवारी कौन पौरीमें पैठन देरी ॥१॥ वनते आवत भई न बिरिया बासर श्रम तज नेक चितेरी ॥ तोहि न दोष नयेहितकी गति कठिन हिलगकी ऐसी हैरी ॥२॥ तुव दृग चंचल अंबुज वदनी दरसन हानि निमिष न सहेरी ॥ चतुर्भुजप्रभु गिरिधरन चंदने तुव चित चोर्‌यो मृदु मुसकेंरी ॥३॥ राग गोरी नेक पठै गिरिधरजूकों मैया ॥ रही विन स्याम पत्याय न काहू सूंघत नाहिनेअपनीलैया ॥१॥ ग्वालबाल सब सखा संगके पचिहारे बलदाऊ भैया ॥ हूंकहूंक हेरत सबही तन इनहीं हाथ लगी मेरी गैया ॥२॥ सुन त्रिय वचन कोरहाथहीं दुहुं दिश चितवन कुंवरकन्हैया ॥ परमानंद यशुमति मुसकानी संग दियो गोकुलको रैया ॥३॥ राग गोरी ढोटा कौनको मनमोहन ॥ संध्यासमें खिरकमें ठाढे सखी करत गोदोहन ॥१॥ ग्वालनी एकपाहुनी आई देख ठगीसी ठाड़ी ॥ चित चल गयो मदन मूरतीपै प्रीति निरंतर बाढ़ी ॥२॥ चल न सकत पग एक सुंदर चितचोर्‌यो व्रजनाथ ॥ परमानंद दास वहजानें जिहि खेल्यो मिल साथ ॥३॥ राग गोरी गोविंद तेरी गाय अतिबाढ़ी ॥ सुन व्रजनाथ दूधको लालच मेलसकों नहीं लाढी ॥१॥ आपनी इच्छा चरें उजागर

शंक नकाहुकी माने ।। तुम्हें पत्याय स्याम सुंदर तुम्हारो कर पहिचाने ।।२।। ऊंचे कान करत मोय देखत उझक उझक होय ठाडी ।। परमानंद नंदन के घरकी बालदशाकी बाढ़ी ।।३।। राग गोरी गइहौं खिरक दुहावन गाय ।। खोर सांकरी छैलछबीले अंचल पकर्‌यो धाय ।।१।। तैसी ये निसि अंधियारीकारी स्याम नजानें जाय ।। ये गोरे तन घरके वैरी बनमें दइ बताय ।।२।। कुच भुजबिच अटक नटनागर रहे कंठ लपटाय ।। तब कछु सुध न रहीरी मो तन की धरणि परी मुरझाय ।।३।। सुखमें दुख उपज्यों उत चितवत नयनन रहेअरुझाय ।। चली जातही अजर पंथमें लीनी व्यास बचाय ।।४।। राग गोरी लाल तुम कैसें दुहत हो गाय ।। बैठ कहुं दोहनी कहांहै धार कहां ह्वै जाय ।।१।। यह दुहिवो कबहु नहीं देख्यो कहत ग्वाल मुसकाय ।। जो कछु रह्यो तनकसो यामें सो दियोहै लुढाय ।।२।। मेरी सास खरी रिसहारी जब मोहि लाई खिरक बुलाय ।। श्रीविठ्ठलगिरिधरनलालपें तन मन चली हिराय ।।३।। राग गोरी तुम नीके दुहि जानत गैया ।। चलिये कुंवर रसिक नंदनंदन लागों तुम्हारे पैया ।।१।। तुमहिं जानकें कनिकदोहनी घरते पठई मैया ।। निकटही यह खरिक हमारो नागर लेहुं बलैया ।।२।। देख परम सुदेश लरकन चित चोर्‌यो सुंदर रैया ।। कुंभनदासप्रभु मान लई रति लाल गोवरधन रैया ।।३।। राग गोरी तुमपै कौन दुहावत गैया ।। गूढभाव सूचत अंतर गति अतिसेकाम कीन्हैयां ।।१।। गुप्तप्रीति तासो मिलकीजै जोहोय तुम्हारी दैया ।। वार वारही लपटत फिरत हो यही सिखायो मैया ।।२।। लेजु रहे कर कनक दोहनी बैठेहो अधपैयां ।। परमानंदयों हठ मांड्यो ज्यों घर खसम गुसैयां ।।३।। राग गोरी दुहिवो दुहायवो भूल गयोहो ।। सेली हाथ वचरुवा मिलवत नूपुर को ठमकार भयोहो ।।१।। नव जोबन नई चूनरके रंग घूंघटमें दुर मुर चितयो ।। धोंधीके प्रभु दंपति परस्पर प्यारीप्यारी रिझयो ।।२।। राग गोरी भर दोहनी दूध हाथते वरवटहीते ले जात छुडाई ।। पूत लाडिलो जाने नाहिं तेंकियो ढीट यशोदा माई ।।१।। वांट देत सब ग्वालनसो सुनरी महरि आप नहीं खाई ।। आनसमें बछरा छोरतहै तारीदेत बिडारत गाई ।।२।। एकजो ढोटा नंदमहरको मेरो कछु नवस्यात ।। परमानंद मोहन मूरत

वदनस्वरूप देख मुसकात ।।३।। राग गोरी माईरी कहत है गोदोहन ।। कहा करूं घर आयो न जाई देखन कान्ह मनमोहन ।।१।। संध्यासमें खिरकते निकसी देखो गोधन ठाट ।। विचही और भयो कछु संभ्रम विसराई वह वाट ।।२।। चितवत रूप चटपटी लागी घरमें रह्यो नजाय ।। परमानंद स्वामी नंदनंदन सर्वस्व लियो चुराय ।।३।। राग कल्याण प्रथम सनेह कठिन मेरी माई ।। दृष्टिपरे वृषभान नंदिनी अरुझे नयन निरवारे नजाई ।।१।। बछरा छोर खिरकमें दीने आपन झमकत रीझी आई ।। नोबत वृषभ गई मिल गैयां हँसत सखीकहा दुहत कन्हाई ।।२।। चारों नयन मिले जब सन्मुख नंदनंदनको रुचि उपजाई ।। परमानंददास वे नागरी नागरसों मनसा अरुझाई ।।३।। राग गोरी गावत मुदित खिरकमें गोरी सारंग मोहनी ।। बारबारको वदन निहारत हाथ कनककी दोहनी ।।१।। कनक लतासी चंपकबरनी स्याम तमाल गोपालकी जोरी ।। ठाड़ी निरख निकट तनमनसों नंदनंदनकी प्रीति न थोरी ।।२।। उपमा कहा देहुँ को लायक उन मद स्वरूप नागरि ह्वे नागर ।। प्रीत परस्पर ग्रंथी नछूटे परमानंदस्वामी सुखसागर ।।३।। राग गोरी अति सनेहसों दुहत स्यामघन जान रही सुरभी नूपुर धुनि ।। हरख हूंककर सबतन मोरत ललित मधुर परत श्रवण सुनि ।।१।। कमल-पाणि परसत चुचकारत रोमरोमप्रति बसत देवमुनि ।। धोंधीके प्रभुकी यह लीला देखत मोहे सुर नर मुनि पंचानन और चतुरानन गुनि ।।२।। राग गोरी मुसकात जात मिलवत गायन ।। झारत गोपवधु सुरभिनकों दोहनीलै करते दुहत चायन ।।१।। इत निरखत उत धार धरनीपर कबहूं कबहूं ढर लागत पायन ।। रामदासप्रभुको यह अचरज जैसी यह सब तैसीय रहायन ।।२।। राग गोरी बिलग कित मानत हो जु हमारो ।। कहाजु भयो पाछें दुहि दीनी होंतो ग्वाल तुम्हारो ।।१।। इनकी गतिहों नीके जानत सुरभी दूध देत त्योंत्योंहोत अंध्यारो ।। भर दोहनी काल्ह दुहि देहों तब ह्वैहै रामदास प्रभुको पतियारो ।।२।। राग गोरी ये आछी तनक कनककी दोहनी सोहनी गढाय देरी मैया ।। जाय कहोंगो बावानंदसों आछे पाटकीनोई दुहनसीखोंगो गैया ।।१।। मेरी दांईके ढोटा सब छोटे तेऊ सीखेरी करत बन धैया ।। नंददास कान्ह हंसत लोटत अरुं

भरत नयनजल यशुमति लेत बलैया ॥२॥ राग पूर्वी बोलत धेनु गोवर्द्धन गिरि चढ ॥ मोहन मुरली धुनि सुन श्रवनन काजर गांग गुरनी हरनी मुर धाई प्रेम बढ ॥१॥ आसपास सब घेर रहीं वह वापर वह वापर चढि ॥ गोविन्द प्रभु हस्त कमल परस कियो तातें अति दूने दूध चढ़ी ॥२॥

## ब्यारू के पद

राग ईमन लाडिले बोलत है तोहि मैया ॥ संझासमें गोधन संग आवत चुंबत लेकर गोद बैठेया ॥१॥ मधुमेवा पकवान मिठाई दूधभात अरु दार बनाई ॥ परमानंद प्रभु करत बियारू यशुमति देख बहुत सुखपाई ॥२॥ राग ईमन अहो बल जिय अधिक डरात ॥ गोधन किन ले आवो अबे कित पारतहो रात ॥१॥ एकहि थारमें जेंवत दोऊ यशुमति करत वियार ॥ सुंदरस्याम देत हुंकारी जननी प्रीत विचार ॥२॥ बालक कान्ह निपट भोरेहैं सिखवत रही हो बात ॥ तुम अग्रज वसुदेवके नंदन जानतहो सब घात ॥३॥ राग ईमन तेरे पैयां लागूं गिरिधर भोजन कीजे ॥ उलटत पलटत झगुलिया भीजे खीजत खिजावे सुंदर तन छीजे ॥१॥ फेनी बावर खुरमा खाजा गुंजामिश्री लडुवा लीजे ॥ बांट देत सब ग्वालबालनकों परमानंद जननी करलीजे ॥२॥ राग ईमन जोई जोई भावे सोई सोई लीजे ॥ तुम्हारे काजें करकर लाई मेरो सुफल श्रम कीजे ॥१॥ अरुण मलाई माखन मिश्री और ओट्यो पय पीजे ॥ ओदन व्यंजन स्वाद सबे रस भोजन छिनछिन लीजे ॥२॥ जेंवो बेग खेलियें पाछे भोजन में मन दीजे ॥ देहों विविध खिलोना तुमकुं मेरो कह्यो पतीजे ॥३॥ अलक सवारबीजना ढोरूं पाछे बिंदु लगीजे ॥ रसिक प्रीतम जननी संग जेंवत बाललीला रस भीजे ॥४॥ राग ईमन चलो लाल बियारू कीजे दोऊ भैया एक थारी ॥ दूध भात अरु दार बनाई बोलत है रोहिणी महतारी ॥१॥ इतनो सुनत मन हरखत संग उठ चले देत किलकारी ॥ परमानंदप्रभुकी बतियन पर यशोमति बलबल हारी ॥२॥ राग ईमन इन अँखियन आगेते लालन एको पलछिन होय नन्यारे ॥ बलबल जाउं वदन देखनकों तरसतहैं नयनन के तारे ॥१॥ बोहोरच्यो सखा बुलाय

संगके यही आंगन खेलो मेरे प्यारे ॥ निरखत रहूं पन्नगकी मणि ज्यों सुंदर बालविनोद तिहारे ॥२॥ मधु मेवा पकवान मिठाई व्यंजन मीठे खाटे खारे ॥ सूरस्यामको जोईजोई भावे सोईसोई माँगलेहु मेरे प्यारे ॥३॥ राग कान्हरो बलमोहन दोऊ करत बियारू यशुमति निरखजाय बलहारी ॥ प्रेमसहित दोऊ सुनत जिमावत रोहिणी और यशुमति महतारी ॥१॥ दोऊभैया संग मिल बैठे परोस धरीहै कंचन थारी ॥ आलस करकर कोर उठावत नयनन नींद झमक रही भारी ॥२॥ दोऊ जननी आलस मुख निरखत तनमनधन कीनो बलहारी ॥ वारंवार जृंभात सूरप्रभु यह छबिको कवि सके विचारी ॥३॥ राग कान्हरो माखन रोटी लेहु कान्हबारे ॥ तातीताती रुचि उपजावत त्रिभुवनके उजियारे ॥१॥ और लेहु पकवान मिठाई मेवा बहुविध सारे ॥ ओट्यो दूध सद्य घृतमधु रुचिसो खाओ मेरे प्यारे ॥२॥ तब हरि उठकें करत बियारु भक्तनप्राणपियारे ॥ सूरस्याम भोजन करके शुचि जलसों वदनपखारे ॥३॥ राग कान्हरो रानीजू अपनें सुतहि जिमावत । बूझत वात कहो कैसें खेले बन बन मैया कहिकहि रुचिउपजावत ॥१॥ करत वियार अपने अंचलसों पोंछत वदन मनमोद बढावत ॥ रसिकप्रीतमको लेले नंदरानीजू हँसहँस कंठ लगावत ॥२॥ राग कान्हरो कीजे लाल यहिबार बियारू ॥ तातो दारभात घृत सान्यो खोवा बासोंधी रुचिकारी ॥१॥ मधुमेवा पकवान मिठाई परोस धरीहै कंचन थारी ॥ जेंवत स्यामराम रुचि उपजी छबिपर जगजीवन बलहारी ॥२॥ राग कान्हरो करत बियारू हँसहँस मोहन ॥ चितबनमें चितचोरलेतहैं मा सुधभूली गोहन ॥१॥ ओट्यो दूध कनक बेलाभरले ललिता आईजु अगोहन ॥ फूँकफूँक कर पीवत सांवरो अंचर देत यशोहन ॥२॥ देखत बने कहत नहिं आवे उपमाको यह कोहन ॥ कृष्णदासप्रभु गिरिधरनागर चितचोरयो मृदु मुसकोहन ॥३॥ राग कान्हरो ब्यारू करतहैं घनस्याम ॥ मधुमेवा पकवान मिठाई पिस्ता दाख बदाम ॥१॥ दूधभात खोवा बासोंधी लेआई व्रजबाम ॥ आसकरणप्रभु मोहननागर अंगअंग अभिराम ॥२॥ राग कान्हरो बियारु करत है बलबीर ॥ आसपास सब सखामंडली

सुबल सखा मति धीर ॥१॥ मधुमेवा पकवान मिठाई ओट सिरायो क्षीर ॥ हँसत परस्पर खात खवावत झपट लेत कर चीर ॥२॥ यह सुख निरखनिरख नंदरानी प्रफुल्लित अधिक शरीर ॥ परमानंददासको ठाकुर भक्तहेत अवतीर ॥३॥ राग कान्हरो कमलनयन हरि करत बियारू परोस धरीहै कंचन थारी ॥ लुचई उपसी सद्य जलेबी सोई जेंवो जो लगे पियारी ॥१॥ मधुमेवा पकवान मिठाई सकल सोंझ ले सरस संवारी ॥ अगणित शाक पाक रुचिकीने जेंवत रुचि बाढी अतिभारी ॥२॥ आछोदूध ओट्यो धोरीको लेआई यशुमति महतारी ॥ सूरस्याम बलराम दोऊ मिल पीवत देख जननी बलहारी ॥३॥ राग कान्हरो मोहनलाल बियारू कीजे ॥ व्यंजन मीठे खाटे खारे रुचिसों माँग जननीपै लीजे ॥१॥ खोवा मिश्रित और बासोंधी ता ऊपर तातोपय पीजे ॥ सखन सहित मिल जेंवत रुचिसों झूंठन आसकरणकूं दीजे ॥२॥ राग कान्हरो भोजन गिरिधरलालको मैंतो यह जानी ॥ दरशन प्यारी रूपको पुतरिन रुचि मानी ॥१॥ मृदु बोलन मीठी लगे भौंहन कटुकाई ॥ षटरस वारों कोटिलों दृग चंचलताई ॥२॥ चाहा छिनछिन चौगुनो जेंवत रुचि ज्योंही ॥ जनभगवान युगल यश कहे तनमन त्योंहीं ॥३॥ राग कान्हरो राधामोहन करत बियारू ॥ एक करथार सवारें सुंदरि एक वेष एकरूप उज्यारी ॥१॥ मधुमेवा पकवान मिठाई दंपति अतिरुचि कारी ॥ सूरदासको जूंठन दीनी अतिप्रसन्न ललितारी ॥२॥ राग कान्हरो आजसवारेके भूखेहो मोहन खावो मोहि लगो बलैया ॥ मेरो कह्यो तूनहीं मानतहो अपने बलदाउकी मैया ॥१॥ दोरके कंठ लाग्यो मन मोहन मेरीसों कहि मेरो कन्हैया ॥ परमानंद कहत नंदरानी अपने आंगन खेलो दोऊ भैया ॥२॥ राग कान्हरो हँस हँस ब्यारू करत गुपाल ॥ खटरस बिंजन करत रोहनी लाय धरत व्रजबाल ॥१॥ बीच धरी कंचन की थारी लाय परोस्यो भात ॥ प्रभु कल्यान बलराम श्याम को जिमावत जसोदामात ॥२॥ राग कान्हरो जसोमति गोद बैठाय श्यामको कोर देत अपने कर मुखमें ॥ रोहिनी बींजन करत परोसत मेवा देत दोउन के भुजमें ॥१॥ करत बियारू हँसत परस्पर निरखत नंद जात दिन सुखमें ॥ कहि भगवान हित

रामराय प्रभु यह सुख भयो कोनहिं जुगमें ।।२।। राग कान्हरो ब्यारू श्याम अरोगन लागे ।। बहु मेवा पकवान मिठाई बिंजन करे मधुर रस पागे ।।१।। दार भात घृत कढी संधानो रुचि कर मुखसों पापर मांगे ।। चत्रभुज प्रभु जूठन दे सबको जो जन पावत सो बडभागे ।।२।। राग बिहागरो जैंबो दूल्है लाल दुल्हैया । बहु विधि साक सुधारे बिंजन औरु बनायो घैया ।। कंचन थार कंचन की चौकी परोसत मोद बढैया । ठाढी पवन करति है रोहिनि आनंद उमगि न समैया ।। करि अचवन मुख बीरी दीन्ही लेत वारनें मैया ।। लाल लाडिली की छबि ऊपर 'परमानंद' बलि जैया ।। राग कान्हरो गिरिधरलाल ब्यारू कीजे ।। पूरी दूध मलाई मिश्री पहिलें कौर प्यारी को दीजे ।।१।। ले जेंवत लाल लाडिली दोउ ललितादिक निरखत सुख लीजे ।। 'गोविंद' प्रभु प्यारी कर बीरी पीक दान सखियन कों दीजे ।।२।। राग कान्हरो सेनभोग लाई भर थारी । रुचिर कचोरी पुवा पुरी मानभोग पावत पिय प्यारी ।।१।। धर्यो कटोरा भर्यो मुरब्बा सरस संधाने साक सवारी ।। ओट्यो दूध भर्यो भाजनमें तामें बहुत मिठाई डारी ।।२।। ललित ललिता कर अचवावत जमुनोदक कंचन भरि झारी ।। 'गोपीनाथ' खवावत बीरी दंपति छबि संपत उर भारी ।।३।। राग कान्हरो सेनभोग लाई भर थारी । दूध भात और कढी बडीकी परोसत हैं जसुमति महतारी।।१।। मधु मेवा पकवान मिठाई सीतल भरि जमुनाजल झारी ।। 'आसकरन' प्रभु मोहन नागर दासनको जूठन भर थारी ।।२।।

## उसीर ब्यारू के पद

राग ईमन चन्दन भवन में करत है ब्यारू परोस धरी है कंचन थारी । हँस हँस जात देतमोहन कर बहु विंजन जसुमति महतारी ।।१।। चंदन अंग अंग लेप किये तन लागतहै सुखकारी नंददास चरनरज सेवक तन मन डारत वारी ।।२।। राग कान्हरो सुखद यमुना पुलिन सुखद नवकुंजमें सुखद स्यामा स्याम करत ब्यारु सुखद । सुखद चंदन अंग सुखद लेपन करि सुखद भूषण कुसुम पहेरि दोउ तन सुखद ।।१।। सुखद बिजना ढुरत मलय चहुं दिश सुखद सुखद गावत

अलि कोकिलादि सुखद। सुखद गिरिधरन रुचि सुखद पयपात्र भरि सुखद लाई सुखद ललित ललिता सुखद ॥२॥ राग कान्हरो सुखद श्यामा श्याम सुखद वृन्दा विपिन सुखद ब्यारू करत सुखद यमुना तीर। सुखद ओदन मांझ सान ताती दार करत मनुहार दोऊ प्रेमरत गभीर ॥१॥ सुखद पकवान विंजन विविध भातके परोसे ललिता अंग पहेरी चंदन चीर ॥ सुखद 'हरिवंस' दृग निरख चित विवस व्है करत बिजनी लिए झारी सीतल नीर ॥२॥ राग कान्हरो लाडली राजत रुचिर कुंजमें। अंग अंग अरगजा रंग वागो बने दोऊ जने सनेह सों प्रेमरस पुंजमें ॥१॥ नृत्य ठाडी अली भली भांति भेदसों रेन पहेली जान एक अली गुंजमें॥ पर्यो परदा धर्यो सेनको भोग पय पुरी भर थार व्रजलाल कर मुंज में ॥२॥ राग कान्हरो आलीरी सघन कुंज उसीरकी रावटी ता माधि राजत पिय प्यारी। कंचन थार ले आई सब व्रज वाम जिमावत प्रान प्रिय गुंफत हार निवारी ॥१॥ कोऊ बिंजन कर गहे कोऊ परसत पियको कोऊ अरगजा घिस लावत फूलनी कंचुकी सारी॥ जेंवत स्यामा स्याम देखत जाने कोटि काम 'नंददास' बलिहारी ॥२॥ राग कान्हरो देख री सखी उसीरके महल में करत भोजन संग लिये राधा बाल॥ किये चंदन खोर कपूर बहुविध घोर ता पर लसी कंठ पोहोपन माल ॥१॥ परस्पर देत मुख कोर दोऊ मधुरपतें भरे शीतल भोग भरि शीतल थार। गई सुधबुध भूल निरख मुख युगल छबि कहो कहा बने देखे हि गिरिधरलाल ॥२॥ राग कान्हरो अपने कर चंदन सखी पिय अंग लगावत॥ हरखित वदन सदन अपने निज कर बिंजनी ढुरावत ॥१॥ शीतल भोग राग गुन कहि कहि कर मनुहार लिवावत। 'द्वारकेस' प्रभु रिझ विवश भये नेह नई उपजावत ॥२॥ राग कान्हरो मेरे घर आवो नंद नंदन चंदन कर राखूं अति शीतल। अपने कर लगाऊं सब अंग झीनो बसन दीपत झांई कल ॥१॥ मेवा मिठाई बहो सामग्री कपूर सुवास मिश्री पना सुमल। कर हो बयार पहोप बिंजना ले गरे पहिराऊं माल तुलसीदल ॥२॥ कमलदलन की सेज बिछाऊं बांह धरो श्री राधा की गल। गिरिधरलाल लाडिली छबि देखत श्रीवल्लभ सिर पल ॥३॥ राग ईमन आज भटु देखे उसीर महल में

ब्यारु करत गोपाल ।। ताती दारभात घृत सान्यों जेंवत जोरी रसाल ।।१।। मठरी जलेबी गुंजा बाबर घेबर लाइ व्रज वधू थाल ।। कुंभनदास प्रभु गोवर्धनधर रसभरे गिरिधरलाल ।।२।। राग ईमन आज अटारी पर उसीर महल रचिदंपति व्यारु करत ।। खोवा मलाई और बासोंधी पय हँसि हँसि घूंट भरत ।।१।। चहूं ओर खसखाने छूटत फुहारे फुंही बींजना ब्यार सीयरी मनकों हरत ।। नंददासप्रभु प्रिया प्रीतम परस्पर हँसि हँसि कोरलेत सहचरी कनक डबा बीरासों भरत ।।२।। राग कान्हरो ब्यारु कीजे मोहनराय ।। मधुमेवा पकवान मिठाई बिंजन सरस बनाय ।।१।। दारभात ओर कढी बरीकी मिश्री पनो छनाय ।। परमानंददासको ठाकुर बलदाउ संग लाय ।।२।। राग ईमन उसीर महल में दंपति राजत। भोजन करत प्रान प्यारी संग खटरस बींजन सकल रस साजत ।।१।। दूध भात बासोंधी पूरी लुचई सुहारी भरके छाजत। परमानंद प्रभु मनमथमोहन फूलनकें आभूषन अंग बिराजत ।।२।। राग ईमन सर्वस डारों वारि भवन मेरे चल सुख दीजे ।। सीतल धाम छिरक राख्यो मन भावे सो कीजे ।।१।। ब्यारुकों पकवान मिठाई और ओट्यो सीतल पय पीजे ।। कुंभनदास प्रभु गोवर्द्धनधर कह्यो हमारो लीजे ।।२।। राग कान्हरो सखीरी जेंवत गिरिधरलाल ।। कुंज महल में रची चित्रसारी फूल रहे पंकज विसाल ।।१।। खटरस बिंजन विविध भांत के रोहिनी भर ल्याई हे रसाल ।। चतुर्भुज प्रभु गिरिधरनलाल पर तृन तोरत व्रजबाल ।।२।। राग कान्हरो ब्यारु करत भावते जिय के ।। खटरस बिंजन मीठे मोहन अंचल बियार करत पिय के ।।१।। कबहुँक कौर देत श्रीमुख में ताप समावत अपने हिय के ।। नंददास प्रभु उसीर महल में प्राण प्यारी प्राण पिय के ।।२।। राग कान्हरो भटु सुन उसीर महल में आज मैं देखे व्यारु करत दोउ भैया ।। व्यंजन मधुरे खारे खाटे परोसत रोहिनी मैया ।।१।। कर मनुहार जिमावत सुत को परिपूरन भये प्रेम अघैया ।। ऊपर पय पीवो हो वारी लाल नंददास प्रभु बीरी ले कनैया ।।२।। राग कान्हरो बहुत बेर के भूखे हो लाल जेंवो कछुइक लेहो बलैया ।। जो तू कह्यो न माने हों अपने हलधर जू की मैया ।।१।। दोरी जाय कंठ लपटाने तू कह मैया मेरो कनैया ।। गोद बैठ हरि जेंवन

लागे परमानंददास बलि जैया ।।२।। राग कान्हरो मोहनलाल बियारु कीजे ।। पूरी दूध मलाई मिश्री पहेलो कौर प्यारीको दीजे ।।१।। जेंवत लाल लाडली संग मिल ललितादिक निरख सुख लीजे ।। गोविन्द प्रभु प्यारी कर बीरी पिकदानी सखीको दीजे ।।२।।

## दूध के पद

राग ईमन अब दूध लाई हो यशोदा मैया कीजे लाडिले पान ।। कनक कटोरा भर पीजे सुख दीजे व्रजराज कुंवरवर तेरी बेनी बढेगी मेरे भैया ।।१।। आछो नीको अति ओट्यो और तामें मधुरमिठैया ।। आसकरणप्रभु दूध पीजिये जननीकों सुख दीजिये प्रात उठत करों घैया ।।२।। राग कान्हरो दूध पियो मन मोहन प्यारे ।। बलबल जाऊं गहरु जिन कीजे कमलनयन नयनन के तारे ।।१।। कनक कटोरा भर पीजे सुख दीजे संग लेहो बलभद्र भैयारे ।। परमानंद मोहि गोधनकीसों उठत ही प्रात करुं घैयारे ।।२।। राग बिहाग हँसहँस दूध पीवत नाथ ।। मधुर कोमल बचन कहि कहि प्राण प्यारी साथ ।।१।। कनक कटोरा भर्‌यो अमृत दियो ललिता हाथ ।। लाडली अचवाय पहिले पाछें आप अघात ।।२।। चिंतामणि चितबस्यो सजनी नाहिन और सुहात ।। श्यामा श्याम की नवल छबि पर रसिक बल बल जात ।।३।। राग बिहाग कीजे पान लालाहो लाई दूध यशोदा मैया ।। कनक कटोरा भर पीजे यह लीजे सुख दीजे जु कन्हैया ।।१।। आछे मेवा ओट्यो सुठ नीको रुचिकर लेऊ नन्हैया ।। बहुत यतन करके राख्यो व्रजराज लडेते तुमकारन बलभैया ।।२।। फूँकफूँक जननी पय प्यावत सुख पावत आनंद उर न समैया ।। सूरदासप्रभु पय पीवत बलराम स्याम जननी दोऊं लेत बलैया ।।३।।

## उसीर दूध के पद

राग ईमन दूध पियो हो कुँवर कन्हाई । ओट्यो अति ही स्वच्छ भरलाई तामें अधिक मिठाई ।।१।। सुधर अरगजा अंग लेपन कियो लागत परमसुहाई ।

कृष्णदास भर लाई जमुनोदक अचवन कीजिये आई ॥२॥ राग कान्हरो दूध पिवावत जसोदा मैया ॥ धोरी धेनुको काढ अपने कर तामें मधुर मिलाय मिठईयां ॥१॥ तातो कर्यो कटोरा सुंदर बहुतसुगंध मिलैया । ले कर प्यावत स्याम मधुर सुख 'जन गिरिधर' जननी बल जैया ॥२॥ राग कान्हरो दूध पियो मेरे स्याम जु प्यारे ॥ ओट्यो सद्य बेला भर लाई कुंवर किशोर दृगनके तारे ॥१॥ तामें मधुर सुगंध मिलाई सुन पीवत व्रजराज ललारे ॥ 'कुंभनदास' प्रभु गोवर्धनधर छबि पर तन मन धन सब वारे ॥२॥ राग कान्हरो ओट्यो दूध सीरो कर राख्यो ॥ तामें मधुर मलाई अधिक रुचि गिरिधरलाल स्वादसों चाख्यो ॥१॥ पूछत कहां ते लाई सांझ समे धोरी दुही राख्यो 'श्री विठ्ठल गिरिधरनलाल' सो प्रेम प्रीतसों हँस हँस चाख्यो ॥२॥ राग मल्हार गिरिधर पीवत दूध शिराय । बैठे अटा घटा देखन को छतना हाथ लगाए ॥१॥ हरित भूमि प्रफुलित द्रुमवेली रही तरुवर लपटाय । तापर धरी सदल रस मंजरी कृष्ण दास बल जाय ॥२॥

## बीरी के पद

राग कान्हरो आरोगत नंदलाल सयाने ॥ बहुविध भोजन शाक मिठाई दूध दही पकवाने ॥१॥ अचवावत यशुमति मैया सीतल जल गोपाल अघाने ॥ श्रीवल्लभप्रभु हाथ ले बीरी स्यामदास भोजन यशगाने ॥२॥ राग बिहाग अचवत युगल किशोर किशोरी । भोजन करचौकी पर बैठे भलीबनी यह जोरी ॥१॥ एक सखी पाय पलोटत ठाडी एक सखी करत निहोरी ॥ कुंभ खीरको एकले आई एक बीरा भर झोरी ॥२॥ एक सखी लाई पियको बागो प्यारीजूकी सुरंग पटोरी ॥ कए सखी दरपन ले ठाड़ी एक युगल चरणन रतिजोरी ॥३॥ निजमंदिर बैठे पियप्यारीकोऊ वारवार तृण तोरी ॥ सर्व सखी श्रीवल्लभ जूकी जूठन लेन कुं बहुत निहोरी ॥४॥ राग कान्हरो शोभित नासिका गिरिधर गज मोती ॥ खोलत बीरा खात हँसत डोलत अरुण अधरकी दीनी पोती ॥१॥ कुंडल लोल कपोल बिराजत जगमगात मुख मंजुल

जोती ।। गोविंद प्रभुकोजु श्रीमुख निरखत रसना कहबरनूं मतिबोती ।।२।।
राग कान्हरो ले राधे गिरिधर दें पठई अपने मुखकी सुंदर बीरी ।। सुनोहो संदेशो प्राणपियारेको कित सँकुचत आवो किननीरी ।।१।। घूंघट खोल नयन भरदेखूं वहां चलो प्रीतमकी चेरी ।। कुंभनदासप्रभु गोवर्धनधर मिल आंको छतिया कर सियरी ।।२।। राग कान्हरो मथुरा नगर की डगर में चल्यो जात पायो है हरि हीरा ।। सुनरी भटू लटू भयो डोलत गोकुल गामको अहीरा ।।१।। बनतेजु आवत बेनु बजावत बंसीवट जमुना के तीरा ।। परमानंददासको ठाकुर हँसदीनो मुख बीरा ।।२।। राग कान्हरो ले राधे प्रीतम दे पठई श्री मुखकी आधी बीरी ।। वेगि बुलाई तू छैलछबीली नागर तजि तनमन भोरी ।।१।। तव लगी निस गिरिधर नवरंगको जब लग नहीं प्रगट परपीरी ।। 'कृष्णदास' प्रभु स्याम सुभगके तू श्यामा नेनकी धीरी ।।२।। राग कान्हरो बेनी सुन्दर श्याम गुही री ।। राजत रुचिर शीश श्यामा के चम्पक और जुही री ।।१।। नख शिख कर सिंगार श्यामा को बीरी मुख में दई री ।। श्रीविठ्ठल गिरिधरन लाल के रस की रास तुही री ।।२।। राग कान्हरो बीरी देत बनाय बनाय ।। पीरे पीरे पान सोपारी लोंगन कील लगाय ।।१।। लेत लाल कर जोर देत वे मुख मेलत मुसकाय ।। दासन देत उगार गोविन्दप्रभु जन परमानंद बलबल जाय ।।२।।
राग कान्हरो लालको बीरी देत बनाय ।। अपुनेकर राधा मृगनेनिः अतआनंद मन मांय ।।१।। निरखत बदन कमल प्रीतम को चितवत मुरमुसक्याय ।। रसिक प्रीतम की बानक निरखत पुन पुन लेत बलाय ।।२।।
राग कान्हरो प्यारी तोही श्याम बुलावे झमक चल राधे ।। तोविन मोहन पान न खातहें कोन मंत्र पठ साधे ।।१।। निशवासर तेरो ध्यान धरतहें विरह अग्नितन दाझे ।। सूरदास प्रभु तेरो मग जोवत तो बिन मोहन आधे ।।२।।

## शयन दर्शन के पद (उष्ण काल)

राग कल्याण अहो हरि भामते भावती कछु कीनी ।। नई प्रीति की रीस सुनो क्यों न नातो तोसो गामतें ।।१।। इन सकुचन पतियांहु न लिखत दुख पावें सुनत मेरे नामतें ।। धरमदास प्रभु तुमकुं दोष नहीं बीच पर्‌यो काहु वामते ।।२।।

राग कल्याण अमृत निचोय कियो एकठोर ।। तुम्हारे वदनसुधा रसुधानिधि तबते बिधना रची न और ।।१।। सुन राधे उपमा कहा दीजे स्याममनोहर भयेरी चकोर ।। सादर पान करत तोहि देखत तृषित कामवश नंदकिशोर ।।२।। कौनकौन अंग करोंरी निरूपण गुण और सील रूपकी रास ।। परमानंद स्वामी मन वेध्यो लोचन बंधे प्रेमकी पास ।।३।। राग कल्याण अबला तेरे बल है न और।। बेधे मदनगोपाल महागज कुटिल कटाक्ष नयनकी कोर ।।१।। यमुनातीर तमाल लतावन फिरत निरंकुश नंदकिशोर ।। भ्रूह बिलास पास वशकीने मोहन अंग गहे तें जोर ।।२।। ले राखे कुच वीच निरंतर शृंखल सुखद प्रेमकी डोर ।। यह उचित होय व्रज सुंदर परमानंदप्रभु चपलचितचोर ।।३।। राग कल्याण चितैचितै चितचोरत आलीरी बांके लोचन नीके ।। यह मूरत खेलत नयननमें लाल भावते जियके ।।१।। एकबार मुसकाय चलेजब हृदय गडे गुणपीके ।। परमानंद कोऊ आनमिलाओ प्रउडवरसयी तोके ।।२।। राग कल्याण मेरें तो गिरिधर ही गुनगान ।। यह मूरति खेलत नयननमें यही हृदयमें ध्यान ।।१।। चरणरेणु चाहत मन मेरो यही दीजिये दान ।। कृष्णदासकी जीवन गिरिधर मंगलरूप निधान ।।२।। राग कल्याण यह कोऊ जानेरी वाकी चितबनमेंके चरित्र मुरली मांझ ठगोरी ।। देखत सुनतही मोहे जात सुरनर मुनि और खगोरी ।।१।। हरत काम की कामताई कामिनी जो जहां ठाडी चल न सकत डगोरी ।। इन कुल कान करत तो लाज आवे जगन्नाथप्रभु यह अवलोक लगोतोल गोरी ।।२।। राग कल्याण मेरो तो कान्ह हैरी प्राण सखीरी आन ध्यान नाहिन मेरे मनके हरन सुखके करन ।। लटपटी पचरंग पाग ढरक रही वाम भाग कुंकुमको तिलक भाल नयनकमल घनस्याम वरन ।।१।। भृकुटी कुटिल ललाट लोलरत्नजटित कुंडल लोल मानों शशि प्रकट भयो उदय कियो युगल तरणि ।। प्रभु कल्याण गिरिधरकी छबि निरखत मगन भई मोहि लई मन माई मुरली अधरधरणि ।।२।। राग कल्याण मोहि कहा वरजतहो कान्ह क्यों न वरजोरी चितेवौ छाँड़े ।। नयन मोहनीरी मोहन कैसो जहांतहां बजाय

रिझाय काढे ।।१।। जहां जाय दृष्टि परेसो कैसें धीर धरे मातापिता पति लाजकी काने ।। ब्रह्मदास प्रभु मन्मथको मनमथ्यो कौन गने मन्मथराने ।।२।। राग कल्याण भोरी भोरी बतियन कर कर मन हरलीनो ।। नवल नार कमलवदन रूपके रसीले नयना कछुक जोवन मदमाते तामें काजर भरदीनो ।।१।। मृदु मुसकाय कछु चितई छबीली नाजानो कछुक चेटक कीनो ।। चतुर विहारी मेरी सुधिबुधि टारी प्यारी नेक मयाकर चीनो ।।२।। राग कल्याण तेरो जिय वसत गोविंद पैयां ।। काहेको अब दुराव करतहै री मोसो जानतहूं परखत परछैयां ।।१।। दृष्टिसु भाव जनावत हों भामिनसोंई जक लाग रही मनमहीयां ।। परमानंदस्वामी की प्यारी हावभाव दे चली गल बहीयां ।।२।। राग कल्याण रहे चित निशदिन चाक चढ्यो ।। जबते प्राण जीवनधन देखे अधिक अनंग गढ्यो ।।१।। मुरलीनाद पर्‌यो श्रुति जबतें क्योंहूं न कढत कढ्यो ।। व्रजनागरि व्रजनाथसों मिल प्रेमपयोध बढ्यो ।।२।। राग कल्याण तुम हित बनबन बहु डोली ।। नवलरसिक नवनागर गिरिधर कहि कहिके बोली ।।१।। तज जियलाज कान गुरुजनकी कपट कंचुकी खोली ।। ऐसे मिली नवल व्रजभामिन मनमथ मनमथ टोली ।।२।। राग कल्याण कान्हर छाडोहो लरकाई ।। काहेकों जात परायें चोरी घर गोरस अधिकाई ।।१।। होंतो बहुत करी नकवानी अबही उराहने आई ।। बाहर द्वार जाउ जिन अबतें घर खेलो दोऊभाई ।।२।। हों बलबल मेरी सिख मानों देहों मधुर मिठाई ।। सुनहैं जो व्रजराजमहेरलो खिजहैं कुंवरकन्हाई ।।३।। राग कल्याण अहो यह चंदन होय प्यारी उबटने को परागसार ।। यह जान मनहरि करराख्यो कहत वे दमत सार ।।१।। वीचअंक अंजन मृगमदके नाहीं कलंक अनुसार ।। व्रजभामिन न वसत साजत सकल कला शशि घटत तबही सजत स्याम अभिसार ।।२।। राग कल्याण आंखन आगें स्याम उदय स्याम कहन लागी गोपी कहां गये स्याम ।। आदहु स्याम अंतहुं स्याम रोमरोमरम रह्यो काम ।।१।। मधुवन आदि सकल वन ढूंढ्यो निधि वन कुंजधाम ।। परमानंददास को ठाकुर अंगअंग

अभिराम ॥२॥ राग कल्याण मेरो मन गोपाल हर्‌यौरी ॥ चितवतही उरेंपेठ नयनमग को जाने हरि कहा कर्‌योरी ॥ मातपिता पतिस्वजन बंधुजन सखी आंगन सब भवन भर्‌योरी ॥ लोकबेद प्रतिहार पहर अति नहीं राख्यो दूर पर्‌योरी ॥२॥ धरमधीर कुल लाज कूंचीकर जीह तारो दे उर में धर्‌योरी ॥ शृंखलभई लाज कबाट कठिन उरएते यतन कछुही न सर्‌योरी ॥३॥ बुद्धिविवेक बलसहित सच्योमैंसोधन अटल कबहुं न टर्‌योरी ॥ लियोहै चुराय चितें हंस चितबित सोच सूरत नजात जर्‌योरी ॥४॥ राग कल्याण कहे राधा देखहु गोविंद ॥ भलो बनाव बन्योहै वनको पूरण राका चंद ॥१॥ मंदसुगंध सीतल मलयानिल कालिंदीके कूल ॥ जाईजुई मल्लिका यूथी फूले निरमल फूल ॥२॥ सब अब लाख होत है मनकें मनहीं रहत जियराध ॥ तुम्हारे समीप कौन रसनाहीं नाथ सकल सुखसाध ॥३॥ सुनके बचन बहुत सुख मान्यो हँसदीनी अंकवारि ॥ परमानंदप्रभु प्रीत पुरानी नागररसिक मुरारि ॥४॥ राग कल्याण तेरो मोहन वदन गिरिधर लाल रसिकके मन भावत लावण्य सदन ॥ सुन राधे रूपरास तोहि निरखत लाजत मदन ॥१॥ सुरत सुधानिधि अधरसुधारस प्रमुदित करत अदन ॥ कृष्णदासस्वामी संग गावत रतिपति जय को कदन ॥२॥ राग कल्याण तेरे मनकी बात कौन जानेरी ॥ जोपें डर होईतो नंदसून बोले ऐसी कौन युवती जो न मानेरी ॥१॥ तेरी अरु हरिकी मिलिये चलती है माई यह बूझ परत है जिय अपनेरी ॥ कुंभनदासप्रभु गिरिधरन मोहन यह व्रज युवती औरन गिनेरी ॥२॥ राग कल्याण गिरिधर चाल चलत लटकीली ॥ सीसमुकुट काननकुंडल मुरली बजावत रसीली ॥१॥ यमुनातीर तमाल लता वनफिरत निरंकुश नंदकिशोर ॥ भ्रोंह विलासपास वसकीने मोहन अंगत्रिभंगतें जोर ॥२॥ लेराधे कुचबीच निरंतर सकल सुखद प्रेमकी डोर ॥ यह उचित होय व्रज सुंदर परमानंद चपल चितचोर ॥३॥ राग कल्याण कही न परे हो रसिक कुंवर की कुँवराई ॥ कोटिमदन नख जोति अवलोकत पसरत नव इंदुकिरण की जुन्हाई ॥१॥ कंकणवलयहार गजमोती देखियत

अंगअंग में वहझाई ॥ सुघर सुजानस्वरूप सुलक्षण गोविंदप्रभु सबबिध सुंदरताई ॥२॥ राग कल्याण लाल मुख वेणुवाजे मंदमंद कल ॥ वाम भुजापर वाम कपोल कुंडल वलगत भ्रू युग चपल ॥१॥ मोहित व्योम विमान वनिता खसित नीवी सुधि न अंचल ॥ गोविंदप्रभुके तरुण मदमाते विघूर्णित लोचन युगल ॥२॥ राग कल्याण रसिक शिरोमणि राग कल्याण गावे ॥ अवघर बिकट तान तरंग भेद उपजावे ॥१॥ सब विध सुघर सुजन सुंदरमोहन वेणु बजावे ॥ गोविंद प्रभु को वृषभान नंदिनी रीझ प्यारी कंठ लगावे ॥२॥ राग कल्याण अति रसमाते तेरे नयन ॥ दौरदौर जात निकट श्रवणनके हँसमिलवत करकटाक्ष कहत रजनी रतिबैन ॥१॥ लटपटी चाल अटपटे बंदस सगमगी अलग वदनपर विथुरी प्रफुल्लित अंगअंग मैन ॥ गोविंद बल सखी कहे मैं तोस विलखी मेरे जिये तबहींतें अतिसुखचैन ॥२॥ राग कल्याण ये सुन गोपकुंवर तेरी छबि नीकी ॥ जब तू वदन निहारत पिय सन्मुख तब चंदजोति फीकी ॥ कहांलौं वरनो सब अंग निरूपम ताते सजो विधना जोरी पीकी ॥ रसिक प्रीतमकी बानिक निरखत सकल अंग नयन सीतलता तियकी ॥२॥ राग कल्याण नयना मेरे अटकेरी वा मोहन के संग ॥ कहा कहों वरज्यो नहीं मानत रंगे उनके रंग ॥१॥ औरनको तिरछे ह्वै चितवत गुरुजनहीसों जंग ॥ सूरदासप्रभु प्रेमसुरत में होत न कबहू भंग ॥२॥ राग कल्याण कहा कहों तेरे भाग्य की महिमा नंदलडेतो पायो ॥ स्यामतमाल रसिक नटनागर बाहुवेली अरुझायो ॥१॥ पिय अतिसुघर सुघर तू प्यारी संगमिल यश गायो ॥ पार्वतीपति को अग्निबल जारचो मदन जिवायो ॥२॥ जान सिरोमणि लाल छबीलो कछुक जनाय भूलायो ॥ कृष्णदास प्रभु गोवर्धनधर कुच भुजबीच बसायो ॥३॥ राग ईमन प्रकटत भयोहै कल्याण ॥ सकल अमंगल दूर किये है तिमिर जात उदय भान ॥१॥ आनंदबढ्यो हृदय भक्तनके पायो परम निदान ॥ कृष्णदास प्रभु गिरिधरपर वारों तन मन प्राण ॥२॥ राग ईमन लालनमुखकी लुनाई कैसेहुं वरनी न जाई ॥

भालतिलक कुंडल अलकबीच बीचचंपकली अरुझाई ॥१॥ अरुण नयन तरुण मदमाते वरषे करण अधरामृत मंदहासकी जुन्हाई ॥ सुभग कपोल मृदुबोल गोविंदप्रभुके जूअंगअंग सुंदर मणिराई ॥२॥ राग ईमन महरि पूत तेरो कैसेहुं वरज्यो न माने ॥ बलमोहनकी जोरी और बालक संग लिये मरकट घेर फेर पाछे पाछे ते लूटत घर मेरो ॥१॥ दह्यो दूध घृत माखन तनक न उबरत कैसेक वास होय हमकेरो ॥ गोविंदप्रभुके बालविनोद सुनत नंदरानी मनहीमन मुसुकानी सांची कहत अनेरी ॥२॥ राग ईमन दंपति रंगभरेहो बैठे कुंजमहलते निकस ॥ राग कल्याण अलापत रस भरे लेत परस्पर रंगबितान तरे ॥१॥ लेत अतिजत भेदकर किन्नर एक सारीगम तीन सुढार ढरे ॥ गोविंदप्रभु बलबल पिय प्यारी बांह धरें दोउ अति सुघर खरे ॥२॥ राग ईमन हँस पीक डारी अचरापरी चलि ये जात ही गली मोहन बैठे छाजें ॥ निरख वदन गृह कल न परत तन कछुक संकुचमें गुरुजनकी जियमें धरी ॥१॥ सुंदर कर कमल फेरकें सेन दई जहां निबिड निकुंजदरीं ॥ लें चली सखी मोहि जहांरी गोविंदप्रभु रह्यो न परतरी प्रियाप्रेम हृदय उमगभरी ॥२॥ राग ईमन लालन नेंक गाइये प्राण पियारे ॥ आनन कमल अधर सुंदर धर मोहन वेणु बजाइये ॥१॥ परम दुःसह विरहानल व्यापत तन सब जरत छुराइये ॥ अमृत हास मुसकान बलैया लेहो नयननकी तपत बुझाइये ॥२॥ उभय कर कमल हृदयसों परसके विरहनि मरत जिवाइये ॥ छीतस्वामी गिरिधर तुमसे पति पूरन भाग्यतें पाइये ॥३॥ राग ईमन जियकी नजानत हो पिय अपनी गरज के हो गाहक ॥ मृदु सुसकाय ललचाय आय ढिंग हरत परायो मन नाहक ॥१॥ कपटी कुटिल नेह नहीं जानतहो छलसों फिरत घरघरके रस चाहक ॥ ये दई निर्दई स्यामघन परमानंद उर साहक ॥२॥ राग ईमन मेरेरी वगर में आवत छबिसो कमल फिरावत ॥ औरनसो बतरावत मोतन चितवत चतुर परोसन देखदेख मुसकावत ॥१॥ नयनन मनुहार करत बैनन समझावत नेह जनावत भ्रोंह चढावत ॥ नंददासप्रभुसों स्नेह लोक लाज बाढी कैसेंके धीरज आवत ॥२॥

राग ईमन रहत मंडरानोरी द्वार मेरे ।। हों कैसें निकसो मेरी आलीरी बाहर ठाडोई देखों निशदिन रहत घेरें ।।१।। कबहुंक वेणु बजावत गावत पिछवारे ह्वै बोल सुनावत टेरें ।। हों घरी पल डरपतहों चतुर बिहारी जिन आवे घरमें दीये दरेरे ।।२।। राग ईमन मेरो मुख चितेंचितें रहे ओ सबन में लालन भीजो ।। ऐसों हठीलो नेक न टरही केतोहू सैनन खीजो ।।१।। बातेंतो औरनसों टगटगी मोतन ज्यों रिस में री तनमनछीजे ।। नेक हु को डर मोहि सूरप्रभु स्नेहहुको जक रही चित्र पुतरीजें ।।२।। राग ईमन जबजब देखो आय हरिको वदन तब नयना मेरे मोपै न आवही ।। ऐसेरूप लालची ललचाय रहे मानों ज्यों बिछुरे जलचर जलपावहीं ।।१।। रूपके रिझोने नयनारसमें मिल मग्न भये अब सखी हमसों न बतरावहीं ।। मुरारीदास प्रभु एते पर निठुर भये अपनी ओट दुरावहीं ।।२।। राग ईमन माईरी सिथिल मेखला बांधतही कटिहौं हुती अपने आंगन ठाढी स्याम अचानक आये ।। ठगीसी रही मोपें बोलेहु न आवे छबि निरखत कछु और न भावे यह साध मेरे जियमें रही काहु सखि बतियन न लगाये ।।१।। हाथहुते कंकण गयो गिर तब हरि आय उठाय बनाये दुखविसराये ।। सूरदास मदनमोहनहौं मोहि नाजाने ताछिन भरभर अँखियन देखन न पाये ।।२।। राग ईमन लालन तेरी चितवन चितहि चुरावे ।। नंदगाम वृषभानपुरा बिच मारग चलन न पावे ।। होतो होंतो भरो डरों नहीं काहू ललिता दृगन चलावे ।। कुंभनदास प्रभु गोवर्धनपर धर्‍यो सो क्यों न बतावे ।।२।। राग ईमन आलीरी कर शृंगार सायंकाल चली व्रजबाल पिय दरशवेको मत्त द्विरद गैन ।। मानों शिशुमार चक्र उदय होत गगन मध्य ध्रुव नक्षत्र की परिक्रमा दैन ।।१।। मानों ऋतुवसंत आई अंग अंग छबिछाई दंपति समाज मोपें कही नपरत बैन ।। मुरारीदास प्रभु प्यारी चित्रविचित्र गति सेवक निरख पिया छबि अद्‌भुत ऐसी को कर रची मैन ।।२।। राग ईमन तेरे सुहाग की महिमा मोपें बरनी न जाई ।। मदनमोहन पिय वे बहुनायक जाको मन लियो है रिझाई ।।१।। कवरी कुसुम गुहत अपने कर लिखत तिलक भाल

रसभरे रसिक राई ।। गोविंदप्रभु रीझ हृदय सोंलगाय लई लाडलेकुंवर मनभाई ।।२।। राग ईमन ठाढे कुंज भवन ।। लटपटी पाग छुटी अलकावली घूमत नयन सोहें अरुणबरन ।।१।। कहा कहूं अंग अंग की शोभा निरखत मन मुरझन ।। गोविंदप्रभु या छबि निरखत रतिपति भये है शरन ।।२।। राग ईमन मिलेकी फूल नयनाही कहे देत तेरे ।। स्यामसुंदर मुखचुंबनपरसे नाचत मुदित अनेरे ।।१।। नंदनंदनपै गयो चाहतहै मारग श्रवणनघेरे कुंभनदास गिरिधरन मिलनकूं करत चिन्ह दशफेरे ।।२।। राग ईमन चले अनत धोके आये मेरेंसो तो संकुच रहेही बनेगी ।। तिहारे मिलेकी फूलपीर आवे बाकी मोहि अवधि आस तारे भोरलों गनेगी ।।१।। तुम बहुनायक सबसुखदायक दोऊधा कों सोचकिये प्रीतती तनेगी ।। जाही को सुहाग भाग ताहीको लहनो जगन्नाथप्रभु प्यारे रसमें सनेगी ।।२।। राग ईमन आज बने सखी नंदकुमार ।। वामभाग वृषभान नंदिनी ललितादिक गावे सिंहद्वार ।।१।। कंचनथार लियेजु कमलकर मुक्ताफल फूलनके हार ।। रोरीको सिर तिलक विराजत करत आरती हरख अपार ।।२।। यह जोरी अविचल श्रीवृंदावन देत असीस सकल व्रजनार ।। कुंजमहल में राजत दोऊ परमानंददास बलहार ।।३।। राग ईमन लालके वदनपर आरती वारूं ।। चारु चितवन करों साज नीकी युक्ति वाती अगणित घृत कपूरकी बारूं ।।१।। संखधुनी भेरी मृदंग झालर झांझताल घंटावाजे बहुत विस्तारूं ।। गाऊं गुन स्यामस्यामा रसनको स्वाद रसपरम हरखत चमर करडारूं ।।२।। कोटि उद्योत रविकांति अंगअंग छबि सकल भूलोकको तिमिर टारूं ।। दासकुंभन पिय लालगिरिधरनको रूपदेख नयन भर भर निहारूं ।।३।।

## शयन दर्शन के पद

राग ईमन अरीहो या मग निकसी आय अचानक कान्हकुंवर ठाढे आपनी पोर ।। दृष्टिसों दृष्टिमिली रोमरोम सीतल भई तनमें उठीहै कींधो

कामरोर ॥१॥ लालपाग झुक रही भ्रोंहनपर स्याम गातकिये चंदनकी खोर ॥ सूरदासप्रभु सर्वस्व हरके चलें मनमें आवत कैंधो मिलोरी दौरी ॥१॥

## कुंज शयन दर्शन के पद

राग कान्हरो कुंज महल में रसभरें खेलत पियप्यारी ॥ तैसोई तरनि तनया तीर तैसोई सीतलसुगंध मंद वहत पवन तैसीय सघन फूली जुईनिवारी ॥१॥ प्रफुल्लित वनराजीव तैसोंई अलि गुंज श्रवणनको अतिसुखकारी ॥ गोविंद बलबल जोरी सदाई विराजो गावत तान तरंग सुघर भारी ॥२॥ राग कान्हरो प्यारो नवल नागरी संगरी संग नवल नागरराई ॥ नवलकुंज विहारी मनमथ मनहारी सुरतकेलि अंगअंग सुखदाई ॥१॥ नवल राग कान्हरोजु करत सुघर नवल नवल तान लेत मनभाई ॥ नवराग दंपतिके देखत गोविंद बलबल जाई ॥ राग अडानो कदंब वनवीथिन करत विहार ॥ अतिरसभरे मदन मोहनपिय तोर्‍यो प्रिया उर हार ॥१॥ कनक भूमि विथुरे गजमोती कुंजकुटीके द्वार ॥ गोविंदप्रभु श्रीहस्त कर पोवत सुंदर व्रजराजकुमार ॥२॥ राग अडानो कुंजमहलमें ललना रसभरे बैठे संग प्यारी ॥ रुचित रुचित वनमाल बदनपर मृगमद तिलक संवारी ॥१॥ घनचय चिकुर कुसुम नानाविध ग्रथित मृदुलकर चंपक बकुल गुलाब निवारी ॥ गोविंदप्रभु रसवशकीनें वृषभाननंदिनीते मदनमोहन गिरिधारी ॥२॥ राग अडानो चलो क्यों न देखेरी खरे दोऊ कुंजनकी परछांही ॥ एक भुजा गहि डार कदंबकी दूजीभुजा गलबांही ॥१॥ छबिसों छबीली लपट लटक रही कनकवेली तरुतमाल अरुझाई ॥ हरिदासके स्वामी स्यामा कुंजविहारी रंगेहैं प्रेमरंग माँही ॥२॥ राग अडानो डोलें दोऊ बांहजोटी कुंज महलके आंगन ॥ कबहुं चंद कबहुं प्यारीन चितै रहत पुन डगधरत छोटी छोटी ॥१॥ कबहुंक कुसुम कर वीनत है कलियां मोटीमोटी ॥ हरिदास के स्वामी स्यामा कुंजविहारी गुहिगुहि बांधत चोटी ॥२॥ राग अडानो कुंज सुहावनो भवन बनठन बैठे

श्रीराधा रमन ।। वरण वरण द्रुमवेली प्रफुल्लित शशीकी किरण जगमगात तैसोई सुगंध बहत पवन ।।१।। आलिंगत पिक मंगलगावत नृत्यत अति आनंद मगनमन ।। हरिनारायण स्यामदास के प्रभु देखें रतिपति लागे नमन ।।२।। राग अडानो छिन छन बानिक औरही और ।। जब देखो तब नूतन सखीरी दृष्टि न रहै एकठौर ।।१।। कहा कहूं कछु कहत नआवे बहुत करी चितदौर ।। कुंभनदासप्रभु गोवरधनधर रसिकराय सिरमौर ।।२।। राग अडानो डगर चल गोवर्धनकी वाट ।। खेलत बीचमिलेगें मोहन जहां गोधनके ठाट ।।१।। चलरी सखी तोहि जाय मिलाऊं सुंदरवदन सरोज ।। कमलनयन के एक रोमपर वारों कोटिमनोज ।।२।। पाहुनी एक अनुपम आई आनगामकी ग्वार ।। परमानंदस्वामी के ऊपर सर्वस्व डारों वार ।।३।। राग अडानो कहारी कहों मोहन मुखशोभा ।। कहा करूं सिरपरीहै ठगोरी रूपदेख मेरो मन भयो लोभा ।।१।। अंग अंग लावण्यरूप छबि मानोंहो मदन द्रुम उपजी गोभा ।। कृष्णदास गिरिधरन किये वश चपल कटाक्ष गढ्यो मनचोभा ।।२।। राग अडानो स्यामा तेरे डहडहे नयन कमल फूले विमल सरोवर अंतर ।। शोभित तारे करकजरारे मानों वीच परेरी मधुकर ।।१।। डुरनमुरन चितवन हसोंईं लजोईं चपलोंईं अंखियन मनहर ।। वरुनिनकी छबि आय वसी रीझवश कीये नंदकुंवरवर ।।२।। मुरारीदास प्रभु तिहारे ऐसे दृगमृग सुभावहावकर ।। कटाक्ष लोचन कामदुःखमोचन अरु जीते है समरशर ।।३।। राग अडानो अबहीते मन्मथ चितचोरत कहा करेंगी जोबन विरियां ।। मनहर लेत तनक चितवन में फेरत है नयननकी तरियां ।।१।। तेरोतन गिरिधरनलाल हित सबगुण रास विधाता धरियां ।। कृष्णदासप्रभु गिरिधरनागर रिझवत हंसत सहज फुलझरियां ।।२।। राग अडानो सजनीरी आज गिरिधरलाल पगियां धरे पेंच बनाय ।। मान छांडि संभारि नागरि निहार पिय मुख आय ।।१।। निरखि शोभा कोटिमन्मथ रहे हैं सिरनाय ।। दासकुंभन लालगिरिधर लीजिये उरलाय ।।२।। राग अडानो बेसर कौन की अति नीकी ।। होडपरी प्रीतम अरुप्यारी

अपने अपने जीकी ।।१।। न्याय परयो ललिताके आगें कौन सरस कौन फीकी ।। नंददास विलग जिनमानों कछु एक सरस ललीकी ।।२।। राग अडानो कृपारस नयन कमलदल फूले ।। भ्रू विलास देखें कोटिक मनमथ रहे भूले ।।१।। वदनकमलपर कुटिल अलक छबि मोतिन हार अवतंस झूले ।। गोविंदप्रभु प्यारी संग बैठे जहां कालिंदी कूले ।।२।। राग अडानो सुंदरवदन सदनशोभाको निरख नयनमन थाक्यो ।। हौं ठाडी वीथनह्वै निकस्यो उझकि झरोखन झांक्यो ।।१।। मोहन इक चतुराई कीनी गेंद उछारि गगन मिस ताक्यो ।। वारोंरी लाज वैरिन भईरी मोकों मैं गमार मुख ढाँक्यो ।।२।। चितवन में कछू करगयो मोतन मन न रहत क्यों राख्यो ।। सूरदासप्रभु सर्वस्व ले गए हँसत हँसत रथ हांक्यो ।।३।। राग अडानो धन्य धन्य वृदारण्य कुरंगनि ।। श्रीमुखकमल पीवत सखी सादर कृष्णसार पतिसंगनि ।।१।। चरणकमल कुंकुमरुषिततृण कुच अवलेप करत त्यजत आधि मनसजित पुलिंदनि ।। गोविंदप्रभुको अमृतनाद सुन थकित प्रवाह तरंगनि ।।२।। राग अडानो देखोरी माई सुंदरताकी अटक ।। शोभासिंधु अगाधरूपनिधि निरख नयन छबि लटक ।।१।। श्रवणताटंक नासिका जलसुत दशनदामिनी तटक ।। अधरबिंब चिबुक वर राजत ग्रीवाधरत भुजमटक ।।२।। कनक-कलश कंचुकी उर अंतर क्षुद्रघंटिका कटक ।। भूषणभूषित अंग किशोरी बनी अधिक छबी पटक ।।३।। राग अडानो सुंदर यमुनातीररी मनमोहन ठाड़े ।। जबते दृष्टिपरी या मुखपै तबते धरत न धीररी ।।१।। मृगमद तिलक अलकघुँघरारी नासामुक्ता कीररी ।। सूरदासप्रभु वेणु बजावत थाक्यो सरिता नीररी ।।२।। राग अडानो खंजन नयन रूपरसमाते ।। अतिशय चारू चपल अनियारे पलपिंजरा न समाते ।।१।। उडउड जात निकट श्रवणनके उलट फिरत ताटंक फंदाते ।। सूरदास अंजनगुण अटके न तरु अबहि उडजाते ।।२।। राग ईमन अरी तेरी सहेज की मुसक्यान मोहन मोह लीनो ।। जाकी रटत सब जग सुन सजनी सो तेरे आधीनो ।।१।। तेरे ही द्वार घर की चितवनी में रहत हे अपनो घर तज दीनो ।। नंददास बांकी चितवनी

में टोना सों कछु कीनो ।।२।। राग अडानो श्री वृन्दावन सघन कुंज फूले नवदल पहोप पुंज त्रिविध समीर सीरी मंद मंद आवे ।। उसीर महल मध्य रावटी रची बनाय बैठी संग प्यारी सों तो पिय मन भावे ।।१।। अद्‌भुत गुन रूप रास राजत चहुं ओर सुबास बेन बिलास मध्य केदारो राग गावे ।। मनमथ कोटि कला जे सहचरी सकल समाज प्रेम प्रीत दर्शन आसकरन पावे ।।२।। राग केदारो अद्‌भुत बाग बन्यो नव निकुंज मध्य विविध पक्षी तहां गुंजार करतरी ।। उसीर महल रचे बैठे प्रिया प्रीतम चहुं ओर सहचरी होदन भरतरी ।।१।। छूटत फुहारे फुही घन मेघ बरसत उमगी घटा नीको मदन अनुसरतरी ।। कदली खंभ लपट्यो स्याम तमाल सों नंददास प्रभु कोटि मेन परहरतरी ।।२।। राग केदारो तरुवर छांह तीर जमुना के कीर पढावत डोलै ।। रूपरास कोऊ नवल किशोरी मोहन कहि कहि बोलै ।।१।। झुकत झुकावत डार कदम्ब की वेणी शीश पै भ्रमर कलोलै ।। नागरिदास नेह रसमाती बाम मूंदि मूंदि दृग खोलै ।।२।। राग बिहाग बैठे व्रजराजकुंवर प्यारी संग यमुनातीर सीतल बियार सखी मंद मंद आवे । अति उदार वैजयंती स्याम अंग शोभा देत भुज परस्पर कंठ मेलि विहँसि गावे ।।१।। झीने पट दीपत देह प्रीतमसों अति स्नेह गौर स्याम अभिराम कोटिक काम लजावे ।। सूरदास मदनमोहन मोहनी से बने दोऊ रहसि रहसि अंग अरगजा लगावे ।।२।। राग केदारो तेरे चिकुर मानो जलधर उनीदे आये दसन ज्योत-दामिनी दरसानी । तापर भ्रोंह धनुष बूंदे सुरत श्रमरी बरखत पानी ।।१।। रोमावली कंधो हरित भूमिपर सुमन बनी तेसीय बोलत पिक बानी ।। तापर रीझ तानसेन कें प्रभु अंग अंग सरसानी ।।२।। राग बिहाग कुंज महल में रस भरे खेलत पिय प्यारी ।। तेसोई तरनितनयातीर तेसोई शीतल सुगंध मद बहत पवन तेसीये सघन फूली जुई निवारी ।।१।। प्रफुल्लित वनराजीव तेसेई अलिगुंज श्रवणनको अति सुखकारी ।। 'गोविंद' बल बल जोरी सदाई विराजो गावत तान तरंग सुघर भारी ।।२।। राग बिहागरो पुलिन पवित्र सुभग जमुना-तट, स्यामा

स्याम बिराजत आज। फूले फूल सेत पीत राते, मधुप-जूथ आए मधु-काज॥ तैसिय छिटकि रही उजियारी, झलमलात झाई उडु - राज। 'छीत-स्वामी' गिरिधर कौ यह सुख निरखि हँसे विट्ठल महाराज॥ राग बिहागरो बैठों कुंज-भवन में दोऊ गिरिधर राधा प्यारी। अरस-परस बिलसत मुख परसत, दरसत घन में छटा री॥ अतिरस मत्त भरे मिलि गावत रीझि रिझावतताननि प्यारी। 'छीत-स्वामी' गिरिधारी मोहन रसबस भए पुलकि भरत अँकवारि॥ राग केदारो नयननमें बसरहीरी लाल कें नागरि नेंक न निसरत॥ तेरे तनकी नवरंग बानिक रसिक कुंवर के चिततें न विसरत॥१॥ तेरोमन अरु गिरिधर प्रियको बहुविधान एको करि मिसरत॥ कृष्णदासगिरिधरन रसिकवर सुवशकरणकों सीखी हें कसरत॥२॥ राग बिहाग मिलबो नेननहीको नीको। नंदके लाल हमारे जीवन और जगत सब फीको॥ वेद पुरान भागवत गीता गूढ ज्ञान पोथीको ॥ खाटी छाछ कहा रुचिमाने सूर खवैया घी को॥ राग बिहाग बसो मेरे नेनन में दोउचंद। गौर वरन वृषभाननंदनी श्याम वरन नंद नंद॥ बसोमेरे॥ कुंज निकुंजमें बिहरत दोऊ अति सुख आनंद कंद॥ रसिक प्रीतम पिया रसमें माते परो प्रेमके फंद॥ बसो मेरे॥ राग कान्हरो मेरे घर आओ नंदनंदन चंदन कर राखों अति सीतल॥ अपने ही कर लगाऊं सब अंग झीनो बसन कर दीपत झांई कल॥१॥ मेवा मिठाई बहोत सामग्री कपूर सुवास मिश्री सों भल। करहु ब्यार मैं तोय बिंजना लै गले पहिराऊं माल तुलसीदल॥२॥ कमल दलन की सेज बिछाऊं बाह धरों श्री राधा की गल। गिरिधर लाल लाडिलीछबि देखत श्रीवल्लभ सिर पर॥३॥ राग कल्याण मदनमोहन पिय गावत राग कल्यान॥ बाजत ताल मृदंग संख ध्वनि गावत शब्द रसाल॥१॥ बीन बेनु मधुर सुर बाजत उपजत तान तरंग॥ 'रसिक' प्रीतम पिय प्यारे की छबि ऊपर वारों कोटि अनंग॥२॥ राग अडानो छूटे बंद सोंधे सों लपटै टेढी टेढी पगिया मन मोहे। कंचन चोलना यह छबि निरखत काम बापुरो को है॥१॥ लाल इजार गरे वनमाल

गुंजमाल श्रुति कुंडल सोहै। रसिक रसाल गुपाल लाल गढ्यो कीमत कीमत जो है ॥२॥

## उसीर शयन दर्शन के पद

राग अडानो सखी सुगंध जल घोरी के चंदन हरि अंग लगावत ॥ बदनकमल अलके मधुपनसी बांकी पाग मनभावत ॥१॥ कोऊ बिंजना कुसुमन के ढोरत कुसुमन भूखन करि उर पहेरावत ॥ तरू बेली सीयरी तर क्रीडत व्रजाधीस गुन गावत (मन भावत) ॥ राग अडानो स्याम अंग सखी हेम चंदन कौ नीकौ सोहे बागो ॥ चंदन इजार चंदन को पटुका बन्यौ शीश चंदन को पागौ ॥१॥ अति छबि देत चंदन उपरना बीच बन्यौ चंदन कौ तागौ ॥ सब अंग छींट बनी चंदन की निरखत सूर सुभागौ ॥२॥ राग अडानो चंदन अरगजा ले आई बाल लाल के अंग लगावन ॥ सुगन्ध गुलाब जल तामध्य कपूर डारि अंजुली भर भर लेपत गात लागत पवन चढ़ावन ॥ नाना बहु भांतन के कुसुमन सों शैया रची मची सुवास बसी प्रीतम मन भावन ॥ मुरारीदास प्रभु ग्रीष्म ऋतु दाह तपत तैसेई लागि सारंग राग गावन ॥२॥ राग कान्हरो मेरे गृह आवो नंदनंदन चंदन कर राखु अति शीतल। अपने कर लगाउ सब अंग झीनो वसन दीपत झांइकल ॥१॥ मेवा मिठाई बहु सामग्री कपूर सुवास मिश्रीपना सु भल। करहुं बयार पहुप बिंजना ले गरे पहराउ माल तुलसी दल ॥२॥ कमल दलनकी सेज विछाउं बाहं धरो श्रीराधाकी गल ॥ गिरिधरलाल लाडिले की छबि देखत श्रीवल्लभ शिर पद पल ॥३॥ राग ईमन अति से उसीरसाने सींचे खासे खसखाने बैठे प्रियाप्रीतम मन हरखतहें ॥ फूलनकी बनमाला हिय मध्यराज रही फूलनके आभूखन मानों चंदन सरसत हें ॥१॥ औरनको सेंन देत प्यारी अंक भरि लेत प्रेम के समुद्र की लहर परसत हें ॥ व्रजाधीश बलिहारी बिलसत प्रिय प्यारी नवल निवारी फूंही जल बरसत हें ॥२॥ राग बिहाग रुचिर चित्रसारी सघन कुंज में मध कुसुम रावटीराजे ॥ चंदन

के रुख चहुं ओर छबि छाय रही फूलन के आभूखन बसन फूलन सिंगार सब साजे ।।१।। सीयरे तै खाने में त्रिविध समीर सीरी चंदन के बाग मध चंदन महल छाजे। नंददास प्रिया प्रीतम नवल जोर बिधना रची बनाय श्रीव्रजराज बिराजे ।।२।। राग नाईकी पियके अंग लगावन लाई हो अरगजा घोर। सुन मृदु वचन रसिक गिरिधर पिय ठाढे अपनी पोर ।।१।। बांकी पाग लिये कर कमलन नागर नंदकिशोर। 'हित अनूप' चंचल मृगनेनी लियो लालन चितचोर ।।२।। राग कान्हरो मेरे घर चंदन अति कोमल लीजे हो सुंदर वर नायक ।। हौं अबला बहु जतन प्राणपत कनक पात्र लाई तुम लायक ।।१।। उत्तम घस गुलाब केसरसों विविध सुगंध बीच मिलायक ।। बहो जुवतिन मनहरण रसिक वर नंदकुमार सुरत सुखदायक ।।२।। सुन विनति नंदनंदन पिय बहोत भांत मधुर मृदु वायक ।। 'कृष्णदास' प्रभु कृपा नेन जल छूटे लूटत मदनके सायक ।।३।। राग कान्हरो कौन रसिक व्है इन बातनको ।। नंदनंदन बिन कासों कहिये सुन री सखी मेरे दुःख या तनको ।।१।। कहां वे जमुना पुलिन मनोहर कहां वे चंद शरद रातनको । कहां वे मंद सीतल सुगंध कोमल खटपट जलजातनको ।।२।। कहां वे सेज पोढवो बनको फूल बिछौना मृदु पातनको ।। कहां वे दरस परस 'परमानंद' कमलनेन कोमल गातनको ।।३।। राग कान्हरो सीतल भये मेरे नेना। निरख छबि प्यारी सीतल धरे सीतल आभूषण सीतल बोलत मीठे बेना ।।१।। सीतल जमुना जल सीतल कमल दल सीतल मधुरे वास लेना। 'नंददास' प्रभु सब सीतल देखियत सीतल चंद मुख एना ।।२।। राग कल्याण देखोरी यह चंदन पहेरे ठाडे कदमकी छांई ।। कदम्बकी डारतर सुंदर खसखानो रच्यो कुसुमनसे सेज बनाई ।।१।। बिंजना ब्यार करत ललितादिक छुटत फुहारे फुही ।। झरनाझर लाइ सीतल मंद सुगंध ब्यार चलत तहां बैठे अधिक छबि छाई ।। श्याम सुन्दर और कुंवर राधिका बैठे डार दोउ गल बांही ।। हरिनारायन श्यामदासके चेरे इने नवनिधि दूजे अष्ट महासिद्धि पाई ।।२।।

## अथ मान के पद

राग ईमन मानतज वौरी नंदलालसों ॥ वे बहुनायक एतेपर राजकुमार मेरो कह्यो मान प्यारी तु जिन लाओ ओरी ॥१॥ किसलयदल कुसुमन की शय्यारचि तुव मगचितवत दौर दौरी ॥ गोविंदप्रभुसों तू यों राजेगी ज्यों दामिन घनसोंरी ॥२॥ राग ईमन वा मनुहार न मानें तू नहीं जानें ऐसी क्यों रुसाई प्यारे तुमहूंनें ॥ तुम जो मनावत वह नहिं मानें पायनपरीहो सुनकर पटतानें ॥१॥ सुनत सुनत श्रवण पिया भवन गवन कीनें परसचरण चाहें रसपांनें ॥ रसिक प्रीतम पियप्यारी उठि अंकभर भूलगई तीय रोस दोष हियें कर रसवस दानें ॥२॥ राग ईमन मानरीमान मेरो कह्यो गोपीनाथ कुंवर तोहि बोलें ॥ हौं जो लालनसों पेंजुकर आई सो तेंजु करी ऐरी नयननहीं नहियां तातें मोमें कछू न रह्योरी ॥१॥ घोषनृपति सुतहै बहुवल्लभको कौन सुकृत फल तेंजु लह्योरी ॥ गोविंदप्रभु तें सुहाग भाग वशकीने तुमतो परम विचित्र रस छिनछिन जात वह्योरी ॥२॥ राग ईमन कहतकहत शशि रैनगई नहिं मानत पिय प्यारी हो ॥ समुझाये समझत नहीं और खरी यह निठुर देखी भारीहो ॥१॥ छलबल बुद्धि में केते कीनों मेरी तो चरणरसना हारीहो ॥ अब नाहिं और उपाय कछु आपन चलियेजू गोविंदप्रभुजू विहारीहो ॥२॥ राग कान्हरो आजबनी वृषभानकुंवरि दूती अंचल वारत तृणतोरत कहत भलेजु भलें भामा ॥ वदनजोति कंठपोति छोटी छोटी लरमोतिनकी सादाशृंगारहार कुचबीच अतिशोभित हैं बोरसरीदामा ॥१॥ एकरसनां गुण अपार कैसेंक वरणों विशदकी रति अंगअंग पिय नमत अभिरामा ॥ गोविंदबलसखी कहें रचिपचि विरंचि कीनी स्यामरमणको माई तूही है श्यामा ॥२॥ राग कान्हरो तू चल सखीरी शृंगारहार साजें सेवती किन पियप्यारी ॥ माधुरी माधवी बोरसरी एरी गुलाबको लैहै मनुहारी ॥१॥ यह स्वभाव नजाय वरजि जुई केतकीलों समझाय माननिवारी ॥ मेरो सीखंडजो मिलेरी गोविंदप्रभु तो तोपर केवरो नवलकुंवर कुचविच चंपो विहारी ॥२॥ राग कान्हरो चढबढ विडर गई अंगअंग मानवेली तेरें सयानी ॥ हृदय

आलवाल मध्य प्रकटभईरी आली प्रीतिपालीनीके कर छिनछिन रूसबो भयोपानी ।।१।। कौनकौन अंगनते निरवारोरी आली अलक तिलक नयनन बैनन भ्रोंहसों लपटानी ।। नंददासप्रभु प्यारी दूतीके वचनसुन छबीली राधे मंद मंद मुरमुसकानी ।।२।। राग कान्हरो अरी तू काहे अनमनी बोलत नाहिं बुलावे ।। अवलोंतो तू हँसत खेलतही कहाभयो मोहिं आये ।।१।। नयन नीचेकियें चितवन रखदिये तिरछीभ्रूं चढायें ।। रसिकप्रीतमपिय कबके ठाडे विनवत हैं परपायें ।।२।। राग कान्हरो हरिहौंतो हारीहो लालतिहारी प्यारी के पांयन परपर ।। रही सिर धरचरणन बडीबार भंई लीजिये मनाय रूठी मानत नाहि क्योंहूं कर ।।१।। जैसेंजैसें रातजात तैसेतैसें सतरात मोसों न बतरात मानीहै मैं यांसूं हार ।। सुनतही वचन रसिकप्रीतम दूतीके आप उठ चले देखत वदन जात इतहीं ढार ।।२।। राग नायकी तू मोहि कित लाईरी यह गली ।। जो जिय डरपतहीं सोईभई आगें ठाडे मोहन अब कैसें जैवो मेरी माई ।।१।। रशन दशनधर करसूं करमीडत दूतीसों खीजत आनंद उर न समाई ।। गोविंदप्रभु की तेरी हिलमिल बातेंहौं सबजानत भलीकीनी भले नगसों भेट कराई ।।२।। राग नायकी रूसनों नकर प्यारी रुसवो निवार ।। कबकीहौं ठाडी तोसों अरज करतहौं रैनरही घडी चार ।।१।। मेरो कह्यो तू मान सुहागिन अतिसुंदर सुकुमार ।। गोविंदप्रभुसों हिलमिल भामिन तनमन जोबनवार ।।२।। राग नायकी हौं तोसों अब कहा कहों आलीरी कौनबेरकी बुलावत ही तोहि ।। नवलनागर नवलकुंज कबके निस जागतहैं प्रीतिकीतो वरही नकछू इतनी सँकुच नाहिन तोहि ।।१।। कहा आयुस होतहै मोकों तुमतो सुहाग के भर आवेश वसोई ।। मोहि कहा तेरोई प्राणप्रीतम सुखपावें सोईतो करोरीआली गोविंदप्रभु अपने कंठराखति पोहि ।।२।। राग नायकी लालन मनायो नमानत लाडिली प्यारी तिहारी अतिशय कोपभरी ।। तुम्हारीसों अनेक यत्न छलबल सबकिये मानतो अब घटत नाहिन त्योंत्यों अतिरिस होतहै खरी ।।१।। साम दाम भेददंड एकोनहीं चिनचुभत तापरहौं पायपरी दंततृणधरी ।। नाहिन

कछू और उपाव आनबन्यो यह दाव गोविंदप्रभु आपुन चलिये तुमदेखतही वाको मानछूट जैहें तिंहिंघरीं ॥२॥ राग अडानो तुम पहिले तो देखो आय मानिनीकी शोभा लाल पाछेंतो मनायलीजें प्यारेहो गोविंदा ॥ करपर धरकपोल रहीरी नयनन मूंद कमलविछाय मानों सोयो सुखचंदा ॥१॥ रिसभरी भ्रोंह तापर भ्रमरबैठे अरबरात इंदु तर आयो मकरंद अरविंदा ॥ नंददासप्रभु ऐसी काहेकुं रुसैये बल जाको मुखदेखेंते मिटत दुखद्वंदा ॥२॥ राग केदारो मान न कीजे पियसों बावरी ॥ बिनहि काज तू गिरिधरके मन पारतरी कित आवरी ॥१॥ तुव हित कारण व्रजनृपतिकुंवर कबके बैठेहैं संकेत ठांमरी ॥ गोविंदप्रभु सुंदरकर गूंथत कुसुम दामरी ॥३॥ राग केदारो मानिनी मान निहोरो ॥ हौं पठई तोहि लेन सांवरे चलरी गर्व कर थोरो ॥१॥ कुंजमहल ठाड़े मनमोहन चितवत चंदचकोरो ॥ हरीदास के स्वामी स्यामा कुंजविहारी चलोरी होत है बोरो ॥२॥ राग केदारो छांडदे मानिनी स्यामसंग रूठवो ॥ रहत तुवलीन जलमीनज्यूं सुंदरी करोक्यों न कृपा नवरंगपर तूठवो ॥१॥ बेग चल यामिनी जात पलछिनघटत कुंजमें केलिकर अमीरस घूंटवो ॥ बलविष्णुदासनि नाथनंदनंदनकुंवर सेजचढ ललनसंग मदनगढ लूटवो ॥२॥ राग केदारो तेरेरी मनायवेते माननीको लागत जौलों रहीआली तौलों लाल लैआऊं ॥ तेरीतो रुखाई प्यारी औरको हँसनो तोर मुखसोरेहू कलाको पून्योचंद बलजाऊं ॥१॥ चल न सकत इन पगन परत उत ऐसीशोभा फिर पाऊंकें न पाऊं ॥ नंददास मोहि द्वयदिश कठिन भई देखवो करूं कैधों लाल ले आऊं ॥२॥ राग केदारो आपन चलिये लालन कीजिये न लाज ॥ मोसी जोतुम कोटिक पठवो प्यारी न मानत आज ॥१॥ हौंतो तिहारी आज्ञाकारी मोसों कहाकहत महाराज ॥ नंददासप्रभु बडेरे कह गये आपकाज महाकाज ॥२॥ राग केदारो रूपरस पुंज वरनों कहा चातुरी ॥ मान मेरो कह्यो चतुरचंद्रावली निरख मुखकमल उडुराज शंकातरी ॥१॥ तिलक मृगमदभाल द्विरद कीसी चाल देख रीझे लाल मंद मुसकातरी ॥२॥ सुरनधर केलिअंसपर भुज मेल मुग्ध पदठेलदे मदन

सिरलातरी ॥३॥ राग केदारो घरीघरीको रूसनो कैसे बनआवे ॥ है कोऊचेरी तेरे बावा की नित्य उठ पैंयां लाग तोहि मनावे ॥१॥ अब तो कठिनभई मेरी आली तोबिन लाल और नहीं भावे ॥ आसकरण प्रभु मोहननागर मुरलीमें राधे राधे गावे ॥२॥ राग केदारो मानगढ क्यों हूं न टूटत अबलाके बलको प्रताप ॥ आपन ढोवाचढ गिरिधरपिय अबलातू चिलाचांप मुक्तकटाक्ष घूंघटदरवाजो नहीं खूटत ॥१॥ विविध प्रणतहथ नालगोला बोलेंजू उछट परत काम कोट नहीं फूटत ॥ गोविंदप्रभु साम दाम भेददंड कर घेरापर्‌यो चहुं दिशसंचित रुख्याई जलक्योंहूं नहीं खूटत ॥२॥ राग केदारो तोहि मिलनकों बहुत करतहैं मोहनलाल गोवर्धनधारी ॥ उत्तर बेगदेहो किन भामिनी कहिधों कहा यह बात तिहारी ॥१॥ देखीरी तूंजो झरोखनके मग तन पहरे झूमककी सारी ॥ तनमनवसीरी प्राणप्यारेके निमिष जिय ते होत न न्यारी ॥२॥ कहिरी सखी कहां होय आऊं बेगबताय सुठौर विचारी ॥ कुंभनदासप्रभु वे बैठेहैं जहां देखियत ऊंची चित्रसारी ॥३॥ राग केदारो तू न मानन देत आलीरी मन तेरो मानवेकों करत ॥ पियकी आरतदेख मेरेजिय दयाहोत तेरी दृष्टि देखदेख डरत ॥१॥ मोलों कहत कहा मेरो नदोष कछू निपटहठीली धाय क्यों न अंकभरत ॥ नंददासप्रभु दूतीके वचनसुन ऐसे अंगढर्‌यो जैसे आंचके लगेतें राँग ढरत ॥२॥ राग केदारो उत्तर नदेत मोहनी मौनधर बैठी पियवचन सुनत नेकहू न मटकी ॥ तू कब चलेगी आली रजनी गईरी सब शशिवाहन धरनी धुकलटकी ॥१॥ धरेंरी पाणिकपोलनमें करेंकलोल भुव नखलिखत तेरे कहा जात घटकी ॥ मुग्धवधू रिस काहेको करत हठ परम भामती तू नागरनटकी ॥२॥ ध्रुव समान फिर आयेरी सप्तरिषि अबही वारहैतमचररटकी ॥ मानदासबल राधिकाकुंवरि चल नीकी शोभा लागे तेरे नीलांबर पटकी ॥३॥ राग बिहागरो लाडिली न माने लाल आप पाऊंधारो ॥ जैसे हठतजे प्यारी सोई यतन विचारो ॥१॥ बातेंतो बनाय कही जेती मति मेरी ॥ एकहूं नमाने हो लाल ऐसी त्रिया तेरी ॥२॥ अपुनी चोंपके काजें सखीभेष कीनो ॥

भूषण वसन साजें वीना करलीनो ॥३॥ उतते आवत देखी चकित निहारी ॥ कौन गाम वसत हो रूपकी उजियारी ॥४॥ गामतो है नंदगाम तहां कीहौं प्यारी ॥ नामहै सांवलसखी तेरे हितकारी ॥५॥ करसो करजोरें स्यामा निकट बैठाई ॥ सप्तस्वरन साज मिल स्वल्प बजाई ॥६॥ रीझ मोतीहार चारु उरले पहरावे ॥ ऐसेहीं हमारो भट्टू सांवरो बजावे ॥७॥ जोइजोइ इच्छा होय सोई मांग लीजे ॥ ऐसी बातें सांवरेसो कबहुं मान न कीजे ॥८॥ मुखसो मुखजोरें स्यामा दरपन दिखावें ॥ निरख छबीली छबिप्रतिबिंब लजावें ॥९॥ छल तो उघर आयो हँस पीठ दीनी ॥ नंददास बलप्यारी आँकों भरलीनी ॥१०॥ राग बिहागरो काहेकूं तुम प्यारे सखी भेष कीनो ॥ भूषणवसनसाजें वीनाकरलीनो ॥१॥ मोतिन मांग गुही तुम कैसेहो प्यारे ॥ हम नहिं जाने पहचाने कौनके दुलारे ॥२॥ रूंसवेको नेम नित्य प्यारी तुम लीनो ॥ ताहीके कारण हम सखी भेषकीनो ॥३॥ सबसखी दुरदुर देखें कुंजनकी गलियां ॥ नंददास प्रभुप्यारे मानलीनी रलियां ॥४॥ राग बिहागरो मान न घट्योआली तेरो घटजु गई सबरैन ॥ बोलन लागे तमचर ठौरठौरतु अजहूं न बोलीरी पिकबैन ॥१॥ कमलकली विकसी तूं न नेक हँसी कौन टेवपरी मृगशावक नयन ॥ नंददास प्रभुको नेह देख हांसी आवत वे बैठेहैं रचि रचि सेन ॥२॥ राग बिहागरो मनावत हारपरीरी माई ॥ तू चटतें मट होत नराधे हौं हरि लेन पठाई ॥१॥ राजकुमार होयसो जाने के गुरुहोय पढ़ाई ॥ नंदनंदन को छांड़ महातम अपनी साखबडाई ॥२॥ ठोडी हाथचलीदे दूती तिरछी भ्रोंह चढाई परमानंदप्रभु करोंगी दुल्हैया तो बाबा की जाई ॥३॥ राग बिहागरो तू चल मेरो राख मान ॥ वे तो तिहारो मगजोवत हैं तू तो निपट अयान ॥१॥ काहूकी कही सुन धरिये जियमें करिये अपने मनको सयान ॥ उठ चल हिलमिल कहत गदाधर नेक न कर री तू काहू की कान ॥२॥ राग बिहागरो आवत जातहौं तो हार परीरी ॥ ज्योंज्यों प्यारो विनतीकर पठवत त्योंत्यों तूं गढमान चढीरी ॥१॥ तिहारेबीच परे सोई बावरी हौं चौगानकीगेंद भईरी ॥ गोविंदप्रभुकों वेगमिल भामिनी सुभग यामिनी जात बहीरी ॥२॥ राग बिहागरो रैनतो घटत जात सुनरी सयानी बात मेरो

कह्यो माने नाहिं तोहि नासुहातरी ।। सुखके सोहाग भरी ऐसी कैसी टेवपरी घटत ना मानतेरो दया न आवतरी ।।१।। जाके दरशकों सब जग तरसत सोई तेरे रूपबिन रह्यो नजातरी ।। नंददास नंदलाल बैठे अतिशय विहाल मुरलीकी ध्वनिसुन तेरो नाम गातरी ।।२।। राग बिहागरो तू तो वेगचल यामिनी जाय घटत ।। न करि विलंब मिल नंदसुवनको समज चतुरसुंदरि काहेकों बातें ठठत ।।१।। मदनमोहन बैठे बडीवारके तूं काहेकों नटत ।। कुंभनदास गिरिधरनलाल स्यामतमालसों कमललतासी क्यों न लपटत ।।२।। राग बिहागरो तेरे लांबे केस विविध कुसुमग्रथित देख हरी सिरधरें मोरचंदवा ।। शृंगाररसको सर्वस्व किशोरीप्यारी तब अंगअंग कहालों कहूं अल्पमति वशभये आनंदके कंदवा ।।१।। कस्तूरीके पत्र कुंकुमकलित वल्लीसिंदूर को चित्रनिरख कुचमंडित धातुप्रवाल परे सुभग श्रीतन मनवचन मानआनंदवा ।। कृष्णदास बलहारी अलकनकी शोभापर गिरिवरधरके आली चित फंदवा ।।२।। राग बिहागरो कृष्णचंद्र आवेंगे मेरे आजरीमाई बहुत दिननकी अवधि आज ।। तनमन जोबन आनंदित वदनहास नयन सेनबैन मधुर थार मध्यकरकें पहलें मिलहोरी भेटसाज ।।१।। गृहगृहतें सखी बाल लेंहुरी अति प्रवीन वीनाकरधर हरिसंग करहों रतिसुख समाज ।। मकरंद नंदसुतकिशोर रिझवोंगी गानतान आनआन आछेहूं कृष्ण रागरंग रिझायकें लेहोंरी एक छत्रराज ।।२।। राग बिहागरो मोहनराय मानीरी तेरी बतियां ।। मदनमोहन पिय बैठे एकांतह्वै दीनो सुहस्त जाय पतियां ।।१।। जबलग धीरजधररी सयानी दिनगत याम जोलों होय अधरतिया ।। कुंभनदासप्रभु दूतीके वचनसुन परमसीतल भई छतियां ।।२।। राग बिहागरो कहों कैंसे कीजे हो ऐंसे कपटिनको विश्वास ।। एकनके चित्तलेत चोरकें एकन लेत उसास ।।१।। जो कोऊ मान करत ताहि मनावत चेरीह्वै रहें तासों होत उदास ।। रसिकप्रीतमकी जानी नपरे हांसी कीधों उपहार ।।२।। राग बिहागरो राधिका मान तज कान्ह भज भामिनी ।।१।। रटत सुंदरस्याम रही रजनी याम नामतेरो जपत कहूं सुन कामिनी ।।२।। तरणि तनयातीर मोर कोकिला कीर

पवनराजत धीर शरद सुख यामिनी ॥ कुसुम राजत सेज शरदको शशितेज प्रेमपाउं धारिये सुनो गजगामिनी ॥३॥ सुनत स्यामा चली सखिन आगें दई परम मगनभई स्याम संग स्वामिनी ॥ सुर मिलत सुकुमारदोऊ करत विहार ज्यों राजत सघन गगन दामिनी ॥४॥ राग बिहागरो चपल चल रसिकनी पिय बुलावें ॥ विमलरजनी वहिजात सुंदर सुघरपहरिले नीलपट यही सुहावें ॥१॥ भेटकरि कुचकठिन चित्त कोमल करहि काहेकों भामिनी भ्रोंह चढावें ॥ रटत तुव नाम धरध्यान सूरजप्रभु खोल मुख दरसदे येहि भावे ॥२॥ राग बिहागरो चली मुखमौन मनावन मान ॥ अंचलछोर पसार दोऊकर धर्‌यो सीसपर पान ॥१॥ ससितन चितै निहार नयनभर कर अंगुरीमुख आन ॥ लीकी तीन करी वसुधापर तृणतोर्‌यो कर तान ॥२॥ समझी सबैभेद की बातें चतुरचली मुसकान ॥ विविधविहारजु किये सूरप्रभु कवि कहाकरे वखान ॥३॥ राग बिहागरो अतिहीं निठुर तिय मानवती क्योंहूं क्योंहू मनाई ॥ आपने जानमें बहुत भांति कर नीकी युक्ति बनाई ॥१॥ जे तुमकही कपटकी बातें अनेक यत्न करकें दिखराई ॥ रसिकप्रीतम आप चलियें मिलवें रसवशकीजें मोहिदीजें रीझ वधाई ॥२॥ राग बिहागरो चलचल मेरो कह्यो तूं मान नातर पछतैहै कर मान ॥ अबहींतो पिय पायपरत हैं तज अभिमान पावेंगी अधिक सनमान ॥१॥ बहुनायक सुखदायक सोंकरि काहूको निवह्योहै गुमान ॥ रसिक प्रीतमसो पियजो पैयेतो सहिये कोटिक अपमान ॥२॥ राग बिहागरो आजशुभलग्न तेरे मिलनकों गिरिधरनागर गुनिन गनायो ॥ प्रथम समागमतें कित डरपत बडेभाग्य संचित फलपायो ॥१॥ नवनिकुंज मंडप सखी सुमतिविधाता सुहस्त बनाये ॥ रसिकलाल तव संग प्रमुदित कृष्णदास मंगलयश गायो ॥२॥ राग बिहागरो मेरे बुलाए नाहिन बोलत री काहेकों भुलावत ॥ हौं पठई प्यारे तोहि बोलन उलटी नागरी आंख दिखावत ॥१॥ तेरे मन भावे नंदनंदन तू हरिके चितमन बुद्धिभावत को जाने कामिनी कौतुककी मोसिनकुं बातन बौरावत ॥२॥ धरतमुरलिका आपतें अधरकर तनमनभई मधुर कलगावत ॥ कृष्णदास स्वामीगिरिधरकी मोहनमूरति कुचवीच अरुझावत ॥३॥

राग बिहागरो कान्ह कछुचाल बैठी रहत ।। मो तन चितै हंसेपै न हंसे कह्यो चाहत कछू न कहत ।।१।। मैं जानी तनतें जियको गयो चाहतहै वृषभाननंदिनी बैठीरी प्रीतिकी सकुच गहत ।। इते तेरे रसकों रामदास प्रभु इतें औरको देख्यो चहत ।।२।। राग बिहागरो बोलत मदनगोपाल विनोदी चलरी नागरी छांडदे गजू ।। मेरे जानगिरिधरन मिलनकों फूलेफूले तेरे अंगजू ।।१।। तव उर पर युगल नारंगफलरंग छबीले स्यामरंगजू ।। कृष्णदासप्रभू गिरिधर नवरंग भू चपलमन्मथ मानभंगजू ।।२।। राग बिहागरो चलियें कुंवरकान्ह सखी वेष कीजै ।। देख्यो चाहो लाडिलीकों अबही देखलीजे ।।१।। ठाडीहैं मंजनकियें आंगन अपनें ।। देखी न सुनी न ऐसी संपति सपनें ।।२।। बडे बडे वार पाछे छूटे अति छाजें ।। मानहु मकरध्वज चमर विराजें ।।३।। वदन सलिलकण जगमग जोती ।। मानो इंदुसुधा तामें अमीमय मोती ।।४।। आधो मोतीहार चारु उररह्यो लसी ।। कनक लताते मानों उदयहोत ससी ।।५।। पुन सुरसरी सम मोतिनके हारा ।। रोमावलि मिली मानो यमुनाकी धारा ।।६।। पीक झलकन सोहें सरस्वती ऐनी ।। परमपावन देखी मदनत्रिवेनी ।।७।। अंचलउडन छबि कहिये कवन ।। रूपदीप शिखा मानो परसी पवन ।।८।। शिवमोहे जिन वह मोहनी जे कोई ।। प्यारी के पांयनआज आनपरें सोई ।।९।। नंददास और छबि कहालों कहीजे ।। देखेंही बनेही लाल चल्योही चहीजे ।।१०।। राग बिहागरो आज आली अचरज सुन मेरे प्रीतम आए मनावन ।। तूं जोनहिन दुहुन समझावत रूसगए मनभावन ।।१।। जाकी चरणरज ब्रह्मादिक सुरमुनि पशुपंछीगन पावन ।। तबतें नबिसरत मोहि सखीरी रसिकराय मुखलावन ।।२।। राग बिहागरो मानकियो मानिनी मनायोहू न माने नेक मानहू में सोय रही मानिनी न मानके ।। उझक पियदेखें आय चांपत चरण सखीसैन दे उठाई पिय बैठे पगपान के ।।१।। पियको परस जान जानकेभई अजान चतुरविहारीजूसों बोली मिष आनके ।। रहोरहो रसिकराय छिनहूंन होओ न्यारे हमतुम पौढें दोऊ एक पटतान के ।।२।। राग बिहागरो वाके तो नयन मने चाहें पै वे प्यारी नहीं मानत ।। दृगनतें रसकीहाँसी भोहें करतउदासी बैनन आन आनबानत ।।१।। वेतो तिहारे रस रूपकी

अधीनताई दरपनले दरबराय आपवश आनत ॥ नंददासप्रभु जाकेतन भेद भयो टूटेगो मानगढ यों जानत ॥२॥ राग बिहागरो राधा हरि अतिथितुम्हारे ॥ रतिपति अशनकाल गृहआए उठ आदरदे कहे हमारे ॥१॥ आसनआधी सेजसरक दे सुख पगपरस पखारे॥ अरघादिक आनंदअमृतले ललितलोल लोचनजलढारे ॥२॥ धूप सुवास स्वास सौरभ मुखविहसनि दरधरें दीपउज्यारे ॥ वचनरचन भ्रूभंग अवर अंग प्रेममधुररस परोसन न्यारे ॥३॥ उचितकेलि कटुतिक्त करजद्विज अमलउरोजफल कठिन करारे ॥ मर्दनक्षार कषायकचग्रह चुंबनादिसमर्पि संभारे ॥४॥ अधर सीधु उपदेशसिंच शुचि विधिपूरण मुखवास संवारे ॥ सूर सुकृत संतोष स्यामकों बहुतपुण्य यह व्रतप्रतिपारे ॥५॥ राग बिहागरो दोरीदोरी आवत मोहि मनावत दामखरच कछु मोललईरी ॥ अचरापसारके मोहि खिजावतहौं तेरे बाबाकी चेरी भईरी ॥१॥ जारीजा सखी भवन आपने लखबातनकी एककहीरी ॥ नंददास वे क्यो नहीं आवत उनके पायन कछु मेंहदी दईरी ।२॥ राग बिहागरो चंदनचर्चित नीलकलेवर पीतवसनवनमाली ॥ केलिचलन्मणिकुंडलमंडित गंडयुगस्मितशाली ॥१॥ हरिरिह मुग्धवधूनिकरे विलासिनि विलसति केलिपरे ॥ध्रु.॥ पीनपयोधर भारभरेण हरिं परिरभ्य सरागम् ॥ गोपवधूरनुगायतिकाचिदुदंचितपंचमरागं ॥२॥ कापिविलास विलोलविलोचन खेलनजनितमनोजं ॥ ध्यायतिमुग्धवधूरधिकं मधुसूदन-वदनसरोजं ॥३॥ कापिकपोलतलेमिलितालपितुंकिमपिश्रुतिमूले ॥ चारुचुचुंबनितंबवती दयितंपुलकैरनुकूले ॥४॥ केलिकलाकुतुकेन च काचिदमुं यमुनाजलकूले ॥ मंजुलवंजुलकुंजगतं विचकर्षकरेण दुकूले ॥५॥ करतलतालतरल वलयावलि कलितकलस्वनवंशे ॥ रासरसे सह नृत्यपरा हरिणा युवति प्रशंसे ॥६॥ श्लिष्यति कामपि चुंबति कामपि रमयतिकामपिरामां ॥ पश्यतिसस्मित चारुतरामपरामनुगच्छति वामां ॥७॥ श्रीजयदेवकवेरिदमद्भुत केशवकेलिहरहस्यं ॥ वृंदावनविपिनेललितं वितनोतुशुभानि यशस्यं ॥८॥ राग बिहागरो रतिसुखसारे गतमभिसारे मदनमनोहरवेषं ॥ नकुरुनितंबिनि गमनविलंबन मनुसरतं हृदयेशं ॥१॥ धीरसमीरे यमुनातीरे वसति वने वनमाली ॥

गोपीपीन पयोधरमर्दन चलितचपल करशाली ।।ध्रु.।। नामसमेतं कृतसंकेतं वादयते मृदुवेणुं ।। बहुमनुते तनुते तनुसंग तपवनचलितमपिरेणुम् ।।२।। पततिपतत्रे विचलति पत्रे शंकितभव दुपयानं ।। रचयतिशयनं सचकितनयनं पश्यति तवपंथानं ।।३।। मुखरमधीरं त्यजमंजीरं रिपुमिवकेलिसुलोलं ।। चलसखिकुंजं सतिमिरपुंजं शीलयनीलबोलं ।।४।। उरसिमुरारे रुपहितहारे घनइव तरलबलाके ।। तडिदिवपीते रतिविपरीते राजसिसुकृतविपाके ।।५।। विगलितवसनं परिहृतरशनं घटयजघनमपिधानं ।। किसलयशयने पंकजनयने निधिमिवहर्षनिधानं ।।६।। हरिरभिमानी रजनिरिदानीमियमपि यातिविरामं ।। कुरु मम वचनं सत्वररचनं पूरय मधुरिपुकामं ।।७।। श्रीजयदेवे कृतहरिसेवे भणति परम रमणीयं ।। प्रमुदित हृदयं हरिमतिसदयं नमतसुकृत कमनीयं ।।८।।

राग बिहागरो हरिरभिसरति वहति मधुपवने ।। किम्परमधिकसुखं सखिभवने ।।१।। माधवे मा कुरु मानिनि मानमये ।।ध्रु.।। तालफलादपि गुरुमतिसरसं किंविफली कुरुषे कुचकलशं ।।२।। कतिनकथितमिदमनुपदमचिरं ।। मा परिहर हरिमतिशयरुचिरं ।।३।। किमिति विषीदसि रोदिषि विकला ।। विहसति युवति सभा तव सकला ।।४।। मृदुनलिनीदल शीतलशयने ।। हरि मवलोकय सफलयनयने ।।५।। जनयसिमनसि किमिति गुरुखेदं ।। श्रृणु मम वचन मनीहित-भेदं ।।६।। हरिरुपयातु वदतु बहु मधुरं ।। किमितिकरोषि हृदयमतिविधुरं ।।७।। श्रीजयदेवभणित मतिललितं ।। सुखयतु रसिकजनं हरिचरितं ।।८।।

राग बिहागरो किसलयशयनतले कुरुकामिनी चरणनलिनविनिवेशं ।। तवपदपल्लव वैरिपराभवमिदमनुभवतु सुवेशं ।।१।। क्षणमधुना नारायणमनुगत-मनुसर मां राधिके ।।ध्रु.।। करकमलेन करोमि चरणमहमागमितासि विदूरं ।। क्षणमुपकुरु शयनोपरिमामिव नूपुरमनुगतिशूरं ।।२।। वदनसुधानिधि गलितममृतमिव रचयवचनमनुकूलं ।। विरहमिवापनयामि पयोधर रोधकमुरसिदुकूलं ।।३।। प्रियपरिरंभण रभसवलितमिव पुलकितमन्यदुरापं ।। मदुरसिकुच कलशं विनिवेशय शोषय मनसिज तापं ।।४।। अधरसुधारसमुपनय-भामिनी जीवयमृतमिव दासं ।। त्वयिविनिहित मनसं विरहानलदग्ध

वपुषमविलासं ।।५।। शशिमुखिमुखरय मणिरसनागुण मनुगुणकंठ निनादं ।। ममश्रुतियुगले पिकरवविकले शमयचिरादवसादं ।।६।। मामतिविफल रुषाविफलीकृतमवलोकितुमधुनेदं ।। मीलतलज्जितमिवनयनंतव विरमविसृज रतिखेदं ।।७।। श्रीजयदेवकवेरिदमनुपद निगदितमधुरिपुमोदं ।। जनयतु रसिकजनेषुमनोरम रतिरसभावविनोदं ।।८।। राग कल्याण माननी मान जिन मान एतो करे आप पायन परे नाथ तेरे ।। दरस जाके करन जगत तरसत सदा सो तो इकटक तेरो बदन हेरे ।।१।। हों कहत श्रीमुख ओट वेग मिल मितसुं मेरो बचन जिन भूल फेरे ।। रसिक प्रीतम संग अनुराग भरी मिल त्रिया श्रीहरि दुःख तेरो सब नवेरे ।।२।। राग केदारो प्यारी तू देख नवल निकुंजनायक रसिक गिरिवरधरन ।। सकल अंग सुख ससि सुन्दर सुभग सांवरे वरन ।।१।। सहज नटवर भेख दरसन नेन सीतल करन कर सरोज उरोज परसत जुवती जन मनहरन ।।२।। बेगि चलि मिलि गुन निधाने साजी पट आभरन ।। चतुर्भुज प्रभु नवरंग नायक सुरति सागर तरन ।।३।। राग केदारो मेरे कहे मानिनी मान निवारिये ।। हों पठई तोहि लेंन सांवरे कुंजकुटी पाउं धारिये ।।१।। हँसि लालन मोसों कह्यो प्यारी अपने जिय में विचारिये ।। करि मनुहार बोहोरी हों पठई अंग सुगन्ध संवारिये ।।२।। जासो कैसो रुसनो आलीं तासों जाते हारिये ।। सूरदास मदनमोहन की छबि पर अपनो सर्वस वारीये ।।३।। राग बिहाग सुनत खिसयानी परी चल दूती प्रीतम पें गई हे लजाय ।। वे तो नहि मानत कोटि जतन किए हो पचिहारी बोहोत मनाय ।।१।। आपुहि मनाइ लीजे मोसों एसी कही सुनो अब कहा कीजे लाल दूसरो उपाय ।। नंददास प्रभु एसी सुनि आपहि पधारे तब पोढे अपनी प्यारी कों उर लाय ।।२।। राग खमाज ठन गन छांड़ि देरी अलबेली ।। मेरे कहे तू उठ चल भामिनी नागर नवल नवेली ।।१।। लाल मनावत तू नहीं मानत जोबन गर्व गहेली ।। रसिक प्रीतम संग यो राजत है जैसे हार चमेली ।।२।। राग कल्याण सिखवत केती राति गई । चंद्र उदै बर दीसनि लाग्यो तू नहिं और भई ।। सुनि हो मुगध ! कह्यो नहिं मानति

जामी हृदै कई। 'परमानंद प्रभु' कों नहिं मिलती तौ प्रतिकूल दई ॥ राग बिहाग आली तेरो बदन चंद देखत बस भये कुंजबिहारी ॥ उसीर महलमें तेरो मग देखत बेर बेर तोये संभारी ॥१॥ तो बिना रही न सकत नवल प्रान प्यारो एसि निठुर तू सुनरी कुमारी ॥ नंददास प्रभु प्यारी रूप गुन उजियारी एसे व्रजाधीशजीसों मान करत तू चल क्यों लों लाज निवारी ॥२॥ राग अडानो तजीये मौन कीजे गोन कुंजभवन प्यारी। तरनि तनया तीर बैठे घनस्याम सुघर अनेक रची विविध फूल मंडली संवारी ॥१॥ फूलनकी चोखंडी छाजे फूलन रचि विचित्र चित्रसारी ॥ तामध रची सेज फूलन की चंपक बकुल गुलाब निवारी ॥२॥ चलत अनिल जलत अति सीतल मंद सुगंध पवन रुचिकारी। तुमही लेन व्रजनाथ पठाई चल हो बेग वृखभान दुलारी ॥३॥ राग पूर्वी अरी जिन तू पठई जाहीपें फिरजाउ उनमोसों अकथ कथानादी। तोहि पठावत वे क्यों नहीं आवत उनके पायन कछू मेंदी बांधी ॥१॥ मो ढींग आवत वचन सुनावत बात कहत आधी आधी ॥ तानसेन के प्रभु वे बहुनायक प्रीत फंदन कर हों फांदी ॥२॥ राग बिहाग आंजु तें नीकें करि जानी मैं देखी प्यारी अति हठु भारी ॥ मदनमोहन पिय हौं पठई और बहुत करी मनुहारी ॥१॥ तुव हितसों कर ग्रथित कुसुम चोली बिच बिच जाइ जुहीं चंपक बकुल निवारी ॥ 'गोविन्द' प्रभु सुहाग बस कीने री उठि चलि वेगि मिलि कुंजबिहारी ॥२॥ राग कान्हरो मनावन आयेरी मनावन जान्यो है प्राणेश्वर प्राणनके प्यारे ॥ कोन कोन गुन रूप बरनों प्यारे तिहारे उनतन नयना न्यारे ॥१॥ मेरीसी मोसों ओरनकी ओरनसों ऐसे व रंग ढंग प्यारे तिहारे ॥ नंददास प्रभु एक रस क्यों न रहो केसे के प्राण पत्यारे ॥२॥ राग शंकरा भरण चंदा छिप गयोरी पिय पें चल प्यारी देख अंधेरी रात ॥ वे विहसअलक सवारत तुं बेठी इतरात ॥१॥ ए इतनो मान कित करत भामिनी छांड दे कित पांच सात ॥ गोविंद प्रभुसों मिले क्यों न भामिनी वृथा यामिनी जात ॥२॥

## मान के पद

राग पूर्वी सोहत गिरिधर मुख मृदुहास ।। कोटि मदन करजोर उपासित विगलित भ्रूविलास ।।१।। कुंडललोल कपोलनकी छबि नासामुक्ता प्रकाश ।। शोभासिंधु कहांलों वरनों वारने गोविंददास ।।२।। राग पूर्वी पाछें ललिता आगें स्यामाप्यारी ताआगें पिय मारगमें फूल बिछावत जात ।। कठिन कली बीन करत न्यारी न्यारी प्यारीके चरण कोमल जान सकुंचत गढवेहू डरात ।।१।। अरुझी लता अपनेकर निरवारत ऊंचे ले डारत द्रुम पल्लव पात ।। सूरदासमदनमोहन पियकी आधीनताई देखत मेरे नयन सिरात ।।२।। राग पूर्वी केलिकला कमनीय किशोर उभय रसपुंजन कुंजके नेरे ।। हास-विनोद कियो बल आली केतो सुखहोत है हेरे ।।१।। बेलीके फूल प्रियाले पियपर डारेकी उपमा होत मन मेरे ।। नंददास मानों सांझ समय बगमाल तमालकों जात बसेरे ।।२।। राग पूर्वी उत्तर कहिहों कहा जाय पियसों होंआई आंथयेकी ।। अर्धनिशा बीती हौंहारी तू जीती मैंजु कही तोसों कोटिक बात तेरे भायें बूंद तयेकी ।।१।। तासों कहा कहिये आली री ताहि न अपनी बुद्ध सिखयेकी ।। सूरदासमदनमोहन कबके मगजोवत तुव बैठी छांह छयेकी ।।२।। राग पूर्वी हों कैसे जाऊं मरम न पाऊं स्याम मेरे जान वाको मन गह्वर है रह्यो ।। तन कंचनगिरि सुदृढ कियो और वसनकोट रच्यो अंचलड्योढी ओटदयो ।।१।। वचन पौरिया पौरि न खोले मुखपौर मूंद रह्यो ।। भौंहधनुष नयना रसके वान साधे जातें जाय न निकट गयो ।। सूरदास मदनमोहन आपन चलिएजू जो तुम हू पै जाय लह्यो ।।२।। राग पूर्वी मेरेतू जियमें वसत नवलप्रिया प्राणप्यारी ।। तेरेई दरसपरस राग रंग उपजत मान न कीजे हा हा री ।।१।। तुही जीवन तुही प्राण तुही सकलगुणनिधान तो समान और नाहिन मोकों हितकारी ।। व्यासकी स्वामिनी तेरी मयाते मैंपायो है नामविहारी ।।२।। राग पूर्वी अरी जिन तू पठई जाहींपें फिर जाउं उन मोसो अकथ कथा नादी ।। तोहि पठावत वे क्यों नहिं आवत उनके पायन कछु मेंहदी बांधी ।।१।। मोढिंग आवत वचन

सुनावत बात कहत आधी आधी ।। तानसेनकेप्रभु वे बहुनायक प्रीति फंदन करहौं फांदी ।।२।। राग बिहाग मेरे कर मेंहदी लगी है लट उरझी सुरजाय जा ।। सिर की सारी सरक गई मोहन अपने हाथ उढाय जा ।।१।। भाल की बिंदी मोरी गिर जो परी है हा हा करत लगाय जा ।। नीलाम्बर प्रभु गुण ना भूलूंगी बीरी नेंक खवाय जा ।।२।। राग बिहाग नींद तोय बेचूंगी आली जो कोई गाहक होय ।। आये मोहन फिर गये अंगना मैं बैरिन रही सोय ।।१।। कहा करूं कुछ बस नांय मेरौ आयो धन दियौ खोय ।। लछीराम प्रभु अबकें मिलें तौ राखूंगी नयनन समोय ।।२।। राग केदारो मिलहि नागरी ! नवल गिरिधर सुजान सों। कुंज के महल में रसिक नंदलाल कों, भेटि अंक, मन करि बहुत सनमान सों ।। गीत में राग केदार चर्चरी ताल, करत पिय गान, रचि तान बंधान सों। 'छीत-स्वामी' सुघर, सुघर सुंदरि ! रीझि, रिझबत सुघर भेद गति ठान सों ।। राग ललित धन तू धन धन धन तेरो जोवन धन तेरोई जन्म कर्म गुन ।। राजदुलारी रूप सांचे ढरी सब सखियन में उठ चल बन बन ।।१।। हों जु मनावत नहीं मानत छांडव देरी आली ठन गन ।। तानसेन के प्रभु वे बहुनायक तोहि बुलावत हेरी छिन छिन ।।२।।

## मान छूटवे के पद

राग ईमन मान छूट गयोरी निरखत मोहन वदन ।। नयननसों नयनमिलत मुसकात परस्पर गयोहै विरह दुःखकंदन ।।१।। कुंड सुभग कपोल लोल अरुगुण रूपरेख सदन ।। गोविंदप्रभुकी मुखशोभा पर वारफेरडारों कोटिनदन ।।२।। राग केदारो श्यामाजुकोंश्याम मनायके आवत ।। ज्योंज्यों कुंवरचलत हौलेंहौलें त्योंत्यों पाछेंपाछें धावत ।।१।। कबहुंक आगें कबहुंक पाछें नयनसों नयन जुडावत ।। कबहुंक पंथके तनिक तिनकादूर करनकों धावत ।।२।। कबहुंक लक्षणता रहीहैमानकी तातें अधिक छवि पावत ।। जो मदमत्त मातंग मातेतें डरपत रहत महावत ।।३।। अतिशयशंक मोहन अतिआतुर बानिक बहुत बनावत।। परम रहसि गिरिधर रसलीला जन परमानंद गावत ।।२।।

राग बिहाग कौन पत्याय तिहारी झूंठीमीठी बतियां ।। तैसेंई सांवलतन तैसेंई होमन मैंजाने कुंवर सबभतियां ।।१।। मुखकी हमसों मिलवत जीयकी औरनसो तियमारनकों भलेपढे घतियां ।। नयननसों नयन मिलत मान छूटगयो गोविंदप्रभु प्यारी लायलईउर छतियां ।।२।। राग कान्हरो राधाजूकों ललिता मनायलियें आवत हरिजूके कानपरी नूपुरभनक ।। तल्परची किसलयदल हाथरहे प्रतिधुनि हियेभई बाज झनक ।।१।। जब जायमिली लपटानी हरि हियो त्योंत्यों फेरमिटत कांसेकी ठनक ।। सूरदासमदनमोहन श्याम रिझे परस्पर हंसत हंसत पोढे परिअंक खनक ।।२।। राग कान्हरो प्यारी पग हौलेंहौलें धर ।। जैसें तेरे नूपुरन बाजही जागत व्रजको लोग नाहीं सुनायवेयोग हाहारी हठीली नेक मेरो कह्यो कर ।।१।। जौलों बनवीथिनमांहि सघनकुंजकी परछांहि तौलों मुखढांप चलकुंवररसिकवर ।। नंददासप्रभु प्यारी छिनहुं नहोय न्यारी शरदउजियारी जामें जैहो कहूंरर ।।२।। राग कान्हरो रसमें रहत गडीहो रसिकनी ।। कनकवेलि वृषभाननंदिनी श्यामतमालचढी ।।१।। विहरत संगलाल गिरिधरके कौनभांति पढी ।। कुंभनदास लालगिरिधर संग रतिरसकेलि बढी ।।२।। राग कान्हरो नेक गहि लीजैहो प्यारी मेरी बांह ।। मेरी ओटतू जान नपरिहै लेचलहूं तरुतरुकी छांह ।।१।। नीलवसनविधुवदन दुरायो जौलोंहिमकर-किरण प्रकटभई नाहिं ।। व्रजपति कुसुमरावटी पोढे निकटही बटसंकेत माहि ।।२।। राग कान्हरो चतुरयुवती गवनत पिय पैवन ।। गहे उर रसवचन सहचरी के प्रेम मगन भूषणसाजत तन ।।१।। नवशृंगार सब अंगअंगप्रति मोह्यो रतिपति नयनन के अंजन ।। चतुर्भुजप्रभु गिरिधर भुजभरलई सौदामिनि भेटी मानो नवघन ।।२।। राग कान्हरो कुंजभवन गवनकरो तनके संतापहरो पूरणचंदसो दरश दीजे ।। कंजखंजन कोटिकवारों मीनमृग वारडारो ऐसे इन नयननिरख कमल नयन कृतार्थ कीजे ।।१।। जिनको पथ कोउ नपावत निगमहारे गावत कवनतें तुव पथनिहोरत तिनसों हिलमिल सुखलीजे ।। धोंधीके प्रभु रससागर तेरेही रसभीजे ।।२।। राग कान्हरो मिलही नागरी पिय गिरिधर सुजानसो ।। सुन्दरी कनक तन साज भूखन बसन कुंज के महल चलि

बेग तजी मान के ।।१।। तरनि तनया तीर परम रमनीक बन बिहर संग करहि बस सब गुन निधान को ।। राग केदारो सुन श्रवन बड भागिनी निरखी अंग अंग मुरली कल गान कों ।।२।। चतुर्भुजदास प्रभु चतुर चुडारत्न करत अभिलाख तुव अधर रस पानकों ।। अरपी सर्वस्व कुसुम सेज सुख बैठी सखी भेटी सुन्दरी सुघर सांवल सुठानकों ।।३।।

## मान मिलाप के पद

राग केदारो सकल व्रजतियनमें तुही जीनीरी ।। सबको भाग्य भोगवत सबरी निसा लालगिरिधरन संग तोहि बीतीरी ।।१।। केतिक उपमा कहूं रावरी एकमुख श्यामसुंदर गरेंलाय तोहिलीनीरी ।। रसिकप्रीतम महासुख दियो राधिका यातें कमला लयारही हेरीतीरी ।।२।। राग केदारो राधिका आज आनंदमें डोलें ।। सांवरे चंदगोविंदके रसभरी दूसरी कोकिला मधुरस्वर बोलें ।।१।। पहेर तननीलपट कनकहारावली हाथलें आरसी रूपकोतोलें ।। कहत श्रीभट्ट व्रजनारिन नागरबनी कृष्णके सीलकी ग्रंथिका खोल्ले ।।२।। राग केदारो मदनमोहन संग मोहनी ओर कुंजसदन में विलसत नवरंग ।। पियप्यारी प्रभु प्राणपिया दोऊ लटपटात पागे आधे आधे वचन कहेंत माते अनंग ।।१।। परसतनख चिबुकबिंदु चाहे रहत वदतइंदु हँसहँसद्धुरजास कबहुं पियसी उछंग ।। गोविंदप्रभु सरसजोरी नवकिशोर नवकिशोरी गावत मिल राग केदारो मधुरी तानतरंग ।।२।। राग केदारो अरीमें रतन जतन कर पायो ।। उघरे भाग्य आज सखि मेरे रसिकशिरोमणि आयो ।।१।। आवनहीं उठकें दे आदर अपने ढिंग बैठायो ।। मुखचुंबन दें अधरपानकर भेट सकल अंगलायो ।।२।। अद्‌भुतरूप अनूप श्यामको निरखत नयन हियो सिरायो ।। निसदिनयही अपने ठाकुरको रसिक गूढयश गायो ।।३।। राग बिहागरो बैठी पियको वदननिहारें ।। लावण्यरूप पर वारवार तनमनधन जोबन वारें ।।१।। कबहुंक निकट जाय प्रीतम के पगीया पेच सुधारें कबहुंक चुंबनकरन कपोलन हेर चंद्र उजियारे ।।२।। कबहुंक पीवत अधरसुधारस भेटत अंग उघारें ।। रसिकप्रीतम के संगम प्यारी पूरब विरहें

विसारे ॥३॥ राग बिहागरो आज आये मेरे धाम श्याम माई नागरनंदकिशोर ॥ चंदारे तु थिर ह्वे रहियो होंन न पावें भोर ॥१॥ दादुर चकोर पपैया बोलो और बोलो बनके सब मोर ॥ नंददासप्रभु वे जिनबोले वारो तमचर चोर ॥२॥ राग बिहागरो देखरी देख युगलकिशोर ॥ करतकाम कलोलकुंजन स्यामसेत शशि जोर ॥१॥ सेज नभ ग्रह सूचत चहूं दिश परत कहूं कहूं थोर ॥ मानों बादर वसन पसरे विविध पचरंग छोर ॥२॥ कंठपर करधार कबहूं करत आनन और ॥ मानों सोमसरोज छायो वैरी बंधु निहारे ॥३॥ रच्यो व्रजपरिचार झरन प्रेमसुधारसरोर ॥ घटत बढत नवरस षोडस प्रकट रजनी भोर ॥४॥ गयो त्रिभुवन तिमिर उपज्यों इंदु सामलगोर ॥ तृपति नेक नहोत सूरज पीबत नयन चकोर ॥५॥ राग बिहागरो री तू अंगअंग रंग रानी अतिही सयानी पियजिय मनमानी ॥ सोरह कला समानी बोलत मधुरीवानी तेरोमुखदेखें चंदाजोतिहू लजानी ॥१॥ कटिकेहरि कदलीजंघ नासिकापर कीर वारों फलउरोज बिच अधिक सयानी ॥ हरिनारायण स्यामदासके प्रभुसों तेरो नेहरहो जोलों गंगयमुना पानी ॥२॥ राग बिहागरो लालन तेरेही आए आजु सुहावनी राति ॥ तनमन फूली अति अंग न समात निकुंजमें करत वधाए ॥१॥ कोककला अतिनिपुण नागरी रूप देखत मो मन भाए ॥ गिरिधरपिय रसवशकीने कृष्णदास दुलराए ॥२॥ राग बिहागरो तेरेसिर कुसुम विथिर रहे भामिनी शोभादेत मानों नभघनतारे ॥ स्याम अलक छूट रही वदनपर चंदछिप्यो मानो बादर कारे ॥१॥ मोतिनमाल मानों मानसरोवर कुचचकवा दोऊ न्यारे न्यारे ॥ धोंधीके प्रभु तीनलोक वशकीने तें वशकीने आली नंददुलारे ॥३॥ राग बिहागरो आज तेरी फबी अधिक छबि नागरी ॥ मांग मोतिन छटा वदनपर कचलटा नीलपट घनघटा रूपगुण आगरी ॥१॥ नयनकज्जल अणीकवरी लज्जितफणी तिलक रेखा बनी अचल सौभागरी ॥ नासिका शुकचंचु अधर बंधूकसम बीजदाडिम दशन चिबुकपर दागरी ॥२॥ वलय कंकण चूरि मुद्रिका अतिरूरी बेसरि लटक रही कामगुण आगरी ॥ ताटंक मणिजटित किंकिणी कटितटित प्रोत मुक्तादाम कुचकंचुकी लागरी ॥३॥ मूक मंजीरध्वनि

चरण नखचंद्रमा परम सौरभ बढत मृदुल अनुरागरी ।। कहे कृष्णदास गिरिधरन वशकिये करत जबमधुरस्वर ललितवर रागरी ।।४।। राग बिहागरो मदनमोहन लिखि पठई मिलन कों तैं तो फूली-फूली डोलै सौने सदन में। मेरे जानि त्रिभुवन-पद आयौ मेरी आली ! ऐसौ कछु देखियतु आनंद बदन में ।। अंजन की रेखा राजै, कुच-बिच चित्र साजै, ऐहें बेली रेली हेली उचित अदन में ? अरवराय प्यारी देखियतु ऐसी भारी सकुंवारी हंस गति भूल्यौं, नूपुर-नंदन में ।। गोवर्धनधारीलाल, तोही सों रति कौ ख्याल, अधर कौ मधु भावै सुंदर रदन में। 'छीत-स्वामी' स्यामा स्याम, दोऊ अति अभिराम मोतिनि कौ चौक पूरन्यौ लेपन चंदन में ।।

## पोढ़वे के पद

राग बिहाग वे देखो बरत झरोकन दीपक हरि पोढे ऊँची चित्रसारी ।। सुंदरवदन निहारन कारण राख्यो है बहुत यतन कर प्यारी ।।१।। कंठलगाय भुजदे सिरहाने अधर अमृत पीवत सुकुमारी ।। तनमन मिलिरी प्राण प्यारेसों नौतन छबि बाढी अतिभारी ।।२।। कुंभनदास दंपति सौभगसीमा जोरी भली बनी एकसारी ।। नवनागरी मनोहर राधे नवललाल श्रीगोवर्द्धन धारी ।।३।। राग केदारो कुंज महल में मंगल हेरी ।। किसलयदल कुसुमनकी शय्या रची ता पर बिछई पीत पिछोरी ।।१।। ओट्योदूध कनककटोरा और पाननकी भरभर झोरी ।। सघन कुंजमें श्रीगिरिधर विलसत ललितादिक चितवत दृगचोरी ।।२।। होय मनोरथ मेरे जियके दंपति पोढे एक ठोरी ।। कहे श्रीभट ओट्हवै निरखूं क्रीडा करत किशोरकिशोरी ।।३।। राग केदारो सखियन रचि रचि सेज बनाई ।। मणिमय जटितपर्यंक कनकके मुक्तनकी अधिकाई ।।१।। पोढे श्रीसहित सुंदरवर झलमलदीप झरोखन झांई। मानदास बलजाय सहेली मिलेहैं पियाप्रीतम सुखदाई ।।२।। राग बिहाग रायगिरिधरन संग राधिका रानी ।। निबिड नवकुंज नवकुंज शय्यारची नवरंग पियसंग बोलत पिकबानी ।।१।। नीलसारी लालकंचुकी गौरतन माँगमोतिन खचित सुंदर

सुठानी ॥ अर्धघूंघट ललन वदन निरखत रसिक दंपति परस्पर प्रेम हृदयसानी ॥२॥ लाल तनसुख पाग ढरक भ्रूपर रही कुल्हें चंपकभरी सेहरो सुवानी ॥ पाणिसो पाणि गहि उरसों लावत ललन गोविंदप्रभू व्रजनृपति सुरत सुखदानी ॥३॥ राग अडानो आय क्यों नदेखो लाल आपनी प्यारीकी छबि चांदनी में पोढी यातें चन्दहु रह्यो लजाय ॥ मंडल पोहोपमाल नीलांबर अंबर नासिकाको मोतिदेखे उडुगण सकुचाय ॥१॥ आयेहैं निकटलाल रीझ रहे ललचाय वारवार देखदेख मुखकी लेत बलाय ॥ नन्ददास प्रभुपिय अधरन बीरीलाय रसिक बिहारिन प्यारी चौंकपरी मुसकाय ॥२॥ राग केदारो दोऊमिल पोढे कुंजमहल ॥ रत्नजटित पर्यंक बसनमृदु पूरित कुसुम पहल ॥१॥ तैसीय पवन त्रिविध सुखदायक तैसीये दामिनी सहेल ॥ गावतसखी विचित्ररीति गीत रतिकरत माधुरी टहल ॥२॥ राग केदारो पियप्यारी कुंजमहलमें पोढे ॥ अंगसों अंगमिलाय परस्पर अलकें छुटी मौढें ॥१॥ कोककला रसरीत प्रवीणअति एकेकतें दोढे ॥ सूर सुरतसंग्राम जीत दोऊ पीत पिछोरी ओढे ॥२॥ राग केदारो पोढिये पिय कुंवरकन्हाई ॥ नवनव वसन नवल कुसुमावलिहो अपनेकर सेज बनाई ॥१॥ नाहिनसमें सखी काहूको ग्वालमंडली सब बोराई ॥ आसकरणप्रभु मोहननागर नागरिकू ललिता लेआई ॥२॥ राग केदारो आज मैं देखे आलीरी सो दोऊ मिल पोढे बातें करत । वदननिहारत परस कपोलन हँसहँस आंको भरत ॥१॥ कबहुंक रतिकी सुरतभईरी जीयमनो एक लाज धरत ॥ रसिकप्रीतम पियप्यारी परस्पर एकरसह्वै विहरत ॥२॥ राग केदारो कुसुम सेज पियप्यारी पोढे करतहैं रसबतियां ॥ हँसत परस्पर आनंद हुलसत लटकलटक लपटात छतियां ॥१॥ अतिरस रंगभीने रीझेरीरिझवार एकतनमन भई एकमति गतियां ॥ रसिक सुजान निर्भय क्रीडत दोऊ अंग अंग प्रतिबिंबित दोऊन के वसन भतियां ॥२॥ राग केदारो पोढे माई ललन सेज सुखकारी ॥ मणिगण खचित रंगमहल में संग श्रीराधाप्यारी ॥१॥ सहचरी गानकरत मधुरेस्वर श्रवणसुनत

सुरत हितकारी ।। तनमन मगन भये पियप्यारी निरख दास बलहारी ।।२।। राग केदारो पोढे हरि झीनों पटदें ओट ।। संग श्रीवृषभान तनया सरसरसकी मोट ।।१।। मकर कुंडल अलक अरुझी हार गुंजा ताटंक ।। नीलपीत दोऊ अदलबदलें लेत भरभर अंक ।।२।। हृदय हृदयसों अधर अधरसों नयनसों नयन मिलाय ।। भ्रोंह भ्रोंहसों तिलक तिलकसों भुजन भुजन लपटाय ।।३।। मालती और जाई चंपा सुभग जाति बकूल ।। दासपरमानंद सजनी देत चुनचुन फूल ।।४।। राग बिहाग पोढे रंगमहल गोविंद ।। राधिकासंग शरद रजनी उदित पून्योंचंद ।।१।। अनेक चित्र विचित्र चित्रित कोटिकोटिक बंद ।। निरख निरख विलास विलसत दंपति रसफंद ।।२।। मलयचंदन अंग लेपन परस्पर आनंद ।। कुसुम बिजना व्यार ढोरत सजनी परमानंद ।।३।। राग बिहाग चांपत चरण मोहनलाल ।। पलका पोढी कुंवरिराधे सुंदरी नवबाल ।।१।। कबहुं करगहि नयनमिलवत कबहुं छुवावत भाल ।। नंददास प्रभु छबिनिहारत प्रीतके प्रतिपाल ।।२।। राग बिहाग पोढे माई ललन सेज सुखकारी ।। रत्नजटित सारोटा बैठी चांपत चरण वृषभान दुलारी ।।१।। चरणकमल कुच कलशनपर धरें अंगअंग पुलकितव्रजनारी ।। कर कर बीरी खवावत पियकों मधुरवचन बोलत मनुहारी ।।२।। कंठ लगाय भुजदें सिरहानें अधर पान मुखकरत पियारी ।। रीझउगार देत गोविंदप्रभु सुरत तरंग रंगरह्यो भारी ।।३।। राग बिहाग पोढियें घनश्याम बलैया लेहू ।। अतिश्रम भयो वन गौचरावत द्योस परीहै घाम ।।१।। सियरी व्यार झरोकन के मग आवत अतिसीतल सुखधाम ।। आसकरणप्रभु मोहन नागर अंगअंग अभिराम ।।२।। राग बिहाग कुंजभवनमें पोढे दोऊ ।। नंदनंदन वृषभान नंदिनी उपमाको दूजो नहिं कोऊ ।।१।। लाल कुसुमकी सेज बनाई कोककला जानतहै सोऊ ।। रसमें माते रसिकमुकुटमणि परमानंद सिंघद्वारें होऊ ।।२।। राग बिहागरो दंपति पोढेई पोढे रसबतियां करन लागे दोऊ नयना लागगये ।। सेज उजरी चंदाहूते निर्मल तापर कमल छये ।।१।। फूँकत दृग वृषभाननंदिनी झपत खुलत मुरझात

नये ॥ मानो कमलमध्य अलिसुत बैठे सांझसमय मानो सकुच गये ॥२॥ आलस जान आप संग पोढी पिय हिये उरलाय लये ॥ नंददासप्रभु मिली श्यामतमाल ढिंग कनकलता उल्हये ॥२॥ ❀ राग बिहागरो ❀ पोढे प्रेमके पर्यंक ॥ सुरतरसमें मग्ननदोऊ लेत भरभर अंक ॥१॥ कोककला प्रवीन विहरत उठत भावतरंग ॥ कृष्णदासप्रभु गोवर्धनधर जीत मुदित अनंग ॥२॥ ❀ राग बिहागरो ❀ पोढे स्यामाजू सुखसेज ॥ संग श्रीवृषभान तनया रंगरसको हेज ॥१॥ तरणितनया विलुलित कनक मालतीको तेज ॥ शोभाकी सीमाहैं दंपति गोविंददास गनेज ॥२॥ ❀ राग बिहागरो ❀ सुभग शय्यापै पोढे कुंवर रसिकवर रसमसे अंगसंग जाय रैन जागेहैं ॥ शिथिल बसन बिचभूषण अलकछबि सोंये मुखसुखसो लपट उरलागेहैं ॥१॥ झुकझुक आवें नयन आलस झलक रह्यो लटपटी बात कहत अति अनुरागे हैं ॥ सूरदास नंदसुवन तुम्हारो यश जानों प्राणपिया सुखहीमें रस पागेहैं ॥२॥ ❀ राग बिहागरो ❀ सोवत नींद आय गई स्यामहि ॥ महरि उठ पोढाय दुहुनको आपन लगी गृहकामहि ॥१॥ वरजतहैं घरके लोगनकों हरी ये लेले नामहि ॥ गाढेबोल नपावत कोऊ डर मोहन बलरामहि ॥ शिवसनकादिक अंत नहिपावत ध्यावतहैं हिनयासहि ॥ सूरदासप्रभु ब्रह्मसनातन सो सोवत नंदधामहि ॥३॥ ❀ राग बिहागरो ❀ देखत नंदकान्ह अतिसोवत ॥ भूखेभये आप वनभीतर यह कहि कहि मुख जोवत ॥१॥ कह्यो नहीं मानत काहूको आप हठीले दोऊ वीर ॥ वारवार तन पोछत करसों अतिहि प्रेमकी पीर ॥२॥ सेज मगाय लई तहां अपनी जहां स्यामबलराम ॥ सूरदासप्रभुके ढिंग सोये संग पोढी नंदवाम ॥३॥ ❀ राग बिहागरो ❀ जाग उठे तब कुंवर कन्हाई ॥ मैयाकहांगई मो ढिंगतें संगसोवत जान्यो बलमाई ॥१॥ जागे नंद यशोदाजागी बोललिये हरिपास ॥ सोवत झिझक उठे काहेते दीपक कियो प्रकाश ॥२॥ सपने कूदपर्‌यो यमुना दहमें काहूदियो गिराय ॥ सूरस्यामसों कहत यशोदा जिनहों लाल डराय ॥३॥ ❀ राग बिहागरो ❀ पोढे पिय राधिकाके संग ॥ नवकिशोर और नवकिशोरी गौरश्यामल अंग ॥१॥ स्वच्छ सेज सुगंध

सीतल रत्नजटित पर्यंक ।। दशन खंडित वदनबीरी भरे रतिरस रंग ।।२।। उपजी चतुर्भुजदास दुहुंदिश प्रेमसिंधु तरंग ।। रसिकनी अरु रसिकगिरिधर मुदित जीत अनंग ।।३।। राग बिहागरो पोढे रंग रमनीय रमण ।। कुसुम सेज संवार सखीरी कुंज कुसुमन भवन ।।१।। रसिक मुदित अपार सुखनिधि कोककोटिक वदन ।। अति अनंदित मिले दोऊ सुखद सीतल पवन ।।२।। तरणितनया तीरसुभग सरोज चांदनी किरण ।। गाऊं गीत पुनीत सूर प्रभु सुनत श्रवण ।।३।। राग बिहागरो नवलकिशोर नवलनागरिया ।। अपनी भुजा स्यामभुज ऊपर स्यामभुजा अपने उरधरिया ।।१।। करतबिहार तरुण तनया तटस्यामा स्याम उमग रसभरिया ।। यों लपटायरहें दोऊ जन मरकतमणि कंचन जैसे जरिया ।।२।। या उपमाको रविशशि नाहीं कंदर्पकोटिवारनेकरिया ।। सूरदास बलबलजोरी पर नंदनंदन वृषभान दुलरिया ।।३।। राग बिहाग ए दोऊ सुरत सेज सुख सोये ।। करत पान मकरंद प्रिया प्रिय अधर पानरस जोये ।।१।। तनसों तनमन सों मन मिलवत नेंन पानरस भोंहे ।। कृष्णदास प्रभु सुखनिधि विलसत मदन मान सब खोए ।।२।। राग बिहाग गोद लिये बलमोहन दोउ ओढ रजाई बैठी नन्दरानी ।। परदा डारे द्वार द्वारन प्रति रोहिनी धरी अंगीठी आनि ।।१।। मुख देखन गृह-गृह तें आई व्रज ललना गावत मृदु वाणी ।। द्वारकेस हरि हलधर मैया भैया बदन रहे लपटाई ।।२।। राग केदारो तुम पोढौ हों सेज बनाऊं ।। चोवा चरन रहौं पाटीतर मधुरे सुर केदारो गाऊँ ।।१।। सहचरी चतुर सब जुर आई दम्पति सुख नेंनन दरसाऊं ।। आसकरन प्रभु मोहन नागर यह सुख श्याम सदा हौं पाऊं ।।२।। राग केदारो दोउ मिल पोढे सजनी देख अकासी ।। पटतर कहा दीजे गोपीजन नेननकुं सुख रासी ।।१।। श्यामा श्याम संग यों राजत मानुं चंद्र कलासी ।। कुसुम सेज पर स्वेत पीछोरी सोभा देतहे खासी ।।२।। पवन ढोरावत नेन सीरावत ललिता करत खवासी ।। मधुर सुर गावत केदारो परमानंद निज दासी ।।३।। राग केदारो पौढे हरि राधिका के भवन ।। बिजना व्यार करत ललितादिक शीतल आवत पवन ।।१।। सुन के कान शीतल भई

छतियां विरह दुख के दवन ॥२॥ दास कुंभन धर्यो ललिता नाम राधारवन ॥३॥ राग सोरठ कुंजन पधारो राधे रंग भरी रैन ॥ रंग भरी दुलहिन रंग भरे पिया श्याम सुन्दर सुख दैन ॥१॥ रंग भरी सैनी बिछी सेज पर रंग भर्‌यो ऊलहत मैन ॥ रसिक बिहारी पिय प्यारी जु दोऊ मिल करो सेज सुख सैन ॥२॥ राग देश राजत निकुंज धाम ठकुरानी ॥ कुसुम सेज पर प्यारी पोढ़ी राग सुनत मृदु बानी ॥१॥ बैठी ललिता चरन पलोटत लाल दृष्टि ललचानी ॥ पांय परत सजनी के मोहन हित सों हा हा खानी ॥२॥ भई कृपालु लाल पर ललिता दै आज्ञा मुसकानी ॥ आवो मोहन चरन पलोटो जैसें कुंवरि न जानी ॥३॥ आज्ञा दई सखी कों प्यारी मुख ऊपर पट तानी ॥ बीन बजाय गाय कछु तानन ज्यों उपजै सुख सानी ॥४॥ गावन लगे रसिक मन मोहन तब जागी महारानी ॥ उठ बैठी ब्यास की स्वामिनी श्रीवृन्दावन की रानी ॥५॥ राग केदारो सुखद सेज पोढे श्रीवल्लभ संग सुख पोढे श्री नवनीत प्रिया ॥ ज्यों जसुमति सुन नंदनंदन को त्यों प्रमुदित मनमाहि हिया ॥१॥ हुलरावत दुलरावत गावत अंगुरिन अग्र दिखाय दिया ॥ कहत न बने देखत दृग नेनसों दुःख बिसरत सुख होत जिंया ॥२॥ डरप जात बालक संग पोढे हावभाव चित चाव किया ॥ परमानन्ददास गोपीजन सो जस गायो घोख त्रिया ॥३॥ राग बिहाग आंगन में हरि सोये गयेरी ॥ हरें हरें दोऊ जननी मिलिकें सेज सहित तब भवन लहेरी ॥१॥ कहत रोहिणी इन्हे न जगावो खेलत डोलत हार गयेरी ॥ वारंवार जूंभात सांवरो वदन देख विस्मितजु भयेरी ॥२॥ कहत नंद ये कछू न जानें गायनके संग श्रमित भयेरी ॥ सूरदास बलराम श्याम तब व्रजरानी संग पोढ रहेरी ॥३॥ राग बिहाग कान्ह अकेलेई सोवत । सपने में तेरौ मुख देखत तब उठि मारग जोवत ॥ सीतल छांह कदम की बैठे तेरौ ई रूप विचारत । कबहुँक मौन करि रहत ध्यान धरि कबहुंक दृष्टि परत ॥ नव पल्लव सुमन कदम-दल रचि-रुचि सेज संवारत । 'परमानंद' प्रभु तेरे हि कारन अति संचित हरि आरत ॥ राग बिहाग पोढिये लाल लाडिली संगले ॥ नौतनसेज बनी अति सुंदर

बिचबिच सोंधेकी पुट दे ॥१॥ हों करहों चरननकी सेवा जो मेरे नेनन अति सुख व्हे ॥ गोपीनाथ या रंग महलमें जोरी राज करो अविचल व्हे ॥२॥ ॥ राग बिहाग ॥ तुम पोढों हों सेज बनाउं ॥ चांपों चरन रहो पाटोतर मधुरे सुर केदारो गाउं ॥१॥ सहचरी चतुर सबे जुर आइ दंपति सुख नेनन दरसाऊं ॥ आसकरन प्रभु मोहन नागर यह सुख श्याम सदा हों पाउं ॥२॥ ॥ राग अडानो ॥ मेरे लाडिलेहो लाल अजहून नींदकरो पलनां न सोहायतो गोदले सुवाऊं ॥धु.॥ आर छांडो गीत गाऊं हालरो हुलराउ ग्वालनके मुखकी कहानी सुनाउं ॥१॥ कोनधों भवन आये काहूकी नजर लगी भोर ऋषिराज रक्षा बंधाउं ॥ मेरे व्रजइश तुम एसी बुझो न रीस भोरहो कुंवर कान्ह झगुली सिवाउं ॥२॥ ॥ राग सोरठ ॥ भयो हरि पोढनको समयो ॥ इत आइ द्रुमकी परछांइ उत ढर चंद गयो ॥१॥ लटकत चले दोउ कुंज सदन में आलस प्रगंन उठ्यो ॥ रसिक प्रीतम पिय प्यारीजु पोढे यह सुख दृगन लयो ॥२॥ ॥ राग सोरठ ॥ सखीरी पोढे राधारमन । आवागमन नहीं काहूको भामिनीके भवन ॥१॥ सीख मोरी मान हो सजनी प्रात उठ कीजे हो गमन । गोविंद प्रभु पिय केलि करतहै कंस काली दमन ॥२॥ ॥ राग केदारो ॥ कुसुम सेज पिय प्यारी पोढे करत हें रस बतियां । हँसत परस्पर आनंद हुलसत लटक लटक लपटात छतियां ॥१॥ अति रसरंग भीने रीझेरी रीझवार एकताने मन भाइ एक माथें गतियां । रसिक सुजान निर्भय क्रीडत दोउ अंग अंग प्रतिबिंबित दोउनके वसन भतियां ॥२॥ ॥ राग कल्याण ॥ नवल घनश्याम नव नवल बर राधके नवलनव कुंजमें केल ठानि ॥ नवल कुसमावती नवलसिज्यारचि नवल कोकिल किर भृंगगानी ॥१॥ नवल सेहेचरी बृन्द नवलबिनामृदंग नवलरागनी राग तानगानि ॥ नवलगोपीनाथहोत नवल रस रीत येहे नवलरसरीत हरीबंसजानि॥२॥ ॥ राग बिहाग ॥ पोढे कुंज महलदोउ धाम ॥ परम चतुर व्रखभान नंदनी कमल नयन घनस्याम ॥१॥ अति झीने मधुर सुरगावत जुर आई वृजभाम ॥ अरस परस दोउ महा रस भीने परमानंद पूरण काम ॥२॥

# उसीर पोढवे के पद

राग बिहाग पोढिये लाल निवास अटारी ॥ ललितादिक सखियन जुर आई फूल रही फूलवारी ॥१॥ रतन जटित हीरान के कटोरा धरे अरगजा संवारी ॥ विविध सुगंध कपूर आदि से करत लेपन पिय प्यारी ॥२॥ वृंदाबन की सघन कुंज में कुसुम रावटी संवारी ॥ 'सूरदास' बलि बलि जोरी पर तन मन धन सब वारी ॥३॥ राग बिहाग एक सेज पोढे युगलकिशोर ॥ नंद नंदन वृषभान दुलारी सुरत केलिकी उठत झकौर ॥१॥ बींजना ब्यार करत ललितादिक चंदन भर धरा कमोर ॥ हरिनारायन स्यामदासके प्रभु माई बिनती करतहे दोऊ कर जोर ॥१॥ राग बिहाग पिय प्यारीके चरन पलोटत ॥ ललितादिक बीजनां ले आई ताही देखकें घूंघट ओटत ॥१॥ चंदन लेप करत दोऊ अंगन आलिंगन अधरन रस घोटत ॥ नंददास स्याम स्यामा दोऊ पोढे नवनिकुंज कालिंदीके तट ॥२॥ राग बिहाग दोउ मिल पोढे सजनी देख अकासी ॥ पटतर कहादीजे गोपीजन नेंननकों सुखरासी ॥१॥ स्यामा स्याम संग यों राजतहें मानों चंद्रकलासी ॥ कुसुम सेज पर स्वेत पीछोरी सोभा देतहे खासी ॥२॥ पवन दूरावत नेंन सिरावत ललिता करत खवासी ॥ मधुर सुर गावत केदारो परमानंद निजदासी ॥३॥ राग बिहाग कुसुम सेज पोढे दंपति करतहे रस बतियां ॥ त्रिविध समीर सीयरी उसीर रावटी मध खसखाने सींचे सुभग जुडावतहे पिय छतियां ॥१॥ कपोलसों कपोल दीये भुजसोंभुज भीढे कुच उतंग पियराजतहे भतियां ॥ नंददास प्रभु कनक पर्यंक पर सब सुख विलसत केलि करत मोहन एक गत मतियां ॥२॥ राग बिहागरो देखन नंद कान्ह अतिसोवत ॥ भूखे भये आप वन भीतर यहकहिकहि मुखजोवत ॥१॥ कह्यो नहीं मानत काहुको आपहठीले दोऊवीर ॥ वारवार तनपोंछत करसों अतिहि प्रेम की पीर ॥२॥ सेज मगाय लई तहां अपनी जहां स्याम बलराम ॥ सूरदास प्रभु के ढिंगसोई संगपोढि नंदवाम ॥३॥ राग बिहागरो पोढे रंग रमनीयरमण ॥ कुसुमसेज संवार सखीरी कुंजकुसुमन भवन ॥१॥ रसिक मुदित

अपारसुखनिधि कोककोटिक वदन ।। अतिआनंदित मिलेदोऊ सुखद सीतल पवन ।।२।। तरणितनयातीर सुभगसरोज चांदनीकिरण ।। गाऊंगीत पुनीत सूरप्रभु सुनतश्रवण ।।३।। राग बिहागरो पोढे स्याम राधे संग ।। सुरंग पलंग सुरंग बिछोना कसना कसे सुरंग ।।१।। सुरंग सरस रजाइ नीकी ओढी है दोउ अंग ।। रहे हें लपटाय दोउ मिल रसिक निरखत ढंग ।।२।। राग बिहाग सुखद सेज पोढे श्री नटवर चांपत चरण राधिका रानी ।। नवल निकुंज सुखद यमुना तट सीतल पवन चलत सुखदानी ।।१।। विजना ब्यार करत ललितादिक फूलन रचि रचि सेज बिछाई ।। चंदन घसि दोऊ लेपन करि तजी ऋतु पांच ग्रीष्म ऋतु मानी ।। स्याम सुंदरको रसबस कीने रतिपति केलि करत सुखदानी ।।२।। राग बिहाग यह सुनि पिया पें आई ।। उठि धाई अकुलाय अंक भरि मानौं रंक निधि पाई ।।१।। मिलि पौढे संकेत कुंज में नव कुसुमन सेज बनाई ।। 'परमानंद' दास को ठाकुर विविध केलि कीनी मन भाई ।।२।। राग बिहाग पोढीये लाल निवास अटारी ।। ललितादिक सखिन जुर आई फुलि रही फुलवारी ।।१।। रत्न जटित हीरा के कटोरा धरे अरगजा संवारी ।। अति अनुराग परस्पर दोउ करत लेपन पिय प्यारी ।।२।। वृन्दावन की सघन कुंज में कुसुमन रावटी संवारी ।। सूरदास बलबल जोरी पर तन मन धन कीने बलिहारी ।।३।। राग केदारो एक सेज पोढे जुगल किशोर ।। नंदनंदन वृखभान दुलारी सुरतकेलि की उठत झकोर ।।१।। बीजना ब्यार करत ललितादिक चंदन भर भर धरी कमोर ।। हरिनारायण स्यामदास के प्रभु माई बिनति करत हे दोउ कर जोर ।।२।। राग केदारो पिय प्यारी के चरन पलोटत । ललितादिक बिजना ले आई तोय देख कें घूंघट ओटत ।।१।। चंदन लेप करत दोउ अंगन आलिंगन अधरन रस घोटत । नंददास स्याम स्यामा दोउ पोढे नवनिकुंज कालिंदी के तट ।।२।। राग बिहाग रुचिर चित्रसारी पोढे दोउ नवल कुंवर रसिक रस निधान ।। सघन कुंज चहुं ओर उसीर महेल रावटी मध कुसुम सेज रहे प्यारी ने दीयो मान ।।१।। हंसि हंसि अंक भरत रति रस केलि करत हरत मदन बिथा करत रसदान ।। सुख विलास जमुना पुलिन मध

खसखांनो रच्यो एसे व्रजाधीश जू श्याम सुजान ॥२॥ राग बिहाग कुसुम सेज पोढे दम्पति करत रस बतियां। त्रिविध समीर सीरो उसीर रावटी मध खसखाने सींचे सुभग जोरावत हे पिय छतियां ॥१॥ कपोलसों कपोल दिये भुजसों भुज भिड़े कुच उतंग दिये उर राजत हे भतियां । नन्ददास प्रभु कनक पर्यंकपर सब सुख विलसत केलि करत मोहन एक गत मतियां ॥२॥ राग बिहाग सुखद सेज पोढे श्रीनटवर चांपत चरण राधिका रानी ॥ नवल निकुंज सुखद यमुना तट सीतल पवन चलत सुखदानी ॥१॥ विजना ब्यार करत ललितादिक फूलन रचि रचि सेज बिछाई ॥ चंदन घसि दोऊ लेपन करि तजी ऋतु पांच ग्रीष्म ऋतु मानी । स्याम सुंदरको रसवस कीने रतिपति केलि करत सुखदानी ॥२॥

## कहानी के पद

राग बिहागरो नंदनंदन एक कहूं कहानी ॥ रामचंद्र राजादशरथ के जनकसुता याके घर रानी ॥१॥ तातवचनसुन पंचवटीबन छांडचले ऐसी रजधानी ॥ तहां वसत सीता हरलीनी रजनीचर अभिमानी ॥२॥ पहिलीं कथा पुरातन सुनसुन जननी के मुखबानी ॥ लक्ष्मण धनुषधनुष कहिटेरत यशुमति सूर डरानी ॥३॥ राग बिहाग यशुमति सुत पलका पोढावे ॥ अरी मेरो सबदिनको बिछुर्‌यो यों कहिके मधुर स्वरगावे ॥१॥ पोढ़ो लाल कहुं एक कहानी श्रवणसुनत तुमको एक प्यारी ॥ सूरस्याम अतिही मनहरखे पोढरहे सब देत हुंकारी ॥२॥ राग बिहागरो सुन सुत एक कथा कहुं प्यारी ॥ नंदनंदन मन आनंद उपज्यो रसिकशिरोमणि देत हुंकारी ॥ दशरथ नृप जो हते रघुवंशी तिनके प्रकटभये सुत चारी ॥ तिनमे राम एक व्रत धारी जनकसुता ताके घर नारी ॥२॥ तात वचनसुन राज तज्योहै भ्रातासहित चले बनवारी ॥ धावत कनकमृगाके पाछें राजीवलोचन केलिविहारी ॥३॥ रावण हरण कियो सीताको सुन नंदनंदन नींद निवारी ॥ परमानंदप्रभु रटत चांपकर लछमनदै जननी भ्रम भारी ॥४॥ राग बिहागरो रामकृष्ण दोऊ अतिही सोये माई ॥ कहानी

कहत यशोदारोहिणी सुनतहैं दोऊ अतिही मनलाई ॥१॥ जब जान्यो हरि सोय गयेरी तब चुपरही यशोदामाई ॥ सुन नंदभवन में नितही देख देवगण मनहिं सिहांई ॥२॥ जाको नाम रटत शिवशारद शेष सहस्रमुख गीतन गाई ॥ परमानंददासको ठाकुर निजभक्तनके अतिसुखदाई ॥३॥

## विनती के पद

राग कान्हरो ताहीकों सिर नाइये जो श्रीवल्लभसुत पदरज रति होहि ॥ कीजे कहा आन ऊंचेपद तिनसो कहासगाई मोहि ॥१॥ जाके मनमें उग्रभरमहै श्रीविट्ठल श्री गिरिधरदोय ॥ ताको संग विषम विषहूतें भूले चतुर करो मति कोय ॥२॥ सारासार विचार मतोकर श्रुतिविच गोधन लियो है निचोय ॥ तहां नवनीत प्रकटपुरुषोत्तम सहजहि गोरस लियोहै विलोय ॥३॥ उग्रप्रताप देख अपने चक्षु अश्मसार जैसे भिदे न तोय ॥ कृष्णदास सुरते असुरभये असुरते सुरभये चरणन छोय ॥४॥ राग कान्हरो उत्तमकुल अवतार कहा जो श्रीवल्लभकुमार न जान्यो ॥ चरचा न कीनी वरवल्लभकी रचि पाखंडकियो बहुबानो ॥१॥ रसिक कथासुनीनहीं श्रवणन रह्यो विषयरसही लपटानो ॥ सोच मिट्यो नहीं उर अंतरको समझ समझ लाग्यो पछतानो ॥२॥ गिरिगोवर्धन व्रजवृंदावन कबहुं नयनन निरख सिरानो ॥ कृष्णदास प्रभुकी गुणमहिमा अगम निगम नहि जात बखानो ॥३॥ राग बिहाग गायो न गोपाल मनलायो न निवारलाज पायो न प्रसाद साधुमंडली में जायके ॥ धायो न धमक वृंदाविपिनकी कुंजनमें रह्यो न शरण जाय श्रीविट्ठलेशराय के ॥१॥ श्रीनाथजीको देखके छक्यो न छबिली छबि सिंह पोर पर्‍यो नाहीं सीसहू नवायकें ॥ कहें हरिदास तोहि लाजहुं न आई कछु मानस जन्म पायो पै कमायो कहा आयकें ॥२॥ राग बिहाग निशदिन श्रीवल्लभगुण गायो ॥ भक्तकमल प्रकाशित कर निजजनहि सुधा पिवायो ॥१॥ ज्ञानयोग वैराग्य जपतप अन्य भजन भजाये ॥ व्रजाधीश विलास श्रीवल्लभ चरणकमल शिरनाये ॥२॥ राग बिहाग

जय श्रीवल्लभ चरणकमल शिर नाइये ।। परमानंद साकार शशि शरदमुख मधुरी बानी भक्तजनन संग गाइये ।।१।। राजतमछांमध्य सत्त्वके संग ह्वै राखविश्वास प्रेमपंथको धाइये ।। कहत व्रजाधीश वृंदाविपिन दंपति ध्यानधर धर हिये दृगन सिराइये ।।२।। राग बिहाग लीजे मोहि बुलाय श्रीवल्लभ ।। बहुत दिवस दर्शन भए मोकों ताते मन अकुलाय ।।१।। निशदिन अतिही क्षीण होत तन सुधबुध गई भुलाय ।। गोविंद प्रभु तुम्हारे दर्शनविन छिनभर कल्प विहाय ।।२।। राग बिहाग भजिये श्रीवल्लभवर चरण ।। सकल पतित उद्धारणकारण प्रकट किये अवतरण ।।१।। गूढ श्रीभागवत प्रतिपदार्थ प्रकटकरण ।। आसरो कररहें जेजन मिटे जन्मनिमरण ।।२।। अखिललीला प्रेमसंयुत दिखाये गिरिधरण ।। रसिक विनतीकरे मानो चरणकमल अनुशरण ।।३।। राग बिहाग श्रीवल्लभ कृपाकीजे मोहि ।। ज्ञानभक्ति विवेक बलको आसरो नहिं कोइ ।।१।। यहवलहौं चितविचारुं छिनक दृगभर जोइ ।। देहो दर्शन कर निजदासनके दुखखोई ।।२।। राग बिहाग भरोसो श्रीवल्लभहीको भारी ।। काहे कोरें मनभटकत डोलत जोचाहत फलकारी ।।१।। श्रीविठ्ठलगिरिधर सबबालक जगत कियो उद्धारी ।। पुरुषोत्तमप्रभु नाममंत्रदे चरणकमल सिरधारी ।।२।। राग बिहाग भरोसो श्रीवल्लभहीको राखो ।। सगरेकाज सरेंगे छिनमें इनहीं के गुणभाखो ।। निशदिन संगकरो भक्तनको असमर्पित नहीं चाखो ।। वल्लभ श्रीवल्लभपदरजबिन औरतत्त्व सब नाखो ।।२।। राग बिहाग वल्लभहीको भरोसो मोहि ।। अन्यदेवको जानूँ नमानूं इनको आसरो खरोसो।।१।। समझविचार देख मन मेरे वारवार कहों तोसों ।। रसिक सुधासागर को छांडकें क्यों पीवत जल ओसो ।।२।। राग बिहाग जिन श्रीवल्लभरूप नजान्यो ।। जननी उदर आय कहाकीनो जन्म अकारथ मान्यो ।।१।। सकल वेदविधि सकल धर्मनिधि करत जो वेद वखान्यो ।। कहा भयोजो सकल शास्त्र पढ्यो नाहक फाट्यो पान्यो ।।२।। अग्निरूप प्रभु सकल शिरोमणि देत

अभयपद दान्यो ।। रसिकप्रीतम के चरणभजत जेते सकल पदारथ जान्यो ।।३।। राग बिहाग भूल जिनजाय मन अनत मेरो ।। रहों निशदिवस श्रीवल्लभाधीश पद कमलसों लाग बिन मोलको चेरो ।।१।। अन्य संबंधते अधिक डरपतहों सकलसाधन हुंतें कर निवेरो ।। देह निजगेह यह लोक पर लोंकलों भजो सीतलचरण छांड अरुझेरो ।।२।। इतनी मांगत महाराज करजोरकें जैसोहों तैसो कहाऊं तेरो ।। रसिक शिरकरधरो भवदुख परिहरो करोकरुणा मोहि राखनेरो ।।३।। राग बिहाग जैसोहूं तैसो तिहारो श्रीवल्लभ अबजिन छांड देहो मोहिकरते ।। बांह गहेकी लाजमनधरहो नाहिं भरोसो मोहि साधन बलते ।।१।। तुम तज और ठोर नहिं मोको जासों जाय कहों दुखभरतें ।। रसिकशिरोमणि श्रीवल्लभप्रभु राखो मोहि चरणशरण भव डरतें ।।२।। राग बिहाग आसरो एक दृढ श्रीवल्लभाधीशको ।। मानसी रीतकी मुख्यसेवाव्यसन लोकवैदिक त्याग शरण गोपीशको ।।१।। दीनता भावउद्‌बोध गुणगानसों घोष त्रियभावना उभय जाने ।। कृष्णनाम स्फुरे पल न आज्ञा टरें कृति वचन विश्वास मनचित्त आने ।।२।। भगवदीय जान सतसंगको अनुसरे नादेखें दोष और सत्य भाखें ।। पुष्टिपथ मरम दस धरम यह विधि कहे सदाचित्तमें श्रीद्वारकेश राखें ।।३।। राग बिहाग श्रीविट्ठलजूके चरणकमल पर सदा रहे मन मेरो ।। सीतल सुभग सदा सुखदायक भवसागरको बेरो ।।१।। रसना रटतरहों निसवासर प्रभु पावन यश तेरो ।। सगुणदास इतनी मांगत है भृत्यभृत्य-कोचेरो ।।२।। राग बिहाग देखोगे कब मेरी और ।। श्रीवल्लभ निजदीन जानकें करुणाकर नयननकी कोर ।।१।। कहिहो कब वचनामृत सीतल मोतन मुरक दास तुमोर ।। कबहुं काढ लेहो भव जलते बूडेकूं कर गहि भुजजोर ।।२।। यह निश्चय जान्यो जिय अपने नाहीं मोसम सेवाचोर ।। विषयवासना वसत निरंतर करत बिचार यही निशभोर ।।३।। चरणशरण अब आय गहेहो मनक्रमवचन सबनसो तोर ।। रसनिधि जानों सोइ कीजै तुमविन हमही और नहिंठोर ।।४।। राग बिहाग गायो न गोपाल मनलायो

नरसाललीला सुनी न सुबोधिनी नसाधु संग पायोहै ॥ सेव्यौ नस्वादकरी घरीआधीघरी हरी कबहु न कृष्णनाम रसना रटायोहै ॥ वल्लभ श्रीविट्ठलेशप्रभुकी शरणजाय दीनहोय मतिही न सीस न नवायोहै ॥ रसिककहें वारवार लाजहु न आवे तोहि मनुष्यजन्म पायो पै कहांलो कमायो है ॥२॥ राग बिहाग श्रीवल्लभ लीजे मोहि उबारी ॥ या कलिकाल कराल विषमते लागतहै डर भारी ॥१॥ तृष्णा तरंगउठत भवसिंधुते डारतकिछे उछारी ॥ करमभंवर मदमत्सर मोकुं दावेदेत पतारी ॥२॥ कामक्रोध और लोभ मोह जलजंतु रहे मुखफारी ॥ चरणांबुज नौका नहीं सूझत बीच अविद्यापहारी ॥३॥ कहों कहांलग करों बीनती विधि नजात विस्तारी ॥ चरणरेणु सेवकको सेवककहतहैं रसिक पुकारी ॥४॥ राग बिहाग अरे मन श्रीवल्लभगुण गाय ॥ वृथाकाल काहेकों खोवत वेदपुराण पढाय ॥१॥ श्रीगिरिराजधरण पैवेकों नाहिन और उपाय ॥ रसिक सदा अनन्यहोयके चित इत उत न डुलाय ॥२॥ राग बिहाग मनरे तू श्रीवल्लभ कहिरे जो करत कामना जियमें सो ततक्षण तू लहिरे ॥१॥ सकलसुकृत को यह फल और कछूनहि रुचि चहिरे ॥ रसिकप्रीतम ऐसे प्रभुको चरणशरण नित गहिरे ॥२॥ राग बिहाग कहो मन श्रीकृष्णाशरणं ॥ ममके मिलें अधिक अमृतसुख ऐसे हैं दुखहरणं ॥१॥ करो निवेदन सुरत निपटकर परमानंद करणं ॥ सेवा सावधान होय साधो अंबर भोग आभरणं ॥२॥ दीसत और कछूनहीं कबहूं भवसागर तरणं ॥ श्री विट्ठलगिरिधरलालको गहो कमलचरणं ॥३॥ राग बिहाग अरे मन समझ सोच विचार ॥ भक्तिविन भगवंत दुर्लभ कहत निगम पुकार ॥१॥ साधुसंगती डारपासा फेर रसना सार ॥ पर्‍यो अबके पाव पूरणजीत भावें हार ॥२॥ भाखसत्रह सुन अठारह पंच ही कूँमार ॥ दूरते तज तीनकाने चतुर चौक निहार ॥३॥ काम क्रोध जंजाल भूल्यो ठग्यो ठगरी नार ॥ सूरहरिके पदभजनविन चल्यो दोऊ करझार ॥४॥ राग बिहाग जब लग यमुना गाय गोवर्धन जबलग गोकुल गाम गुसांई ॥ जबलग श्रीभागवतकथारस तबलगि कलियुग नाहीं ॥१॥ जबलगि सेवारस नंदनंदनसों

प्रीति लगाई ॥ परमानंद तासों हरिक्रीडत श्रीवल्लभचरण जिनपाई ॥२॥ राग बिहाग श्रीवल्लभ भलेबुरेदोउ तो तेरे ॥ तुमहीं हमारी लाजबडाई विनति सुनो प्रभुमेरे ॥१॥ अन्यदेव सब रंकभिखारी देखे बहुत घनेरे ॥ हरिप्रताप बल गिनत नकाहूं निडर भये सबचेरे ॥२॥ सबतज तुम शरणागत आये दृढकर चरणगहेरे ॥ सूरदासप्रभु तुम्हारे मिलेतें पाये सुखजु घनेरे ॥३॥ राग बिहाग मोहि बलहै दोऊ ठोरको ॥ एक भरोसो हरिभक्तनको दूजो नंदकिशोरको ॥१॥ मनसा वाचा और कर्मणा नाही भरोसो औरको ॥ छीतस्वामी गिरिधरन श्रीविठ्ठल वल्लभकुल सिरमौरको ॥२॥ राग बिहाग मधुर व्रजदेश वश मधुरकीनो ॥ मधुर गोकुलगाम मधुर वल्लभनाम मधुर विठ्ठलभजन दान दीनो ॥१॥ मधुर गिरिधरन आदि सप्ततनुवेणु नाद सप्तरंध्रन मधुर रूपलीनो ॥२॥ मधुर फलफलित अति ललित पद्मनाभप्रभु मधुर अलि गाबत सरस रंगभीनो ॥३॥ राग बिहाग कियो गोपालको सब होय ॥ जो जाने पुरुषार्थ आपनो अतिकर झूठो सोय ॥१॥ दुखसुख लाभअलाभ सहज गति ताहि न मरिये रोय ॥ जो कछुलेख लिख्यो नंदनंदन मेंट सके नहिं कोय ॥२॥ उद्यम साधन जंत्रमंत्र विधि ये सब डारो धोय ॥ परमानंददासको ठाकुर चरणकमल चितपोय ॥३॥ राग बिहाग यामें कहा घटेगो तेरो ॥ नंदनंदन कर घर को ठाकुर आप होय रहो चेरो ॥१॥ भलीभई जो संपति बाढी बहुत कियो घर घेरो ॥ सुत बनिता बहुयूथ संकेले वैभवभयो जु घनेरो ॥२॥ कहूं हरिकथा कहूं हरि सेवा कहूं भक्तनको डेरो ॥ सूर समर्पणकरो स्यामको यह सांचो मत्त मेरो ॥३॥ राग बिहाग विनती करत मरतहौं लाज ॥ नखसिखलौं मेरी यह देहीहै पापकी जहाज ॥१॥ और पतित आवत नआंखनतर देखत अपनो साज ॥ तीनोपन भरवार निवाहे तोऊन आयोवाज ॥२॥ पाछे भयो न आगे ह्वेहै सब पतितन सिरताज ॥ नर्कहु भजे नाम सुन मेरो पीठ दई यमराज ॥३॥ अबलो मैं सुने तुम जे तारे ते सब वृथा अकाज ॥ सांचो विरद सूरकों तारे लोकनिलोक अवाज ॥४॥ राग बिहाग श्रीवल्लभप्रभु

अतिदयाल दीजै दरशन कृपाल दीनजान कीजै अपनो दोष जिन विचारो ॥ होंतो अपराध भर्‌यो धर्मसबै परिहर्‌यो कीयो न कछु भलोकाज जाहि चितधारो ॥१॥ दूरिपरें पलपल दुखपावतहों प्राणनाथ तुमहीते होई है प्रभूरसिक कोनिवारो ॥ मेरो पकर्‌योहै हाथ बांध्यो पद कमलसाथ नाथहों अनाथ ताही भूल जिन विसारो ॥२॥ राग बिहाग श्रीवल्लभमधुराकृति मेरे ॥ सदां वसो मन यह जीवनधन सबहिनसोंजु कहतहूं टेरे ॥१॥ मधुरवचन और नयनमधुर भ्रोंह युगमधुर अलकन की पांत ॥ मधुरमाल अरु तिलक मधुर अतिमधुर नासिका कही नजात ॥२॥ अधरमधुर रसरूपमधुर छबिमधुर मधुर दोऊ ललित कपोल ॥ श्रवणमधुर कुंडलकी झलकन मधुर मकर दोऊ करत कलोल ॥३॥ मधुर कटाक्ष कृपारसपूरण मधुरमनोहर वचन विलास ॥ मधुर उगारदेत दासनकों मधुर विराजत मुख मृदुहास ॥४॥ मधुरकंठ आभूषणभूषित मधुर उरस्थल रूपसमाज ॥ अतिविशाल जानु अवलंबित मधुरबाहु परिरंभण काज ॥५॥ मधुरउदर कटिमधुर जानुयुग मधुर चरणगति सब सुखरास ॥ मधुर चरणकी रेणु निरंतर जनम जनम मांगत हरिदास ॥६॥ राग बिहाग श्रीवल्लभ के चरणशरण गहि क्यों नरहे मनमें निश्चयधर ॥ विन साधनहीं आयरहेंगे हियेयशोमतिसुत करुणाकर ॥१॥ काहेकों मटकत डोलत है क्यों नरहें अतिआनंदसों भर ॥ रसिक विश्वास आस फलकी कर अनायास भवसागरको तर ॥२॥ राग बिहाग हमारे श्रीविट्ठलनाथ धनी ॥ भवसागरते काढमहाप्रभु राखि शरण अपनी ॥१॥ जाको नाम रटत निशिवासर शेषसहस्रफणी ॥ छीतस्वामी गिरिधरन श्रीविट्ठल त्रिभुवन मुकुटमणि ॥२॥ राग बिहाग श्रीवल्लभ महासिंधु समान ॥ सदा सुमरत होत तिनकूं अभयपदको दान ॥१॥ कृपाजल भरपूर रह्योतहां उठत भाव तरंग ॥ रत्नचौदह सब पदारथ भक्तिदशविध संग ॥२॥ पुष्टिमारग बडीनौका चलत अनआयास ॥ ढिंग न आवे बुद्धि आसुरी मगरमीन निरास ॥३॥ सेतुबांध्यो प्रकटह्वे सुतविट्ठलेश कृपाल ॥ भयो मारगसुगम सबको चलत नेक न आल ॥४॥ पुष्टिरसमय

सुधाप्रकटी दईसुर निजदास ॥ असुरवंचेंमनुज मायामोहे सुखमृदुहास ॥५॥ छांडसागर कौन मूरख भजे छिल्लर नीर ॥ रसिक मनते मिटी अविद्या परसचरण समीर ॥६॥ राग बिहाग तरेटी श्रीगोवर्धनकी रहिये ॥ नित्यप्रति मदनगोपाललालकेचरण कमल चितलैये ॥१॥ तनपुलकित व्रजरज में लोटत गोविंदकुंडमें न्हैये ॥ रसिकप्रीतम हितचितकी बातें श्रीगिरिधारी जीसों कहिये ॥२॥ राग बिहाग विराजें श्रीवल्लभमहाराज श्रीगोकुलगाम ॥ विराजे श्रीगोपीनाथ श्रीविट्ठल भक्तजन पूरणकाम ॥१॥ श्रीगिरिधर गोविंद श्रीबालकृष्ण गोकुलनाथ अभिराम ॥ श्रीरघुपति यदुपति घनश्यामल पुरुषोत्तम प्रभुनाम ॥२॥ राग बिहाग नमो नमो श्रीभागवत पुराण ॥ महातिमिर अज्ञानबढ्यो जब प्रकटभये जग अद्भुतभान ॥१॥ उदित सुभग श्रीशुक उदयाचल छिपे ग्रंथ उडुगण नसमान ॥ जागे जीव निशिसोये अविद्या कीयो प्रकाश विमल विद्यान ॥२॥ फूले अंबुज वक्ताश्रोताहिमकर मंदमदन अभिमान ॥ छूटगये कर्मनके बंधन मिट्यो मोह सूझे सुस्थान ॥३॥ दरस्यो भक्तिपंथ अनुरागी सूझे शब्द स्वरूप निदान ॥ देखत नहीं उलूक सकामी यद्यपि दिनकर हैं विद्यमान ॥४॥ राजत एक महा सर्वोपर बढ्यो प्रताप और न समान ॥ दामोदर हित सुरमुनि वंदित जयजय जय श्रीकृपानिधान ॥५॥ राग बिहाग सुख निधि श्रीगिरिराज तरेटी ॥ कुंड कुंड जल अचवत न्हावत पुनि पुनि रज में लोटी ॥२॥ धरत भोग बेजर की रोटी ऊपर मेवा टेंटी ॥ रसिकदास जन श्रीवल्लभ पद परस सकल दुख मेटी ॥२॥ राग बिहाग सदा मन श्रीगोकुल में रहिये ॥ गोविंद घाट छोंकर की छैयां बैठक दरसन पैये ॥१॥ यमुना पुलिन सुभग वृन्दावन गिरि गोवर्द्धन जइये ॥ घर घर भक्ति भागवत सेवा तन मन प्राण बिकैये ॥३॥ श्रीविट्ठलनाथ विराजत निशदिन चरन कमल चित लइये ॥ श्रीवल्लभ पद कमल कृपाते इनके दास कहैये ॥३॥ राग बिहाग श्री यमुना पान करतही रहिये ॥ वृज बसवो नीको लागतहै लोक लाज दुख सहिये ॥१॥ श्री वल्लभ श्री विट्ठल गिरिधर गावत सब सुख पैये ॥ व्रजपति मुख

अबलोक महासुख दरसत द्रग न अघैये ॥२॥ राग बिहाग कृपा तो लालन जू की चहिये ॥ इने करी करेसो आछी अपने सिरपर सहिये ॥१॥ अपनो दोष विचार सखीरी उनसो कछू न कहिये ॥ सूर अब कछू कहवे की नाहीं श्याम शरण व्हे रहिये ॥२॥ राग बिहाग श्रीवल्लभ रोम रोम रस झलके ॥ भरे समुद्र अनेकन रस के कृपा लहेर ऊर हलके ॥१॥ जे जे जा रस के अधिकारी भरत संभारी न छलके ॥ रामदास पद कमल महारस चाखन को जीय ललके ॥२॥ राग बिहाग हों हरिदासवर्यपें बारी ॥ शीतल झरना झरत निरंतर पवन सुगंध परम सुखकारी ॥१॥ वृंदावन के परम मुकुटमणि भक्तजननके अति हितकारी ॥ नंदनंदन क्रीडत निशवासर संग शोभित वृषभान दुलारी ॥२॥ नित श्रीवल्लभ विठ्ठल राजत कोटि कला प्रगटे अवतारी ॥ भजनानंद देह निजदासन पूरण काम त्रयताप निवारी ॥३॥ जे जन क्षणभर रहत तरेहटी जाकी कथा को कहे विस्तारी ॥ ज्ञान वैराग्य ताकी रज चाहत संग डोलतहे मुक्ति विचारी ॥४॥ पूरण भाग्य पुलिंदिननको विमल कथा शुक व्यास विचारी ॥ रसिकदास जन यह मांगत है जन्म जन्म इनको अनुसारी ॥५॥ राग बिहाग धन्य हरिदासवर्य सुखरासी ॥ नंदनंदन को परम रमणस्थल भक्तजनन के प्रेयप्रकाशी ॥१॥ पूरण भाग्य पुलिंदिनीन के अकथकथा गुण सकल निवासी ॥ श्रीवल्लभ वल्लवी नित्य क्रीडत रसिकदास जन दरशन प्यासी ॥२॥ राग बिहाग यह तुमसों मांगों गिरराई ॥ जन्म ही जन्म तरहटी वसिवो व्रजरज तजि चित अनत न जाई ॥२॥ हरि सेवा रसपान करों और श्रीभागवत रसना मुखगाई ॥ रसिकदास यह जनकी प्रतिज्ञा श्रीवल्लभ कुल नित्य सिरनाई ॥२॥ राग बिहाग सुखनिधि श्रीगिरिराज तरेटी ॥ कुंड कुंड जल अचवत न्हावत पुनि पुनि रजमें लोटी ॥१॥ धरतभोग बेजरकी रोटी उपर मेवा टेंटी ॥ रसिकदास जन श्रीवल्लभ पद परस सकल दुःख मेटी ॥२॥ राग बिहाग यह मांगो संकरषणवीर ॥ चरणकमल अनुरागनिरंतर भावेमोहि भक्तनकी भीर ॥१॥ संगदेहुतो हरिभक्तनको वासदेहो श्रीयमुनातीर

श्रवणदेउतो हरिकथारस ध्यानदेहुतो स्यामशरीर ॥२॥ मनकामनाकरो परिपूरण पावनमज्जन सुरसरीनीर ॥ परमानंददासको ठाकुर त्रिभुवननायक गोकुल-पतिधीर ॥३॥ राग बिहाग यह मांगोंगोपीजनवल्लभ ॥ मानुषजन्म और हरिसेवा व्रजबसवोदीजै मोहिसुल्लभ ॥१॥ श्रीवल्लभकुलकोहोंहूंचेरो वैष्णवजनकोदास कहाऊं ॥ श्रीयमुनाजल नितप्रतिन्हाऊं मनक्रमवचन कृष्णगुण गाऊं ॥२॥ श्रीभागवत श्रवणासुनूंनित इनतजचित्तकहूं अनत न लाऊं ॥ परमानंददास यह मांगत नितनिरखोंकबहूं न अघाऊं ॥३॥ राग बिहाग यह मांगोंयशदोनंदनंदन ॥ वदनकमल मेरमनमधुकर नित्यप्रति छिनछिन पाऊंदरशन ॥१॥ चरणकमलकी सेवादीजै दोउजनराजत विद्युल्लताघन ॥ नंदनंदन वृषभाननंदिनी मेरेसर्वस्वप्राणजीवनधन ॥२॥ व्रजबसवो यमुनाजलपीवौ श्रीवल्लभ कुलको दास येहीपन ॥ महाप्रसादपाऊं हरिगुणगाऊं परमानंददास दासीबन ॥३॥

## वैष्णवनके नित्यनेमके पद

राग गोरी श्रीगोवर्धनवासी सांवरे लाल तुमबिन रह्यो नजाय हो ॥ व्रजराज लडेंते लाडिले ॥ध्रु.॥ बंकचिते मुसिकायकें लाल सुंदरबदन दिखाय ॥ लोचनतलफें मीन ज्यों लाल पलछिन कल्पविहाय ॥१॥ सप्तक स्वरबंधानसों लाल मोहन वेणुबजाय ॥ सुरत सुहाई बांधिके नेंक मधुरें मधुरें गाय ॥२॥ रसिक रसीली बोलनी लाल गिरिचढ गैयां बुलाय ॥ गायबुलाईं धुमरी नेंक ऊंचीटेर सुनाय ॥३॥ दृष्टिपरें जादिवसते लाल तबते रुचें नआन ॥ रजनी नींद नआवही मोहि विसर्‍यो भोजन पान ॥४॥ दरसनकों नयना तपें लाल वचन सुननकों कान ॥ मिलिवेकों हियरा तपे मेरे जियके जीवनप्रान ॥५॥ पूरणशशि मुखदेखकें लाल चितचोंट्यो वाही ओर ॥ रूप सुधारस पानकें लाल सादर कुमुद चकोर ॥६॥ मनअभिलाषा ह्वैरही लाल लागत नयनन मेख ॥ इकटक देखे भावते प्यारो नागर नटवर भेख ॥७॥ लोकलाज कुलवेदकी लाल छांड्यो

सकलविवेक ।। कमलकली रवि ज्योंबढें लाल छिनछिन प्रीतिविशेष ।।८।। कोटिकमन्मथ वारने लाल देखत डगमगी चाल ।। युवती जनमन फंदना लाल अंबुज नयनविशाल ।।९।। कुंजभवन क्रीडाकरो लाल सुखनिधि मदनगोपाल ।। हम श्रीवृंदावनमालती तुम भोगी भ्रमर भूपाल ।।१०।। यह रटलागी लाडिले लाल जैसे चातक मोर ।। प्रेमनीर वरषाकरो लाल नवघन नंदकिशोर ।।११।। युगयुग अविचल राखिये लाल यह सुख शैलनिवास ।। श्रीगोवर्धनधर रूपपै बलजाय चतुर्भुजदास ।।१२।। ❀ राग गोरी ❀ मुरली धुनि भईवनमें आछो बन्योहै बिहारी लालहो ।। अपने धामते सुन निकसी मिल उमगचली व्रजबालहो ।।१।। एकतरुणी नवनेह रंगी ताहे जननी दिखावे त्रास ।। सरिता उमगी क्योंथंभे जाहि हरि दरसन की प्यास ।।२।। एक न निकसन पावही वाको हरिसों अधिक सनेह ।। ज्यों भुजंग तज कंचुकी अटक रही गृहदेह ।।३।। जैसें घाम सूरजमिले ऐसें भई लालमें लीन ।। शोभासागर सांवरो व्रजयुवतिन कें दृगमीन ।।४।। कहां कहों इनकी दशा रची स्यामकें रंग ।। श्रीकृष्णरूप दीपकभयो तामें उड-उड परत पतंग ।।५।। द्रुमवेली सरसीसबे जहां वरखत कुसुमसुवास ।। कंजकली फूलीअली भयो उदयकर रविप्रकाश ।।६।। कहि भगवान हित राम रायप्रभु राजत सखीन समेत ।। मानो घन घेर्‌यो दामिनी तामें मोरमुकुट छबि देत ।।७।। ❀ राग गोरी ❀ यशुमति सुत मोहि दीजें दरसन ।। तनमन प्राणतपतहैं निशदिन छिन एक होत बराबर वरसन ।।१।। सियरो होंतों पहलें हृदयो अबतो अंखियां लागी तरकन ।। रसिकप्रीतम विनती चितधरिये तुमसे सरस कहां लगे अरसन ।।२।। ❀ राग गोरी ❀ चरणशरण व्रजराजकुंवरके ।। हम विधि अविधि कछू नहिं समझत रहत भरोसे श्रीमुरलीधरके ।।१।। रहत आसरें व्रजमंडलमें भुजाछांह श्रीगिरिवरधरके ।। प्रभुमुकुंद माधो सुखदाई हाथबिकांने श्रीराधावरके ।।२।। ❀ राग गोरी ❀ गिरिधरलाल शरण तेरे आयो शरण तेरे आयो महापद पायो ।। चरणकमलकी सेवादीजे चेरो कर राखो घरजायो ।।१।। बलछल बांध पताल पठायो हरि यशुमति के आप बंधायो ।। कंचनलंक बिभीषण

दीनी हरि गोरसको दान लगायो ॥२॥ जे नर विमुख भये गोविंदसो जन्म जन्म बहुते दुःखपायो ॥ श्रीभटके प्रभु दियो अभयपद यम डरप्यो तब दास कहायो ॥३॥

राग गोरी कृष्ण श्रीकृष्ण शरणंमम उच्चरे ॥ रैनदिन नित्यप्रति सदा पलछिन घडी करतविध्वंस जन अखिल अघ परिहरे ॥१॥ होत हरिरूप व्रजभूप भावेसदा अगम भवसिंधुकूं विना साधन तरे ॥ रहत निशदिवस आनंद उरमें भर्‌यो पुष्टिलीला सकलसार उरमें धरे ॥२॥ रमा अज शेष सनकादि शुक शारदा व्यास नारद रटें पलक मुख ना टरें ॥ लालगिरिधरनकी महिमा अतुल जगमगी शरण कृष्णदास निगम नेति नेति करें ॥३॥

राग गोरी और कोऊ समझेसो समझे हमकूं इतनी समझ भली ॥ ठाकुर नंदकिशोर हमारे ठकुरायन वृषभानलली ॥१॥ श्रीदामा आदि सखा स्यामके स्यामासंग ललितादि अली ॥ व्रजपुर वास शैलवन विहरत कुंजनकुंजन रंगरली ॥२॥ इनके लाड चाहूं सुखसेवा भाववेल रसफलन फली ॥ कहे भगवान हित रामरायप्रभु सबनतें इनकी कृपा भली ॥३॥

राग गोरी कृष्ण श्रीकृष्ण मनमाहि गति जानिये ॥ देह इंद्रिय प्राण दारागारादि वित्त आत्मा सकल श्रीकृष्ण की मानिये ॥१॥ कृष्ण मम स्वामीहों दास मनवचकरम कृष्णकर्ता येही सदा जिय आनिये ॥ कृष्णदासनि नाथ हरिदासवर्य धरचरण रजवल्लभाधीश मन सानिये ॥२॥

राग गोरी व्रजवासी जाने रस रीति ॥ जिनके हृदय और नहीं भावत नंदसुवन पदप्रीति ॥१॥ सर्वभाव सर्वात्मानिवेदन रहत हैं त्रिगुणातीत ॥ करत महलमें टहल निरंतर जात याम युगवीत ॥२॥ जिनकी गति और नहीं जाने बिच जवनिका भीति ॥ कोई एकलहे दासपरमानंद गुरुप्रसाद प्रतीति ॥३॥

राग गोरी गोपी प्रेमकी ध्वजा ॥ जिन गोपाल कियो अपने वस उरधर स्यामभुजा ॥१॥ शुक मुनि व्यास प्रशंसा कीनी ऊधो संत सरांहीं ॥ भूरिभाग्य गोकुलकी वनिता अतिपुनीत भवमाहीं ॥२॥ कहा भयोजो विप्रकुल जनम्यो जेहि हरिसेवा नाहीं ॥ सोई कुलीन दासपरमानंद जो हरि सन्मुख धांई ॥३॥

राग गोरी सेवा मदनगोपालकी मुक्तीहूते मीठी ॥ जाने रसिक उपासक जिन शुकमुखहूंते दीठी ॥१॥ चरणकमलरज मनबसी सबधरम बहाई ॥ श्रवण

कथन चिंतनबढ्यो पावन यशगाई ॥२॥ वेदपुराणनि रूपके रस लियो निचोई ॥ पानकरत आनंद भयो डार्‌यो सब थोई ॥३॥ परमानंद विचारके परमारथ साध्यो ॥ रामकृष्ण पद प्रेमसो लालच रस बाध्यो ॥४॥

## वैराग्य के पद

॥ राग बिहाग ॥ मनरे तू भूल्यो जन्म गमावे ॥ खबर न परी तोको सिरऊपर काल सदा मंडरावे ॥१॥ खानपान अटक्यो निशिवासर जिभ्यालाड लडावे ॥ गृहसुखदेख फिरत फूल्योसो सुपने मन भटकावे ॥२॥ कै तूं छांड जायगो इनको कै तोहिं यही छुडावें ॥ ज्यों तोता सेवर पर बैठ्यो हाथ कछू नहि आवे ॥३॥ मेरी मेरी करत बावरे आयुष वृथा गमावे ॥ हरिहि तू विसार विषयसुख विष्टा चितमन भावे ॥५॥ गिरिधरलाल सकल सुख दाता सुन पुराण सब गावे ॥ सूरदास वल्लभ उरअपने चरणकमल चितलावे ॥५॥ ॥ राग बिहाग ॥ बिन गोपाल नहीं कोई अपुनो ॥ कौन पितामाता सुतघरनी यह सब जगत रैनको सपनो ॥१॥ धनकारन निसदिन जग भटकत वृथा जन्म योंही सब खपनों ॥ अन्त सहाय करै नहिं कोई निश्चय काल अग्निमुख झपनों ॥२॥ सब तज हरिभज युगल कमलपद मोहन निगड चरणनते कपनों ॥ कहत दास श्रीवल्लभविठ्ठल श्रीगिरिधर रसना मुखजपनों ॥३॥ ॥ राग बिहाग ॥ सब दिन होत न एक समान ॥ प्रगटतहै पूरव की करनी तजमन सोच अज्ञान ॥१॥ कबहुंक राजाहरिश्चंद्र गृहसंपति मेरुसमान ॥ कबहुँक दासश्वपच गृह ह्वैके अंबर हरत मसान ॥२॥ कबहुंक युधिष्ठिर राजसिंहासन अनुचर श्रीभगवान ॥ कबहुँक द्रुपद सुता कौरववश केशदुशासन तान ॥३॥ कबहुंक दुलहे बन्योबराती चहुंदिश मंगलगान ॥ कबहुँक आप मृतकह्वै जातहै करलंबे पदपान ॥४॥ कबहुंक रामसहित जानकी विचरत पुष्पविमान ॥ कबहुंक रुदनकरत फिरतहै महावन उद्यान ॥५॥ जननी जठर जन्यो जादिनते लिख्यो लाभ अरु हान ॥ सूरदास यतन सब झूठे बिधिके अंकप्रमान ॥६॥ ॥ राग बिहाग ॥ देखो दुर्मति यह संसारकी ॥ हरिसो हीराछांडि हाथतें बांधत पोट विकारकी ॥१॥ झूठे सुखमें भूलरहेहैं सुधविसरी

करतारकी ॥ नाना विधके करमकमाए खबर नहीं शिरभारकी ॥२॥ कोऊ खेती कोउवणिज चाकरी कोऊ आशा हथियारकी ॥ अंधधुंध फिरत दशोंदिश फूटीआँख गँवारकी ॥३॥ नर्कजानके मारग चाले सुनसुन विप्र लबारकी ॥ अपने हाथ गले में डारत फांसी मायाजारकी ॥४॥ बार बार पुकार कहतहों सुनहों सज्जन हारकी ॥ सूरदास यह विनस जायगी देह छिनकमें छारकी ॥५॥

राग बिहाग भजन बिन जीवत जैसें प्रेत ॥ मनमलीन घरघर प्रति डोलत उदर भरनके हेत ॥१॥ कबहूं पावत पापको पैसा गाड धूरमें देत ॥ सेवा नहिं गोविंदचंदकी भवन नीलको खेत ॥२॥ मुख कटुवचन करत परनिंदा संतनकुं दुखदेत ॥ सूरदास बहुत कहाकहूं डुबे कुटुंबसमेत ॥३॥

राग बिहाग मोसम कौन कुटिल खलकामी ॥ कहा छिपी तुमसों करुणानिधि सबके अंतरयामी ॥१॥ तुम तनुदियो तुम्हें विसरायो ऐसो लोनहरामी ॥ तिहारे चरणछांडि विमुखनकी नितउठि करत गुलामी ॥२॥ जहां सतसंग होत तहां आलस अधमन संग विश्रामी ॥३॥ भरभर उदर विषयमद पीवत जैसे सूकर ग्रामी ॥४॥ पापीपतित अधम परनिंदक सब पतितन सिरनामी ॥ सूर पतित तुम पतित उधारण सुनिये श्रीपतिस्वामी ॥४॥

राग बिहाग मन रे स्यामसो कर हेत ॥ कृष्णनामकी वार करले तो बचे तेरोखेत ॥१॥ मनसुवा तनपींजरा हो तासूं बांध्यो तेरोहेत ॥ कालरूपी मंझारडोले अब घडी तोहे लेत ॥२॥ विषय विषय रसछांडदेरे उतर सायर सेत ॥ सूर श्रीगोपाल भजले गुरुबताये देत ॥३॥

राग बिहाग प्रभु सेवा को खरच न लागे ॥ अपनो जन्म सुफल कर मूरख क्यों डरपे जो अभागे ॥१॥ उदर भरन को करो रसोई सोई भोग धरे ॥ महाप्रसाद होय घटे न कनिका अपनो उदर भरे ॥२॥ मीठो जल पीवन को लाये तामें झारी भरे ॥ अंग ढांकन कु चहिये कपड़ा तामे साज करे ॥३॥ जो मन होय उदार तुम्हारे वैभव कछु बढावो ॥ नहिं तो मोर चंद्रिका गुंजा यह सिंगार धरावो ॥४॥ अत्तर फूल फल जो कछु उत्तम प्रभु पहेले ही धरावो ॥ जो मन उत्तमपें प्रभु कु धर सब खावो ॥५॥ कर संबंध स्वामी सेवक को चल मारग की चलेवस्तु रीति ॥ पूरन

प्रभु भाव के भूखे हाव अंतर की प्रीति ॥६॥ यामे कहा घट जाय तिहारो घर को घर में रहि है ॥ वल्लभदास होय गति अपनी भलो भलो जग कहि है ॥७॥ ॥ राग कान्हरो ॥ प्रथम हरी उधोसुं इम कही। काम क्रोध मद लोभकुं जीते सो मेरो भक्त सही ॥ प्रथम.॥ शत्रु मित्रको सम करि जाने मनकी तृष्णा गई। सदा वैराग्य रहे उर अंतर काहूसुं हांसी करत नहीं ॥ प्रथम.॥ विषय वासना रहत न जाके ये ही विचार रहत मन माही ॥ सूरदास हुं वसुं हृदेमें आनंद सागर रहत मही ॥ प्रथम. ॥ ॥ राग कान्हरो ॥ हरिके जनकी अति ठकुराई। देवराज ऋृषिराज महामुनी देखत रहे लजाई ॥ दृढ विश्वास कीयो सिंहासन तापर बैठे भूप। हरिगुण विमल छत्र शिर राजत शोभा परम अनूप ॥ निस्पृह देशको राज करे ताको लोक परम उच्छाह ॥ कामक्रोध मद लोभ मोह तहां भये चोरते शाह ॥ बने विवेक विचित्र पोरीया ओसर कोउ न पावे ॥ अरथ काम तहां रहत दूर दूर मोक्ष धर्म शिरनावे ॥ अष्टसिद्धि नवनिधि द्वारे ठाडे कर जोरे उर लीनी ॥ छडीदार वैराग्य विनोदी छटको बाहर कीनी ॥ हरिपद पंकज प्रेम परत रुचि ताहीसों रंग राते ॥ मंत्री ज्ञान ओसर नहीं पावत करत बात सकुचाते ॥ माया खल व्यापे नहीं कबहु जोयारीते जाने ॥ सूरदास यह नरतन पायो गुरु प्रसाद पहेचाने ॥ ॥ राग बिहाग ॥ पिया बिन चंद लग्यो दुःख देन। तारा गिनत गिनत हुं हारी पलकन लागे चेन ॥ पिय बिन. ॥ कहां वे जमुना पुलिन मनोहर कहां वे सुखकी रेन ॥ सूरदास प्रभु तिहारे दरस बिन विरहनिकुं नहीं चेन ॥ पिया बिन. ॥ ॥ राग बिहाग ॥ व्रजके बिरही लोग विचारे ॥ बिना गोपाल ठगे से ठाडे अति दुरबल तन हारे ॥१॥ यह मथुरा काजरकी रेखा जो निकसे सो कारे ॥ जो कोई कान्ह कान्ह कहि बोलत अखियन बहत पनारे ॥२॥ मात जसोदा पथ निहारत निरखत सांझ सवारे ॥ परमानंद स्वामि बिन एसे जेसे चंद्र बिन तारे ॥३॥

## अथ माहात्म्य के पद

॥ राग बिहाग ॥ जो रस रसिक कीर मुनि गायो ॥ सो रस रटत रहत निशिवासर

शेष सहस्रमुख पार न पायो ॥१॥ गावत शिव शारद मुनि नारद कमलकोश वासी न चखायो ॥ यद्यपि रमारहत चरणनतर निगम न अगम अगाध बतायो ॥२॥ तरणितनयातट बंसीवट निकट वृंदाविपिन वीथिन बहायो ॥ सो रस रसिकदास परमानंद वृषभानसुता कुचबीच बसायो ॥३॥ राग बिहाग जाके मन बसे स्यामघन माधो ॥ सो सुंदर सोधनीदक्ष सोई सोई कुलीन सोई साधो ॥१॥ सो पंडित सोगुणपुंज सोई जो गोपाल कहिगावे ॥ कोटिप्रकार धन्य सोई नर जो नहिं हरि विसरावे ॥२॥ सो नर सूर वेदविद्यारत सो भूपति सोई ज्ञानी ॥ परमानंद धन्य सोई समरथ जिहिं लाल चरण रति मानी ॥३॥ राग बिहाग कमल नयन कमलापति त्रिभुवन के नाथ ॥ एक प्रेमतें सबबने जो मन होवे हाथ ॥१॥ सकल लोककी संपदा ले आगें धरिये ॥ भक्तिविना माने नाहि जो कोटिक करिये ॥२॥ दास कहावन कठिनहै जोलों चितराग ॥ परमानंदप्रभु सांवरो पैयत बडभाग ॥३॥ राग बिहाग जापर कमलकांत ढरै ॥ लकरी घासको बेचनहारो तासिर छत्र-धरै ॥१॥ विद्यानाथ अविद्या समरथ जो कछु चाहे सोई करै ॥ रीतेभरे भरेपुन ढारे जो चाहेतो फेरभरे ॥२॥ सिद्धपुरुष अविनाशी समरथ काहूते न डरे ॥ परमानंद यह संपति मनतें कबहू नाहिन टरै ॥३॥ राग बिहाग दास अनन्य मेरो निजरूप ॥ दरशनमात्र ताप त्रय नासत छुडावै गृहबंधन कूप ॥१॥ मेरीबांधी भक्तछुडावें भक्तकी बांधी छुटे न मोही ॥ कबहुंक लेके मोहि कुंबांधे तहां कहाकैसे उत्तरहोही ॥२॥ मैं निर्मल सबजगतको जीवन मेरोजीवन मेरेदास ॥ परमानंद ताहिके हृदये जांके हृदये प्रेमप्रकाश ॥३॥ राग बिहाग श्रीपति दुःखित भक्तअपराधें ॥ संतनद्वेष दोहिताकरके आरत सहित जोमोहिआराधें ॥१॥ सुनो सकल वैकुंठनिवासी सांचीकहूं जिनमानों खेदें ॥ तिनपर कृपा करूं कैसी विधपूजन पांव कंठकूं छेदें ॥२॥ जनसो वैर प्रीतमोसोंकर मेरोनाम निरंतर लैहैं ॥ सूरदास भगवंत वदत यों मोहि भजें पर यमपुर जैहैं ॥३॥ राग बिहाग तिहारे चरणकमलको महात्म शिवजाने के गौतमनारी ॥ जटाजूट मध्यपावनी गंगा अजहूं लियें फिरत

त्रिपुरारी ।।१।। के जानें शुकदेव महामुनि के जाने सनकादिक चार ।। के जाने विरोचनकोसुत सर्वस्वदे मेटी कुलगार ।।२।। के जाने नारदमुनिज्ञानी गुप्तफिरत त्रैलोक मंझार ।। के जाने हरिजन परमानंद जिनके हृदय बसत भुजचार ।।३।। राग बिहाग किन तेरो गोविंद नाम धर्यो ।। लेन देन के तुम हितकारी मोते कछु न सर्यो ।।१।। विप्र सुदामा कियो अयाची तन्दुल भेट धर्यो ।। द्रुपदसुता की तुम पति राखी अम्बर दान कर्यो ।।२।। सान्दीपन के तुम सुत लाये विद्या पाठ पढ्यो ।। सूर की बिरियां निठुर हुई बैठ कानन मूंद रह्यो ।।३।। राग बिहाग वृन्दावन एक पलक जो रहिये ।। जन्म जन्म के पाप कटत है कृष्ण कृष्ण मुख कहिये ।।१।। महाप्रसाद और जल जमुना को तनक तनक भर लहिये ।। सूरदास बैकुंठ मधुपुरी भाग्य बिना कहां ते पैये ।।२।। राग सारंग जहँ-जहँ चरन-कमल माधौ के तहीं-तहीं मन मोर। जे पद-कमल फिरत वृंदावन गो-धन संग किशोर ।। चिंतन करों जसोदानंदन मुदित सांझ अरु भोर। कमल-नयन घनश्याम सुभग- तन पीतांबर के छोर ।। इष्ट देवता सब बिधि मेरे जे माखन के चोर ।। 'परमानंददास' की जीवनि गोपिनि पट झकझोर ।।

## आश्रय के पद

राग बिहाग धनि धनि वृंदावन के वासी ।। निशिदिन चरणकमल अनुरागी स्यामास्याम उपासी ।।१।। अष्टमहासिद्धि द्वारे ठाडी रमाचरणकी दासी ।। या रसको जो मरम नजानो जाय बसो किन कासी ।।२।। भस्मलगाय गरे लिंगबांधो निशिदिन फिरो उदासी ।। परमानंददासको ठाकुर सुंदर घोषनिवासी ।।३।। राग बिहाग हरिरस तबहीं तो जाय पैये ।। स्वाद विवाद हर्ष आतुरता इतने दंडजो सहिये ।।१।। कोमलवचन दीनता सबसों सदां प्रफुल्लित रहिये ।। गए नहिं सोच आएनहिं आनंद ऐसे मारग वहिये ।।२।। ऐसी जो आवे जियमाहीं ताके भाग्यकी कहा कहिये ।। अष्टसिद्धि सूरस्यामपैं जो चहिये सो लहिये ।।३।। राग बिहाग लगेजो श्रीवृंदावनको रंग ।।

मनके मैल सबे छुट जैहे अरु विषयनकों संग ॥१॥ राधावर सेवत अरु सुमरत उपजत लहर तरंग ॥ सखीभाव सहज होय छिनमें पुरुषभाव होय भंग ॥२॥ देह अभिमान सबै छुट जैहै मनसा होय अपंग ॥ परमानंद नंदनंदन भज मिटिहैं कोटि अनंग ॥३॥ राग बिहाग जोलों हरि अपुनपो न जनावे ॥ तोलों सकलसिद्धान्त मारगको पढें सुनें नहिं आवे ॥१॥ सुनब्रह्मा नारायण मुखतें नारदकूं सिखदीनी ॥ नारद कही वेदव्याससों आप खोज नहि कीनी ॥२॥ वेदव्यास औषधकी न्याई पढ तन ताप मिटायो ॥ ताते पढे मुनीशुकदेव परीक्षितकूं जो सुनायो ॥३॥ यद्यपि सुनी नृप व्रजकीलीला दशम कही शुकदेवा ॥ तोपैं सरवात्मभाव न उपजो तातें करी न सेवा ॥४॥ श्रीभागवत अमृतदधि मथके श्रीवल्लभ सर्वोत्तम ॥ कर आवरण दूर निजजनके हाथदिये पुरुषोत्तम ॥५॥ सेवासाज शृंगारसुभग रसखान पान प्रकटायो ॥ वृंदावन निकुंजकी लीला हरि जीवन स्वाद चखायो ॥६॥ राग बिहाग रे मन चिंता न कर पेटकी ॥ हलन चलन यामें कछुनाहिन कलम लिखीजो ठेटकी ॥१॥ जीवजंतु जेते जलथलके तिन निधि कहा समेटकी ॥ समे पाए सबहिनकूँ पहुँचे कहां बाप कहा बेटकी ॥२॥ जाको जितनो लिख्यो विधाता ताको पहुँचे तेटकी ॥ सूरदास ताहे क्यों ना सुमरे जोहै ऐसो चेटकी ॥३॥

राग बिहाग तुम तज कौन सनेही कीजे ॥ सदा एकरसको निबहतहै जाकी चरणरज लीजे ॥१॥ यह नहोय अपनी जननीते पिताकरत नहीं ऐसी ॥ बंधुसहोदर सेवन करही मदनगोपाल करतहैं जैसी ॥२॥ सुख अरु लोक देतहै व्रजपति अरु वृंदावन वास बसावत ॥ परमानंददासको ठाकुर नारदादि पावन यशगावत ॥३॥ राग बिहाग माधो या घर बहुत धरी ॥ कहन सुननको लीलाकीनी मर्यादा न टरी ॥१॥ जो गोपिनको प्रेम न होतो अरु भागवतपुराण ॥ तो सब ओघडपंथहि होते कथत गमैया ज्ञान ॥२॥ बारह वरषको भयो दिगंबर ज्ञानहीन संन्यासी ॥ खानपान घरघर सबहिनके भस्मलगाय उदासी ॥३॥ पाखंडदंभ बढ्यो कलियुगमें श्रद्धाधर्म भयो लोप ॥ परमानंद वेदपढ

बिगर्‌यो कापर कीजे कोप ॥४॥ राग बिहाग भज सखी भाव भाविक देव ॥ कोटि साधनकरो कोऊ तोऊ न माने सेव ॥१॥ धूमकेतु कुमारमाँग्यो कौन मारगनीत्ति ॥ पुरुषते त्रियभाव उपज्यो सबै उलटी रीति ॥२॥ बसन भूषण पलट पहरे भावसों संजोय ॥ उलटमुद्रा दईअंकन वरणसूधे होय ॥३॥ वेदविधिको नेमनाहीं प्रीतिकी पहिचान ॥ व्रजवधू वशकिये मोहन सूर चतुर सुजान ॥४॥ राग बिहाग अघ संहारिनी अधम उधारिनी कलिकाल तारिनी मधुमथन गुणकथा ॥ मंगल वधायिनी प्रेमरसदायिनी भक्ति अनुपायिनी होत जिय सर्वथा ॥१॥ मथवेद कथग्रंथ कहत व्यासादि मुनि अजहुं अधुनीक जन कहतहूँ मतियथा ॥ परम पदसो पानकरो गदाधर गान अन्य आलापतें जात जीवनवृथा ॥२॥ राग बिहाग श्रीविट्ठलनाथ नाम रसअमृत पानसदा तू कर रे रसना ॥ जोतू अपनो भलो चाहिते यह व्रत जिय धर रे रसना ॥१॥ या रसके प्रतिबंधक जेते तिनते तू अतिडर रे रसना ॥ हरिकों विमलयश गावतनिरंतर जातविघ्न सबटर रे रसना ॥२॥ वारंवार कहतहूं तोसों यह मारग अनुसर रे रसना ॥ छीतस्वामी गिरिधरन श्रीविट्ठल आनंद उरमें भर रे रसना ॥३॥ राग बिहाग अचंभो इन लोगनको आवे ॥ छाँडगोपाल अमितरस दुर्लभ अमृत माया विषफलभावे ॥१॥ निंदित मूढमलय चंदन कों कपिकें अंगलगावे ॥ मान सरोवर छाँड हंससर काकसरोवर न्हावे ॥२॥ पगतर जरत नजानत मूरख परघर जाय बुझावे ॥ लखचौरासी स्वांग धरे धर फिर फिर यमहिं हँसावे ॥३॥ मृगतृष्णा संसार जगत सुख तहातें मन न दुरावे ॥ सूरदास भक्तनसों मिलकें हरियश काहे न गावे ॥४॥ राग बिहाग कैसें कीजे वेद कह्यो ॥ हरिमुखदेखत विधिनिषेधको नाहिन ठौर रह्यो ॥ दुःख को मूल सनेह सखी री सो उर पैठ रह्यो ॥ परमानंद प्रेमसागर में गिरयो सो लीन भयो ॥२॥ राग बिहाग हरिदासनते गर्व न करवो ॥ यह अपराध परमपद हूंते उतर नरकमें परवो ॥१॥ हूं धनवंत कुलवंत यह भिक्षुक यह कबहूं मनमें नहीं धरवो ॥ गजसिंहासन अश्वपालकी ताते भवसागर नहीं तरवो ॥२॥ खानपान एँडाय

चलत है ऐसें कारज बहु न अनुसरवो ।। सूरदास यह सत्य कहतहूं भक्तन संग उबरवो ।।३।। राग बिहाग हौं वारी इन वल्लभियन पर ।। मेरे तनको करों बिछौना सीस धरों इनके चरणनतर ।।१।। नेहभरी देखो मेरी अँखियन मंडलमध्य विराजत गिरिधर ।। यह तोमें मोहि प्राणजीवनधन दानदिये श्रीवल्लभवर ।।२।। पुष्टिप्रकार प्रकटकरवेको फिर प्रकटे श्रीविट्ठल वपुधर ।। रसिक सदा आस इनकी कर वल्लभियनकी चरणरज अनुसर ।।३।। राग केदारो हरि यह कौन रीतिठटी ।। दासदुःखी सुखहोत विमुखन बडीलाज घटी ।।१।। वेदपंथ श्रीभागवतकी बांधी मेंड़ कटी ।। देख यह विधि सबन की मति भजनतें उचटी ।।२।। करकुसंग सुसंग जाके विषयजायघटी ।। कुमति पावस कूपजलतें आवतें उबटी ।।३।। करणवारे कहा भूमी जातगतिनहटी ।। कहा फलकी चीठी सबकी एकहीबेर फटी ।।४।। चरणपर जे रहत तिनकी होत मति उलटी ।। कहा गीता भागवतमें कही बात नटी ।।५।। हमारी यहवेर मनसा दानहूंतें हटी ।। रसिक कहि-कहि जीभ तुमसो छुलत छुलत छटी ।।६।। राग केदारो चकईरी चल चरणसरवोर जहाँ नहीं प्रेमवियोग ।। जहां भ्रमनिशा होतनहीं कबहूसो सायर सुखयोग ।।१।। सनकसे हंसमीन शिवमुनि जनन खरविप्रभा प्रकास ।। प्रफुल्लित कमलनिमिष नहीं शशिडरगुंजत निगम सुवास ।।२।। जिहिं सरसुभगमुक्ति मुक्ताफलविमल सुकृतजल पीजै ।। सो सर छांडक्योंकुबुद्धि विहंगम इहां रही कहां कीजे ।।३।। जहां श्रीसहस्रसहित हरिक्रीडत शोभित सूरजदास ।। अब न सुहाय विषयरस छिल्लर वह समुद्र की आस ।।४।। राग केदारो भृंगीरी भज स्याम कमलपद जहाँ नहीं निशिको त्रास ।। जहां विभा धनुसमान प्रभा नखसो वारिज सुखरास ।।१।। जहाँ किंजल्कभक्ति नवलक्षण ज्ञानकर्म रस एक ।। निगम सनक शुक शारद नारद मुनिजन भृंग अनेक ।।२।। शिव विरंचि खंजन मनरंजन छिनछिन करत प्रवेश ।। अखिल लोक तिहिं वास सुकृत जल प्रकटित स्याम दिनेश ।।३।। सुन मधुकर भ्रम तज कुमुदिनी

गण राजीववरकी आस ।। सूर प्रेमसिंधुमें प्रफुल्लित चल जहां करे निवास ।।४।।
राग केदारो सुखनिधि श्रीगोकुलको बसवो ।। छिनछिन वारंवार सखीरी श्रीवल्लभसुत निरख हुलसवो ।।१।। गृहनगृहन प्रतिकुंजनकुंजन पियसंग केलि परस्पर हँसवो ।। ऐसीकनक कसौटी ऊपर सुभग प्रेमवलित तन कसवो ।।२।। यमुनातीर महागजसों मिलि भावें अंगोअंग परसवो ।। दंपतिरूप रासि सुखसीमा माधोदास यहौ रंगरसवो ।।३।। राग केदारो माधो यह प्रसादहौंपाऊं ।। तुव भृत्य भृत्य भक्त परिचारक दासको दास कहाऊं ।।१।। ये परमारथ मोहि गुरुसिखयो श्यामाश्यामकी पूजा ।। यह बासना बसो जियमेरे देव न देखूं दूजा ।।२।। परमानंददास तुम ठाकुर यह नातो जिनटूटो ।। नंदकुमार यशोदानंदन हिलिमिलि प्रीत न छूटो ।।३।। राग केदारो तज मन हरि विमुखनको संग ।। जाके संगहै कुबुद्धि उपजत परत भजनमें भंग ।।१।। खरकूं कहा अरगजा लेपन मर्कट भूषण अंग ।। कागहि कहा कपूर चुगायेत श्वान न्हवाये गंग ।।७।। कहा भयो पयपान कराये विष नहिं तजत भुजंग ।। सूरदासप्रभु कारी कामर चढत न दूजोरंग ।।३।। राग बिहाग मेरी मति राधिका चरण रज में रहो ।। ये ही निश्चय कर्यो अपने मन में क्यों भूलि के कोऊ कछु और वह फल लहो ।।१।। कर्म कोऊ करौ ज्ञान हूं अनुसरो मुक्ति के बल करी वृथा देही दहो ।। रसिक वल्लभ चरणकमल युग शरण पर आस धरि महा यह पुष्टि पथ फल लहो ।।२।। राग बिहाग नाच्यो बहुत गोपाल अब मैं नाच्यो बहुत गोपाल ।। काम क्रोध को पहर चोलना कंठ विषय की माल ।।१।। तृष्णा नाद करत घट भीतर नाना विधि के ताल ।।। भामर होय मन रह्यो पखावज ऊपर हंस गति चाल ।।२।। माया कटि को फेंटा बांध्यो लोभ तिलक दियो भाल ।। महा मोह के नूपुर पहरे निन्दा शब्द रसाल ।।३।। कोटि कला कछुक दिखलाई जल थल शुद्ध भेजाल ।। सूरदास की सबै अविद्या दूर करो नंदलाल ।।४।।
राग बसंत श्रीवल्लभ करुणा करके मोहे कीजे निज दासन को दास ।।

पूरण काम हैं नाम तिहारो इतनी मो मन पूर हो आस ।।१।। तिहारी कृपा कटाक्ष तें दुर्लभ पाइये सुलभ करों व्रजवास ।। तिहारे सेवकजन संगत विनु निशदिन मो मन रहत उदास ।।२।। श्रीवृन्दावन गिरि गोवर्द्धन श्री यमुना तट करूं निवास ।। श्रीहरि वदन चंद सु विमल यश गान करत सुर सदा अकास ।।३।। कृपा निधान कृपा कर दीजे जो सब लोक मिटे उपहास ।। दीजे दिव्य देह गोविंद को इन द्रग निरखों अनुदिन रास ।।४।। राग बिहाग बडो धन हरिजनको हरिनाम ।। बिनु रखवार चोर नहि चोरे सोवत है सुखधाम ।।१।। दिन-दिन बढत सवायो दूनो घटत नहि कछु दाम ।। सूरदास हरिसेवा जाके पारसको कहा काम ।।२।। राग बिहाग रे मन मूरख जन्म गमायो ।। कर परपंच विषयरस पीनो स्यामसरन नहीं आयो ।।१।। यह संसार फूल सेंवरको सुन्दर देख लोभायो ।। चाखन लग्यो रुई उड गई हाथ कछु नहीं आयो ।।२।। कहा भयो अबके पछताने पहेले पाप कमायो ।। कहत सूर श्रीकृष्ण नाम बिन सिर धुन-धुन पछतायो ।।३।। राग बिहाग सदा मन श्री गोकुल में रहिये ।। गोविन्दघाट छोंकरकी छैयां बैठक दरसन पैये ।।१।। जमुना पुलिन सुभग वृन्दावन गिरि गोवर्धन जइये ।। घर घर भक्ति भागवत सेवा तन मन प्रान बिकैये ।।२।। विट्ठलनाथ विराजत निसदिन चरनकमल चित लईये ।। श्रीवल्लभपद-कमलकृपातें इनके दास कहैये ।।३।। राग सोरठ भाव बिन माल नफा नहि पावे । भाव बिन भक्तन को सर्वस्व भाव ही हृदय बढावे ।। भाव भक्ति सेवा सुमरन कर पुष्टिपथ में धावे। सूर भाव सबही को कारन भाव ही में हरिभावे ।। राग कान्हरो हरिजन संग छिनुक जो होई । कोटि स्वर्ग सुख कोटि मुक्ति सुख ए सम लहे न कोई ।। महद भाग्य पुन्य संचित फल कृष्ण कृपा व्हे जाके । सूरदास हरिजन पद महिमा कहत भागवत ताके ।। हरिजन.।। राग कान्हरो प्रभु जनपर प्रसन्न जब होही ।। तब वैष्णव जन दरसन पावे पाप रहे नहिं कोई ।।प्रभु.।। हरि लीला उर आवे ताके सकल वासना नासे ।। सूरदास निश्चे विचार करी हरि स्वरूप जब

भासे ।। प्रभु.।। राग कान्हरो गिरिधर जब अपनो करि जाने ।। ताको मन भक्तनकी सेवा भक्त चरन रज सदा लुभाने ।। गिरिधर.।। भक्तन में मति भक्तनसु गति हरिजन हरि एक करि माने ।। कृष्णदास मन वचन कर्म करि हरिजन सगे हरि उर आने ।।गि.।। राग कान्हरो हरि भजन में कहा चहियत हे नेन श्रवन रसना पद पान। एसी संपत जान मिली हो जो न भजे ताकुं बडी हान ।। हरि.।। पूरब पुन्य सुकृतनको फल अति दुर्लभ मानुष अवतार। पाप पुन्य जाते जानि परत है उपजत हे ब्रह्मज्ञान ।। हरि.।। गुरु कर्णधार पोत पद अंबुज भवसागर तरवेके हेत ।। प्रेरक पवन कृपा केशवकी परमानंद चित चेत ।। हरि.।। राग कान्हरो एसो भक्त तरे और तारे। परम कृपाल परम दीनबंधु शरण ग्रहे वाको दुःख निबारे। सबसुं मैत्री शत्रु नहीं कोई वादविवाद सबनसुं हारे। हरिको नाम जपे निशवासर संशय शोक संताप निवारे ।। काम क्रोध ममता मद मत्सर माया मान मोह भ्रम टारे। निरलोभी निरवैर निरंतर कृष्ण रूप जब हृदय विचारे। हरि को नाम सुने अरु गावे कृष्ण भजन करी दुःखहि दुरावे। सूरदास हरिरूप मग्न भये गुन ओगुन का पर नव आवे ।। राग कान्हरो जा दिन संत पाहुने आवत। तीरथ कोटि स्नान करन फल एसो दर्शन पावत। प्रफुल्लित वदन रहत निशदिन प्रति चरण कमल चित्त लावत। मनकर्म वचन ओर नहि जाचत सुमरत ओर सुमरावत। मिथ्यावाद उपाधि रहित व्हे विमल विमल जस गावत। सूरदास प्रीतिकर तिनसो हरिकी सुरत करावत। राग बिहाग भजन बिन केते गये झखमार। माला तुलसी तिलक बनाये ठग खायों संसार।। भजन. ।। नित्य प्रति उठी नाहावे धोवे करत आचार विचार। दया धर्मकी बात न जाने प्रेम जैसे चंडाल ।। भजन.।। परमारथमें नव रहे ठाडो करत लोभकी लार। सूरदास भगवंत भजन बिन जनम जनम नर्क द्वार।।भजन.।। राग बिहाग आये मेरे नंद नंदनके प्यारे। माला तिलक मनोहर बानो त्रिभुवन के उजियारे ।। आये.।। हृदय कमल के मध्य विराजत श्रीव्रजराज दुलारे। प्रेमसहित वसत उर

मोहन, नेकहुँ टरत न टारे ।।आये. ।। कहाजानुं को पुन्य उदेभयो मेरे घरजु पधारे । परमानंद करत नोछावर, बारबार तन बारे ।।आये.।। राग कान्हरो उद्धव एसो भक्त मोहि भावे ।। सबतज आश निरंतर मेरी जन्म कर्म गत गावे । कथनी कथत निरंतर मेरी सेवामें चित्तलावे । मृदुहास नेन जलधारा करतल ताल बजावे ।। जहां जहां भक्त मेरो चरण धरत हे तहां तीरथ चलि आवे । वे रज ले में अंग लगाउं कोटि ब्रह्मांड सुख पावे ।। मेरी मूरत उनके हृदय में वे मेरेउर आवे । बल बल जाऊं श्रीमुख वाणी सूरदास जस गावे ।। राग कान्हरो निज वैष्णवजन मेरो अंग । छांड कुटुंब ओर सकल पदारथ सेवाकरे फिर करे सतसंग।। ध्यानधरे मेरो गुण गावे नई उपजावे तान तरंग । निश्चय चित्त होय दृढकर बेठे कथा सुने मन अतही उमंग ।। मम गुण सुन सुख सिंधु बढ उर प्रेमनीर वहे मानो गंग । प्रेम पुंजमें मग्न होयके निशदिनही बरसावत रंग ।। मीन न छांडे जलकुं जेसे उनके मेरे ऐसे प्रसंग । सूरदास मलीन महाजल गंगा मिलि होय जात हे गंग।। राग बिहाग मिलें कब श्रीवल्लभ के प्यारे । जिनके हाव भाव प्रीति रस तीहूं लोकते न्यारे । कृपा समुद्र भरे अंग अंगमें उछलत रसको धारे । माला तिलक विराजे अद्भुत करुनामय अनुहारे ।। कोटि जन्मके तम दुःख भाजत हृदयकरत उजियारे । प्रेम पुलकि कंठभरि आवे सुख उपजावत न्यारे ।। जापें कृपाकरे श्री गिरिधर तव इनकी अनुसारे । रसिकदास जिनकी विधि पैयत दोउ नेनके तारे ।। राग सोरठ श्रीवल्लभ चाहे सोई करे । जो उनके पद दृढ करी पकरे महारस सिंधु भरे ।। वेद पुराण सुघडता सुंदर ए बातन न सरे । श्रीवल्लभके पदरज भजके भवसागरते तरे ।। नाथके नाथ अनाथके बंधु अवगुण चित ना धरे। पद्मनाभकुं अपनो जानिके डूबत कर पकरे।। राग सोरठ जैसे राखो तेसे रहुं जैसे ही राखो तेसे रहुं । जानत हो सुख दुःख सब जनके मुखकर कहाजु कहुं ।। जैसे ही. ।। कबहुंक भोजन देहो कृपाकर कबहुक भूख सहू । कबहुंक तुरग चढुं महागज कबहुंक भार वहुं ।। जैसेही.।।

कमल नयन घनश्याम मनोहर अनुचर भयो रहुं। सूरदास प्रभु भक्त कृपानिधि तुम्हारे चरन गहुं।। जैसेही.।। राग बिहाग हरि रस वृंदावनते आयो। भगवदीय जन पीवनके कारन श्रीव्रजनाथ पठायो।। बांटिलियो अपनी अपनी रुचि जो जाके मन भायो। सूरदास प्रभु रसिक बिनोदी सो रस रसिकन पायो।। राग बिहाग जनम सब बातन बीत गयो। दसबरस खेल्यो लरकाई पीछे कामनी मोहरच्यो। त्रीस भयो मायाके पीछे देशविदेश छयो। चालीस वरसमें राज्यजु पाये उपजत लोभ नयो।। सूकी त्वचा कमर भये टेढ़े सब ठाटभयो लरिका बहू कह्यो नहीं मानें बूढो शठजु भयो।। नहिं हरिभजन गुरुकी सेवा नहीं कछु दान दीयो। सूरदास मिथ्या तन बीत्यो जमने खेंच लीयो। राग बिहाग मनरे तू वृक्षनको मत ले। काटे तापर क्रोध करे नहिं सींचे नाहीं सनेह।। जो कोई वापर पत्थर चलाहे ताहीकों फल दे। आप शिरपर धूपसहत हे ओरनकूं छाया सुख दे। धन धन जड ए परम पदारथ वृथा मनुष्यकी देह। सूरदास मनकर्म वचन करी भक्तनको मत एह।। राग बिहाग बोलो भैया गोविंद कृष्ण हरि। माल दाम कछु नहीं लागत छूटत नहिं गठरी।। यह काया कागदकी पुतरी छिनमें जात जरी। जामुख सूरप्रभु नाहि उचरत तामुख धूर परी। राग बिहाग अवसर बेर बेर नहिं आवे।। टेक।। जो जाने तो करले भलाई जन्म जन्म सुख पावे।।१।। सुतदारा अंजलीको पानी, घटत वेर नहिं लावे छुटच्यो तन धन कोन कामको, कृपण कहाजु कहावे।।२।। जाको मन लाग्यो श्रीकृष्णसुं ताकूं अन्य न भावे। सूरदास प्रभु आनंद सागर, प्रेम धरी क्यों न गावे।।३।। राग बिहाग भई अब गिरिधरसों पेहेचान। कपटरूप व्हे छलवे आयो पुरुषोत्तम नहीं जान।।१।। छोटो बडो कछु नहीं समज्यो छायर्‌यो अज्ञान। छीतस्वामी देखत अपनायो श्रीविठ्ठल कृपानिधान।।२।। राग बिहाग प्रभु में सब पतितन को टीको। और पतित सब द्योस चार के में तो जन्मन हीं को।। बधिक अजामिल गणिका तारी

ओरं पूतनाही को। मोहि–छांडी तुम ओर उद्धारे मिटे शूल केसे जीको ।। कोउ न समर्थ शुद्ध करन को खेंचि कहत हों लीको। मरीयत लाज सूर पतितन में कहत सबे मोहि नीको ।। राग बिहाग हरि हों सब पतितन को नायक। को करि सके बराबरि मेरी इते मानके लायक ।। जो तुम अजामिलसों कीनी सो पाती लिख पाउं। होय विश्वास भलो जिव अपने ओरो पतित बुलाउं ।। सिमिट जहां तहांते सबकोऊ आय जुटे इकठोर।। अबके इतने आनि मिलाऊं फेर दूसरी ओर।। होडा होडी मन हुलास करि करेपात भरिपेट। सबहिन ले पायनतर परहों यह हमारी भेट ।। ऐसी केतिक बनाऊं प्रानपति सुमरिन व्हे भयो आडो। अबकी बेर निवेर लेहु प्रभु सूर पतितन को ठांडो ।। राग बिहाग श्रीवल्लभ अबकी बेर उबारो। सब पतितन में विख्यात पतितहुं पावन नाम तिहारो ।। श्रीवल्लभ.।। ओर पतित नाही मेरे सह अजामिल कोन विचारो ।। भाज्यो नरक नाम सुनि मेरो यमने दियो हडतालो ।। श्रीवल्लभ.।। कृपासिंधु करुणा निधी केशव अब न करोगे उधारो। सूर अधमको कहुं ठोर तांहि बिना शरनजु तुमारो ।।श्रीवल्लभ.।। राग बिहाग केते दिन व्हेजु गये बिनु देखे। तरुण किशोर रसिक नंदनंदन कछुक उठत मुख रेखे ।। वह सौभाग्य वह कांति वदनकी कोटिक चंद्र विशेखे। वह चितवनि वह हास्य मनोहर वह नटवर वपु भेखें ।। श्याम सुंदर मिलि संग खेलनकी आवत जीय अपेखें ।। कुंभनदास लाल गिरिधर बिनु जीवन जन्म अलेखें ।। राग बिहाग हरि तेरी लीलाकी सुधि आवे। कमल नयन मन मोहन मूरति मन मन चित्र बनावे ।। एक बार जाहि मिलत दया करि सो केसें विसरावे। मुख मुसकानि बंक अवलोकनि चाल मनोहर भावे ।। कबहुंक निबिड तिमिर आलिंगन कबहुंक पिक सुरगावे ।। कबहुंक संभ्रमें कासि कासि कहि संगही उठि उठि धावे ।। कबहुंक नेनमुदि अंतरगति मणिमाला पहिरावे। परमानंद प्रभु श्याम ध्यान करि एसे विरह

गमावे।। राग बिहाग उधो मनतो नही दशबीस। एक हतो सो गयो श्यामसंग कोन भजे जगदीश ।।१।। भये सिथिल सबे माधोबिन ज्यों देही बिन शीश। स्वास अटक रहो आशा लगि रही जीयो कोटि वरीश ।।२।। तुमतो सखा श्यामसुंदरके सकल जोगके इश। सूरदास रसिकनकी बतिया को बूजवे यह रीस ।।३।। राग बिहाग यह मागोसंकरषणवीर।। चरणकमल अनुरागनिरंतर भावेमोहि भक्तनकीभीर ।।१।। संगदेहुतो हरिभक्तनको वासदेहो श्रीयमुनातीर।। श्रवणदेउतो हरिकथारस ध्यानदेहुतो स्यामशरीर ।।२।। मनकामनाकरो परिपूरण पावनमज्जनसुरसरीनीर ।। परमानंददास को ठाकुर त्रिभुवननायक गोकुलपतिधीर ।।३।। राग बिहाग यह मांगोंगोपीजनवल्लभ।। मानुषजन्म और हरिसेवा व्रजबसवो दीजे मोहिसुल्लभ ।।१।। श्रीवल्लभकुलको होंहुं चेरो वैष्णवजनको दास कहाऊं ।। श्रीयमुनाजलनितप्रतिन्हाऊं मनक्रमवचन कृष्णगुण गांऊ ।।२।। श्रीभागवतश्रवणसुनूँनित इन तज चित्त कहुँ अनत न लाऊं।। परमानंददास यह मांगत नित निरखों कबहूँन अघाऊं ।।३।। राग बिहाग यह मांगोंयशोदानंदनंदन ।। वदनकमल मेरमनमधुकर नित्यप्रति छिनछिन पाऊंदरशन ।।१।। चरणकमलकीसेवादीजै दोउ जन राजत विद्युल्लताघन ।। नंदनंदन वृषभाननंदिनी मेरे सर्वस्वप्राणजीवनधन ।।२।। व्रजबसवो यमुनाजल-पीवौ श्रीवल्लभकुलको दास येहीपन ।। महाप्रसादपाऊं हरिगुणगाऊं परमानंददास दासी वन ।।३।। राग सारंग गुरु महिमा ।। गुरु बिनु एसी कौन करे ।। माला तिलक मनोहर बानो ले शिरछत्र धरे ।।१।। भवसागरतें बुडत राखे दीपक हाथधरे सूरस्याम गुरु एसो समरथ छिन में लै उद्धरे ।।२।। राग सारंग दृढ इन चरणन केरो भरोसो ।। श्रीवल्लभनख चंद्रछटाबिन सब जग मांझ अंधेरो ।।१।। साधन और नहीं या कलिमें जासों होय निवेरो ।। सूर कहा कहें द्विविध आंधरो बिना मोलको चेरो ।।२।।

## अथ मानसागर के पद

राग खमाज मान मनायो राधाप्यारी ।। कहियत मदन दहनको नायकपीर प्रीतिकी न्यारी ।।१।। ध्रु.।। तुजू कहतही कबहु नरूसों अवधों कैसेंरूसी ।। विनहीं शिशिर तनक तामसतें तुवमुख कमल विदूसी तेरे ।।२।। विरह रूपरस नागरि लीने पलटकछूसी ।। तैरें हुती प्रेमकी संपति सो संपति किनमूसी ।।३।।१।।

उनतनचितै आप तनचितवो अहो रूपकी रासी ।। पिय अपनो नहीं होय सखी जो सेइयेईशकाशी ।।१।। तूहै प्राण प्राणवल्लभके वेतो चरणउपासी ।। सुनहै कोऊ चतुरनायिका करहै प्रेमकी हांसी ।।२।।२।।

ज्यों ज्यों मौन भई तू उनके बाढी आतुरताई ।। कान्ह आन वनिता रति सुनसुन मनबैठी निठुराई ।।१।। हियें कपाट जोर जडताके डोले नहीं डुलाई ।। हा राधा राधा जक लागी चित चातककी न्याई ।।२।।३।।

जोपै मान तो भावर नाहीं भावर मान नहोई ।। होयेंते बाध प्रेमरी तव तहाँ अंत भावतो सोई ।।१।। जो गोरी पिय नेह गरवतें लाख करो जिनकोई ।। काहू मिल्यो प्रेम परच्यो वह चतुर नारिहै सोई ।।२।।४।।

कित्तहवै रही नार नीची कर देखत लोचन झूले ।। मानो कुमुद रूंठ उडुपतिसों कियो अधोमुख फूलें ।।१।। तेरे हित वृषभान नंदिनी सेवक यमुना कूलें ।। तेरो तनक मान मन मोहन सबै सयानपभूलें ।।२।।५।।

अहो इंदुवदनी सजनी स्यामा सुन कित पलकन पलजोरें ।। तेरे दरस परसके प्यासे हरिजूके नयन चकोरें ।।१।। तेरे बल वे गिनत नकाहू उपजत काम हिलोरें ।। कहियतहै वे चतुरनागरसो तनक मान भये भोरें ।।२।।६।।

तब दूती उठ गई स्यामपै कान्ह वहां अनुसरिये ।। ज्यों हठ तजे प्राणप्यारी सो यतन सवारे करिये ।।१।। वे ऐसे तुम ऐसे वैसे कहो काज क्यों सरिये ।। कीजै कहा चाड अपनी को कित इस सोचन मरिये ।।२।।७।।

अपनी चोंप आपही आए ह्वै रहे आगें ठाढे ।। भूल गए सव चतुर सयानप हुते सबै

गुणगाढे ॥१॥ डोले नहिं बोले न बुलाये मानो चित्र लिख काढे ॥ पर्‍यो न काम काहू नागरीसों हो घरहीके भाढे ॥२॥८॥

निवहे सदा ओर हीसों हठ यह प्रकृति तिहारी ॥ आपनही अधीनह्वै ठाढे देख गोवर्धनधारी ॥१॥ प्राणपियाहि रूसनो कैसो सुन वृषभानदुलारी ॥ कहूं नभई सुनी नहीं देखी जलतरंगतें न्यारी ॥२॥९॥

रिसरूसनो मिलन पलकके अंत कसुंभरंग जैसो ॥ सदा न रहे छिनकमें छूटें प्रात ओसकण तैसो ॥१॥ ऐतो परम मिलनिया मनको उठ कहि मोहन वैसो ॥ घरआये आदर न चूकिये बैठिये दूध अचसो ॥२॥१०॥

ये तो भ्रमर भावते वनके और वेलिको तैसी ॥ करतहै मान मदनमोहनसों बात करत हँसने सी ॥१॥ हम जानतहीं लालन ऐसे तुमहू इनही जैसी ॥ याहीते तुम गर्वभरी हो बे ठाढे तुम वैसी ॥२॥११॥

जोवन जलबरषाकी नदी ज्यों चारदिनाकों आवे ॥ अंत अवधिही लीन होतहै कोटिक करो उपावे ॥१॥ वालम ओ विलंबको मिलवो तोहि कौन समझावे ॥ ले चल भवन भावते भुजभर क्यों कर गारि दिवावे ॥२॥१२॥

झुक बोली दूती हातोकर कौने सिखै पठाई ॥ लैकिन जात भवन अपने इहां लरन कौनसों आई ॥१॥ कांपत रीस पीठ दै बैठी सहचरी और बुलाई ॥ कछू सीरी कछू ताती बातें कान्हहिं देत दुहाई ॥२॥१३॥

कबहूं ले दर्पण धर आगें ह्वै रहे पाछे ठाढे ॥ पट अंतरमुख ओर निहारे इते मान मन गाढे ॥१॥ तलफत रहे धरे नहीं धीरजविरह अनलके दाढे ॥ इत नागरी चतुर उत नागर इत वातनके आढे ॥२॥१४॥

बडे बडाईकूं प्रतिपालें बडो बडाई छीजे ॥ ताकें बडो बडी शरणागत बैर बडेसों कीजे ॥१॥ तू वृषभान बडेकी बेटी जाके ज्याए जीजे ॥ राखो बैरहिये इनही सों तो बैरी पीठ नदीजे ॥२॥१५॥

भामिनी और भुजंगिनी कारी इनके विषही डरैये ॥ राचें अरु विरचें सुख नाहीं

इनहिं नभूल पत्यैये ॥१॥ इनके मन वशपरे मनोहर बडे यतन करपैये ॥ कामी होय विरहआतुर तोई सो कैसें समझैये ॥२॥१६॥

जेजे प्रेम छके मैं देखे तिनहि न चातुरताई ॥ तेरे मान सयानी सखी तोय कैसें समझाई ॥१॥ परीहै क्रोधचिनग भावरमें बूझत नाहिं बुझाई ॥ हौंजु कहत बात बावरी तनते अग्नि उठाई ॥२॥१७॥

बहुर्यो भए सहचरी मोहन तके आपनीघातें ॥ लागे कान सखीके धोकें कहत कुंजकी बातें ॥१॥ सुधकर देख रूसनो उनको जब खाई हाहा तें ॥ आप पीर पर पीर न जाने भूली जोबन माते ॥२॥१८॥

कहूं नहिं भई सुनी हि न देखी तनते प्राण अबोलें ॥ होत कहाहै आलसहू मिष छिन एक घूंघट खोलें ॥ पावत कहा मानमें सजनी कहा गमावत बोलें ॥ कान्ह प्राणनाथ तुम प्यारी फिरहीं कुंजन डोलें ॥२॥१९॥

कहा रही अतिक्रोधअग्नि जर नेंक न दया दयानी ॥ प्रकटी जाय मदनमोहन तन बात बात अधिकानी ॥१॥ हितकी कहत अनहित सी लागत समझहि भलें सयानी ॥ मनकी चोंप मान कित कीजत थोरेंही इतरानी ॥२॥२०॥

रही मूँद पटसों हठ भामिनी नेक न वदन उघारें ॥ हरि हित वचन रसाल कठिन पाहन जिन बूंद उतारें ॥१॥ धरेंग्रीव पट सनमुख ठाढे नेक न कोप निवारें ॥ जिन आधीन देव सुरनरमुनि सों दीनता पुकारें ॥२॥२१॥

क्षणगावें क्षण वेणु बजावें कमल भृंगकी नाई ॥ क्षण पायन तन हाथ पसारें छुवन न पावें छांई ॥१॥ क्षणक्षण लेहि बलाय भामकी लालच कर ललचाई ॥ छिनक आनकी आन मनोहर क्षणक्षण हाहा खाई ॥२॥२२॥

कबहूँ निकट बैठ कुसुमावलि अपने करन बनावे ॥ जोइजोइ बात भामिनी भावे सोइसोइ बात चलावे ॥१॥ जितही जित रुख करे लडैती तितही आपन आवे ॥ नाचत जाके डरन भुवन त्रय तिहि नेकहु मान नचावे ॥२॥२३॥

जिन नयननदेखें दुख भूले सो दुख नयन समोवे ॥ जो मुख सकल सुखनको

दायक सो मुख नेक न जोवे ॥१॥ जिहिं ललाट त्रिभुवन कोटीको सोपायनतर सोवे ॥ राचे जाहि सनकमुनि शंकर विरचे ताहि विगोवें ॥२॥२४॥

एते मान भये वशमोहन बोलत कछुक डराई ॥ दीपकप्रेम क्रोध मारुत छिन परसतही बुझजाई ॥१॥ कबहूं करे कछू छल दूती कहत बात सुखदाई ॥ कपटी कान्ह न पत्यैये राधा तोहि वृषभान दुहाई ॥२॥२५॥

पठई मोय दई वनमाला जहां कहूं रतिमानी ॥ वहराय इते उठ आई आली तोहि डरानी ॥१॥ काहेते रूसनो बढ्यो है मोसो कहो कहानी ॥ नवनागरि पहचान राधिका यह छल अधिक रिसानी ॥२॥२६॥

जानिये कौन कहां अपराधि न आन कानहीलागी ॥ सो सुन उठी सुंदरीके तन प्रगटी प्रेमकी आगी ॥१॥ यद्यपि रसिक रसाल रसीलो प्रेम पियूष नपागी ॥ जिन दिये ऐसे मंत्र सांवरे ताहठलहरन जागी ॥२॥२७॥

कहिये कहा नंदनंदनसों जैसी लाड लडाई ॥ कोनहीं भई सुंदरी इनको एते मान मनाई ॥१॥ नवलनागर सबही पहिचानी नागरि नागरताई ॥ छलबल वदनी छल पैयतहै प्रेम न पायो जाई ॥२॥२८॥

हारे बल अवलाकेमोहन त्यजत न पाणि कपोले ॥ मानो पाहनकी प्रतिमासी नेक न इतउत डोले ॥१॥ नई द्योसन रुसनो करतहो करहो कबहि कलोले ॥ कहादियो पढ सीसस्यामके खेंच आपनो सो लै ॥२॥२९॥

तो हठ परयो प्राणवल्लभसों छूटत नहीं छुडायो ॥ देखत मुरझपरे मनमोहन मानो भुजंगम खायो ॥१॥ काहेकों अपराध लेतहो कीजे इनमन भायो ॥ नेक निकट ह्वै निरख राधिका जो चाहतहै जिवायो ॥२॥३०॥

बहुर्‍यो लियो उठाय मनोहर युवती यतन उपावे ॥ विरहताप दापहरवेकूं सरससुगंध चढावे ॥१॥ जेते किए उपचार मानो सो जरत माझ घृत नावे ॥ काम अग्निते बिना कामिनी कहो कैसे सुखपावें ॥२॥३१॥

जिनके हित तुम त्रिभुवननायक ठकुरायन कर पूजी ॥ जिनके अंगअंग रतीविलसी

वननायक ह्वै कूजी ॥१॥ अनुदिन कामविलासन विलसवे अलि तू अंबूजी ॥ एते पर सुन मान करतहो तोसम मुग्ध नदूजी ॥२॥३२॥

मेरो कह्यो तू मानत नाहीं यहां को और कहेगो ॥ राखत मान तिहारो मोहन इतनी कौन सहेगो ॥१॥ जानेगी तन मानेगी आली जब तब मदन दहेगो ॥ करतहो मान मदनमोहनसों मानहिं हाथ रहेगो ॥२॥३३॥

नखलिख कह्यो उठ जाऊ तहांहीं जाके हाथ विकाने ॥ जासों रहत रात दिन माधो हरिद चून ज्यों साने ॥१॥ मुखमेरेही मान मनावत मन वासों लपटाने ॥ गावत विरदलोग सांचोहै हरिहित कौन सिराने ॥२॥३४॥

तुम मम तिलक तुमहिं मम भूषण तुमहिं प्राणधन मेरें ॥ हों सेवक शरणागत आयो जिवायो यत्न घनेरे ॥१॥ तेरीसों वृषभाननंदिनी एक गाँठसो फेरे ॥ हितसो वैर नेह अनहितसों यह न्यावहै तेरे ॥२॥३५॥

परधन राख वाग द्रुम डोलन बैठन कुंजन छांई ॥ चारणधेनु फेन मथपीवन जीवन महिषी गाई ॥१॥ आसन कांस कामरी ओढनबैठन गोपसभाई ॥ भूषण मोरपंख कर मुरली तिनके प्रेम कहांई ॥२॥३६॥

प्रेमपतंग परेदीपकमें प्रेमकुरंग बंधेसे ॥ चातक रटें चकोरनसो वे मीन विना जल तैसे ॥१॥ जहां प्रेम तहां मान मनाए प्रेम न गनियें ऐसें ॥ प्रेम मध्यजे करहि रूसनो तिनहि प्रेम कहो कैसें ॥२॥३७॥

काँपत रीस नयन रतनारे मणिमाला तन हेरे ॥ निरख आभा सयानी सुंदरी बहुर नयन रुख फेरे ॥१॥ लिये फिरत मन माहिं दुराए जानत लोग अंधेरे ॥ ए तेरे मन भावतीहै तो कित मान मनावत मेरे ॥२॥३८॥

मेरीसों आभास तिहारो और यहां को होहे ॥ ले दरपण मणिधर चरणन पर देख हृदयमें कोहे ॥१॥ बिन अपराध दासकों त्रासे ठाकुरकूं सब सोहे ॥ निरख आवें प्रतिबिंब आपनो फेर हियेमें मोहे ॥२॥३९॥

नेकही मुर मुसकाय जानकें मनमोहन सुखमान्यो ॥ मानो दावादुम जरत आस

भई उनयो अंबर पान्यो ॥१॥ जे भाईते सोंह दिवाई तब सूधे मन आन्यो ॥ दियो तंबोल हाथ अपने कर अबमें जीवन जान्यो ॥२॥४०॥

हँसिकें कह्यो चलो हरि कुंजनमैं आवतहों पाछें ॥ हाथ लकुट और कंध कामरी वेष तुमारो काछें ॥१॥ गो दोहनकी वार होतहै लिए वछरुवा आछें ॥ जो न पत्याउ छांड जाउं मुरली हमें तुम्हें यह बाछें ॥२॥४१॥

सघन कुंज अलि गुंज तहां हरि किसलय सेज बनाई ॥ आतुर जान मदनमोहनकों कामकेलि लेआई ॥१॥ उठ गोपाल अंक भरलीनी मानों रंक निधिपाई ॥ अति रसरीति प्रीतियों प्यारी छूटत नहीं छुडाई ॥२॥४२॥

अवलंबन आलिंगन चुंबन लियो सुरतरस पूरो ॥ रही झलक श्रम बूंदवदन अलिवाहन निरखत चूरो ॥१॥ मुखके पवन परस्पर सुकवत गहें पाणि पिय झूरो ॥ बूझत जान मनमथ उमग मानों बहुरह्यो दियो मरूरो ॥२॥४३॥

आलस मगन वदन कुम्हलानी अबला निरबल कीनी ॥ विथकित जान स्यामबिंब भुज गहि प्रिया अंकभर लीनी ॥१॥ गोरे गात मनोहर उरजन फुलेल कंचुकी भीनी ॥ मानों मधुप बैठे कमलनपर स्यामछापसी दीनी ॥२॥४४॥

इत राधिका नवलनागरी उत जुरे सुभट रणदोऊ ॥ बाण कटाक्ष नयन असिवर नखवरष सिराने दोऊ ॥१॥ टूटे हार कंचुकी दरकी धायन मुरेनदोऊ ॥ प्रकटी प्रीति वीचकरवेकों लाज नलाजे दोऊ ॥२॥४५॥

कबहूं अंचल ओट दुरावें चितवतवदन उघारी ॥ जनु मरकतमणि वेल हृदयमें निरखत मुख अनुहारी ॥१॥ कबहूं खोल लेत अपने कर गूंथत कच बनवारी ॥ मानों दीपक उद्योत कियोहै शरणगई अंधियारी ॥२॥४६॥

जिहिं डर रहत पीटपट ओढें कहा कहूं चतुराई ॥ भोर कान्ह काम कर भोरे भोरे वेष भुराई ॥१॥ प्रभुमें प्रिया प्रियामेंहैं प्रभु ज्यों जल दर्पण झांई ॥ यह जिन कहो हियमें कोहै बहुरि परे कठिनाई ॥२॥४७॥

कर जोरे विनती करें मोहन कहातो पायन शिर नाऊँ ॥ हों सेवक शरणागत आयो

कहो तो पत्र लिखाऊं ।।१।। तेरी सोंह वृषभान नंदिनी अनुदिन तुव गुण गाऊं ।। अबजिन करो मान मोसों तुम यह भोजकर पाऊं ।।२।।४८।।

हँस कर उठी प्यारी उरलागी मनमोहन सुखपायो ।। तुव मनदियो आन वनिता हितमैं मन कहां लगायो ।।१।। ले बलाय पांयलाग हियो भर पिछलो दुख विसरायो ।। स्याम मानहैप्रेम कसौटी प्रेमहिं मान सहायो ।।२।।४९।।

टूटे बंद छुटी अलकावलि और मरगजे वागे ।। अंजन अधर भाल यावकरंग पीक कपोलन दागे ।।१।। विनगुणहार पीठ गढ्यो कंकण उपट उठे उरलागे ।। रसिक राधिकाके सुखविलसें सुंदर स्याम सुभागे ।।२।।५०।।

रसिक गोपाल रसीली राधा नये नेह वश कीने ।। प्राणनाथसों प्राणपियारी प्राणपलटके लीने ।।१।। इत नागर उतचतुर नागरी उभय बंध प्रवीने ।। अतिहित जान त्यजो मान भामिनी मोहनकों सुखदीने ।।२।।५१।।

श्रीराधाकृष्ण केलि कौतूहल जो गावे जिहि भावें ।। वहुरि न बसें गर्भपातकमें और अभयपद पावें ।।१।। ताके सदां समीप बसें हरी उर आनंद बढ़ावें ।। जीवन्मुक्त सूरके प्रभुकी अनुदिन लीला गावें ।।२।।५२।।

**कीर्तन संग्रह खंड ४ सम्पूर्ण**